कथा-प्रभास

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

कथा-प्रभास

(तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा)

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

प्रकाशक : मैथिली अकादमी प्रकाशन १६१

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णापुरी

पटना-८००००१

आवरण सज्जा : डॉ० गंगेश गुंजन

प्रथम संस्करण

दिसम्बर १९८८

प्रति—११००

मूल्य : साधारण—[redacted]ीस टाका

सजिल्द—[redacted] टाका

मुद्रक :

मुरलीधर प्रेस,

मुसल्लहपुर, पटना—६

प्रस्ताविकी

कथा आजुक एक सशक्त विधा थिक । बहुत हर्षक विषय जे सम्प्रति मैथिली कथा साहित्य बहुत समृद्ध भ' रहल अछि । प्रसिद्ध कथा संग्रहक प्रकाशनक शृंखलामे मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा-प्रभास' प्रकाशित करैत अकादमी अतिशय आह्लादक अनुभव करैत अछि । कथा कहबाक एक अपूर्व भंगिमा, सहज आकर्षक शिल्प, परिवेशक सहजता ओ विश्वसनीयता तथा कथ्यक प्रभावशीलताक लेल प्रभास कुमार चौधरी मैथिली कथा साहित्यमे प्रसिद्ध छथि । उपन्यास लेखनमे सेहो ई बहुत मांजल छथि ।

"कथा-प्रभास"मे विगत तीन दशकक विद्वान कथाकारक अट्ठाइस गोट प्रसिद्ध कथा संग्रहित अछि । मध्यवर्गीय समाजक यथार्थ चित्रण, सामन्ती विलासिताक जांत तर कुहाइत-पिसाइत लोकक अशेष व्यथा-कथा ओ एक अभिनव समाजक संकल्पनाक दिशा ओ दृष्टि एत' दर्शनीय अछि । आशा अछि कथा साहित्यक प्रेमी पाठक अकादमीक एहि अभिनव प्रस्तुतिक स्वागत करताह ।

मैथिली अकादमी

२९-१२-१९८८

(डा० फणीन्द्र नाथ ओझा)

अध्यक्ष

प्रकाशिकी

मैथिलीक विशिष्ट ओ सम्मानित कथाकार श्री प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा-प्रभास' प्रकाशित करैत अकादमी अतिशय गौरवान्वित अछि। मैथिलीक साठोत्तरी पीढ़ीक ई एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। जहिना छठम दशकमे मैथिली कथा-यात्रामे तीन नाम—ललित, राजकमल, मायानन्द—बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित रहलाह, तहिना सातम दशक मे प्रभास, गुंजन, राजमोहन जीवकान्त ओ धूमकेतु मैथिली कथा पर आच्छादित रहलाह। प्रभास मैथिली कथा साहित्यक समवेत युवा ऊर्जा ओ स्फूर्ति सँ भरल एहन कथाकार छथि जे कथा केँ व्यापक आधार, बिराट परिबेश, बहुआयामी दृष्टि, तथा विशिष्ट दृष्टि-भंगी प्रदान कयलनि अछि। अत्यंत संवेदनशील हृदय, चिंतनशील मस्तिष्क, सत्योन्मेषी दृष्टि तथा चोटगर-नोकगर व्यंग्यक वक्र-भंगिमा हिनक विशेषता छनि। शहरमे रहितो ई मोन-प्राणसँ गाममे रहैत छथि। बाल्यकालक संस्मरण ओ अतीतक बहुत रास मार्मिक अनुभूति हिनका मे तेना ने रसि-बसि गेल छनि जे कदाचित् नागर संस्कृतिक छलनामय वातावरण हिबका हठात् मिथिलाक अपन माटिपानि ओ गाम घर मे आनि दैत छनि। एक विशिष्ट मध्यवर्गीय संस्कार ओ ग्रामीण सहज परिवेश मे पलल आदर्श जीवनक मूल्यबोध हिनका कदाचित् यथास्थान मोहग्रस्त सेहो करैत रहलनि अछि। तेँ युवा रहितो हिनक कथा-शिल्प एक बयोवृद्ध प्रगल्भता देखबैत अछि। एहन बात नहि अछि जे कथाकार 'प्रभास आदर्शवादी छथि। हिनकामे वस्तुतः यथार्थ ओ आदर्शक मणिकांचन संयोग भेटैत अछि। गाम सँ नगर, नगर सँ राष्ट्र ओ राष्ट्र सँ अन्तर्राष्ट्रीयताक विराट क्षितिज हिनक समुबँर मनोमस्तिष्ककेँ झिकझोरैत रहलनि अछि। अतएव बद्धमूल सामंती संस्कार केँ तोड़ि-फोड़ि ई बेर-बेर अपन रचनामे यथार्थ जनवादी जमीन सेहो तकैत छथि। पूर्वमे मैथिली कथा जाहि संकीर्णताक कठधरा मे मूनल-बान्हल छल तकरा ई व्यापकता ओ विविधताक उन्मुक्त भाव-भूमि पर उतारि देलनि। हिनक रचना-शिल्प मे मिथिला-क्षेत्रक सोना-माटिक सम्पूर्ण सुगन्धि भेटैत अछि। संगहि हिनक कथा नाना रूपात्मक जगत ओ जिनगीक बहुरंगी कथा कहैत अछि। हिनका मे एक अपूर्व चित्रमयता, सजीवता

मनोवैज्ञानिकता, वाह्यान्तः संघर्षक उठा-पटक देखिते बनैत अछि। ई अतीतक ओ कथा कहैत छथि जे वर्तमानक रेखाचित्र गढ़ैत भविष्यक सपना सजबैत अछि। कदाचित आजुक विभीषिका ओ विसंगति अथवा वर्ग-संघर्ष हिनका ततेक उद्वेलित कयलकनि अछि जाहि सँ क्रान्तिक कोनो दीपशिखा प्रज्वलित कयल जा सकय। दहाइत-भसियाइत सामाजिक व्यवस्था, विडम्बनामय जीवन, आजुक अनाचार ओ अभिचार सँ जकड़ल परिवेश अथवा दिग्भ्रमित साम्प्रतिक युग-चेतना अपन विशिष्ट कथाकार सँ भविष्यमे आरो अपेक्षा रखैत अछि।

कथकारक अतिरिक्त प्रभास मैथिली कथा साहित्यक एक समर्थ उपन्यासकार सेहो छथि। मैथिली उपन्यास साहित्य केँ ई पाँचटा एहन अनमोल रत्न देलनि अछि जाहि सँ हमर उपन्यास साहित्य गौरवान्वित भेल अछि। पूर्वमे अकादमी हिनक 'हमरा लग रहब ?' उपन्यास प्रकाशित क' चुकल अछि। पुनः आइ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित-अप्रकाशित ओ बहु प्रशंसित अठाइस गोट प्रतिनिधि कथाक संकलन 'कथा प्रभास' प्रकाशित करैत हमरा लोकनि अत्यन्त आनन्दोल्लास अनुभव क' रहल छी। कथा-भाषाक इन्द्रधनुषी छवि, मिथिलाक माटिपानिक समग्र सौरभ, गहन चिन्तन ओ जीवनानुभवक यथार्थ कसौटी पर गढ़ल हिनक उपर्युक्त कथामे मैथिली कथा साहित्यक अपूर्व रंग-टीप दर्शनीय अछि। नव युगक सर्वाधिक लोकप्रिय कथा-विधाक दिशा ओ दृष्टि केँ देखैत ई निःसंकोच कहल जा सकैत अछि जे आधुनिक मैथिली कथा-साहित्य कोनो भाषा-साहित्यक समकक्ष ठाढ़ कयल जा सकैछ। शिल्प ओ प्रयोग, विषय ओ विस्तार, इंगित ओ अभिव्यक्ति, कथा ओ कथ्य तथा बोध ओ संवेदना —सभ दृष्टि सँ कथाकार प्रभास मैथिली कथा-यात्राक एक स्वर्णिम हस्तक्षर छथि। एहि संकलनक अनेक कथा हिन्दी, बंगला ओ गुजराती भाषा मे अनुदित ओ बहु-प्रशंसित भ' चुकल अछि।

हम आशा करैत छी जे अकादमीक कथा-मालाक एहि सुन्दर-सुरभित अभिनव पुष्पक मातृभाषानुरागी सहृदय पाठक हृदय सँ स्वागत करताह। सर्वथा सचेष्ट रहितो मुद्रण जन्य त्रुटि परिमार्जनीय थिक।

मैथिली अकादमी
२९-१२-८८

देवकान्त झा
निदेशक-सह-सचिव

लेखकीय : कोनो आहे माहे नहि

हमरा जे कहबाक अछि से अपन कथा सभमे बेर-बेर कहैत आयल छी आ कहैत रहब। हम आइयो ओहि बात केँ मानैत छी जे आइ सँ पच्चीस वर्ष पहिने अपन कथा संग्रह "नव घर उठय : पुरान घर खसयक" प्रकाशनक समय लिखने रही। कृतिक सम्बन्धमे कर्ताक वक्तव्यक कोन प्रयोजन? पच्चीस वर्ष बाद 'कथा लिखबाक क्रम मे" शीर्षक अपन वक्तव्यमे मिथिला मिहिरमे सेहो हम यैह बात दोहरौने रही जे सुग्गाक दाम सुग्गाक बोल सुनले पर लगैत छैक। कथामे दमखम रहैत छैक, हृदय केँ छूबाक आ मस्तिष्क केँ आन्दोलित करबाक सामर्थ्य रहैत छैक त' ओ अपन लोहा मनबा क' रहैत छैक। ओकरा कोनो झालि बजौनिहारक काज नहि पड़ैत छैक। वक्तव्यक सोंगर पर कथा ठाढ़ नहि भ' सकैत छैक। हमरा जे कहबाक अछि 'कथा-प्रभासक' एक एकटा कथा बाजत, हमरा अहाँ ओकरा सन-सन हजार-लाख-करोड़ लोक दिस सँ बाजत।

पूरा दू युगक बाद हमर दोसर कथा संग्रह 'कथा-प्रभास" मैथिली अकादमीक सौजन्य सँ प्रकाशित भ' रहल अछि। हमर पहिल कथा संग्रह १९६४मे छपल। हमर पहिल मैथिली कथा 'बाहर इजोत : भीतर धूँआँ" मिथिला मिहिरमे १९६१मे प्रकाशित भेल (यद्यपि ओहि सँ पहिने दू टा कथा 'वैदेही' मे 'धरती कुहरि उठल' आ "प्रतीक्षा' १९५६-५७मे छपि चुकल छल आ किछु कथा सभ विद्यालय-पत्रिका सभमे सेहो)। १९६४मे प्रकाशित "नव घर उठय:पुरान घर खसय" मे हमर एगारह टा प्रारम्भिक कथा (१९६१—१९६३क बीच छपल) संग्रहित भेल।

आइ ई सोचला पर आश्चर्य होइत अछि जे हमर पहिल कथा-संग्रहक ओतेक उत्साहवर्द्धक आ व्यापक स्वागत भेलाक बादो पच्चीस वर्ष धरि कोनो दोसर संग्रह कियैक ने प्रकाशित भेल। एहि बीच हम नियमित कथा लिखैत रहलहुँ, प्रकाशितो होइत रहल। पांच टा उपन्यासो (अभिशप्त युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी) प्रकाशित भेल मुदा दोसर

कथा संग्रह नहि छपल। प्राय कथाक नियमित प्रकाशन होइत रहबाक कारणे कथा-संकलनक प्रकाशन दिस ध्यान नहि गेल। प्राय: प्रकाशनक समस्या केँ देखैत सभ बेर कथा संग्रह आ उपन्यासक प्रकाशनमे चयन करबाक बेर उपन्यासे प्रकाशन केँ प्राथमिकता देब' पड़ल।

'कथा-प्रभास' मे अही कारणे हमर लगभग तीन दशकक कथा लेखनक किछु बानगी प्रस्तुत अछि। ई चयन हमरा लेल कठिन काज छल। हम प्रत्येक कथामे फराक-फराक बात केँ, युगीन आ शाश्वत यथार्थ केँ फराक-फराक ढ़ंग सँ कहबाक चेष्टा करैत आयल छी। अपन माटि पानिक रचनाक संग-संग एहन एहन कथाक रचनाक प्रयास करैत आयल छी जे सर्वदेशीय, सर्वकालिक एवं सार्वजनीन हो। कोनो कथाकेँ छोड़ि देबाक अर्थ छल ओइ प्रवाह केँ खण्डित करब। मुदा एकेटा संग्रहमे अस्सी सँ अधिक कथा संकलित करब सेहो कतेको कारण सँ संभव नहि छल। तेँ मात्र अट्ठाइस टा कथा एहि संग्रहमे लेल गेल अछि।

१९६१ सँ १९७०क बीच हम छियालीस टा कथा लिखलहुँ जाहिमे एगारह टा "नव घर उठय पुरान घर खसय'मे संकलित भेल आ चौदह टा 'कथा-प्रभास'मे जा रहल अछि। शेष एकैस टा शीघ्रे कोनो दोसर संकलनमे प्रकाशित हैत, से आशा करैत छी। १९७१ सँ १९८०क बीच हम २४ टा कथा लिखलहुँ जाहिमे सात टा कथा मात्र एहि संग्रहमे जा रहल अछि। शेष सत्रह टा कोनो दोसर संग्रहमे जा सकत, से आशा करैत छी। नवम दशकक सात टा कथा एहि संग्रहमे संकलित भेल अछि। एहि संग्रहक बहुत रास कथा हिन्दी, गुजराती आ बंगला मे अनुदित भ' चर्चित आ प्रशंसित भेल अछि। मैथिली पाठक आ समीक्षकक स्नेह आ प्रशंसा सेहो ई रचना सभ प्राप्त क' चुकल अछि। तेँ ई संग्रह अपने लोकनिक हाथमे दैत काल हम एक प्रकार सँ आश्वस्त छी।

सातम दशक मैथिली साहित्यमे, विशेष क' कथा साहित्यमे बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। ई ओ दशक थिक जाहिमे मिथिला मिहिरक पुनर्प्रकाशन प्रारम्भ भेलाक कारणे मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ रचनाकार पुन: सक्रिय भ' उठल छलाह आ एकटा सशक्त नव पीढीक प्रवेश भ' रहल छल। छठम दशक मैथिली कथा साहित्यक लेल नवारम्भक युग छल आ ललितक 'कथा' 'रमजानी'सँ मैथिली कथाक वर्तमान धाराक प्रारम्भ भेल छल। ललितक संग राजकमल चौधरीक

प्रवेश भेल जिनका स्वयम ललित १९६४मे मैथिलीक जीवित गद्यकारमे सर्वश्रेष्ठ मानलनि। अही पीढ़ीक अन्य सशक्त कथाकार भेलाह "मणिपद्म, मायानन्द, सोमदेव, धीरेन्द्र, हंसराज लिलि रे, बलराम आ रामदेव झा। उगानन्द, बहेड़ शैलेन्द्र मोहन झा, योगिराज, राम किशुन झा, "किसुन" आदि सेहो अही पीढ़ी कें समृद्ध कयलनि। तेसर, चारिम आ पाँचम दशकक कथाकार सेहो एहि दशकमे सक्रिय भ' उठलाह आ कुमार गंगानन्द सिंह, प्रो० किरणीजी हरिमोहन झा, व्यासजी नगेन्द्र कुमार, कुलानन्द नन्दन, उमानाथ झा, मनमोहन झा गोविन्द झा एवं शेखरजी अपन उत्कृष्ट रचना एहि दशकमे लिखलनि।

सातम दशकक आरम्भक संग हमर नियमित कथा लेखन प्रारम्भ भेल। दादा (हमर पिता) आशु कवि छलाह, हुनकर कविता पढ़ि सुनिक' आ हुनकर परिवारिक पुस्तकालय मे अनेक कवि, कथाकार, उपन्यासकारक हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला (हिन्दीमे अनुदित) रचना पढ़ि-पढ़ि हमहुँ कविता लिख' लगलहुँ। दादा हिन्दीमे कविता लिखैत छलाह, हमहुँ हिन्दियेमे शुरु कयलहुँ। १९५३मे लहेरिया-सरायक एम० एल एकेडमीमे नाम लिखौलाक तीन वर्षक बाद, दशम वर्गक विद्यार्थीक रुपमे हमर मैथिली-लेखन प्रारम्भ भेल—अपन गुरु कथाकार ललित आ कवि चन्द्र नाथ मिश्र "अमर"क सम्पर्क सँ। १९६४ धरि हिन्दी मैथिलीमे कथाक संग हिन्दीमे कवितो प्रकाशित होइत रहल। मुदा हमरा लागल जे हमरा लेल उपयुक्त विधा चुनि लेबाक बेर आबि गेल छल आ हम कथा विधा कें बेशी उपयुक्त मानलहुँ। आइयो मानैत छी। पहिल उपन्यास अभिशप्त १९७०मे छपल आ दस सालमे पाँच टा उपन्यासो छपि गेल। कथा निरन्तर लिखैत रहलहुँ, मैथिली आ हिन्दीमे आ अन्य भारतीय भाषामे अनुवाद होइत रहल। अद्यावधि एकसयक लगभग कथा लिखल अछि। सातम दशकमे हमर लगले बाद गंगेश गुंजन अपन कथाक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक पकड़ आ भाषाक नव भंगिमाक संग विशिष्ट स्थान बनौलनि। धूमकेतु आ राजमोहन झा जे छठम दशक मे मूलतः कविता लिखि रहल छलाह, सातम दशकमे कथाकार रूपमे अपन परिचय फरीछ कयलनि। पैंसठक बाद जीवकान्त सामर्थ्य आ वेग मे संग प्रवेश कयलनि। साकेतानन्द आ रमानन्द रेणु सेहो लिखि रहल छलाह, गौरी मिश्र आ शेफालिका वर्मा सेहो लिखि रहल छलीह। छत्रानन्द व्यंग लेखनमे सान चढ़यबाक चेष्टा क' रहल छलाह। पाँचम छठम आ ओइ सँ पहिलुको दशकक अनेक

कथाकार अपन उत्कृष्टतम रचना द' रहल छलाह। किरणजीक मधुरमनि, हरिमोहन बाबूक पाँच पत्र, गोविन्द झाक सामाक पौती, मणिपद्मक 'गुरु-दक्षिणा' ललितक "नवपुरान", राजकमलक "साँझक गाछ", धूमकेतुक अगुरबान, "गुंजनक "बन्हेज" आ "सूप महक भाटा", रामदेव झाक 'मनुक सन्तान" बलरामक दकचल देवाल, जीवकान्तक "सीड़क", साकेतानन्दक "त्रिवेणीसमाहार" राजमोहन झाक "अप्पन लोक" आ हमर बाबी, अरगनी, सूर्यास्त, दुःख आदि कथा एहि दशकमे प्रकाशित भेल जाहिसँ ललितक "रमजानी" सँ प्रारम्भ भेल कथा-धारा समृद्ध एवं विकसित भेल आ अन्य भारतीय भाषाक कथाक समकक्षता प्राप्त क' सकबाक हकदार बनल।

मैथिली कथा लेखन वा एना कहू जे सम्पूर्ण मैथिली लेखनक संग एकटा समस्याक हरदम जुड़ल छैक। पाठकीय आ समालोचकीय अतिरिक्त उदासीनता आ अतिरिक्त उदारता। यैह उदासीनता आ उदारता मैथिली लेखन लेल सभ सँ पैघ खतरा छैक। मैथिलीक भाषीमे ई धारणाजे मैथिली बजैत छी त' मैथिलीमे लिखियो सकैत छी, आइयो अहिना जीवैत अछि जेना पचास वर्ष पूर्व जीवैत छल। मैथिलीमे लिखबाक लेल कोनो विशिष्ट प्रतिभा वा अध्ययनक आवश्यकता नहि, मात्र मैथिली बाजब, लिखब आयब पर्याप्त छैक, ई धारणा आइयो सम्पूर्ण मैथिल समाज कें आक्रान्त कयने अछि। तें जे किछु छपि जाइत अछि, सभ साहित्येमे गना जाइत अछि। जे क्यो किछुओ लिखिक' छपबा लैत अछि, साहित्यकारक सूचीमे आबि जाइत अछि। समालोचक (१) लोकनि ओइ सभ नाम कें अपन उत्तेढ़ मे जोड़ि लेब अपन उत्तरदायित्व बुझैत छथि।

सही लेखक कें प्रशंसा आ स्वीकृतिक उपरान्तो तें एक तरहक अपमान आ घुटनक अनुभव होइत रहैत छैक। सूचीमे अपन संग जुड़ल नाम देखि ओकरा होइत छैक जे अइ सूची सँ बाहरे रहितहुँ त' नीक। लिखनिहारक फराक-फराक गोत्र होइत छैक आ एक्के रचनाकारक सभ रचना एक्के गोत्रक नहि होइत छैक ई मानबा लेल मैथिलीक पाठक - समीक्षक (१) आइयो प्रस्तुत नहि लगैत छथि।

हमरा आइयो ओकर कारण वैह लगैत अछि जे हम बेर बेर कहैत आयल छी। अपन भाषाक प्रति मैथिलक हीन भावना। अपन साहित्यमे प्रकाशित वस्तु

के हमरा लोकनि स्वयम् दोसर श्रेणीक मानैत छी । मैथिलीक जे विशिष्ट वर्ग अछि, जे मंच सभ हथियौने अछि, तकरा मैथिली सँ कोनो प्रेम नहि छैक । ओ मैथिलीक मंच पर बैसिक' मैथिली लेल बजितो, हरदम अइ भावना सँ आक्रान्त रहैत अछि जे मैथिलीमे विद्यापतिक बाद किछु नहि अछि । विद्यापति पर्व मनाउ, मैथिली तैथिली पढ़िक' की हैत ? ओइमे पढ़बा लेल छैहे की ? आ जे जनसाधारण छैक से उदासीन छैक । ओकरा मैथिली अपन भाषा नहि, बाबू-भैयाक भाषा लगैत छैक । तेँ मंच पर दावा करवा लेल तीन करोड़ मैथिली भाषी मुदा पढ़वा लिखवाक लेल पाँचो सात सय मैथिली भाषी भेटब मस्किल । मैथिली ककरो भाषा नहि, ने इलिट (विशिष्ट वर्ग)क, ने मासक (जनसाधारणक) । किछु मुट्ठी भरि लेखक, जतबे लेखक ततबे पाठक । कखनो काल ओतबो पाठक नहि । लेखकोमे एक दोसरक रचना पढ़बामे अरुचि ।

आइ हमरा सन लेखक के सेहो ई बात कह' पड़ि रहल अछि जकरा पहिले कथाक प्रकाशन दिन सँ पाठक, समालोचक, पूर्ववर्ती आ समकालीन साहित्यकार सभक स्नेह आ कृपा प्राप्त भेलैक । हमर लेखक उपेक्षाक नहि, अत्यधिक कृपा आ स्नेह सँ आक्रान्त अछि । ओकरा एकटा घुटन, एकटा आक्रोशक अनुभव सभदिन होइत रहलैक अछि । बी० ए० मे पढ़ैत रही त' कथा बी० ए० कोर्स मे लागि गेल छल । आइयो मिडिल, मैट्रिक, आइ० ए०, बीए०, एम०ए० सभक कोर्स मे अपन रचनाक नाम देखैत छी । पटना विश्वविद्यालय मे हमरा पर शोध प्रबन्ध सेहो स्वीकृत भेल, आइयो लिखा रहल अछि । पाठकक स्नेहपूर्ण पत्र आइयो भेटैत अछि । मुदा बेर बेर इएह धारणा पुष्ट होइत अछि जे अधिकांश मैथिली भाषी लेल आइयो मैथिली लेखन वास्ते कोनो विशिष्ट प्रतिभा वा अध्ययनक नहि, मैथिली मे बाजि, लिखी लेबा मात्रक आवश्यकता छैक । सभ धन बाइस पसेरी । जेहने राजकमल "तेहने

आइ अपन कथा संग्रह बारेमे किछु लिखैत काल एकटा आयोजन मोन पड़ैत छथि । राजधानीक एकटा प्रतिष्ठित संस्था एकबेर उत्साह मे एकटा मैथिली पत्रिका प्रकाशित करबाक निश्चय कयने छल । ओकर संयोजक एकटा उत्साही नवयुवक छलाह । किछु गोटेक संग हमरो आमन्त्रित कयने छलाह एकटा गोष्ठी मे जे ओइ प्रस्तावित पत्रिकाक रुपरेखा बनयबाक लेल आयोजित भेल

छलैक । गोष्ठी पँच पँच सुझावक संग समाप्त भेल मुदा तकर पश्चात ओ उत्साही नवयुवक एक कात ल'जा आस्ते सँ कहलनि— ई सभ त' ठीक छैक भाइ मुदा सत्ते कहु त' मैथिला तैथिली मे पढ़ लेल छैहे की जे लोक पढ़त । विद्यापति पर्व मना लेब धरि ठीक अछि मुदा पढ़बा लेल मैथिली—? हँसी नहि लगैत अछि भाइ । की पढ़त लोक मैथिली मे···ककरा पढ़त····?

हम हुनका नहि कहि सकलियनि जे पढ़बा लेल त' बहुत रास चीज अछि । सुमन, मधुप, यात्री, किरण, आरसी आ अमर केँ पढ़ू । कुमार गंगानन्द सिंह, हरिमोहन बाबू व्यासजी, उमानाथ झा, मनमोहनजी, शेखरजी, गोविन्द झा, मणिपद्म, आ बहेड़ केँ पढ़ू । ललित; राजकमल, मायानन्द धीरेन्द्र, सोमदेव, हंसराज, लिलिरे, रामदेव आ बलराम केँ पढ़ू । "किसुन" आ कीर्तिनरायण मिश्र केँ पढ़ू । गुंजनक, धूमकेतु, राजमोहन झा, जीवकान्त, आ सुभाष केँ पढ़ू । प्रवासी, कुलानन्द मिश्र, महाप्रकाश भीमनाथ झा, दोषी, सुकान्त सोम, हरेकृष्ण झा आ विनोद केँ पढ़ू ।

हुनका हम किछु ने कहलियनि । निश्चित बूझल छल जे पूछि बैसताह ई लोकनि के थिकाह ? की लिखने छथि ?

आइ मुदा अहाँ सभ केँ कहैत छी । अहाँ एहि संग्रहक एकको टा कथा नहि पढ़ू मुदा जिनकर हम नाम लेलहुँ अछि, तिनकर रचना पढ़ू । हमरा सन्तोष रहत जे अहाँ लोकनि मैथिली पढैत छी, नीके गोत्रक रचना पढैत छी ।

कथा-संग्रह प्रकाशन हेतु मैथिली अकादमी केँ समर्पित करैत काल मोन पड़ैत अछि बाबी जकरासँ कथा सुनि सुनि क' हमर कथाकार जनमल । मोन पड़ैत छथि दादा (हमर पिता) जे हमर सम्पूर्ण लेखन सामर्थ्यक केन्द्रमे आइयो छथि । मोन पड़ैत छथि बड़का काका जिनकर अध्ययनशीलता सँ प्रभावित भ' आ जिनकर लाइब्रेरी (काका आ दादाक संयुक्त) सँ किताब पढ़ि पढ़ि हमर पढ़बा लिखबाक इच्छा बढ़ल-पनपल । मोन पड़ैत अछि माय जे सभ दिन आ आइयो अपना सँ हटिकेँ अनको लेल, सबहक लेल किछु सोचबाक आ करबाक प्रेरणा दैत अछि । ओकरे क्रियाकलाप आ जीवन शैली केँ देखि देखि हमर रचनाकार आ व्यक्ति दुनू कोनो पँच बात सोचि सकबामे सक्षम भेल अछि आ आइयो होइत अछि । मोन पड़ैत छथि पत्नी जे हमर भविष्यचिन्तनविहीन जीवन प्रणालीक दबाव सभ दिन

भोगैत रहलीह आ भोगैत छथि। आ मोन पड़ैत अछि सम्पूर्ण परिवार, भाइ-बहिन, दोस्तमहिम, गाम-घर आ संसार जे घूमि फिरिक' हमर कथाक अंग बनैत रहैत अछि। खासक' मोन पड़ैत अछि दुनू बेटी बिनी आ सिमी (बन्दना आ अर्चना) जे अत्यन्त परिश्रम सँ एहि संग्रहक प्रेस कापी तैयार कयलक।

एहि कथा संकलनक प्रकाशन हेतु हमर अकादमीक अध्यक्ष डा० फणीन्द्र नाथ ओझाक प्रति आभार प्रकट करैत छी। अकादमीक बिद्वान निदेशक आ साहित्य-सेवी बन्धुवर डा० देवकान्त झाकेँ धन्यवाद देबाक औपचारिकता करब हुनकर योगदानकेँ छोट करबाक धृष्टता हैत। मामू (डा० गंगेश गुंजन) जाहि तत्परता आ स्नेह सँ आवरण-सज्जा कयलनि अछि, तकर हुनका सँ अपेक्षे छल।

प्रभास कुमार चौधरी

दीपावली १९८८

सातम दशकक कथा : प्रभासक

- ☐ लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल
- ☐ टूटल कसम : लभरल आखर
- ☐ सुभद्रा-हरण
- ☐ मय विड़नी : तोहर डंक
- ☐ उपरफाँटू
- ☐ गिरगिट
- ☐ क्लान्त
- ☐ दिनचर्या
- ☐ असाध्य
- ☐ अरगनी
- ☐ सूर्यास्त
- ☐ अनचिहार अप्पन
- ☐ धमकी
- ☐ दुख

कथा-प्रभास

लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल

एकटा संकल्पक संग नरेन बाबू लिफाफ टेबुल पर सँ उठा लेलनि—धीरेनक पत्र पढ़िये ली। आर उपाये कोन ? जखन पढ़बेक अछि, त' अखने किऐक ने पढ़ि ली।

लिफाफ हाथ मे लैत देरी मोनक संकल्प गलि गेलनि आ एकटा विचित्र डर पैसि गेलनि। हाथ काँप' लगलनि। थरथराइत आँगुरक बीच दबल लिफाफकेँ ओ उनटि-पुनटि क' देखलनि, अपन पता देखलनि, पठाब'बलाक नाम देखलनि आ फेर लिफाफ टेबुल पर राखि देलनि। लिफाफ फाड़ि क' पत्र पढ़बाक साहस नहि भेलनि। जेना ओहि लिफाफ मे हुनक पुत्र धीरेनक पत्र नहि, कोनो विषाक्त गैस बन्द होइ जे लिफाफ खुजैत देरी हुनकर चारू कात पसरि जयतनि, आ ओना क' साँस बन्द भऽ जयतनि।

दू घंटा पहिने स्कूलक चपरासी लखना अजुका डाक टेबुल पर राखि गेल छलनि। मात्र तीन टा पत्र छलैक—एक टा मे डी०इ०ओ० आफिसक इन्सट्रक्शन्स आ दोसर मे एग्जामिनेशन बोर्डक निर्देश। सभटा बात बुझा दुनू पत्र नरेन बाबू, किरानी बाबूक इलाका लगा देलथिन आ हिदायति कयलथिन जे एकर उत्तर समय पर चलि जाइ। मुदा नरेन बाबू जनैत छलाह जे ओकर उत्तर समय पर नहि जयतैक। काज केँ समय पर करब वा ढंग सँ करब किरानी बाबू बीस बरखक नौकरी मे नहि सिखने छलाह। टोकला वा डँटला पर मिमिया उठैत छलाह—"क्या करें सर। काम ही इतना रहता है। इतना सारा काम और अकेला किरानी। मैं तो कितनी बार कह चुका, अब एक किरानी से चलने का नहीं, एक असिस्टेन्ट चाहिए सर।" हुनकर तर्कक सामने चुप भऽ जाइत छलाह नरेन बाबू। देहातक मामूली स्कूल मे दू-दू टा किरानी रखबाक औकाति कहाँ ? फेर काजो कोन बेसी छैक ? शिकायतो कयला सँ कोनो लाभ नहि छलनि—सेक्रेटरी साहब प्रसन्न छलथिन किरानी बाबू पर।

तेसर पत्र। माने धीरेनक पत्र। मतलब हुनक जेठ बालकक पत्र। लिफाफ देखितँहि नरेन बाबू बेटाक हस्तलिपि चीन्हि गेल छलाह। तैयो जेना विश्वासे नहि भेलनि। पता देखलनि—नरेन्द्र नाथ झा, हेडमास्टर हाइस्कूल, मधुबन, जिला—दरभंगा। पठौनिहारक नाम देखलनि—धीरेन्द्रनाथ झा, रेलवे कालोनी, चिड़ैया टांड पटना। तैयो अइ तेसर पत्र के 'खोलिक' पढ़बाक साहस नहि भ' रहल छलनि, जेना ओ लिफाफ कोनो अजेय दुर्ग हो, जकर भीतर हुनक पुत्रक पत्र बन्दी होनि, जकरा मुक्त करैबाक हेतु अपन समस्त शक्ति लगाब' पड़तनि नरेन बाबू कें। प्रयास ओ कयलनि अछि मुदा सभ व्यर्थ। कतेको बेर दृढ़ प्रतिज्ञ भ' लिफाफ हाथ मे लेलनि अछि, मुदा लिफाफ हाथ मे अबैत देरी मोनक संकल्प बहि जाइत छनि, टूटि जाइत छनि। कागजक देवाल पर हुनकर थरथराइत आँगुर रेंगैत छनि। कागजक ओ पातर देवाल नहि टूटैत छनि।

त' की ओ पत्र नरेन बाबू नहि पढ़लनि अछि ? की ओ नहि जनैत छथि जे लिफाफक अन्धकूप मे जे स्वर बन्दी छैक से की मँगैत छनि हुनका सँ ? ओ जनैत छथि, सभटा जनैत छथि। कागजक पातर देवाल पारदर्शक बनि जाइत छनि आ पत्रक एक-एक आखर स्पष्ट भ' उठैत छनि—चश्माक नीचाँ नुकायल हुनकर थाकल-हारल आँखि सँ किछु नहि बचैत छनि। सभटा देखि लैत छथि ओ। यद्यपि चश्माक लेंस कमजोर छनि। आँखिक ज्योति आर धूमिल भ' गेलनि अछि, लेन्स बदल' पड़तनि। डाक्टर परुकें कहने रहनि मुदा डाक्टरक कहला सँ की होअय ? पाकिट कहनि तखन ने ? डाक्टर त' आरो बहुत किछु कहैत छनि—बेसी काज जुनि करू, ब्लडप्रेसर बढ़ि जायत, चीनी जुनि खाउ, परसेन्टेज पहिने सँ बेसी अछि। इनसुलिन बन्द जुनि करू, डायबटीज अछि। डायट हेल्दी लिअ'।

नरेन बाबू किएक सुनथिन ओकर अण्ट-शण्ट गप्प ? कोना मोन रहनु इ अलाय-बलाय गप्प सभ ? सोचबा सुनबा लेल आरो विषय छनि, मोन रखबा लेल आरो गप्प छनि। हुनका मोन छनि जे दरमाहा तीन सय रुपैया छनि—प्रोभिडेण्ड फंडक रुपैया काटि क'। हुनका मोन छनि जे डेढ़ सौ रुपया प्रोभिडेण्ड फंड सँ लेल गेल लोनक कटैत छनि—इन्सटालमेंट पर। हुनका इहो मोन छनि जे तीस रुपया लाइफ इन्स्योरेन्सक आ एक सय टाका धीरेन कें पठयबाक छनि। बाँचि गेलनि बीस टाका। आ हुनका इहो मोन छनि जे तीन साल सँ खेत मे बज्जर पड़ैत छैक, बेसाहो लगैत छनि। हुनका इहो मोन छनि जे डाक्टर कहने

रहनि जे बेसी सोचल जुनि करू, मानसिक चिन्ता ब्लडप्रेशरक कारण होइत छैक। तैयो हुनका सोचबाक छनि जे बीस रुपैया मे महाजनक दस हजार कर्जक की हेतैक ? सुखेनक दसमाक पोथी कोना औतैक ? वीरेन आ रमेनक हेतु मास्टर कोना रहतैक ? छोटका जीतेन बड़ कमजोर भ' गेल छनि। हमेशा दुखिते रहैत छनि, ओकरो त' डाक्टर सँ देखयबाक छनि। मंझिली बेटी शीलाक बारहम छैक, परूँका ओकरो विवाह त' कराबहे पड़तनि। छोटकी बुलू सभ दिन फ्राक लेल कनैत रहैत छनि—कानो ने कोना ? मात्र एक्केटा फ्राक छैक, सेहो पुरान, फाटल आ भटरंग। फेर डाक्टरक गप्प कियैक सुनथु ? चश्माक कमजोर लेंस के कियैक देखथु ? देखबा सोचबा लेल ओहिना की कम समस्या छनि। महाजनक सूद, घरक निघटल राशन....

आ घरक ध्यान अबिते रमाक ध्यान अबैत छनि नरेन बाबू कें। हुनकर पत्नी रमा। रमा कें देखि हुनका लगैत छनि जेना ओ कोनो मशीन छथि, जाहि मे ने कोनो संवेदना छैक, ने क्लान्ति। ने विश्राम, ने उपराग। छैक खाली काज, मात्र काज। नरेन बाबू नहि जनैत छथि जे रमाक लेल कखन दिन उगैत छनि आ कखन राति होइत छनि। भोरे आँखि खुजला पर नरेन बाबू देखैत छथि जे आँगन बहारल छैक, तुलसीक चौरा नीपल छैक, पूजाक आसन बिछाओल छैक, सराइ कूड़ी माँजल, आ फूल तोड़िक' राखल छैक, आ चुलहा पजारिक', केतली मे चाहक पानि चढा रमा बैसलि छथि। सात बजैत-बजैत सभ कें जलखइ भेटि जाइत छैक आ दस बजे सभ खा पी क' स्कूल चलि जाइत अछि। मुदा रमाक काज दुपहरिया सं पहिने कहियो खतम नहि होइत छनि। छुट्टीक दिन मे नरेन बाबू देखैत छथिन जे एक हाथ सं जीतेन के सम्हारने रमा भोर सँ तीन बजे धरि भंसाघर मे व्यस्त रहैत छथि। खबासिनी नहि छनि, ऐंठो अपने उठब' पड़ैत छनि। सभटा करैत-धरैत दू बजे फुरसति होइत छनि, त' जल्दी-जल्दी कल पर दू लोटा जल ढारि भगवतीक पूजा पर बैसि जाइत छथि। फेर जल्दी-जल्दी दू कौर मुँह मे द' रमा भंसे घरक ओसारा पर पटिया बिछा ओंघरा जाइत छथि। मुदा चारि बजे चाय सभकें भेटिये जाइत छनि। एक्को दिन कनेको देरी भ' जयतैक त' सुखेन आकाश माथ पर उठा लेतनि। चायक बड़ शौकीन अछि ओ। फेर साँझ सँ वैह क्रम। एक हाथ सँ जीतेन कें पकड़ने, डिबियाक धुँआयल इजोतमे रमा चुलहाक आगू मे बैसलि रहैत छथि आ आंगन मे एसेसमेन्टक कापीक पहाड़क बीचसँ मूड़ी उठा नरेन

बाबू कौखन देखि लैत छथिन— "कतेक दुब्बरि भ' गेलि छथि रमा। मात्र कंकालेटा बाँचल छनि, एतेक खों-खों किएक करैत छथि? मुदा अखन इ सभ गप्प नहि। अखन [illegible] सय कॉपी जँचबाक छनि। नरेन बाबू होमवर्क देखैत छथि, मंथली एक्जामिनेशनक प्रश्न देखैत छथि आ सिम्बोल बैसा दैत छथिन। भोजन क' आँगन मे चौकी पर पड़ल-पड़ल हुनकर अलसायल आँखि देखि लैत छनि जे रमा अखनो धरि बाझले छथि। फेर आँखि झँपि जाइत छनि। राति बितला पर कौखन नीन्न टूटि गेला पर नरेन बाबू सुनैत छथि जे रमा नींद मे कुहरि रहल छथि। रमाक कुहरनाइ शतमुखी भऽ आँगनक कोना-कोना मे गनगनाय लगैत छनि आ फेर भरि राति नीन्न नहि होइत छनि नरेन बाबूकेँ, एक्को मिनटक लेल नहि।

टनटन-टनटन.........

स्कूलक घंटी जोरसँ टनटना उठलैक। विचारक शृंखला टूटि गेलनि। चश्मा उतारि कुर्त्ताक छोर सँ आँखि पोछैत छथि नरेन बाबू। डेढ़ बाजि गेलैक-टिफिन। लड़की सभक कॉमन रूम मे हल्ला-गुल्ला शुरू भऽ जाइत छैक सभ दिन जकाँ आ अपन आदति मोताबिक किछु छौंड़ा सभ किरानी बाबूक टेबुलक चारूकात जुमि जाइत अछि। नरेन बाबू अपन आफिसक निरीक्षण कर' लगैत छथि। एकदम स्पेशल हॉल। एक्के टा कोठली मे आलमारी आ रैक राखि क' तीन भाग कयल। पूबसँ आधा मे नरेन बाबूक आफिस छनि आ दोसर भाग के फेर आलमारी आ रैक राखि क' दू भाग मे बाँटि देल गेल छैक—उत्तरबारी भाग किरानी बाबू बैसैत छथि आ दक्षिणबारीकात मे लड़की सभक कॉमन रूम छैक। अइ तीनू कोठलीक बीच बस एक आदमीक आब' जाय जोगर रास्ता छोड़ि देल गेल छैक, आलमारी सभक बीच कनेक गैप छोड़ि क'। मुदा किरानी बाबू अइ बाटे नहि निकलि पबैत छथि। हुनकर तीनमहला धोधि ओहि मे अक्सरहाँ फँसि जाइत छनि आ फेर तीन-तीन आदमी मिलिये क' निकालि पबैत छनि हुनका। नव व्यवस्था लेल सेक्रेटरी केँ नहि कहि सकैत छथिन। मामूली बात पर काल्हिये कतेक पैघ अपमान क' बैसलनि नवका सेक्रेटरी। गाम पर किछु कालक हेतु चारिटा छिट्टाक काज छलैक। स्कूल पर छिट्टा सभ बेकार पड़ल छलैक। नरेन बाबू लखना सँ कहलखिन जे किछु कालक हेतु चारिटा छिट्टा स्कूल पर सँ गाम पर द' अबही. फेर ल' अनिहें। सेक्रेटरी साहब छिट्टा नहि जाय देलथिन। कह' लगलथिन—ई त' गलत बात मास्टर साहेब। अहाँ लोगनी जब स्कूलक चीज अप्पन काज मे लगेबै तखनी स्कूलक काज कोना होतइ। ई त' ठीक नै है।

नरेन बाबूक भीतर किछु खौलि उठलनि। देहक सभटा शोणित चेहरा पर आबि रूकि गेलनि। आब अइ सेक्रेटरी सँ ओ की बाजथु? ओ नीक जकाँ जनैत छथि जे मैनेजिंग कमिटीक जानकार लोकनि दू क्लास पढ़ल योग्य सेक्रेटरी केँ अही निमित्त हुनका माथ पर बैसा देलथिन अछि जे ओ बात-बात पर हुनकर अपमान क' सकनि। नहि जानि कोन-कोन पापड़ बेलि थोड़ेक रुपैया कमैलक आ आइ डोनर बनल फिरैत अछि। अपने त' नरेन बाबूक लाख विरोध कयलोपर स्कूलक पाँच हजार रुपया छुट्टी मे अपना हाथ राखि लेलकनि। कहलकनि-छुट्टी मे स्कूलक मकान बनतै। मकान त' नहि बनलै मुदा सेक्रेटरी साहेबक बेटीक विवाह भ' गेलनि। स्कूलक रेडियो दरबज्जा पर बजैत रहलैक आ स्कूलक कुर्सी पर टांग पसारि बरियाती सभ सिगरेटक धुँआ उड़बैत रहलाह। से सेक्रेटरी चारि टा मामूली छिट्टा लेल हुनकर अपमान क' बैसलनि। गलत-सही सिखब' लगलनि। नरेन बाबूक मुँह मे एकटा मुँहतोड़ जवाब आबि क' रहि गेलनि। मात्र एतबे कहलथिन—"अहाँ ठीक कहै छी सेक्रेटरी साहब। स्कूलक चीज हमरा सभ अप्पन काज में लगाबी से त' ठीक बात किन्नहु नहि।" आ अखन टीचर्स क्लब मे बैसल सेक्रेटरी साहब चाहक स्वाद लैत प्रवचन दैत हेताह "हम त' अहाँ आरक सेवक हती, अहाँ आर के वेतन बखत पर मिले, स्कूल मे पढ़ाइ नीमन से हो, स्कूल के तरक्की हो, सेहे त' हम चाहैत हती।" सभ मास्टर हँ मे हँ मिला रहल हेथिन दरबारी जकाँ आ सेक्रेटरी साहब अपन कान्ह पर पड़ल जोलही गमछा केँ बेर-बेर गर्ब सँ झटकारि रहल हेताह।

स्कूलक तरक्कीक हेतु सेक्रेटरी साहेब वस्तुत: बड़ मेहनति कयलनि अछि। दू क्लास पढ़ल ई शिक्षित सेक्रेटरी क्लास-क्लास मे घूमि क' पूछैत छथिन जे फल्लाँ मास्टर की सभ पढ़ौलथि आ केहन पढ़ौलनि? यदि लड़का सभ कहलकनि जे ठीक पढ़ौलनि तखन, त' जान बचलनि मुदा यदि कहलकनि जे नीक नहि पढ़ौलनि त' फेर ओइ मास्टरक हालत खराब। झट बर्खास्त करबाक प्रस्ताव। शीतल बाबूक मामला मे त' हुनकर मोस्तैदी देखबा जोगर छलनि। कोनो भुसकौल विद्यार्थी कहि देलकनि सेक्रेटरी साहेब केँ जे शीतल बाबू ज्योग्राफी ठीक स' नहि पढ़बैत छथि, आ सेक्रेटरी साहेब भीड़ि गेलाह हुनका डिग्रेड करबा पर। शीतल बाबू असिस्टेंट हेडमास्टर छथि। बेचारे बीस वर्ष धरि बाहर हेडमास्टरी कयलनि, फेर गामक स्कूल जानि असिस्टेंट हेडमास्टर भ' चल

अयलाह। चालीस बर्षक शिक्षक जीवन मे कखनो कोनो शिकायति नहि भेलनि। सभ हुनकर पढ़ाइक प्रशंसक रहलनि, मुदा आइ कोनो भुसकोल विद्यार्थी जे भरिसके कोनो विषय मे पास हो, कहि देलकनि जे हुनका पढ़ब' नहि अबैत छनि, त' दूध महक माछी भ' गेलाह। शिक्षकक पढ़ाइक निर्णयक एकटा जाहिल विद्यार्थी सँ बढ़ियाँ आर भँये के सकैत अछि? नरेन बाबू आड़ गेलाह—शीतल बाबू कै डिग्रेड नहि होब' देलथिन। ओ जनैत छथि जे सेक्रेटरी साहेब केँ मोन मे की छनि। मुदा ई त' अन्याय थीक, पक्षपात थीक।

"चाह, मालिक।"

चिहुँकि क' मूड़ी उठौलनि नरेन बाबू। लखना चाह लेने ठाढ़ छलनि। चाहक चुस्की लैत देरी मोन मे कने स्फूर्त्ति भरि गेलनि। किछु हो, लखना चाह बड़ सुन्दर बनबैत अछि—लिकर स्ट्रौंग, सोल्युशन हार्ड, स्वाद विलक्षण। नरेन बाबू जल्दी-जल्दी चुस्की लेब' लगलाह। झट कप खाली भ' गेलनि। तखने नरेन बाबू के लगलनि जे हुनको जीवन अही प्याली सन छनि। क्षण भरि पहिने एहि प्याली मे सभ किछु छलैक, उष्णता आ उफान। आब किछु नहि छैक, खाली पड़ल अछि—पूर्णतः रिक्त। तहिना नरेन बाबूक जीवन मे काल्हि सभ किछु छलनि, आइ किछु नहि छनि—बिलकुल खाली प्याली जकाँ। काल्हि आ आइ मे कतेक अन्तर छैक!

सत्ते, काल्हि आ आइ मे बड़ अन्तर छैक। लगैत छैक जेना काल्हि आ आइक अन्तराल सय बरखक होइ, हजार बरखक होइ, ततेक पैघ शून्य होइ दूनूक बीच जकरा कहुना पाटल नहि जा सकय। अखन तीनिये बरख त' भेलैक अछि आ तीनिये बरखमे सभ किछु बदलि गेलैक। धरती बदलि गेलैक, आकाश बदलि गेलैक। तीन बरख पहिने नरेन बाबूक जीवनमे सभ किछु छलनि—उमंग, आशा आ रंगबिरंगी स्वप्न। आ ओ स्वप्न निराधार त' नहि सजौने छलाह नरेन बाबू? धीरेन छले तेहन जे ओकरा पर आस लगाओल जाय, स्वप्न सजाओल जाय। अपरके स्कालरशिप परीक्षा मे जिला मे प्रथम आयल छल। फेर अपने स्कूल मे नाम लिखा देलथिन नरेन बाबू छठमा क्लास मे। मुदा नरेन बाबू बेसी दिन नहि राखि सकलथिन ओकरा अइ स्कूल मे। धीरेन मे एकटा बड़ खराब आदति छैक। ओकरा गलत बात सहले नहि जाइ छैक। मन्नू बाबू 'अग्रसर' माने तैयारी आ आतपत्र' माने उपर पढ़ौलथिन आ धीरेन भीड़ि गेलनि हुनका सँ। नरेन बाबू धर्मसंकट मे

पड़लाह। धीरेन के दण्ड दितथिन त' ओकर स्वाभिमान केँ चोट लगितैक आ यदि छोड़ि दितथिन त' लोक कहितनि—अपन बेटा छलनि, तेँ छोड़ि देलथिन। लोक निन्दा सँ डर' पड़लनि। धीरेन केँ दण्ड देलथिन। बेंत सँ पिटलथिन ओकरा—जिनगी मे पहिल आ अन्तिम बेर। आ तहिया सँ हुनकर जीवन एकटा नव मोड़ लेलकनि। धीरेन जिद पर अड़ि गेल—"हम नहि पढ़ब एहि स्कूल मे जत' हमरा खाली एहि वास्ते पीटल गेल जे हम हेडमास्टरक बेटा छी।" सभ बुझा क' हारि गेल मुदा धीरेन टस्स सँ मस्स नहि भेल। लाचार नरेन बाबू लहेरियासरायक एकटा नीक स्कूल मे नाम लिखबा देलथिन। बंगाली टोला मे अप्पन डेरा छलैक, उपर सँ पचास टाका नगदो देब' लगलथिन।

धीरेनक माँग बढ़िते गेलैक, बढ़िते गेलैक, अस्सी……सय-सवा सय-डेढ़-सय। आ ओही अनुपात मे तरह-तरहक गप्पो उड़' लगलैक—धीरेन त' किताब छूबितो नहि छैक—राति-राति भरि निपत्ता रहैत छैक—खाली सिनेमाक चक्कर लगबै छैक। आर त' आर, छौंड़ी सभक चस्का सेहो लागि गेलैक अछि। दिन-राति बंगाली छौंड़ी सभक पाछाँ बौआयल फिरैत छैक। सुनलियैक अछि जे पानि जकाँ रुपया बहबै छैक ओकरा सभ पर। नरेन बाबू सभ अकठबैत गेलाह। एक कान सँ सुनि दोसर कान सँ बहार करैत रहलाह। हुनका विश्वास छलनि अपन रक्त पर। धीरेन हुनकर विश्वास केँ धोखा नै देलकनि। फर्स्ट डिवीजन सँ मैट्रिक पास कयलक, नीक नम्बरक संग। नरेन बाबूक मोन नाच' लगलनि, सपना सत्य होइत लगलनि। रुपैया बेसी खर्च भेलनि त' भेलनि, रुपैया त' हाथक मैल छैक। धीरेन बायलोजी लं क' पटना साइन्स कालेज मे प्रवेश कयलक।

फेर सभटा उनटि-पुनटि गेलैक। डायबेटीज आ ब्लडप्रेशर तेना ने पकड़लकनि जे छः मास बिछौने सँ नहि उठि सकलाह। सभटा जमा पूँजी खतम भ' गेलनि। ऊपर सँ कर्जो। तखन जीवनक सभसँ पैघ आघात। धीरेन आइ० एस० सीक परीक्षा छोड़ि देलकनि, साइन्स नहि पढ़त। नरेन बाबूक स्वप्न टूटि गेलनि। बेटा केँ डाक्टर बनयबाक सपना। कर्जक बोझ उपर सँ लदैत गेलनि। बड़की बेटी लीलाक विवाह आ द्विरागमन—कर्ज पांच हजार रुपया। सुरेनक उपनयन—कर्ज दू हजार रुपया। मायक श्राद्ध—कर्ज पांच हजार रुपया। कर्जक दलदल मे फंसि नरेन बाबू दुइये बरख मे बूढ़ भ' गेलाह—चेहरा पर झुर्री लटकि गेलनि।

भाग्य आस जगा जगा तोड़ैत रहलनि, उठा-उठा पटकैत रहलनि। आसक क्षीण किरण—धीरेन आइ० ए० कयलकनि, फर्स्ट डिवीजन भेटलैक। औनर्स ल' बी० ए० मे एडमिशन लेलक। कर्जक बोझ सँ दबल नरेन बाबूक जिनगी घिसियाइत रहलनि—बस एक आस पर। धीरेन आइ० ए० एस० कम्पीट करत। मुदा धीरेन बेइमान बहार भेलनि। ठीक परीक्षे बेरमे दुःखित पड़ि गेलनि। नरेन बाबू ई धक्का नहि सहि सकलाह। मोन टूटि गेलनि। आब···आब···

आ छुट्टी बिता पटना जाइत काल धीरेन कहने छलनि—हम जनैत छी बाबूजी, हमरे कारण ई घर उजड़ि गेल। अहाँक जिनगी फोंक भ' गेल, मायक देह गलि गेलैक। हम जनैत छी, हम अपन भाइ-बहीनक दुश्मन छी। हमरे कारण ओकर सभक समुचित भरण-पोषण नहि भ' रहल छैक। ने अपेक्षित अन्न वस्त्र भेटैत छैक, ने उचित शिक्षा। मुदा आब अहाँ चिन्ता नहि करू। हमरा जेना हैत, अपन व्यवस्था स्वयं करब। अहाँ सुखेन आ धीरेनकेँ देखियौक, मायकेँ देखियौक, अपन इन्तजाम हम क लेब, जेना हैत।

आ महीना बितलैक नहि कि धीरेनक पत्र टेबुल पर पड़ल छनि। नरेन बाबू जनैत छथि जे धीरेन की लिखने हेतनि। एक बेटा एक बाप सँ दाम मँगने हेतैक ओइ रंग-बिरंगी स्वप्नक, जे बाप ओकरा आसपर देखने छलैक। एक बेटा एक बाप सँ मूल्य मँगने हेतैक ओइ आसक, ओइ उम्मीदक, जे बाप, बेटा पर लगौने छलैक आ जकर एक-एक किस्त ओ बाइस साल सँ चुकबैत रहल अछि—मरि खपि क'। मुदा आब छाती मे दम नहि रहलनि। आब......

टन···टनटन···टनटन।

घंटी फेर टुनटुना उठलैक। नरेन बाबू सिमसिमायल आँखिये देवाल पर टाँगल चार्ट दिस तकलनि—फाइडे फिफ्थ पीरियड, क्लास टैंथ, एलीमेन्ट्री फिजिओलौजी आ हाइजीन। चौक आ डस्टर ल' ठाढ़ भेलाह। तखने लिफाफ पर दृष्टि गेलनि। एक क्षण देखैत रहलाह। फेर लिफाफा उठा क' पाकिटमे रखैत सोचलनि—अइ पीरियडक बाद अबस्से पढ़ि लेबैक।

एक झुण्ड छौंड़ा सभ हुल्ला मचबैत बरण्डा पर दौड़ि गेल। ●

अक्टूबर १९६२

टूटल कलम : लभरल आखर

आइ अहाँक कथा अवस्से लिखि दितहुँ ममता। विश्वास करु, आइ संकल्पपूर्वक अहीक कथा लिख' बैसल रही। मुदा एकटा अपरिचित स्त्री बीच मे टपकि बाधा ठाढ़ क' देलक। विश्वास करु ममता, ओ स्त्री एकदम अपरिचित छलि। कमसँ कम आइ सँ पहिने ओकरा कहिओ देखने नहि छलियैक। प्रायः देखियो क' अनठा देने छलियैक।

अहाँ कहब, ई एकटा बहाना थिक—गढ़ल गप्प। हमर कथा नहि लिख' चाहैत छी, नहि लिखू। अइ मिथ्या बहानाक कोन काज? एकटा अपरिचित स्त्री हमर कथा लिखब निषेध क' देलक आ अहाँ झट द' मानि गेलियैक! बहुत खूब! देखैत छी, ओकर बड़ जोर छैक अहाँ पर!

अहाँकेँ अधलाह नहि लागय त' हम कहि दी ममता जे ओकर सत्ते बड़ जोर छक! अधिकारपूर्वक कहि गेल, "आइ अहाँ ममताक कथा नहि लिखि सकैत छी! लिखबाक अछि त' हमर कथा लिखू।" हम ओकर आदेश टारि नहि सकलियैक ममता।

किछुये काल पहिने आयलि छलि। बाहर प्राणहीन नीरबता छलैक। उदास राति अन्हरियाक आलिंगन मे बेसुध पड़ल छल। दिन भरिक थकनीक बाद हवा मे एकटा चुप्पी छलैक—आपरेशनक पूर्व रोगीक विकल चुप्पी सन! एहन उदास आ सुन्न रातिमे अहाँ मोन-पड़ि जाइत छी आ कुरुप-कटाह अन्हरिया अहाँक स्मृतिक किरण सँ जगमगा क' उज्ज्वल, प्रोज्ज्वल आ भावुक बनि जाइत अछि।

आइयो अन्हरिया रातिकेँ अहाँक स्मृतिक रोशनीसँ उद्भासित कयने बैसल छलहुँ कि अपन देल वचन मोन पड़ल। अहाँक कथा लिखबाक वचन। झट कागज कागज कलम ल' बैसि गेलहुँ।

तखने ओ अपरिचित स्त्री टपकि पड़लि। हम ओकर बात पर्यन्त सुनबा लेल तैयार नहि छलियैक। तामसेँ मिजाज घोर भ' गेल छल।

हमर अनिच्छाक उपरान्तो ओ अपन कथा कहैत गेलि । हम मिथ्या नहि बाजब ममता, ओकर कथा सुनि अहाँक कथा लिखबाक संकल्प कखन बिसरि गेल से अपनो पता नहि लागल । जोर नहियो दैत, तैयो ओकरे कथा पहिने लिखितियैक । ओकर कथा मे किछु तेहने असरि छलैक ।

नहि ममता, ओइ स्त्रीक सम्बन्ध मे अहाँ अलट-बिलट नहि सोचि सकैत छी । ओकरासँ ईर्ष्याक क' अहाँ बादमे पछतायब, अहाँक माथ लाजे झुकि जायत : नहि जानि, अहाँ लोकनि एतेक शक्की कियैक होइत छी, अपन प्रेम तक पर विश्वास नहि क' सकैत छी ।

नहि क' सकैत छी त' जुनि करु । मुदा हमर अनुरोध अछि जे ओइ स्त्रीक प्रति अपन मोन मे कोनो दुर्भावना नहि लाउ । बहुत छोट भ' जायब अहाँ ।

आ अहाँ ककरो समक्ष छोटबनी, ई हम बर्दास्त नहि क' सकैत छी, सोचियो नहि सकैत छी । अहाँ बहुत उँच छी—हमर भावनोसँ ऊँच ! दृष्टिक सामर्थ्योसँ ऊँच । हम अहाँक प्रेम पौलहुँ अछि, तकर स्मरणमात्रसँ गर्वित भ' उठैत छी हम ! तेँ हमर अनुरोध अछि जे सभ किछु सुनबासँ पूर्व किछु अलट-बिलट सोचि हमर विश्वास, हमर प्रेमकेँ अपमानित नहि करु ।

आइ अहाँक गप्प सभ बेर-बेर मोन पड़ि रहल अछि—एक-एक क' कतेको गप्प ! अहाँक ओ गप्प सभ जे अइ सुन्न जिनगीक एकमात्र पूँजी अछि, जकरा बेर-बेर गनि क', दोहरा क' सन्तोष नहि होइत अछि जेना कोनो कंजूस अपन जमा पूँजी बेर-बेर गनियो क' नहि थकैत अछि । प्राय: ओकरा आशा रहैत छैक जे बेर-बेर गनलासँ, भ' सकैत अछि, जे जमा मे किछु वृद्धि भ' जाय ।

हम लिखैत छलहुँ आ अहाँ चुपचाप बैसलि देखैत रहैत छलहुँ । कोखन लिखल अंश उठा क' पढ़' लगैत छलहुँ । एक दिन नहि जानि की फुरल जे अहाँ हमरा हाथसँ कलम छीनि ओकरा नीक जकाँ देखैत कह' लगलहुँ—"जनैत छी प्रभास । प्रत्येक स्त्री एकटा कलम होइत अछि । रोशनाइ नहि रहए, कलम बेकार आ अकार्यक भ' जाइत अछि । तहिना स्त्रीक जीवन निरर्थक भ जाइत छैक, जखन ओकर जीवनके ककरो उदार प्रेमक अजस्त्र स्रोत नहि रहैत छैक ।" अहाँक कथनक गूढ़ अर्थ बहुत बादमे स्पष्ट भेल छल ।

हमर एकटा बड़ खराब आदति छल । हम रोशनाइ घर पर रखबाक आ अपनेसँ कलम भरबाक झंझटिसँ पड़ाइत रही । रोशनाइ घटि जाय त' कोनो परिचित दोकान पर सेम्पुलक शीशीसँ भरवा ली वा कोनो दोस्तक घर जा' कलम थमा दियैक जे रोशनाइ भरि दे । अहाँ जनैत छी, हम कंजूसीक नीयतिसँ ई हरगिज नहि करैत छलहुँ, हमर अभ्यासे बिगड़ल छल ।

एक दिन अहाँ पारकर क्विकक बड़का शीशी लेने अयलहुँ आ टेबुल पर राखि कह' लगलहुँ—"आइसँ अइ रोशनाइक सिवा दोसर कोनो रोशनाइ अपन कलममे भरी त' रोशनाइ नहि, हमर शोणित भरी । जखन जे भेटि जाइत अछि, ढारि दैत छियैक ! निर्दयी ! अहाँ कलमक व्यथा कियैक नहि बुझैत छियैक । कतेक देखियौक जे बेर-बेर रोशनाइ बदललासँ एकर आखर केहन भटरंग भ' गेलैक अछि । एतेक अनाचार कयला पर आर कतेक दिन लिखि सकब एकरासँ ।"

हम अहाँक बात मानि लेलहुँ ममता । आइ धरि मानैत आबि रहल छी । मुदा कोखन सोचैत छी जे हमर पुरना अभ्यास कतेक सुन्दर छल । सुन्दर अइ लेल जे हमर वैह अभ्यास अहाँकेँ हमरा निकट आनि देलक । मोन अछि ओ राति जहिया पहिल बेर डेराइत-डेराइत अहाँसँ किछु मँगने रही ।

राति प्रात दिश डेग उठौने छल । तैयो अन्हार ततेक गाढ़ रहैक जेना घोरल कारी अमौट । मोन करय त' चम्मच मे उठा परसि जाइ । अहाँ अपन कोठलीमे परीक्षाक तैयारीमे जागल रही । हमर आ अहाँक कोठलीक बीचक सड़क पर म्युनिसपैल्टीक लाइट ओइ दिन दसे बजे मिझा गेल रहैक आ सड़क पर गरदनि उठौने ठाढ़ बिजलीक उजरा खम्भा अन्हारमे तेहन लागय जेना कारी कपार पर उजरा चाननक लम्बा ठोप ।

अहाँक कंजूस मामा बिजलीक लाइन नहि लेने छल । अहाँ लैम्पक रोशनीमे टेबुल पर झुकलि किछु पढ़िरहल छलहुँ । पीअर रोशनीक लचकैत बाँहि खिड़कीसँ बाहर नमरि दूर तक पसरल अन्हारकेँ छूबि रहल छलैक । अहाँक थाकल अलसायल आकृतिकेँ देखि भ्रम होइत छल जे लैम्पेक रोशनी नारी आकृतिमे टेबुल पर झुकल बैसल अछि !

हम असमंजसमे पड़ल रही ! कतेको बेर सोचलहुँ जे अहाँक खिड़की लग जा माँगि ली ! मुदा प्रत्येक बेर कोनो अज्ञात भय आ संकोचसँ उठल डेग जमीनमे सटि जाय !

एकटा अपूर्ण कथा पूरा करबाक छल ! बीचहिमे रोशनाइ घटि गेल छल। बड़ मस्किलमे पड़ल रही। ओतेक राति क' ककरो उठा क' रोशनाइ मंगबाक अर्थ छल गारि श्रापकें नोत देब आ बिना कथा सम्पूर्ण कयने सुतबाक चेष्टा करबाक अर्थ छल बिना परीक्षामे सम्मिलित भेने अखबारमे प्रकाशित परीक्षाफलमे अपन नाम ताकब।

खाली अहींटा अपन कोठलीमे जागलि परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त रही। कतेको बेर सोचलहुँ जे हर्ज कोन, अहींसँ माँगि लैत छी। मुदा साहस जबाब द' जाय !

तखन अइ कोठलीमे अयला मात्र दुइये मास भेल छल ! दू मासमे ककरो सम्बन्धमे जतेक जानल जा सकैत छैक, ओइसँ बहुत अधिक हम अहाँक विषयमे जानि गेल छलहुँ। तकर ई अर्थ कथमपि नहि जे हम नारीक सम्बन्धमे विशेष जिज्ञासु छी। अहाँ नीक जकाँ जनैत छी। अहाँ छलहुँ तेहने जकर विषयमे उत्सुकता हो; किछु जनबाक इच्छा जागय।

गृहपति प्रशान्त मुखर्जीक भगिनी ! नाम ममता चटर्जी। म-म ता तीन अक्षर, एक मात्रा। चटर्जी—उच्चकुलशीलक द्योतक। बी० ए०क छात्रा। रंग खूब साफ नहि मुदा ओइमे एकटा तेहन चमक जेहन स्वच्छ धोअल आकाशक होइत छैक। चेहराक पानि ततेक तेज जेना पानि भरल मेघ आब बरसल, आब बरसल। आँखि तेहन जे डुबला पर पतो नहि लागय आ नारीत्व ततेक जे जकरे नजरि पड़ैक सैह बन्हा जाय।

बहुतोक मुँहसँ सुनि क' बुझने रही जे अहाँक बाप कलकत्तामे डेढ़ सौ रुपया महीना पबैत छथि आ अहाँक माय प्रत्येक साल परिवारमे एक आदमीक खर्चा बढ़ा दैत छथि। बहिन-बहिनोइक सहायता करबाक प्रबल इच्छा ओ अहाँक पढ़ाइक वास्ते अहाँक मामा अहाँकें अपना लग राखि लेने छल।

सत्ते, ओ अहाँकें बड़ मानैत छल। अहाँक सुविधाक ओकरा बड़ ध्यान रहैक। भोरे अन्हारे उठि जखन अहाँ ओकर स्थूलकाय पत्नी आ आधा दर्जन बायापुताक हेतु नौ बजेसँ पहिने जलखइ आ भोजन दुनूक व्यवस्था क' दियैक, साढ़े नौ बजे कालेजक बस पकड़बाक छुट्टी अहाँकें अवस्से द' दैत छल। जाधरि अहाँ कालेजसँ नहि घुरियैक, ओकर समस्त परिवार अहाँक प्रतीक्षा करय। बस कनियो

अबेर सँ पहुँचैक त' अहाँक मामा अन्देसासँ बेर-बेर सड़क दिस ताकय। अहाँकें देखैत देरी सभक चेहरा पर अपूर्व सन्तोष आ निश्चिन्तताक भाव पसरि जाइ। कौपी-किताब-राखि अहाँ तुरन्त भनसा घरमे जुटि जाइ। मुदा दस बजैत-बजैत अहाँक दयालु मामा अवस्से फुरसति द' दिअय। सभ खा-पी क' चैन भ' जाय। अहाँकें भोरमे समय कम भेटय, तेँ ऐंठ बरतन बासन रातियेमे माँजि ली। तखन अहाँ किताब ल' परीक्षाक तैयारीमे बैसि जाइ। कौखन-कौखन भोरुकवा उगि जाय मुदा अहाँ बैसले रहि जाइ। थाकल, कलान्त मुदा दृढ़ संकल्प। हम सोचि सोचि क' आश्चर्यचकित रहि जाइ जे अहाँ सुतैत कखन रही, विश्राम कखन करैत रही। जतेक अहाँक बारेमे सुनने रही, जानि पौने रही, ओतबे अहाँ पर श्रद्धा भ' गेल छल।

तैयो ओतेक राति क' अहाँसँ रोशनाइ मंगबाक साहस नहि होइत छल। अपन बिगड़ल अभ्यास पर तामस भेल मुदा ताहिसँ कोनो काज कहाँ बनल ? विवशता हमरा अहाँक खिड़की लग ठाढ़ क' देलक। "सुनू।" हम रुकि रुकि क' बाजल रही। अहाँ चिहुँकि क' मूड़ी उठौलहुँ। किछु क्षण चकित भेल तकैत रहलहुँ आ फेर उठि क' खिड़कीक समीप अयलहुँ।

"एक पेन रोशनाइ द' सकब अहाँ ?" हम अपन बात डेराइत-डेराइत कहलहुँ। हमरा हाथसँ कलम ल' क' रोशनाइ भरि देलहुँ अहाँ ! कलम वापस लैत काल हम औपचारिकता निर्वाह करैत बजलहुँ—"धन्यवाद।"

अहाँ किछु नहि बजलहुँ। मुदा घुरैत काल आँखि दोसर तरफ रहलो पर हमरा लागल जे खिड़की पर ठाढ़ि अहाँ हमरे दिस ताकि रहल छी। भरिसक हमर भ्रम रहल हो। आइ धरि ई बात हम अहाँसँ पुछियो नहि सकलहुँ अछि।

तहियासँ जखन रोशनाइ सठि जाय, हम अहाँक खिड़की लग जा कलम थमा दी। अहाँ कहियो किछु नहि बाजी। चुपचाप कलम भरि क' घुरा दी।

एक दिन अहाँ बड़ कटाह गप्प बाजि उठलहुँ। कलम भरि क' दैत कहलहुँ—"आब इ बहाना बड़ पुरान भ' गेल। कोनो नव ताकि लिय'।"

अहाँक बात पर तिलमिला उठल छलहुँ हम। अहाँ हमर नीयति पर सन्देह करैत छी, से जनितहि मोनक समस्त संचित श्रद्धा नहि जानि कत' लुप्त भ' गेल। मोनमे एकटा तीक्ष्ण कटुता भरि गेल—"अपनाकें की बुझैत अछि ?"

अहाँक कोठली दिस खुजवला खिड़की हम बन्द क' देलियैक जाहिसँ अहाँ पर नजरि नहि पड़य। मुदा दिमागसँ अहाँक ध्यान नहि हटि सकल ! घण्टो कोठलीमे अहींक बात सोचैत रही।

तखन एक राति अप्रत्याशित घटना घटल। हम लाइट मिझा क' अन्हारमे पड़ल रही। नींद हमरासँ किछु रूसि जकाँ गेल रहय। अन्हारमे घण्टो बिछौन पर पड़ल रही मुदा आँखि नहि लागय। जेना पपनीमे किछु अँटकि गेल रहय जे ओकरा खस' नहि दैक।

अन्हारमे पड़ल हम नहि जानि की सोचैत रही कि भक द' कोठलीक लाइट जरि उठल। अकचका क' उठलहुँ। जे किछु देखलहुँ ताहि पर विश्वासे नहि भेल। कोठलीक बीचोबीच अहाँ ठाढ़ि रही।

अहाँक बात सुनि देहमे आगि लागि गेल छल। व्यंग्य करैत अहाँ बाजलि रही—"एना खिड़की बन्द क' घरमे नुकयलासँ मोनक चोर नहि नुका सकब। अहाँ व्यर्थ अपना पर अन्याय क' रहल छी।

क्रोधे समस्त ज्ञान आ विवेक लुप्त भ' गेल छल। पागल जकाँ चिचिया उठल रही—"हम अहाँ लेल मरि रहल छी, एकाएक एतेक पैघ भ्रम अहाँ कें कोना भ' गेल ? की बुझैत छी अपना कें अहाँ ?"

हमर उत्तेजना देखि अहाँ सकपका गेल रही। किछु क्षण स्तब्ध ठाढ़ि रहलाक बाद शान्त मुदा भर्त्सनाक स्वरमे कहने रही—"एतेक पैघ भ्रम हमरा कहियो नहि भेल अछि। एतेक राति क' हम अहाँक कोठलीमे एकसरि आयलि छी। एना चिचियाक' अहाँ मोहल्लावला सभकें जगाक' देखब' चाहैत छियैक जे ई चरित्रहीन स्त्री राति क' एकसरि अहाँसँ प्रेमक भीख माँग' आयलि अछि।"

हम लाजे गड़ि गेल रही। किछु क्षण कोठलीमे मौन रहल। हम नहि सोचि सकलहुँ जे की बाजी। अहूँ प्रायः ओही स्थितिमे रही। अहाँ जयबाक हेतु दरबज्जा दिस बढ़लहुँ। तैयो हमर बकार नहि फूटल।

दरबज्जा लग आबि बिना हमरा दिस तकने अहाँ बाजलि रही—"ओइ दिन हम कने हँसीक' देलहुँ, से एतेक लागि गेल अहाँकें। मुदा आइ, रातिक' एकसरि हम कोन विश्वास पर अहाँक कोठलीमे आयलि छी, से अहाँकें नहि सुझैत अछि। अहाँ आन्हर छी।

अन्हार फाटि गेल आ हम दौड़िक' अहाँक बाट छेकि लेने रही—"नहि जाउ ममता। स्वीकार करैत छी, हम अपन मोनसँ लड़ि रहल छलहुँ !"

अहाँक संग-संग दुनियाक सभटा खुशी आ सभटा सुन्दरता हमर कोठलीमे घुरि आयल छल। लागल जेना हमरालोकनि बहुत दिन सँ अपना कें नुकौने रही आ आब सभटा प्रगट भ' गेलापर एकदम खुजि गेल रही। कतहु कोनो संशय नहि, कोनो पार्थक्य नहि। ततेक निकटता जें कोनो दूरी नहि, ततेक विश्वास जे किछुओ अदेय नहि।

हम लिखैत छलहुँ, अहाँ चुपचाप बैसलि देखैत छलहुँ। लिखल अंश पढ़ैत छलहुँ, अपन पसिन्द आ आलोचना सुनबैत छलहुँ। कोनहु जबर्दस्ती अपन पसिन्दक' कोनो चीज लिखा लैत छलहुँ।

हम थाकि क' बिछौनपर पड़ि रही आ अहाँ झुकि क' हमर केशमे आँगुर फेरैत, हमर माथ, मुँह आ सम्पूर्ण देह पर स्नेह भीजल हाथ फेरैत फुसफुसाक' गप्प करैत जाइ। बहुत रास गप्प—अप्पन गप्प, अप्पन लोकक गप्प, दुनियाक गप्प, दुनियाक लोक गप्प। ओइ दिन हमरा ई डर नहि भेल जे हमर एतेक सुख संसारकें देखल नहि जयतैक !

अहाँ बी० ए० कयलहुँ। हम बधाइ देलहुँ, मधुर बँटलहुँ। मुदा हमर ई सुख स्थायी नहि भ' सकल। एक राति अहाँ अयलहुँ त' हमरा चीन्हब कठिन भ' गेल। चौबीस घण्टामे लाल गुलाब पीअर कनैल बनि गेल छल।

अहाँ बिदा माँग' आयल रही ! भोरे अहाँकें कलकत्ता जयबाक छल। ओत' अहाँक विवाह ठीक भ' गेल छल। हम बहुत किछु कह' चाहैत रही, मुदा अहाँ नहि कह' देलहुँ। अपनो किछु नहि बजलहुँ। चुपचाप अवसन्न बैसलि रही बड़ी काल धरि। जाइत काल कहने रही—"कलम मूक होइत अछि प्रभांस। ओ अपन पसिन्दक अभिव्यक्ति नहि क' सकैत अछि। संसार जबर्दस्ती ओइमे अनिच्छित रोशनाइ भरि देलकैक अछि। ओकर आखर भटरंग भ' जयतैक। कियैक त' आ अतीत अवशेष नहि मेटा सकत।

अहाँक अनुपस्थितिमे सभ किछु कटाह आ असह्य बनि गेल छल। राति अन्हारमे सिसकैत रहय आ दिन इजोतमे ओंघाइत। हम बताह जकाँ राति बितला पर अन्हारमे आँखि फाड़ि-फाड़ि क' अहाँक कोठली दिस ताकल करी जाहिमे अहाँक मामा किरायादार राखि लेने छल।

दू बर्षक सुदीर्घ अवधिक उपरान्त एक दिन कलकत्ता मे अहाँ सँ भेट भेल छल । एकटा किताबक प्रकाशनक सम्बन्धमे कलकत्ता गेल रही । अहाँकेँ देखिक' हमरा चिन्हबामे भ्रम होम' लागल छल ! भरिसक्के कोनो पूर्व परिचित अहाँकेँ ओइ रूपमे चीन्हि सकैत । दुइये बर्षमे अहाँ कतेक बदलि गेल रही ।

अहाँ आफिस सँ डेरा जाइत रही । अहाँ नौकरी करैत छी, पति नहि, माय बापक संग रहैत छी, से जानि बड़ आश्चर्य एवं उत्सुकता भेल छल । अहाँ टारि देने रही — '-सभ क्यो त' अहीं सन नहि अछि प्रभास, जे पुरने कलम घसैत रहय । पसिन्द बदल'मे कतेक समय लगैत छैक । नव माडेल भेटि गेल, पुरानकेँ फेकि देलहुँ वा बेचि देलहुँ — इएह त' संसारक नियम छैक ।"

अहाँ आग्रह नहि कयने रही, तैयो हम अहाँक घर तक गेल रही । दू कोठलीक ओ मकान अहाँक भाइ बहीनक गर्दम—गोल सँ कोनो चिड़ियाघर जकाँ लगैत छल । अहाँक बाप खाली चौकी पर बैसल बीड़ी पीबि रहल छलाह वा अहाँक माय परिवारक संख्या वृद्धिक एकटा नव इश्तहार बाँटि रहल छलीह ।

अहाँ सभ सँ परिचय करौलहुँ । माय-बाप, गुली, बुली, खोखन, तपन...... अहाँक बाप-माय दू चारिटा औपचारिक प्रश्नो पुछलनि मुदा हुनका लोकनिक शंकाग्रस्त दृष्टि हमरा सँ नुकायल नहि रहल । अहाँक माय-बापकेँ डर छलनि जे हम कहीं अहाँकेँ ल' ने उड़ी । (छलनि की नहि ?)

हम जल्दिये अगुता गेल रही । साँस औनाय लागल छल । प्रायः अहाँ अही लेल चलबाक आग्रह नहि कयने रही ।

अहाँ विदा कर' किछु दूर तक आयलि रही । बाट मे हम अपन प्रस्ताव रखलहुँ । अहाँ तेना पुचकारि देलहुँ हमरा जेना हम कोनो अबोध शिशु होइ । हमर हाथ अपन मुट्ठी मे दबा कहने रहीं—"नहि प्रभास ! आब ई सम्भव नहि । कलम बेकार भ' चुकल अछि । आब अइमे ओकर इच्छित रोशनाइयो पड़तैक, तैयो सुन्दर आखर नहि बनि सकतैक आ अहाँक आँगुर ढ़बकल रोशनाइक दाग सँ भरि जायत ।"

ओही दिन हम घुरि अयलहुँ । विदा होइत काल अहाँ कहने रही— "हमर कथा अवस्स लिखब, प्रभास ! खाली नाम बदलि देबैक । नहि हो, सत्ते लिखि देबैक ।" हम वचन देने रही ।

आ आइ एतेक दिनक बाद अपन देल वचन पूरा कर' लगलहुँ, त' एकटा अपरिचित स्त्री बीचमे टपकि पड़लि । ऊपर सँ तमाशा ई जे हम ओकरा पर रुष्टो नहि भ' सकैत छियैक ।

अहाँ जनैत छी, ओ अबैत देरी की कहलक ? कह' लागलि—"अहाँ ममताक कथा लिखि रहल छी ! अहाँ मूर्ख छी ।"

बिगड़ि क' हम कोनो कठोर बात कह' लगलियैक मुदा बोल नहि फूटल ।

"अहाँ हमरा नहि चीन्हि रहल छी ?" ओ कह' लागलि—"अहाँ सन कायर भावुक सदिखन देरी सँ चीन्हैत अछि हमरा । हम एकटा स्त्री छी जे सैंकड़ो बर्ष धरि सात समुद्र पार कारागृहमे बन्द छलहुँ । हमर भक्त लोकनि हमरा ओइ कारागृह सँ छोड़ौलनि, मुक्ति देलनि । अपन रक्त सँ हमर पैर धोलनि । आबो नहि चीन्हि सकलहुँ हमरा ?"

हमरा चुप्प देखि ओ फेर बाजलि – "आब प्रायः अहाँ चीन्हि रहल छी हमरा । यदि चीन्हि सकलहुँ अछि, त' बिलम्ब जुनि करू । चलू, ओत' चलि क' हमर कथा लिखू, जत' अहाँक हजारो भाइ अपन रक्त सँ हमर कथा लिखि रहल छथि । तकैत की छी, हम खाली एकटा स्त्री नहि, माय छी — अहाँ सभक माय । आइ फेर एकटा निर्लज्ज आक्रमणकारी अहाँक मायकेँ बन्दिनी बनाब' चाहैत अछि, अहाँ ओकर रक्षा नहि करबै ? निर्लज्ज पड़ोसीक बर्बर आक्रमणक प्रतिकार नहि करबै ?"

ई कहि ओ स्त्री जाय लागलि । किछु दूर जा' क' घुरिक' हमरा लग आबि हमर माथ पर, ममत्व भीजल हाथ फेरैत बाजलि — "ममता के लिखि दियौक जे हम अहाँकेँ ओकर कथा नहि लिख' देलहुँ । ओ रुष्ट नहि हैत, अभिमान करत । हम ओकरो माय छियैक ।

ओ स्त्री चलि गेलि आ हम अहाँकेँ पत्र लिख' बैसि गेलहुँ ।

हम हिमगिरीक उतुंग शिखर पर कथा लिखब, अहाँ घर-घर कथा लिखू । स्नेहक गर्म ताग सँ कथा बुनू । हमर संग दिअ' ममता ।

पपनी भरिया रहल अछि । आब बिदा लैत छी । भोरे उठिक' रिक्रूटिंग आफिस जयबाक अछि ।

जुलाई १९६३

सुभद्रा-हरण

ओ फेर सासुरसँ पड़ा अयलैक ! दोसर बेर !

ओकर नाम छलैक सुभदरा । विश्वास करु, हम अपना दिससँ बिगाड़िक' नहि कहि रहल छी । सभ ओकरा सुभदरे कहैत छैक, सुभद्रा नहि । आर तँ आर, सरकारी कर्मचारी जखन जनगणना कर' अयलैक, तँ ओहो सरकारी बहीमे यैह लिखलकै—ग्राम—गोखुला, नाम सुभदरा, पेशर...... .....

संयोगक बात जे ओकर भाइयोक नाम किसुनमा छक । पकिया रंग, श्रीकृष्णोसँ बीस । मुदा हाथमे बँसुरी आ सुदर्शन चक्र नहि रहैत छैक । रहैत छैक हर आ कोदारि । हरबाह अछि हमर ।

बापकेँ सभ बसुदेवा कहैत छलैक आ मायक नाम की छलैक से ककरो नहि बूझल छैक । नव छलि तँ सभ वसुदेबा-बहु कहैत छलैक आ धीया-पुता भेलैक तँ सभ कह' लगलैक—किसुनमा माय । एकाध बेर दुसटोलीक कोनो-कोनो बुढ़ियाकेँ सीसोवाली कहैत सेहो सुनने छलियैक । मुदा सासुरमे ओकर नाम क्यो नहि जनैत छैक । प्रायः वसुदेवो नहि जनैत छलैक ।

सुभदरा पांचे बरखक छलि तखने एक दिन माय-बाप दुनू बोखार लेने धूरलैक बाधसँ । भरि डाँड़ पानिमे कटनी कयने छलैक दुनू । बोखार की भेलैक, टुनकी लागि गेलैक । क्षणेमे छनाक भ' गेलैक । दुनू साफ एक्के दिन । पाँच बरखक सुभदरा टूगरि भ' गेल ।

किसुनमा सोलहममे पयर देने छल । हाड़-काट बेस मजगूत । बापक जगह भेटि गेलैक—हरवाही । ओकर तँ सोलहम बरख छलैक, बापक दुलारू छल. तेँ कोनो काज, अपन जीबैत वसुदेबा नहि कर' देलकैक । नहि तँ ओकरा टोलमे होश सम्हारैत देरी हाथमे भट्ठा आ कागत कलमक बदला खुरपी, कचिया हाँसू, कोदारि, हर आ महींसक पगहा थम्हा देल जाइत छैक ।

से बापक दुलरुआ किसुनमा गरांक उतरी उतरैत देरी हरबाही शुरू कयलक—अपन पुरखाक धंधा, पांच पुश्त हमरे घरमे हरबाही करैत आबि रहल छलैक । बापक बसीयतमे ओकरो लेल सैह छलैक आ छलैक पांच बरखक एकटा टूगरि बहीन—सुभदरा ।

तकर बाद कतेको बरख धरि दुसटोलीफ सड़कक धूरामे मात्र एकटा चारि हाथ घघरी पहिरने ओंघराइत लेरही-पोटही करिलुट्ठी छौंड़ीपर ध्यान देबाक फुरसति ककरो नहि छलैक । रहबो कोना करतैक ? दुसटोलीक ओहि सड़कपर सैकड़ो मानव-सन्तान (?) चारि हाथक घघरी वा पैण्ट पहिरने वा पूर्णतः दिगम्बर बनल ओंघराइत रहैत छैक । नंग-धड़ंग, विकृत आ घिनाओन—देशक नबीन पीढ़ी, भविष्यक आशा ! ककरा एतेक फाजिल समय छैक जे एहि सभपर ध्यान दैत चलय ?

एक दिन चारि हाथक धघरी नमरिक' दसहत्थी ननगिलाटक साड़ीमे बदलि गेलैक आ कारी देहक जमुनिया चामक भीतरसँ एकटा नव आभा फटि पड़लैक—कारी धानक खोंइचा फाड़ि के बहरायबला उजरा चाउरक दाना जकाँ—पुष्ट आ सुगन्धित ।

आ तहियासँ दुसटोलीक सड़कक बाटे जायबलाकेँ तरह-तरहक सुगन्ध भेट' लगलैक । बाधमे फूटल नवका धानक सुगन्ध, गाछमे फड़ल नब टिकुलाक सुगन्ध । एकर सुगन्ध, ओकर सुगन्ध ।

मतलब ई जे एकदिन दुसटोलीक धूरा भरल सड़कपर जेना कोनो मोगलक हाथसँ अतरक बकसा खसि पड़लैक आ तहियासँ ओहि सड़कमे, ओहि धूरामे कतेको तरहक सुगन्ध बसि गेलैक । सभकेँ सभ तरहक गन्ध लगलैक, मुदा ई बात निर्विवाद जे ओहि बाटे जाइत काल सभ क्यो नाकक पूरा फलका-फलका किछु सूँघ' लागय आ फेर एकटा मादक सुगन्धमे मातल ओकर डेग एम्हर-ओम्हर पड़' लगैक । भुतिया जाइक । मुदा ककरो पता नहि चलैक जे ओहि सुगंधक स्रोत, ओकर उद्गम-स्थल कोन छैक ।

बभनटोलीक बादल चौधरीक (हमरे देयादीक) बेटा बिजली चौधरी एहि रहस्यक पर्दा उठाब'मे बिजलीक चमको देखौलनि । दस दिनक हेतु शहरसँ छुट्टीमे

गाम अयलाह आ गमक पाबि सुँघैत-सुँघैत दुसटोलीक ओहि सड़कपर आबि गेलाह जत' पहुँचि लोकक डेग एम्हर-ओम्हर पड़' लगैत छलैक। भुतिया जाइत छलैक। बिजली चौधरी माहिर छलाह। आखिर शहरक कालेजमे पाँच बरखसँ एक्के क्लासमे घोड़ी घास तँ नहि छिलैत छलाह। टोहियबैत-टोहियबैत एकटा दसहत्थी ननगिलाटक साड़ीक छोर पकड़ि अपन सफलतापर आह्लादित होइत मोनेमोन छड़पि उठलाह— "यैह लेलियनि !"

दोसरे क्षण ननगिलाटक साड़ी फरसँ हाथसँ उड़ि गेलनि आ एकटा मांसल हाथक समधानल चाट बिजली चौधरी के सड़कक धूरामे सुता देलकनि। बेचारे धूरामे ओंघरायल फेर किछु सूँघ' लगलाह। कोनो सुगन्ध नहि भेटलनि। भेटलनि........ अपमानक दौँक आ...... झोकाड़ा। हँसी उड़बैत, गालपर उखड़ल पाँचो आंङुर—ननगिलाटक दसहत्थी साड़ीवालीक पाँचो आंङुर।

बिजली चौधरी नवसिखुआ नहि, पहुँचल महात्मा आ अखड़ियल निर्लज्ज छलाह। एहि तरहक कतेको अनुभव हुनका अपन बाइस सालक रोमानी जिनगीमे छलनि। हुनका नीक जकाँ ज्ञात छलनि जे कोन बात प्रचार करबाक थिक आ कोन झाँपन देबाक।

हुनकर अनुयायी मुदा एतेक चहटगर आ मनोरंजक समाचार पेटमे पचा नहि सकलाह। संगपुरन छलथिन लोभमे, मुदा सफलता नहि भेटलनि तँ एक टा अनायास प्राप्त सुखसँ किएक वंचित रहितथि ? बिजली चौधरीक शानदार सफलताक इसतहार घरे-घरे बँटबामे किएक चुकितथि ? पार्टनरशिप मे ई शर्त तँ कतहु नहि छलनि।

आ बिजली चौधरी प्राते गामस तेना निपत्ता भेलाह जेना शुद्धक समयमे गाय-महींसक दूध।

बिजली चौधरीक आविष्कारक कथा घर-घर पसरि गेलनि। तकर ई अर्थ नहि जे लोकक जिज्ञासा वा कछमछी शान्त भ' गेलैक। मुदा तकर बाद ककरो साहस नहि भेलैक जे दसहत्थी ननगिलाटक दिस हाथ बढ़ाबय। मोने-मोन गुड़-चाउर फाँकय से दोसर बात।

भोरे जखन सुभदरा अपन भौजीक (किसुनमाक बहु) संग हमर आङन बीप' आ चिपरी पाथ' आबय तँ पोखरिक भीड़पर बिरड़ो उठि जाय। हमर घर पोखरिक पछबरिया भीड़पर अछि। जखने ओहि भीड़पर बाटे सुभदरा चलय कि शेष तीनू भीड़सँ "ये आकाशवाणी पटना राँची है" जकाँ समवेत स्वर ललकाराउठय "द' रहल अछि बाबू पच्छिमसँ टार्च :"

जा धरि ओ आङनमे रहय फस्ट ईयरक विद्यार्थी हमर पीसियौत भाइ किताब तकबाक बहाने पाँच-सात बेर आङन जाय। हमर दोस्त लोकनि हमरा आङनसँ बाहर जाइत देखि हमर पुछारी करैत माय लग आङनमे पहुँचि जाथि आ फेर मायक संग अपनैतीक तेहन गप्प लाधि देथि जे घण्टा भरि मेँ पहिने खतम नहि होनि। भनसीया बुते दालि अधिक काल लागि जानि आ तरकारी अनोन, खाहे बिखनोन भ' जानि। महींसक चरबाह माँड़ लेबाक, पनपियाइ लेबाक वा जारनि देबाक पुछारीक बहाने आङनमे जुटल रहय। आ आङन बहारैत काल, चिपरी पाथैत काल दलकैत ओकर अंगक संग दर्शक लोकनिक मोन दलकैत रहनि, दरकैत रहनि।

दुपहरियामे खयला पीलाक बाद जखन ओ दुसटोलीक भिड़ले आमक गाछीमे कोनो झमटगर गाछक नीचा मोटगर दूबिपर अपन सगतुरिया सभक संग ओंघरा जाय तँ गामक सभटा चरबाह अपन-अपन मालकेँ बाधमे छोड़ि गाछीमे जुटि जाय। कतेक मालिको लोकनि अपन-अपन चरबाहक ताकमे बौआइत ओहि गाछीमे जुमि जाथि आ फेर झमटगर गाछक छाँह तर दस मिनट वा आधो घण्टा बैसबाक लोभ हुनका संवरण नहि होनि।

आ साँझखन जखन ओ गोलापर सौदा-बारी कर' जाय, गोलापर सभक पवनी जेना कयो वंशीमेँ बझा ऊपर टानि दैक। अनेरो लोकके उकासी आ छीँक आब' लगैक। बगलेमे डाक्टर साहेबक डिस्पेन्सरी रहैक, तैयो ओम्हर कयो नहि जाय।

आषाढ़ मासमे जखन दुसटोलीक गाछीक छिट्टा भरि करिया बम्बइ माथपर उठा ओ चलय, तँ लोक अनायास ओहि सालक करिया बम्बइक फरीक प्रशंसा कर' लागय—केहन पैघ-पैघ आ केहन सुपिण्ड। आ अगहन मास जखन-

जखन हमर जिरतिया ओकर बोझ उठब' जाइ, तँ बोझ पकड़' लेल उठल ओकर हाथक संगहि मोनो उपर उठि जाइ आ जखन ओ खसैक तँ जानि ने कत' कत' लसकि जाइक।

एक दिन मुदा एकटा विषादपूर्ण समाचार सुनि सभक प्राण जे उपर अँटकलैक से अँटकले रहि गेलैक। समाचार ततेक जल्दी आ ततेक शीघ्रतासँ पसरलैक जतेक जल्दी कोनो नेताक मरबाक समाचार आकाशवाणी पर्यन्त नहि प्रसारित क' सकैत अछि। सुभदराक घरवला बिदागरी कराब' आयल छलैक। समाचार बड़ सोझ मुदा कतेक भयंकर।

सुभदराक लगन कहिया भेलैक तकरो पुछारि करबाक होश लोकके ओही दिन भेलैक। बाप-मायक मृत्युक दुइये बरख बाद लगन क' देने छलैक किसुनमा। मुदा तहिया ककरा काज छलैक एकर खोज-खबरि लेबाक ?

खोंइचा फाड़ि जखन धानक भीतरसँ पुष्ट आ सुगन्धित चाउर बहरयलैक त' नवान्नक सुगन्ध उड़ैत-उड़ैत सुभदराक सासुरो पहुँचलैक। पाँचे कोसपर त' छलैक सासुर। घरवला मोकापर अपन अधिकार माङ' पहुँचि गेलैक।

सुभदरा चल गेलि। जाइत काल ओकर वरोके देखलिऐक। खूब कठमस्त—चाकर आ भुट्ठ। चमचम करैत तेलगर कारी रंग।

आ किछु दिन बाद सुभदराक चर्चा मे सुस्ती आब' लगलैक। लोक नव-सुगन्धक ताकमे लागि गेल। खाली कहियो-कहियो कोनो पुरान रसिक कोनो नवका छौड़ाके अप्पन अनेरेक पैघत्व देखबैत कहैक—एकटा रहय सुभदरा। आहा हा...हा...।

दू बरख ससरि गेलैक। कोन बाटे, कोन रस्ते, क्यो बुझलकैक ?

तखन एक दिन भोरे निन्न टुटलापर आँखि मीड़ैत देखैत छी जे आङनमे अप्पन भौजीक संग सुभदरा ठाढ़ि अछि। हमरा जागल देखलक तँ लग आबि बाजलि—परनाम मालिक।'

"की गय, कहिया अयलैं तों ?"

"परसुक्किये अयलियैक मालिक।"

"अखन रहबे ने किछु दिन ?"

"आब तँ हियें रहबै हम।

"से की ? घरवलासँ झगड़ा भेलौक अछि।

"न : ।"

"तखन ? तोहर घरवला आब अही गाममे बसतौक की ? ककर पट्टी मे ?"

"ककरो पट्टो नै। हम अनगरिये रहबै, भैया जौरे।"

"से किएक ?"

"ओही नऽती।'

हम किछु आर पूछ' चाहैत छलियैक, मुदा नजरि पड़ल जे माय कान पाथि हमरे सभक गप्प सुनि रहल अछि। भौजी सेहो भनसाघरमे हाथ बारने टकटकी लगौने छथि।......

साँझ मे टहल' बाहर भेलहुँ तँ बहनोइक संग किसुनमा बाट छेकि लेलक। कह' लागल "हिनका तँ अहाँ चिन्हैत छियनिमालिक। हमर नेमान छथि। तनी अहाँ सुभदराके समझा दियौक मालिक, जे हिनका जौरे चल जयतनि। हमर तँ कुच्छो सुनिते ने हय.......।

जा हम किछु बाजी, सुभदराक घरवला गिड़गिड़ाय लागल—"हम गोड़ धरै छी मालिक। ओकरा तनी बुझा दियौक। कोन कसूर हो गेल हमरा से, से नहि जानि। इमर त' बाते नहि सुनै हय। केहुनऽती जाय लेल तैयार नहि होइ हय। आब अहींके आसरा हय मालिक।"

दोसर दिन सुभदरा भेटलि तँ टोकलियैक—"ई कोन नाटक कयने छे गय ? जाइत कियैक नहि छही अपन घरवलाक संग ?"

सुभदरा किछु नहि बाजलि। मूड़ी उठा एक बेर तकलक आ फेर मूड़ी गोंति लेलक। मौन।

हम फेर टोकलियेक—"बजैत किएक ने छें गय ? आखिर की भेलौक अछि तोरा ? कमौआ वर छौक। जान दैत छौक तोरापर। कालिहये हमरा आगू तेना कान' लागल जे की कहियौक। किएक ने जयबहिक तों ? कोन तकलीफ छौक तोरा ?

"तकलीफ" सुभदरा बाजलि। "हमरा आरक तकलीक अहां बुझबै मालिक ? जकरा अहाँ कमौआ कहैत छियैक तकरा घर पर एक्को धूर जमीन नहि हइ। दस हाथक खोपड़ी हइ एकटा। चारि सेर बोनि रोज कमाइ हय, मुदा घर लबैत हय दुइये सेर। दू सेर पसिनियाँकें द' अबै हय। ओइ दू सेरमे जे होइ हय, बनाक' दैत छियेक त' सभटा अपने भकोसि जाइत हय। कहियो ने पुछै हय जे तोरो खातिर कुच्छो बचलौ कि नहि। हम कहबै जे हमहूँ बोनि करब, त' आँखि लाल क' लेत—"खबरदार जे अंगना से बाहर पयर देले। छौंड़ासभसे आँखि लड़ाबैके मोन, त' बोनि करती। बुट्टी-बुट्टी काटि देबौ जे एक्को बेरी बाहर तकले।" हम चुप्प हो जाइत छी मालिक। मुदा खाली पेट काज कोना चलौ मालिक ? उपरसँ ताड़ीक निसाँमे हमर देहकें कुच्छो ने बुझै हय। कखनियो कहबै, त' गारी देब' लागत।—सोचि-सोचि हम चुप्प हो जाइत रहली। मुदा खाली पेट कतना दिन सहिती। हमहू आदमिये हती। हमरो देहे हय। देहे नहि सकै हय त' हम की करबै मालिक। बोलू, अहीं बोलू मालिक। तैयो चल जाउ हम। अहीं फैसला करू।"

की कहियौक, किछु फुरबे नहि कयल। मुदा किछु कहबाक चाही तें कहने छलियैक—"मुदा एना छोड़ियो देलासँ तँ काज नहि चलतौक। तोहर मर्द छौक, तों बुझबहिक, मना करहिक। एना भागि पड़यलासँ की होयतौक ?"

"हम ओकरा मना करबै मालिक ? ओकर कानब-कलपब पर नहि जाउ, ओकरा अहाँ नहि चिन्हैत छियै। ओ एक्केटा बात बुझैत छैक—जे हम ओकर आङनवाली छियैक—ओकर मौजक चीज। ओ आर कुच्छो ने बुझै हय। आर ओकरा मना कयलासे, बुझौलासे की मिलै है, से अहाँ देखबै मालिक। है लू, देखि लू।"

ओ घूमि क' पीठ उघारि दैत अछि। देह पर ब्लाउज नहि छैक। ललाओन कारी पीठ पर कतेको टटका-टटका चेन्ह छैक जेना भूरक' पकाओल मड़ुआ रोटीक पपड़ी क्यो नोचि लेने होइक।

हमरा चुप देखि ओ फेरि बाजलि—"अइसने दाग सौंसे देह हय मालिक। अहाँ कहाँ-कहाँ देखब ?"

हमरा आर किछु बजबाक साहस नहि भेल। दोसर दिन सुनलियैक जे ओकर घरवला निराश घूरि गेलैक।

सुभदरा फेरसँ गाममे चर्चाक विषय बनि गेल। सासुर जयबाक ओकर अस्वीकृतिसँ कतेको मोनमे नव-नव आशा, नव-नव सुरसुरी उपजल छलैक। आ सुभदरा गाममे तेना रह' लागलि जेना गाम छोड़ि कहियो गेले नहि हो।

दुसटोलीक घूरा भरल सड़कपर फेर एकटा नवका सुगन्ध पसरलैक—भूर क' पकाओल मड़ुआ रोटीक सुगन्ध।

ई गन्ध मुदा जल्दिये उड़ि गेलैक। किसुनमा सगाइ करा देलकैक सुभदराक। वर खूब सुखी छलैक। खाली अवस्था बेसी रहैक। सुभदरोसँ पैघ-पैघ बेटा-बेटी रहैक।

दुसटोली फेर उदास भ' गेलैक। सुगन्ध उड़ि गेलैक आ रहि गेलैक खाली घुट्ठी धरि जमल धूरा आ लहसुन-पियाज आ ताड़ीक दुर्गन्ध।

मुदा सुभदरा फेर पड़ा अयलैक। दोसर बेर। आब ओतहु नहि जयतैक। किसुनमा बुझा क' हारि गेलैक। कथी लेल टस्ससँ मस्स होयतैक। किसुनमा विवश भ' फेर हमरा अयलक।

साँझखन जानि बूझि क' किसुनमाक घर लगदने जाइत रही। साँझ पसरल जाइत रहैक आ अन्हरिया चतरल अबैत रहैक। उद्देश्यक सिद्धि भेल। सुभदरा बाहरेमे ठाढ़ि छलि। देखिते बाजलि—"परनाम मालिक।"

हम सड़कपर चलिते रहलहुँ। ओहो पाछाँ-पाछाँ चललि। किछु दूर आबि कने रुच्छ स्वरमे कहलियेक—"की गय, ई तँ बढ़िया ढब सिखने छें तों। तीमब-चिखनीक हालति भ' गेलौक अछि तोहर। एक ठाम मोन नहि थिर रहैत छौक। दू-दा छोड़लें, आब तेसर चाहियौक की ? किसुनमा तंग भेल जाइत छौक तोहर एहि चालिसँ।" फेर कने नरम होइत कहलियैक—आखिर तोंही सोच, एना भागि-भागि अयबहिक सासुरसँ त' कतेक बेर सगाइ कयल जयतौक तोहर। ओ

मास, बरखदिन पर भागि अबैत छही ! आखिर वियाह कोनो धीया पुताक खेल त' नहि छैक.......

—सत्ते मालिक ! हमरा आर क विआह की हय—धीया-पूताक खेल ! एगो छोड़ली दोसर क' लेली ! ओकरो से मोन भरि गेल त' तेसर क' लेली ! कोनो लाज धाख त' हय नहि, छूटि खेलाइत छी।

ओकर स्वरक आद्रता पर किछु आर नरम होइत कहलियैक—से एतेक जखन बुझैत छहिक, तखन एना कियैक करैत छैँ ? एकठाम तकलीफ छलौक, गुजर नहि भेलौक, दोसर ठाम क' देलकौ भाइ। आब ओत' कोन तकलीफ छौ....

—'तकलीफ त' कोनो ने हय मालिक आ बड़का गो हय। बुढ़बा मानितो बड़ हय ! मुदा ओकरा जुआन-जुआन बेटा सभ हइ ! ओ सभ हमरा माय नै बुझै हय ! अपनो पाप रहै हय मोन मे। आर त' कोनो दुख नै हय। अहीं बोलू मालिक, मोनके ....कोना मना लू हम—बाप-बेटा दूनूक जौरे' हमकोनो जबाव नहि द' सकलियैक। किछु बाजले नहि गेल। चुपचाप चलैत रहलहुँ।

एकाएक लागल जे बड़दूर चल आयल छी। अन्हरिया एकदम गाढ़ भ' गेल रहैक। सुभदरा नहि जानि कोन सोचमे भुतिआयलि छलि।

टोकैत कहलियैक—"आब घूरि जो तों। लोक देखत तँ अनेरो बात गढ़ि लेत, बदनाम करत।"

हमरा भेल जे अन्हारमे हमरा टकटकी लगा क' ताकि रहल अहि। नहि जानि केहन स्वरमे बाजि उठलि—"एहन भाग हमर कहाँसे मालिक !"

आ लगभग दौड़ैत चल गेलि।

तकर बाद कतेको दिनक बाद ओ एक दिन हमर कोठलीमे आयलि—राति क' चुप्पेचाप। हम कने सशंकित होइत पुछलियैक—"की छौ गय ? एतेक राति क' ?"

—हमरा पच्चीस गो रुपैया चाही मालिक।' सुभद्रा बाजलि।

"पच्चीस टा रुपैया की करबें तों ? एकाएक एहन कोन काज पड़ि गेलौक अछि ?"

"आइ राति हम जा रहल छी मालिक। गोपालपुरक दुखनी बुढ़िया सिल्लीगुरी जाइत हय। ओत' कोयला बिछैत हय, गोइठा-चिपड़ी पाथै हय आ चारि पांच रुपैया रोज कमाइ हय। ओ बुढ़िया हँके कमा लै हय, त' हमरा बुते किएक ने होत ? हमहू ओकरा जौरे आइ राति चलि जायब मालिक।

"किसुनमासँ पुछलहिक ?"

"नहि मालिक। आब ककरो नहि पुछबैक। आब हियाँ नहि रहब हम। गामक लोक गीड़' चाहै हय। भौजी सभ दिन गारी दै हय। ओकरा दू गो धीया-पूता हइ। पांच आदमीक आश्रम हइ आ असगरे भैयाक कमाइ। खर्चो नहि जुटै हइ। से भौजीक मोन डोलल जाइत हइ। भैया नहि रहै हय, तखनी घरमे बदमाश सभकेँ बजबै हय, हँसी-ठट्ठा करै हय। हमर देह जरि जाइ हय मालिक। भौजीकेँ अप्पन देह झोकड़ि गेलै, से भौजी हमरा बेचे चाहैत हय। हियाँ रहब त बिका जायब हम। हमरा जाय दू मालिक।"

"मुदा एकटा बुढ़ियाक संग सिल्लीगुरी जयबें, तँ ओत' के बचौतौक ? ओहि ठाम की सभटा साधुए लोक रहैत छैक ? एहि ठाम भाइ-भौजाइ छौक, हमरालोकनि छियौक, ओत' के देखतौक ?"

– जकरा क्यो नहि हइ, तकरा के देखै हइ मालिक ? सेहे देखतैक हमरो। आन किछुओ करतैक, सहि जयबै हम, मुदा अप्पन लोक जखन गारी दै हय, बदनाम करै हय, त' सहले ने जाइ हय। हमरा पच्चीस गो रुपैया दू मालिक। हम नहि रहब ऐ गाममे :

हम पचास टा रुपैया बहार क' देलियैक। ओ पच्चीससँ बेसी लैते नहि छलि। हमहीं जोर द' क' द' देलियैक जे परदेसमे काज देतौक।"

रुपैया खूटमे बन्हैत ओ बाजलि– "अखनी हम राखि लैत छी मालिक। मुदा कमाके सभटा रुपैया भेज देब हम। अहाँकेँ लेबेके होत। न' नै सुनब हम।"

हम हँसी-हँसीमे कहलियैक—"यदि रुपैया घुरेयबेक छौक तँ एकटा काज करिहें। कमाक' घूरिहें तँ एकटा चीज लेने अबिहें हमरा लेल।"

सुभदरा मुँह ताक' लागलि— 'प्रश्न सूचक आँखि गड़ाक'।

"कमाक' जखन घुरिहें तँ पचास रुपैयामे एकटा कनिया लेने अबिहें हमरा लेल।" ओ हँस' लागलि—"रुपैयासे कनिया मिलै छइ मालिक? कोन बाजारमे बिकाइ छइ?"

"हँसी नहि करैत छियौक गय। घूरिहें तँ लेने अबिहें। ओत' भेटैत छैक।"

—केहन कनिया लेबइ मालिक? ओ हमरे पुछलक।

'खूब कारी तोरे सन। झूर क' तरल तरकारी, आ सोन्हगर क' पकाओल जरल कारी रोटी सन मुदा ओहने सुगन्धित, स्वादिष्ट।"

अन्हारमे हमरा भ्रम भेल जे ओकर आँखिमे पानि छलैक।

प्रात भेने भरि गाम खबरि पसरि गेलैक......सुभदरा ककरो संग पड़ा गेल......जतेक मुँह ततेक बात।

......क्यो कहैक जे ततमासँ सांठ घाट छलैक आ क्यो कहलकैक जे फल्लाँ गामक गुआरबासँ। ककरो कहब रहैक जे लागि-भागि चारि पांच बरखक रहैक आ ककरो धारणा रहैक जे टटका-टटकी रोमान्स रहैक।

हम सभटा सुनैत मोनमे सोचैत रही जे सुभदरा चल गेलि। किछु दिन बाद ओकर बदनामीक चर्चो बन्द भ' जयतैक। प्रायः नामो बिसरि जयतैक लोक। तखन जेना बाबी,नानी धीया-पूताके' खिस्सा कहैत छैक तहिना क्यो-क्यो, कहियो-कहियो चर्चा करतैक—एकटा रहय सुभदरा......

मई १९६३

गयबिढ़नी ! तोहर डंक

आब कोन उपाय करब? भेलहुँ नीक जकाँ देखार।

कोन पाप लागल छल से नहि जानि। झट द' गछि लेलियनि। लागल, जेना एहिसँ बेशी सोझ कोनो काजे नहि छैक—जाड़क एहि कनकनीमे नौं बजे धरि तुराइतर दुबकलो रहबासँ सोझ। मुदा घुसड़ि गेल सभटा कबिलती। तखनेसँ छटपटी लागल अछि। कोम्हरो कोनो बाट नहि, कोनो इजोत नहि। एकदम अन्हार गुज्ज—तरेगणक भुकभुकी पर्य्यन्त नदारत। हथोड़िया दैत-दैत थाकि गेलहुँ, मुदा कतहुँ किछु अभरिते नहि अछि। आब तँ इच्छा होइत अछि जे 'हरदी बाजि दी।

कतेक लाजक गप्प होयत? कोनो कहि सकबनि अपना मुँहे जे हमरा बुते नहि भ' सकल अहाँक आदेशक पालन। कोना फूटत कण्ठसँ बोल? कण्ठमे काँट नहि अँटकि जायत? ठोर एक दोसरसँ पृथक होयबासँ विद्रोह नहि करत? रहि-रहि क' एकटा मूर्त्ति सामने अबैत अछि आ असफल प्रयासक आहत स्वाभिमान मोनमे एकटा हीन भावना उत्पन्न करैत अछि।

"देखू, काल्हि एगारह बजेसँ पहिने! मोन रहत ने?"

चलबा काल आदेश भेटल छल आ हम धड़धड़ा क' सीढ़ी उतरि गेल छलहुँ—ई कोन भारी बात? काल्हि एगारह बजेसँ पहिने किएक, कही तँ अखने, अही ठाम। अपन शक्तिक मिथ्या दंभपर तेना अकड़ल रही जे सीढ़ीपर ओंघराइत-ओंघराइत बाँचल रही।

सड़कपर जाड़क सुकुमार रौद प्रतीक्षामे छल। देखिते लपकल। बन्द कोठलीक, सर्द वातावरणमे ठिठुरल मोन गरमीसँ भरि गेल—एक-एक तहमे, नीक जकाँ। पाँचपर सूतल गुलाबी रौदक गरमाहटिसँ डेग आगू ससरल—छोट-छोट नापल डेग। आँखि चारुकात बौआइत रहल, निरुद्देश्य। नहि-निरुद्देश्य कहब

ठीक नहि होइत। कोनो खास उद्देश्य नहियो रहलापर ओहि दृष्टिमे किछु छलैक—प्रायः कोनो नवीन आकर्षण वा उद्देश्यक अन्वेषण। एकदम अस्थिर दृष्टि—एकक बाद दोसरपर अँटकैत, नचैत।

एक ठाम बौआइत दृष्टि अँटकि गेल—डेड स्टौप। काफी भीड़, धक्कम-धुक्की आ उत्तेजना छलैक। जिज्ञासा भेल। मुदा भीड़ ठेलि क' घटनास्टल धरि पहुँचब नितान्त असम्भव। मूड़ीपर-मूड़ी बजरैत, देहपर देह लटकल। सभ क्यो हुलकि-हुलकि क' देखबा लेल व्यग्र, हड़बड़ायल। जिज्ञासा छान तोड़' लागल।

एकटा भाइ साहेब भीड़सँ बहरयलाह—अपस्याँत, औनायल, अस्त-व्यस्त, मुदा जोशसँ भरल, चारूकात सगर्व निहारैत। वीर महारथीक स्वागतार्थ हमरा लोकनि दूरेसँ हुलकी देनिहार पाँच-दस व्यक्ति झट द' जुटलहुँ—"की बात थिकैक? केहन भीड़ थीक ई? किएक लोक मुड़ियारी देन अछि?"

महारथी कोनो सफल फिल्मक डाइरेक्टर जकाँ ससपेन्स रखैत बजलाह—"कतेक लाजक गप्प थिक ई जे हमरा लोकनिक देशमे जयचन्द आ मीरजाफरक सन्तान अखन धरि स्वतन्त्र बौआइत अछि, स्वाधीन देशकेँ कलंकित करैत अछि। ई देशद्रोही सभ समस्त देशक प्रयासपर पानि फेर' चाहैत अछि।"

"आखिर बात की थिकैक?" हमरा लोकनि केँ आब धैर्य राखब कठिन भ' गेल।

महारथी सत्यक उद्घाटन करैत बजलाह—"अखने कनेक काल पहिने चारिटा हवाजहाज गेलैक अछि, से तँ अहाँ सभ देखने होयबैक। एहिठाम सभ कहैत छलैक जे एहि जहाज सभमे देशक जवान जा रहल छैक सीमाक रक्षा हेतु, चीनी सभकेँ खेहारि क' भारतीय सीमासँ बाहर करबा लेल। मुदा ई देशद्रोही लुच्च द' बाजि उठल—'सभ जा रहल अछि अपटी खेतमे प्राण गँमाब'।" ततेक ने थुराइ भेलनि अछि बाउकेँ जे मास भरि होश नहि होयतनि। एहन-एहन देशद्रोहीकेँ एहने दण्ड भेटबाक चाही।" मोनछड़पि उठल—यैह! यैह!

ई उल्लास मुदा स्थायी नहि भ' सकल। एहि सँ काज चल'वला नहि। कोनो सशक्त वस्तु चाही—अंग-अंगमे नवीन स्फूर्त्ति, नवीन साहसक संचार कर'वला। कोनो आतंककारी सृजन—शत्रुकेँ भय-प्रकम्पित करबामे समर्थ! आ

मोनक प्रसन्नता तेना विला गेल जेना सिनेमाक पर्दापर कास्टिंगक मेंहो आखर नीक जकाँ देखबासँ पूर्वे विलीन भ' जाइत छैक।

डेग आगू ससरल। मह्किलसँ चारि-पाँच सय गज।

दोसर स्टोप—किछु बेसी भीड़, किछु बेसी उत्तेजना। उत्तेजित जनता एकटा चीनी डेन्टिस्टक दोकानपर आक्रमण करबा लेल उद्यत। विचारवान लोक सभ स्थिति सम्हारि लेलनि। चीनीक दोकान आ परिबार निरापद रहलैक।

मोन फेर छड़पि उठल-यैह! यैह!

भारतीय संस्कृतिक अनमोल नमूना। बर्बर चीनीक मुँहपर भिजाओल जूता। वालौंग आ बोमडिलामे चीनी बर्वरताक शिकार भारतीय जनताक प्रति-शोध—अभयदान।

न: अहूसँ काज नहि चलत। किछु आर सशक्त, किछु आर प्राणवान वस्तु चाही। दुश्मनोक संग मनुष्यता-पूर्ण व्यवहार राखब, शरणागतकेँ अभय-दान देब, भारतक प्राचीन सिद्धान्त रहलैक अछि। भारत निवासी चीनी जनताक प्रति भारतीय जनताक मनुष्यतापूर्ण मैत्रीं-भावमे कोनो नवीनता नहि।

मोन फेर उदास भ' गेल। आब टटका-टटकी चीज कहाँसँ आनू? जकरे हाथ लगबैत छी, सैह सेकेण्ड हैण्ड़। एहि बेर बेइज्जत भैये क' रहब।

"बाबू, पालिश।"

आवाज परिचित लागल। देखलियैक त' देखिते रहि गेलहुँ। सामने किशोर ठाढ़ छल—हाथमे पालिशक डिबिया आ ब्रश लेने। आश्चर्यसँ बाजि उठल रही—तोँ?

किशोर बाजल छल—"देख भाइ, हमरा घरसँ पढ़बाक खर्च नहि भेटैत अछि। स्कालरशिपक पैसासँ कहुना गुजर करैत छी। सुरक्षा कोषमे दान देबाक उत्कट अभिलाषा छल, मुदा हाथ खाली। बिचारलहुँ जे एक सप्ताह धरि बूट पालिश करी आ सभटा कमाइ सुरक्षा-कोषमे द' दियैक। निकाल एकन्नी आ चमकाले मुँह अपन जूताक।"

मोन फेर छड़पि उठल—यैह! यैह!

जागरणक अद्भुत दृष्टान्त। जनताक जागल भावनाक अपूर्व उदाहरण। ''नेहरू सरकार जबरदस्ती दान लेती है'' प्रोपगेण्डा कयनिहार रेडियोपेकिंगक मुँहतोड़' जवाब। जननी जन्मभूमि एवं स्वाधीनताक रक्षाक हेतु सर्वस्व अर्पण करबा लेल उद्यत भारतीय जनताक प्रतिनिधि एकटा गरीब छात्र।

न : अहूसँ काज चल'वला नहि। मोन कह' लागल—ई त' डाकुमेन्टरी भ' गेल। अहाँक एतेक चीप वस्तुक आशा नहि छल—वेरी डिसएप्वाटिंग।

एक मोन होइत अछि जे घुरिक' कहि अबियनि जे हमरा बुत्ते नहि भ' सकल आदेशक पालन। फेर विचारैत छी जे हरदी बजबा' सँ पूर्व एक बेर डेरा जा क' प्रयास करी। निश्चिन्त भ' क' बैसलासँ भ' सकैत अछि, किछु फुरि जाय, किछु झलकि जाय।

जल्दी-जल्दी राजेन्द्र नगर दिस लपकैत छी, अपन फ्लैट पहुँचबाक हेतु। रास्तामे सामग्रीक हेतु किछु सत्य घटनाकेँ टोहियबैत छी—एकटा अस्सी बरखक बुढ़िया जवानक हेतु अपन आँखि दान क' देलकैक। एकटा नव कनियाँ अपन सोहागक चूड़ी उतारिक' प्रधान मंत्रीक रक्षा-कोषमे द' देलकैक। एकटा आठ बरखक बच्चा जलखैक पैसासँ बचाक' सुरक्षा कोषमे दान देलकक। एकटा भिखमंगा अपन भरिदिनक कमाइ ......नः, बात बन'वला नहि, असंभव।

अपन ब्लौक आबि जाइत अछि—बाइस नम्बर। पूरापूरी बेयालीस सीढ़ी चढ़िक' अपन फ्लैटक सामने पहुँचैत छी—तेसर तल्लापर, एक सय बहत्तर नम्बर। गेटक ताला खोलिते देखैत छी—पोस्टमैनक खसाओल एकटा लिफाफ नीचा फर्शपर कानि रहल अछि।

लिफाफ उठाक' देख' चाहैत छी जे कत'सँ आयल अछि। मुदा प्रेषकक नाम नदारद। पताक आखर देखि चौंकि जाइत छी। अक्षर सभ चिन्हार लगैत अछि। ककर.........ककर..... मोन पाड़' चाहैत छी। किछु क्षण अस्पष्ट, झलफल-झलफल आ फेर सभ किछु स्पष्ट भ' जाइत अछि।

हाथक उज्जर वर्गाकार लिफाफ कारी आयताकार स्लेटमे बदलि जाइत अछि, जाहिपर झुकल एकटा दस बरखक छौंड़ी लिखैत छैक—गोरा-पलटन। लिखब समाप्त भेलापर स्लेट घुमाक' बगलमे एक्के हाथपर बैसल छौड़ाकेँ देखबैत छैक। छौंड़ा अप्पन स्लेटपर किछ लिखि छौंड़ी दिस घुमा दैत छैक। छौंड़ी पढ़ैत

अछि-- बिढ़नी ! दुनूक ठोरपर दाबल-दाबल हँसी मामे संधिक घोषणा ! अखने कनेक काल पहिने दुनूमे खूब झगड़ा भेल रहैक। खिसियाक' छौंड़ा धुमधुमा देलकै छौंड़ीक पीठ नीक जकाँ आ छौंड़ी नछोरिक' देहके शोणिते-शोणिताम क' देलकै। फेर दुनू मुँह फुलाक' बैसि रहल कनेकाल। मुदा दुनूमे ककरो चैन नहि, निबहता नहि। स्लेटपर लिखि एक दोसरक नामकरण कयलक आ सुलह भ' गेलैक। मुदा तहियासँ दुनू एक दोसरकेँ ओही नामसँ सम्बोधित कर' लगलैक। छौंड़ी कहैक—''गोरा—गोरा पलटन जकाँ निर्मम आ अत्याचारी। आ छौंड़ा कहैक ''बिढ़नी'', डंक मार'वाली, डकिनियाँ।

...आइ स्पष्ट रूपसँ एहि महान सत्यक ज्ञान होइत अछि जे मनुष्य बिसरि खाहे सभ किछु जाय, मेटा किछु नहि सकैत अछि। जा धरि अन्तःकरण मौजूद छैक, स्मृतिक एकोटा क्षण मेटाओल नहि जा सकैत छैक। जिनगीमे एहनो भावुक क्षण बेर-बेर अबैत छैक जहिया एकटा मामूली आघातसँ अतीतक दबल बिसरल स्मृति जगजियार भ' जाइत छैक, एक-एक क्षण, एक-एक पल !

एक टा दृश्य उभरैत अछि—बागमतीक कातमे टूटल-ढनमनायल कृष्ण-मन्दिर, खण्डहर जकाँ। मन्दिरक पश्चिम मे एकटा छोट-छीन शिव मन्दिर आ पुबारी कात बड़क एकटा पुरान झमटगर चतरल गाछ। दक्षिणमे कलकल करैत बागमती। जेठक दुपहरियाक जरैत रौदमे पानिक कछेर मे एक टा जोड़ा बालुक घर बनयबामे व्यस्त अछि भीजल बालुक भीतक घर। छौंड़ा बनल अछि राज आ छौंड़ी रेजा। छौंड़ी दौड़ि-दौड़िक' सामग्री जुटबैत छैक आ छौंड़ा कारीगर जकाँ नापि-जोखि क' घरक निर्माण करबामे व्यस्त अछि। दुनूक माथमे बालु भरल छैक आ कारी-कारी केशमे लटकल बालुक कण इजोतमे तेना चमकैत छैक जेना अन्हरियामे तारा।

घर बनिक' तैयार होइत छैक। छौंड़ा लगमे ठेहुनिया देने बैसलि छौंड़ीकेँ आर लग घीचि कहैत छैक—देख गय बिढ़नी, तैयार भ' भेलौ घर। कोनो गड़बड़ी रहि गेल होउ, तँ एखने बाज, दुरूस्त क' दैत छियौक ! ओना पाछाँ कह' लगबेँ जे केहन घरवाला कयलहुँ, जकरा घरो बनयबाक लूरि नहि छैक। देख, कुल चारि टा कोठली देलियैक अछि—भड़ार, भंसाघर, गोठुल्ला आ एकटा सुतक कोठली हमर-तोहर। ठीक छौ ने ?

छौंड़ी किछु काल गालपर हाथ राखि विचारैत रहलि आ फेर कोनो बुढ़िया जकाँ गम्भीरतापूर्वक बाजलि—"चारिये टा कोठलीसँ काज नहि चलतौक। कमसँ कम दू टा कोठली आर चाहियैक!"

"से किएक?"

"तेँ तँ कहैत छियौक जे तोँ गोरा पलटन छेँ—अकिलक तँ छूतियो नहि छौक। कोना जिनगी कटत तोरा संग से नहि जानि? एतबो नहि बूझैत छहीक जे धीय.पुता भेलापर चारिये टा कोठलीमे कोना गुजर हेतौक। कमसँ कम दू टा कोठली आर चाहियैक—एक टा बेटी-जमायक लेल आ दोसर बेटा-पुतौहुक लेल।"

"जा, हमरा तँ तकर ध्याने नहि रहल। सत्ते, तोँ बड़ बुधिआरि छेँ गय बिढ़नी। तोँ चला लेबेँ हमर गृहस्थी नीक जकाँ। बाज, कय टा बेटा लेल कोठली बना दियौक?"

"धुत⋯⋯—"

दृश्य बदलैत अछि।

जेठक दुपहरिया नहि, भादवक अन्हरिया राति। टिपिर-टिपिर पानि। रहि-रहिक' ठनका। बिजुलत्ता। अन्धकार भरल रातुक हाहाकार भरल प्रहर। ओही बागमजीक कातमे', पानिक कछेरमे। नहि, ऊपर बड़क चतरल गाछक नीचा दबकल दू टा विह्वल प्राणी, सशंकित, आन्दोलित।

किशोरी कहैत छैक—देख गोरा, हमरालोकनि एकटा घर बनौने रही, स्वप्न देखने रही! सुखद स्वप्नक निशाँमे हमरा ज्ञाने नहि रहल जे तोँ छेँ एकटा उच्चकुलक जानि पाँजिवला कुलीन ब्राह्मणक दुलरूआ आ हम छी भनसियाक, एकटा क्षुद्र बाभनक अभागलि बेटी! समाज हमरा नहि रह' देत तोरा संग ओहि स्वप्नमहलमे। नहि स्वीकारत कुलवधूक रूपमे। हमरा बिसरि गेल, सुधिये नहि रहल जे बालुक भीत ढ़हि जाइत छैक, स्थायी नहि होइत छैक। इहो नहि मोन रहल जे धीयापुताक खेल यौवनक आश्रय, जीवनक सम्बल नहि भ' सकैत छैक।

"से नहि कह सोना। ई धीयापुताक खेल नहि, जीवन-मरणक प्रश्न छैक;

बाल्यावस्थेमे पड़ल स्नेहक गेँठ जकरा क्यो खोलि नहि सकैत अछि, तोड़ि नहि सकैत अछि। ककर मजाल छैक जे हमर बालुक घर ढ़ाहत, हाथ-पयर तोड़िक' राखि देबैक।"

सोना बिहुँसलि—पानि भरल मेघ जकाँ, बरस' लेल आतुर, फाट' लेल उद्यत।

"देख गोरा, अपन पलटनी नहि देखा तोँ! ककरा-ककरासँ लड़बेँ, ककर-ककर हाथ तोड़बहिक? सभ दुश्मने भ' जयतौक! आ फेर लोकक हाथ तोड़ियो क' की भेटतौक? बालुक घर तँ ढहिते छैक, ढ़हबे हेतु बनैत छैक। ओकरा कतेक दिन बचयबहिक तोँ?"

"तकर माने ई जे तोँ स्वयं ओहि घरमे रह'सँ हिचकैत छेँ। तोरा ओ घर पसिन्न नहि छौक। झूठ नहि बाज सोना, कहि दे जे तोरा बालुक घर नहि चाहियौक। चाहियौक महल, आराम, सुख जकरा लेल तोँ बिका रहलि छेँ; तोहर बाप बेचि रहल छौ तोरा। कहि दे जे महलक स्वप्न तोरा मोनसँ सभ टा पुरान स्मृति धो-पोछ देलकौ। तोँ खाली अपने सँ ई गप्प कहि दे सोना, फेर तोरे सप्त खा क' कहैत छियौक, बाट नहि रोकबौक तोहर।"

"ई तोँ कहि रहल छेँ गोरा? कोना बाजि सकलेँ ई गप्प तोँ? एक बेर हमरा दिस ताकिक' ई गप्प बाज तँ। बाज, चुप्प किएक भ' गेलेँ⋯⋯?"

कोनो जबाव नहि, प्राणहीन निस्तब्धतामे टूटल हृदयक सिसकी, रोम-रोमकेँ सिहरबैत।

सोना विकल भ' बाजि उठलि—"देख, एना नहि कान। हमरो कमजोर नहि बना। सभ टा संकल्प भासि जायत हमर। तोँ तँ खाली नामे लेल गोरा पलटन छेँ, मोन त' तोहर मौगियोसँ बेसी कमजोर छौक। एक टा पाथर हम छी, आँखिमे नोरो नहि अबत अछि। सुन्न भ' गेल होइ जेना। हमरा लेल नहि कान तोँ।⋯⋯हम नहि छी एतेक स्नेह करबा जोगर⋯⋯

प्रत्युत्तरमे सिसकीक स्वर आर तीव्र, सम्पूर्ण अस्थिपंजरकेँ झरझरबैत!

'देख, चलबा काल एना नहि कर। जायवलाकेँ लोक हँसिक' बिदा करैत छैक। तोहूँ एक बेर हँसिक' कहि दे—"बिढ़नी," नहि तँ अन्तिम अभिलाषा अतृप्ते रहि जायत हमर"।

"नहि सोना, नहि" उमड़ैत क्रन्दनकें रोकबाक असफल प्रयासमे टूटल-छिड़िआयल स्वर ।

"आइ तोहर डकिनिया बिढ़नी जा रहल छौक गोरा ! सभ दिन तोरा कनबिते रहलियौक, द' किछु नहि सकलियौ । जाइतो-जाइतो एक टा डंक देने जाइत छियौक ! तोरा सप्पत छौक एहि डंकक, एहि पीड़ाक, अन्तिम अनुरोध मानि ले हमर ! हँसिक' कहि दे एक बेर । नहि कहबें तों ? बेस, जे हम्मर मरल मुँह देखय.........से......"

"बिढ़नी... ...!"

दृश्य फेर परिवर्त्तित होइत अछि ।

बीच आंङनमे पटियापर चारु कात मोट-मोट किताब पसारने एक टा नवयुवक बैसल अछि । एक टा नवयुवती आङनमे आबि पयर छूबि प्रणाम करैत छैक । चकित, विस्मित नवयुवक तकिते रहि जाइत अछि, अपलक ।

"एना की तकैत छें ? हम छी—बिढ़नी ! एतबे दिनमे बिसरि गेलैं की ?"

नवयुवक आँखि मूनि लैत अछि । नहि, नहि तों हमर सोना नहि भ' सकैत छें ! हमर सोना तँ सींथमे सिन्दूर भरि, हाथमे लहठी पहिरि पालकीपर चढ़ल छलि ! तोहर सींथ धोअल छौक, हाथ सुन्न.........नः तों हमर सोना नहि छें, किन्नहु नहि......!

...आ आइ लिफाफ हाथमे लेने थरथरा रहल छी । पत्र भेटबाक आनन्दक सुखद सिहरन अछि वा अतीतक दुखद स्मृतिक कम्पन, से कहब कठिन । मुदा आब बड़ी काल भ' गेल । पहिने पत्र पढ़ि ली ।

लिफाफ फाड़ि क' चिट्ठी निकालैत छी । सादा कागजपर लिखल आखर सभ लिफाफक अन्हरिया कोठलीसँ बाहर भ' प्रकाशमे चमचमा उठैत अछि ।

"गोरा,

लिफाफ देखिये क' तों बूझि गेल हेबें—बिढ़नी फेर कोनो डंक मारत । आशंका तोहर ठीके छौक, मुदा एहि बिढ़नीक डंकक पीड़ा तों नकारि सकबें ततेक साहस तोरामे नहि छौक, हमरा नीक जकाँ बूझल अछि ।

पयरमे लागल पाँखिक बले समयक मेघ धरतीपर कौखन प्रचण्ड धाह आ कौखन सुशीतल छाहरि बनबैत उड़ैत रहैत अछि आ पिसाइत रहैत अछि विवश,

असहाय प्राणी । बालुक घरमे गृहस्थी बसयबाक सपना देख' वाली एक दिन कनियाँ बनैत अछि । मुदा ने ओ घर, ने ओ वर । अपरिचितक संग ओ फेरसँ नव घर बनब' चाहैत अछि । देवालो ठाढ़ होइत छैक । मुदा अकस्मात् एकटा प्रचण्ड अन्हड़ ओहि देवालकें भूमिसात क' दैत छैक । नवकनियाँ बिधवा बनि जाइत अछि ।

आ गोरा, पलटन जकाँ मोचण्ड, जिद्दी छौंड़ा बढ़िक' भावुक युवक बनैत अछि—सशक्त कथाकार । ओकर कथा पढ़ि-पढ़िक' एकटा अभागलिकें गौरव होइत छैक जे कहियो ई कथाकार ओकर बालसंगी छलैक, ओकर सभ किछु छलैक । अभागलिक अर्थहीन जीवनक एकमात्र अवलम्ब, एकमात्र आकर्षण बनि जाइत छैक—संगी कथाकारक रचना । ओहिमे हरदम अपनाकें पबैत अछि, अपन नेनपन आ नेनपनक संगीकें पबैत अछि ।

देशपर संकट अबैत छैक—चीनक विश्वासघातपूर्ण आक्रमण । जनतामे जागरणक लहरि पसरैत छैक । कण-कण स्वाधीनताक रक्षाक हेतु तत्पर होइत अछि । कलम तरूआरि बनैत अछि । ओ अभागलि यशस्वी कथाकार लोकनिक कथा पढ़ैत अछि । बालसंगीक कथा पढ़ैत-पढ़ैत कथा पढ़बाक चाट लागि गेल छैक । सभ कथाकार लोकनि एक्के सुर अलापैत छथि—देशकें बलिदान चाहिऐक । आइ आवश्यकता छैक धोअल सींथ आ सुन्न हाथक, उज्जर साड़ी आ आभूषणहीन शरीरक ।

ओकरा बड़ आश्चर्य होइत छैक । ओकर धारण छैक जे आवश्तकता छैक, सिन्दूरसँ भरल सींथ आ लहठीसँ सजल हाथक जे अपन प्रियतमकें, अपन स्वामीकें हँसि-हँसि क' समर-क्षेत्रमे पठा सकय, एहि विश्वासक संग जे ओकर हाथक चूड़ीमे बज्रक शक्ति छैक आ सींथक सिन्दूरमे अमरत्व ।

मुदा अभागलिक अपन सींथ पोछल छैक, हाथ चूड़ीक स्पर्शो बिसरि गेलैक । आइ ककरा पठाबौ रण क्षेत्रमे ? सधवा रहैत तँ हँसि-हँसि क' आरती उतारि स्वामीकें हिमगिरिक अभियानपर पठबैत ।

अपन बालसंगी मोन पड़ैत छैक ओकरा । संसार खाहे जकर नाम ओकर सींथ मे भरि देने होइक, मुदा स्वेच्छासँ जकर नाम माँग मे सजौने छलि, से तँ ओकर बालसंगिये टा छैक—ओकर अप्पन गोरा । ओकर नारीत्वक लाज,

सिन्दूरक मर्यादा वैह टा बचा सकैत छैक। बालुक भीत तोड़'बलाक हाथ-पयर तोड़' लेल उद्यत गोरा हिमालयक शाश्वत भीत तोड़बाक प्रयास कयनिहारक अंग-अंग नहि तोड़ि देतैक।

की रे गोरा, केहन लगलौक डकिनियाँक ई डंक। एहि टीस मे एक टा उल्लास, एक टा आनन्द छैक कि नहि ? सत्त सत्त बाज।

तँ आब शीघ्र प्रस्थान कर। हम आरती ल' मंगल गीत गबैत छियौक—

जुग-जुग जिबथु, बसथु लाख कोस......

हरदम तोरे

(लोक खाहे जकर कहय) बिढ़नी

गौरवसँ छाती फूलि जाइत अछि। अपन सोनाक हृदयक विशालता पर ओकर मर्यादित निष्पाप समर्पण आ गौरवपूर्ण आमन्त्रण पर। अन्तर्मन बाजि उठैत अछि—तोहर आह्वान निष्फल नहि जयतौक सोना। तोँ हमरा उचित मार्ग देखौलेँ अछि—ओ मार्ग जे आइ प्रत्येक भारतवासी केँ हाक द' रहल छैक। ई तोहर आह्वान नहि थिकौक सोना, जननी जन्मभूमिक आह्वान छैक, भारत-माताक आह्वान थिकनि।

हम कालिह कहि देबनि सम्पादकजी केँ जे हमरा बुत्ते नहि पार लागत वर्त्तमान संकटकालीन स्थिति पर कथा लिखब। हम जा रहल छी एकटा अमर कथा लिखबाक हेतु, हिमगिरिक उत्तंग शिखिर पर, अपन रक्तसँ, सोनाक सौभाग्य सिन्दूरक लालीसँ।

की गय बिढ़नी, आब कह। ●

४ अगस्त १९६३

उपरफांट्ट

गामक दछनबरिया सिमान पर दिसम्बरक सर्द साँझ ठिठुरल रातिक प्रतीक्षामे सहमल ठाढ़ छलैक। असमानी तुराइ तर दिनभरि निश्चिन्त फोंफ काट'वला तरेगन सभ धरतीपर हुलक' लागल छलैक। ओकर निर्लज्ज आँखिक कामातुर दृष्टिसँ बचबाक हेतु नग्न धरती अन्हार ओढ़बा लेल अकुला रहल छल।

चन्दर डेग झाड़ने गाम लाँघि गेल। अपन गाम नहि, मामा गाम। पहिने बभनटोली, तखन धमुखटोली, फेर शिव-मन्दिर आ अन्तमे गामक सिमानपर बहैत बागमती नदी जत' पहुँचि चन्दरक डेग अनिश्चित मनस्थितिक गुनिधुनिमे पड़ि छोट होइत क्रमशः थमकि जकाँ गेलैक, जेना कोनो भगैत-दौड़ैत मशीनक ब्रेक क्रमे-क्रमे कसा गेल होइक।

चन्दर सोचमे पड़ि गेल। धार पार जयबाक दू टा रस्ता छलैक। पहिल रस्ता शिव मन्दिरवला घाट बाटे छलैक। भरि भदबारि ओहि घाटपर नाव चलैत छैक, मुदा पानि डाँड़सँ नीचा अबिते घटबार नाव डुबा दैत छलैक। ओहिबेर पानि पहिनेसँ घटि कऽ पाँजर लागि गेल रहैक आ घटबार नाव डुबा देने छलैक। पानिक धार तेज नहि छलैक, कपड़ा समेटि लोक सुगमतासँ पार क' जाइत छल। पार आब' जायवला कौखन हँसी-हँसीमे आ कौखन खौंझा क' कहि बैसैत छलैक—ऐ नदियाके यैह बेवहार, खोलू धरिया उतरू पार।

पार जयबाक दोसर रस्ता रेलवे पुल बाटे छलैक। मस्किलसँ एक मीलक फेर पड़ैत छलैक, मुदा आब' जायवलाकेँ ओतबे फेर अलसा दैत छलैक। गामक पछबरिया सिमानपर दने सोझे दक्षिण गेलापर रस्तामे रेलवे पुल पड़ैत छलैक। ओहि बाटे आयब-जायब ककरो सहज भावेँ स्वीकार नहि छलैक। विवशता रहैक से आर बात। जा धरि नाव रहैत नावार आ नाव नहि रहला पर पानि हेलिक'

घार पार करब जनसाधारणक अभ्यास बनि गेल छलैक। पुल पर बाटे जयबाक विवशता मात्र तखने होइक जखन घाटपर नाव नहि रहैक आ पानि डाँड़सँ ऊपर होइक।

चन्दर शिव-मन्दिरक सामनेक मोटका आड़ि पर ठाढ़ भऽ गेल। पानिक कछेरमे जयबाक साहस नहि भेलैक। पानि सरकि गेल रहैक, कपड़ो भिजबाक डर नहि रहैक। तैयो चन्दर ओहि पसरैत अन्हारमे आँखि फाड़ने नदीक पाँजरमे सटकल पानिक सतह निहारैत रहल—भयभीत, संत्रस्त, ओहि शिशु जकाँ जे मायक हाथमे पानिक लोटा देखिते हाथ पयर फेक' लगैत अछि जेना देह पर पानि खसलैक तँ गलिये जायत।

बड़ जनमारा जाड़ छलैक, अंग-अंग कनकनबैत। शीतलहरी दाबल पयरें अन्हरिया चादर ओढ़ने धरतीकेँ अन्हार उघाड़िन्उघाड़ि क' छूबि रहल छलैक आ शीतलहरीक सर्द हेमाल स्पर्शसँ धरतीक अस्थिपंजर कनकना रहल छलैक। आ चन्दर ओहि कनकनीमे एकटा छोट हाफपैन्ट आ हाफ शर्ट पहिरने खाली पयरे ओससँ डूबल धरती पर ठाढ़ थरथर काँपि रहल छल। कसिक' दाँतपर दाँत बैसा लेने छल, तैयो दाँत कटकटा उठैत छलैक। दुनू हाथ रगड़िकऽ गर्म करबाक बेकार चेष्टा सेहो जारी रखने छल। पैण्ट-कमीज बर्फ भऽ गेल रहैक आ उघरल टाँङ सुन्न भेल जा रहल छलैक। ओहि छोटका हाफ पैंण्ट मे चन्दर अपनाकेँ नग्न अनुभव करैत छल। ठेहुनसँ एक बीत ऊपर उठल पैण्टसँ निकलैत अपन जवान भ' रहल लम्बा-लम्बा टाङ ओकरा बड़ बीभत्स आ हास्यास्पद लगैत छलैक। बड़ लाज होइक। होइक जे कतहु नुका रही। तैयो सदिखन ओकरे पहिरने रह' पड़ैत छलैक आ एकटा पराजित विद्रोह मोनने भभकिक' शान्त भ' जाइत छलैक। ओ पैण्ट पहिरलापर ओकरा लगैक जेना ओ आदमी नहि, उपजल खेतमे उपद्रवी जानवरकेँ डरयबाक हेतु गाड़ल बाँसक मनुक्ख छल, जकरा फाटल-चीटल छोट सन कपड़ासँ झाँपि देल गेल छलैक। आदमी नहि आदमीक नकल, एकटा बीभत्स अनुकृति।

अन्हार शीतलहरीक स्पर्शसँ कँपैत रहल आ थरथराइत, दलकैत राति ससरैत रहलैक।

चन्दर किछु स्थिर नहि क' सकल। ओहि जनमारा सर्दीमे पानिमे पयर देबाक साहस नहि होइक आ पुल पर बाटे घुमिक' जयबाक विचारे पयर भरिया दैक। कौखन सोचय—कपड़ा उठा पानिमे पैसैत छी, गोली मारो जाड़केँ, गलि

थोड़े जायब।' आ कौखन सोचय—'एक मील कतेक होइत छक। पुलेपर बाटे चल जाइत छी। अनेरो जाड़ ठाड़मे पानि किएक हेलू?' एहि गुनधुनिमे घण्टो ओहि मोटका धूरपर ठाढ़ चन्दर शीत चटैत रहल। ने डेग आगू बढ़लैक, ने नीचा ससरलैक।

समय छिछलैत गेलैक। दिन भरि स्वर्णिम किरणक मोलायम पाँखि पर उड़' वाली धरती सिकुड़ल-सिमटल थरथराइत रहल।

खाली पयर ठाढ़ भेल तरवा बहीर भऽ गेलैक। खाली पयर चलबाक अभ्यास छलैक, मुदा ओहि कनकनीमे सभटा अभ्यास झूठ आ अंग-अंग सुन्न भेल जाइत रहैक। खूजल कन्नपर सर्द लहरि अपन जोरगरी देखा रहल छलैक आ चन्दरक नाक भदबारिक मेघ जकाँ चुबैत जा रहल छलैक। चन्दर डेरा गेल। भेलैक, जेना कनियो देरी हेतैक तँ जमीनसँ सटि जायत। डेग उठबे नहि करतक। जमिक' बर्फ भ' जायत।

पानिमे हेलबाक बिचार स्थगित कर' पड़लैक। पुलक रस्ता धयलक। लम्बा-लम्बा डेग नँपैत दुनू हाथसँ कनपटी, कान आ मुँह रगड़ैत रहल, मुदा गर्म हैबाक बदला अंग-अंग सुन्न भेल गेलैक।

रस्तामे श्मशान पड़ैत छलैक। श्मशान मे बुढ़बा पीपर मुँह उठौने गुमसुम ठाढ़ छलैक। ओकर तीनू सुखायल डारि शून्यमे एकटा विचित्र सन नक्शा बनबैत छलैक। लोक अन्हारमे ओकरा देखिक डेरा जाइत छल। लगैत छलैक जेना पीपड़ पर तीनटा विशाल दैत्याकृति ठाढ़ होइक। अन्हारो रहलापर पूर्वाभ्यासक कारणे चन्दर तीनू डारि केँ स्पष्ट देखलक।

श्मशानक दोसर पीपड़ पर किछु कड़कड़ा उठलैक। चन्दर कनेको भयभीत नहि भेल। ओकरा सुनल छलैक जे ओहि पीपड़ पर घोड़करैत राति भरि कड़कड़ाइत रहैत छैक। मुदा आश्चर्य भेलैक। जाड़ ठार मे साँप-कीड़ा अपन बीयरि धऽ लैत अछि, तखन ओ घोड़रैत किएक कड़कड़ाइत छलैक।

बीच श्मशान मे आबि देह सिहरि उठलैक। चन्दर डरबुक नहि छल। मुदा भूत प्रेतक अस्तित्व मे ओकर अखण्ड बिश्वास छलैक। अपन गाम मे कतेको ओझा गुणीकेँ भूतप्रेत झाड़ैत देखने छल। भूत-प्रेतक अस्तित्वक संग-संग ओकर भलमनसाहतियो पर चन्दरक अटूट आस्था छलैक। भत-प्रेत अनेरो तंग नहि

करैत छक—चन्दर सदिखन बाजय। भूत-प्रेतक भलमनसाहृति पर विश्वास रहबाक कारणे चन्दर राति-विराति ठाम कुठाम चल जाइत छल। मुदा तैयो ओकर देह सिहरि गेलैक। एना आरो कतेक बेर भेल रहैक। चन्दर अपन अभ्यास वश ठोर पटपटाक' गायत्री पाठ कर' लागल। आँखि बन्द भ' गेलैक मुदा डेग आगू बढ़िते गेलैक।

श्मशानक दोसर छोर पर आबि चन्दर आँखि खोलि तकलक। सन्न रहि गेल। किछुये दूर पर तीनटा चुड़ैल ठाढ़ि छलैक। अन्हार मे ओकर उज्जर सपेत नूआ तेना चमकैत रहैक जेना पाठशाला मे ब्लैक-बोर्ड पर खड़ीक चेन्ह। तीनू किदन सभ भनभनाइत रहैक जाहि मे नाकक ध्वनि स्पष्ट रहैक। डरे फेर आँखि मूनि लेलक। गायत्री पाठ शुरु कयलक। डेग आगू रखैत ओकरा भेलैक जेना सामने ठाढ़ मृत्युक मुँह मे बढ़ल जा रहल छल।

लगीच अयला पर स्वर किछु परिचित सन लगलैक। आँखि खोलि देखिते चन्दर चीन्हि गेलैक जे तीनू धनुकटोलीक मौगी छलैक जे निकासक हेतु ओम्हर आयल छलैक। निकासक सुविधा नहि रहबाक कारणे ओ सभ निकासक हेतु धारक कात आबि जाइत छल, भोरे किरिन फूटबासँ पहिने आ रातिक' अन्हार पसरलाक बाद।

डर कम भेलैक तँ चन्दरकेँ हँसी लागि गेलैक। जीबैत मौगीकेँ चुड़ैल बना देलकै ओ? कतेक डेरा गेल छल? अपन कमजोरी पर लाजो भेलैक।

पुल पार करैत चन्दर देखलक, सिगनल भ' गेल रहैक। गाड़ी जे घड़ी ने पहुँचलैक। पयरक गति बढ़बैत पाकिटमे दुबकल पड़ल थोड़ेक सन रेजकीकेँ टोहियौलक। मात्र सैंतालीस नवका पैसा। पूरा टिकटक दाम एक रुपैया। आधा टिकट पचास नवका पैसा। ताहूमे तीन नवका पैसा कम। आधा टिकट पर टी० टी० टोकहो लागल छलैक। कहीं पकड़ियो ने लैक। चन्दर चिन्ता मे पड़ि गेल—कोना गाम पहुँचत? लगलैक, जेना लाइनक बीच आ कात मे बिछाओल पाथर उड़ि-उड़ि क' तड़ातड़ ओकर देह पर बरसि रहल छैक। चन्दर विवश निरूपाय माथक केश नोच' लागल। डेग थकमका गेलैक।

गुमती पर अबैत-अबैत ट्रेन हड़हड़ाइत स्टेशन पर आबि गेलैक। दौड़ि क' ट्रेन पकड़बाक चेष्टा नहि कयलक। बिनु टिकट जयबाक साहस कहाँसँ अनैत?

मात्रिकसँ विदा होइत दोबारा सप्पत खाइत संकल्प कयने छल जे घुरि क' ओत' नहि आओत। भले केहनो दुर्दिन आबि जाय। कोनो दोसर ठेकान रहितैक तँ राति बिता भोरे विदा होइत। पयरे दस कोससँ कम नहि पड़ितैक। भरि राति चलैत रहत, तँ भोरे गाम पहुँचि सकत। दोसर कोनो रस्तो नहि छलैक। चन्दर गुमतीसँ नीचा उतरि टेढ़-मेढ़ एकपेरिया बाटे बाधे-बाध गामक रस्ता धयलक।

अन्हारमे पयर बेर-बेर पिछड़ि जाइक। खस' लागय। मुदा अपन निश्चय पर अड़ल रहल। घुरि क' मात्रिक नहि जायत। रातिक अन्हार, कीड़ा-मकोड़ा वा भूत-प्रेत—कथुक भय चन्दरक संकल्प नहि तोड़ि सकलैक। निर्भय आगू बढ़ैत गेल। ओकरा विश्वास छलैक जे प्राणनाशक जन्तुओ फालतू जानकेँ चिन्हैत छैक आ ओहि पर अपन शक्तिक अपव्यय नहि करैत छैक।

"एक बेर जाइये पड़तौक चन्दर। दोसर कोनो रस्ता नहि छैक। हम सभ ठाम हाथ पसारि थाकि गेलियौक।" माय एना बजलैक, जेना जनैत होइक जे चन्दरक मोनकेँ ठेस लगतैक।

चन्दर छटपटा उठल आ मायक डबडबायल आँखि देखि मोन भेलैक जे दुनू आँखिसँ बहैत ममता अपन आँजुर मे भरि बुन्द-बुन्द क' पीबि जाय।

"तोँ चिन्ता नहि कर माय, हम जयबौ' आइये चल जयबौ।' चन्दर बाझल कण्ठसँ बाजल आ पपनीक तर मे बलबलाइत अश्रुकेँ मायक दृष्टिसँ बचयबाक हेतु शीघ्रतापूर्वक दलानभे चल आयल, जेना कोनो बरिसबा लेल आतुर मेघ धरती पर झुकैत-झुकैत हबाक झोंका पर दूर फेका गेल हो।

माय बड़ी काल धरि ओम्हरे तकैत रहलैक जेम्हर चन्दर कसाइक हाथसँ छूटल बकरा जकाँ पड़ा गेल छलैक आ ओ तेना स्तब्ध ठाढ़ि छलैक जेना कोनो माय अपन अबोध रूग्ण शिशुकेँ दवाइक धोखा मे जहर पिया देने होइक। अपन बेटाक भलाइये सोचि ओ जयबाक बात कहने छलैक। ई जनैत जे ओकरा दुख हेतैक। किएक तँ ओकर धारणा छलैक जे ई दुख सहि लेला पर ओ जिनगी भरि दुखक कँटाह झाड़मे ओझरा क' शोणिते-शोणिताम हैबासँ बाँचि जयतैक। ओ जनैत छलि, चन्दर ओकर बात नहि टारतैक, तेँ जयबाक गप्प कहने छलैक। मुदा कहि देला पर ओकर आकृति पर उगल दर्दक छटपटाइत रेखा देखि ओकरा लगलैक, जेना अपने हाथे अपन पुत्रक घेंट दबा मारि देने हो।

"माफ क' दिहै, अपन निरूपाय मायकें माफ क' दिहें चन्दर। अभागलिक ममताक कोनो मोल नहि। भगवान तोहर मायक मोन मे जतेक ममता, ओकर छाती मे जतेक दूध देलकैं, तकर आधो यदि सामर्थ्य दितैक।" माय एकसरि ठाढ़ बड़बड़ा उठलैक। ठोरबड़ी काल धरि कँपैत रहलैक। आँखि शून्य में पथरायल जकाँ अँटकि गेलैक। लगैक, जेना कोनो निष्प्राण प्रस्तर-प्रतिमाक ठोर थरथर काँपि रहल होइक।

पश्चिमी आकाश पर सूर्य तपेदिकक चिर रोगी जकाँ अखिरी साँस गनि रहल छल आ किछु-किछु झलकैत लाली तेहन लगैत छलैक, जेना मुक्तिक सम्भावना मात्रसँ चिर रोगीक आकृति पर प्रसन्न हँसी पसरि गेल होइक।

चन्दर सप्पत खयने छल......मामा गाम नहि जायब। ई जनैत जे सप्पत राखब मस्किल छलैक। ओकर दुनू जेठ भाइ मात्रिकेक अन्नसँ पोसायल छलैक आ ओ स्वयं बरखो बिता आयल छल। गाम मे बँचल-खुचल जमीनसँ मायेक निर्वाह कठिन छलैक। ऊपरसँ मस्किल ई जे जेठ भाइ मात्रिक मे बरखो बिता पाँचम वर्गसँ आगू नहि बढ़ि सकलैक। नहि जानि केहन मोह भ' गेलैक। पाँच बरख एक्के क्लास मे बिता मायक कप्पार पर आबि बैसलैक। दोसर भाइ तेजगर रहैक, मैट्रिक पास कयलकै, मुदा दुखिया मायक दुख दूर करबाक बदला ओकर भुजबी-भुजबी भेल करेज मे एकटा आर काँट भोकैत असाध्य रोगक फेर मे पड़ि गाम आबि बैसलैक।

बाँचि गेलैक चन्दर— आसक अन्तिम किरण। अन्हरिया रातिक एकाकी तारा।

मायक दूध छुटलैक, त' गामो छूटि गेलैक। मात्रिक मे अनिमन्त्रित पाहुन जकाँ उपस्थित भेल चन्दरक स्वागतार्थ क्यो नहि बहरयलैक। ने क्यो स्नेह-पूर्वक नाम पुछलकै आ ने कोरा मे उठा दुलारसँ चुम्मा लेलकै। खाली बुढ़िया नानी अपन उजड़ल-बिलटल छातीसँ सटा बड़ी काल धरि हुचकैत रहलैक।

चन्दरक नाना चारि कोसक राजा छलै। नाना नहि रहलैक। राजो नहि रहलैक, मुदा तैयो कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक। पैघ मकान, पैघ

पाया, पैघ दरबज्जा, पैघ आङन, पैघ आश्रम, पैघ-पैघ लोक आ एतेक रास पैघ-पैघ वस्तुक बीच एकसर डुबकल छोट-छीन चन्दर।

भोरसँ दुपहरिया धरि आ साँझसँ निस्तब्ध राति धरि चन्दर चारुकात अपस्याँत दौड़ैत रहय। सम्पूर्ण परिवार ओकरे आस पर रहैक, चन्दर ई ला, चन्दर ओ ला, चन्दर एत' जो, चन्दर ओत' जो। बिना चन्दरक ककरो निबहता नहि छलैक।

—"चन्दर फूल तोड़ि ला।" भोरे आँखि मलैत नानी कहैक।

—"चन्दर कने ओइ पार सँ हमर दवाइ आनि दे।" किरिन फूटैत बड़का मामा कहथिन।

"चन्दर कने खेतपर चल लो।" छोटका मामा कहथिन।

"चन्दर, कने भगवानक पूजा क' ले।" थाकल-ठेहिआयल चन्दरचेँ मामी कहि बैसथिन।

आ सूर्य माथ परसँ उतर' लगैक तँ नानी छाती पीटि-पीटि क' चिकर' लगैक—"रक्षसवाकेँ भूखो-पियास नहि लगैत छैक। हजारो बेर कहलियैक जे पहिने पानि पीबि ले, तखन मर जत' मरबाक होउ। मुदा हमर के सुनैत अछि ?"

नानी थारी परसि सामने राखि दैक। भरि पेट अन्नक संग-संग नानीक दुलार, चन्दर तृप्त भ' जाय।

खाइत-खाइत एक बाजि जाइक आ तकर बाद स्कूल जयबाक हेतु ने पयर में शक्ति बचैक ने मोनमे इच्छा। मोन करैक जे कतहु आँखि मूनि पसरि जाय। सभ दिन देरीसँ जयबाक लेल मास्टर डँटैत छलैक। किताब नहि रहलाक कारणेँ कतेको बेर बेँत लागि चुकल छलैक। चन्दर कतेको बेर बाजल, मुदा आङनमे क्यो कान नहि देलकै। डाँट सुन' आ मारि खाय लेल स्कूल जायब चन्दरकेँ नहि रुचैत छलैक। अनठा दैत छल। बस, सभटा दोष ओकरेपर आबि जाइत छलैक। ककरो पुछलापर घर भरिक लोक एक स्वरसँ बाजि उठैत छलैक— "ओकर माथमे तँ गोबर भरल छैक, पढ़त की खाक' ? आ ऊपरसँ स्कूल जयबाक नामपर बोखार सेहो लगैत छैक।"

तँयो चन्दर संतुष्ट छल। भरि दिन खटलापर भरि पेट अन्न भेटब ओकरा लेल सौभाग्य छलैक। बेसीक ओकरा आकांक्षा नहि छलैक। मात्र कौखन अपन ममियौत भाइ-बहिनकेँ नीक खाइत, नीक पहिरैत देखि मोनमे किछु कचकि उठैक। कौखन संगहि भोजन कर' बैसलापर अपन आ ओकरा सभक थारीक फर्क देखि इच्छा होइ जे थारी छीनिक' खा लेअय, मुदा मुँहमे भरि आयल लेर चाटि क' रहि जाय।

दिन बितलैक।

राति ससरलैक।

आ कतेको बरख बीति गेलैक।

मामाक परिवार विशाल भ' गेलनि। आमदनी घटैत गेलनि आ खर्च नमरैत रहलनि। रहन-सहनक स्तर उठैत गेलनि आ फलस्वरूप अन्न बाँट' आ लुटाब' वला घरमे बेसाहो लाग' लगलनि।

नानी प्रायः यैह दिन देखबा लेल अँटकल छलैक। सभ किछु देखि-सुनि बिदा भ' गेलि - चन्दरक एक मात्र स्नेहाश्रयकेँ उजाड़ैत।

ओकर क्रिया कर्मसँ फुरसति भेटभनि तँ मामा लोकनि दोसर चिन्तामे लगलाह। सम्पत्ति आ घर घड़ारी बाँटि लेलनि। मुदा एकटा पेंच समस्या सामने आबि गेलनि—चन्दरक समस्या!

"आब चन्दरक कोन व्यवस्था हेतैक।" बड़का मामा पुछलथिन!

"ओ तँ रहबे करत! आर कत' जायत?" छोटका मामा कहलथिन!

"मुदा ओकर खर्च?" बड़का मामाक प्रश्न छलनि!

"दुनू गोटे उठा लेबैक। गोसबरामे रहत।" छोटका मामाक समाधान छलनि।

चन्दर गोसबारामे रहि गेल। दुनू मामाक काज देखनि आ भोजन एक मास बड़का मामा देथिन आ एक मास छोटका मामा।

मुदा एहि व्यवस्थामे असुविधा बढ़ि गेलैक। काज सेहो बढ़ि गेलैक। ऊपरसँ भरिपेट भोजनोमे कटौती होब' लगलैक। बाजय तँ ओकर पेटक तुलना कोहा आ बोरासँ होब' लगलैक। भरि-भरि दिनक खटनी, आधा पेट भोजन। चन्दरक मोन टूट' लगलैक।

आ एकदिन तेहन घटना भ' गेलैक जे मात्रिकमे टिकब अपमानजनक बूझि पड़लैक।

ओहि दिन थारी सामने अयलैक तँ परसन आधो पेटक हेतु यथेष्ट नहि छलैक। आरो परसन मङलकै तँ ओकरासँ छोट ओकर ममियौत भाइ दीपक लुल्लुआ लेलकै, पेटाह कहि बैसलैक।

"तौँ बीचमे नहि बाज। तोरासँ नहि मङलियौक अछि।" चन्दर ओकरा रोकलकै।

—किएक नहि बाजब हम? हमरे खा क' हमरे पर रोआब? पेटू नहितन। भरि बट्टुक भात खा गेलहिक, आब की हाथी-घोड़ा खयबेँ?

"चुप रह दीपक! तोहर मुँह नहि लगैत छियौक हम?"

"तोरा सन एरू-गेरूकेँ मुँह लगबिते के अछि? बैसल-बैसल अन्न गीड़ैत छेँ। 'बड़ आनिबला छेँ, तँ अपन घरक रस्ता किएक ने लैत छेँ?" दीपक चुनौती देलकै।

तामसे आँखि नोरा गेलैक। जबर्दस्ती रोकल तामस नोर बनि टघरि गेलैक। अपन विवशता, दारिद्रय आ दुर्भाग्यपर पहिलबेर मोन भरि कानल चन्दर जेना कोनो बाल विधवा अपन वैधव्यक कतेको बरख बिता सज्ञान भेलापर अपन दुर्भाग्यपर कानि उठैत अछि।

आ कनैत-कनैत चन्दर संकल्प कयलक जे मात्रिकमे नहि रहत। भूखेँ मरि जायत, कष्ट सहत, मुदा घुरिक' मामा गाम ता' धरि नहि आओत जा धरि पढ़ि-लिखि कोनो योग्य नहि बनि जायत।

ओही दिन गाम चलि आयल चन्दर। मामा-मामी लोकनि किछु उदास छलथिन। मुदा ओ उदासी वियोगक दुःखक परिचायक नहि छलनि। ओहिमे मात्र एकटा चिन्ता छलैक जे चन्दरक अभावमे एतेक पैघ गृहस्थीमे टहल-टिकोरा के करत ... चन्दर अपन महत्त्व चीन्हि गेल छल।

घुरिक' मात्रिक नहि गेल चन्दर। मोनो ने छलैक जे मामा गाम गेना कतेक वर्ष भेलैक।

आ माय फेर ओत' जयबाक बात कहि बैसलैक। चन्दर नीक जकाँ अनुभव कयलक जे दोसर कोनो रस्ता नहि छलैक। मात्रिक छोड़ि देलापर दिन राति

अथक परिश्रम करैत चन्दर अपन पढ़ाइ जारी रखने छल– पूर्ण उत्साह एवं मनोयोगक संग। मैट्रिकमे आबि गेल छल। बोर्डक फीस देबाक छलैक। माय सभठाम हाथ पसारि निराश भ' गेलैक। नितान्त निरूपाय नहि भेने ओ चन्दरके' जयबाक कथा नहि कहितैक। ओ चन्दरके' नीक जकाँ चिन्हैत छलैक।

"हम जायब, अवश्से जायब......।" चन्दर निश्चय कयलक।

× × ×

"बड़कीटा भ' गेलें चन्दर।" प्रणाम करबा लेल झुकल चन्दरके' ध्यानसँ देखैत बड़का मामा कहलथिन।

"आब त' विवाह कराब' पड़त तोहरा" मामी हँसी कयलथिन।

"हमरा सभके बिसरिये गेलहुँ चन्दर। घुरिक' पुछारियो धरि ने कयलहुँ कहियो।" बड़का मामाक पुतोहु, चन्दरक भौजी उलहन देलथिन।

चन्दर दबि गेल, छोट भ' गेल। एक्के संग अपनत्व आ स्नेह भरल एतेक बात चन्दर कहियो नहि सुनने छल। स्नेहक भूखल चन्दर कान'-कान' सन भ' उठल-–गदगद, भावातिरेकसँ विह्वल।

साँझ खन पहुँचल छल। राति कोना बितौलक चन्दर नहि बूझि सकल। मात्रिकमे ओतेक स्वादिष्ट भोजन ओतेक आग्रहसँ कहियो ने खयने छल, सुतबा लेल ओतबा नीक बिछाओन कहियो ने भेटल छलैक। भरि राति टाङ पसारने सूतल रहल।

राति बितलैक।

दिन उगलैक।

—"चन्दर कने ओहि पारसँ हमर दवाइ ल' आ।" बड़का मामा अपन कोठलीसँ बाजि उठलथिन।

"चन्दर, कने खेतपर चलि जो, धनकटनी छैक।" छोटका मामा दतमनि करैत कहलथिन।

"चन्दर कने पूजा क' दियहिक।" भनसाघरसँ मामी बाजि उठलीह।

"चन्दर कने बच्चाके' घूमा अबियौक।" अपन दू बरखक बेटीके' कोरामे दैत भौजी कहलथिन।

चन्दरके' लगलैक, जेना राति सपना देखने छल। ओ त' वैह चन्दर छल जे अपन चीन्हल-जानल मामा गाममे घर-बाहर अपस्याँत दौड़ि रहल छल।

सप्ताह बीति गेलैक। मुदा चन्दर अपन अयबाक उद्देश्य प्रकट नहि क' सकल। आठम दिन अपन जयबाक चर्चा चलौलक। सभक मुँहे एक्के बात बहरयलैक—"तों एतहि रहि जो चन्दर। हमरा लोकनिके' एकटा आदमी चाहबो करी, दौड़-धूप करबा लेल। फेर तों तँ अप्पन लोक छें। गोसबरेमे रहबे'। कोनो तकलीफ नहि हेतौक।"

चन्दरक मुँहमे कोनो कट्टह गप्प आबिक' रहि गेलैक। अपनाके' संयत रखैत सभके' नम्रता पूर्वक एतबे कहलकै– "बहुत दिन देखना भ' गेल छल, तैं मोन औना गेल जे सभके' देखि आबी। सभसँ भेट भ' गेल, आब आज्ञा भेटय।" आ शीघ्रतापूर्वक सभके' प्रणाम क' आङनसँ बाहर आबि गेल।

पहिने बभनटोली, तखन धनुखटोली, फेर शिव मन्दिर आ अन्तमे गामक सिमानपर बहैत बागमती! चन्दर बढ़िते चल गेल।

गुमतीसँ उतरि एकपेरिया धयलक आ बाधे-बाध गामक रस्ता पकड़लक।

दूर धरि पसरल अन्हारमे डूबल खेतमे एकटा सर्द चुप्पी व्याप्त छलैक। चन्दरक अस्तित्व ओहि अंधकारमे घुसैत क्रमश: विलीन भ' गेलैक।

अन्हार जमकल रहलैक।

फरवरी १९६४

गिरगिट

धोखोसँ कहियो ई नहि सोचि लिहें जे हम तोरा बिना मरल जाइत छियौक ! जखन तोरा दोस्तीक लेहाज नहि छौक, तखन हमरे कोन फिकिर अछि ? दू बरख बीति गेल, ने कोनो चिट्ठी, ने कोनो समाद ! तेना निपत्ता छें जेना अंगरेजिया छौड़ीक सीथसँ सेनुरक रेख, तकलो पर भेटब मस्किल ! निपत्ता छें, त' रहल कर । ताहिसँ हमरा की ? तोरा की बुझाइत छौक जे हम तोरा ताक' लेल जमीन आसमान छानि मारबौक ? कहियो अयनामे अपन चेहरा देखने छें ? नहि देखने छें, तँ आब देखि ले ! भ्रम मेटा जयतौक ! सार, बेमान !

तोहर चालि हम नीक जकाँ चीन्हि गेल छियौक । भेटबे त' तेना जेना कहियो फराके नहि भेल रहें, जेना दूधमे पानि, फराक-फराक अस्तित्वे ने रहि जाय जेना । वियोगक विस्तारकें अपन मस्त हँसीसँ पाटि देबें आ सभटा मान-उपरागकें चुम्बन-आलिंगनक बाढ़िमे बहा देबें । जाइत काल गरा जोड़ि क' कनबें आ हफ्तामे दू टा चिट्ठी लिखबाक सप्पत खयबें । तोहर मस्त हँसी तोहर चल गेलाक बादो हमर चारूकात छिड़ियाइत रहत, एहन भ्रम बेर-बेर हैत जे तों कतहुँ लगे मे छें, हमर अत्यन्त समीप । ओ मस्तीक हँसी क्रमश: घसैत-घसैत क्षीण होइत, बिला जायत आ तखन जहिया हमरा इहो मोन नहि रहत जे तों जीबैत छें कि मरि गेलें तेना धमकि जयबें जेना हिमालयक चोटी पर चीनीक बम, सर्वथा अप्रत्याशित ! अपन कसरती बाँहिक लपेटमे छटपटाइत हमर साँसक चिन्तासँ निश्चिन्त घण्टो अपन करेजमे सटने बेर-बेर कहबें—"पहिने भरिमोन छातीसँ लगाब' दे, तखन कोनो बात । युग बीति गेल तोरा देखना ।" फेर कने दूर हटि ध्यानसँ हमरा देखैत मुसकिया उठबें ! तोहर मोहक मोछक कोन पसरिक' नाम भ' जयतौक आ हमरा फेरसँ अपन आलिंगनमे समेटैत कोनो फिल्मी नायक जकाँ बाजि उठबें—"तोहर रंग तँ दिन-दिन सिनुरिये भेल जाइत छौक ।"

हमर दबाक' राखल क्रोध भड़कि उठत । तोरा जोरसँ झटकैत कहबौक —"चल हट, सार ! एखन तोहर प्रेम उमड़ि रहल छौक ! एतेक दिनसँ कहाँ मरि गेल छलें ?" तों ओहिना मुसकियाइत रहबें, विश्वासपूर्वक, सहज भावसँ जेना हमर क्रोधक क्षणिकतापर अतिशय बिश्वास रहौक । ओही बम्बइया स्टाइलमे कहबें—"बिगड़लापर तोहर मुँह आर लला जाइत छौक, विश्वास नहि होउ, तँ अयना देखा दियौक !"

भीतरसँ हुमड़ैत हँसीकें बड़ मस्किलसँ जाँति हम क्रोधित मुद्राकें कायम रखबाक प्रयास करबौक, मुदा तों नहि मानबे ! हँसाइये क' छोड़बें ।

"देख, पहिने हमर एकटा बात सुन । बहुत दिन धरि बदरीमे नुकायल रहलाक बाद जे चान बहराइत छैक से केहन लगैत छैक ? अनमन तोरे सन । कहीं हमर नजरि ने लागि जाउ ! रहलौ चिट्ठी नहि लिखबाक उपराग, से विश्वास कर, सभ दिन तोरा चिट्ठी लिख' बैसैत छलियौक मुदा लिखि नहि होइत छल । कलम उठबिते लगैत छल, जेना कान' लागब । इच्छा होइत छल जे उड़ि क' तोरा लग चल आबी । सुन, एकटा बात कर ! आ, हम तों मिलि क' भगवानसँ प्रार्थना करी जे दू टा प्रेमीकें उड़ि क' एक दोसरक लग जयबाक हेतु पाँखि सेहो देल करथिन । दुनिया भरिक लेला-मजनू हमरा तोरा आर्शीवादक बोझसँ दाबि देत ।"

हम भभाक' हँसि देबौक, जेना बान्हल पानि बाट भेटलापर हठात' बह' लगैत अछि । बड़ी काल धरि हहरैत रहत ओ हँसी । आ अन्तमे अपन पाकिटसँ एकटा फोटो बहार क' हमर तरहत्थी पर रखैत कोनो नवकनियाँ जकाँ लजाइत बाजि उठबें—ले, अपन भौजीकें देख·········।

ई पट्टी ककरो आनकें पढ़बियहिक सार ! हम तोहर बुट्टी-बुट्टीकें चिन्हैत छियौक । बाज, ई फोटो सभ कोन स्टूडियोक अलबमसँ चोराक' अनैत छें ! फुटानीक हद क' देलें तोंहू ! प्रेमक झूठ-फूस खिस्सो सुनयबाक लेल हमहीं भेटैत छियौक । चोरा नहितन ।

क्यो कहैत छल जे बनारस गेल छें । बनारस जो कि बाराबंकी, हमर बलायसँ । मर, जत' मरबाक होउ ।

काज ! काज !! काज ! जेना तों एकटा लेवोरेटरी असिस्टेन्ट नहि, आणविक शक्तिक नवीनतम परीक्षणमे व्यस्त रूस आ अमेरिकाक कोनो व्यस्ततम वैज्ञानिक रहै जकरो इहो पता नहि रहैत छैक जे ओकर आविष्कार सृष्टिक केहन-केहन विध्वंस करैत छैक। चल, मानि लैत छियौक जे कम काज कयलासँ जीवन शक्ति क्षीण होइत छैक। मुदा इहो जानिये ले बाउ, जे अधिक काज कयलासँ मृत्यु समयसँ पहिने घराजोड़ी देब' लगैत छैक। मरबें तें भोग पड़तौक जे कोनो अपन लोक बुधियारीवला बात कहने छल !

अजुका लेल एतबे काफी छौक ! निर्लज्ज तें तों पुरान छें। मुदा कोनो गत्रमे जरूर लाज बाँचल हेतौक।

आब एकटा सत्त बात सुनि ले— सवा सोड़ह आना।

जखन कखनो एकान्तमे बैसि अतीतक परछाँहीकें छूबाक असफल प्रयास करैत छी, परछाँही हटिक' दूर, बहुत दूर पड़ाइत बिला जाइत अछि। हमर पसरल बाँहि ललचिक' रहि जाइत अछि, बान्हि नहि पबैत अछि ओकरा ! परछाँहीक मीनार, नाम, ततेक नाम भ' जाइत अछि जे ओकर स्पर्शो असम्भव भ' जाइत अछि। चुपचाप अवश-विवश बैसल पसरैत-समटैत अतीतक परछाँही देखि कोनो बीतल क्षणक स्मृतिसँ अपन मोनकें परतारि लैत छी।

आ अतीतक अन्हार बाटपर छिड़िआयल जाहि कोनो बीतल क्षणकें टोहियबैत छी, ओहि प्रत्येक क्षणमे तों जीबैत छें, हँसैत छें, ठहाका लगबैत छे। ओहि क्षणमे तोहर मस्त ठहाकाक अतिरिक्त किछु नहि रहैत छैक। एहन लगैत अछि जेना हमर व्यतीत तोरे हँसीमे बन्दी बनल हो !

तोरा हेतौक जे दस टा गारि सुनौलाक बाद ई लुच्चा लमनचूस देखाक' परतारि रहल अछि ! मुदा विश्वास कर, हम सत्त बात कहि रहल छियौक, एकको मिरिया फूसि नहि। जखन कखनो अवकाशक क्षण हाथ अबैत अछि, अतीतक स्मृतिमे तोरा ताकि भरि मोन गप्प क' लैत छी !

हम जनैत छी जे हमर एहि बातपर तोरा विश्वास नहि हेतौक ! सोचबें जे दिनभरि कालेजमें क्लास कयलाक बाद जहाँ-तहाँ बौयबाक अतिरिक्त

काजे कोन अछि ? आब तोरा कोना कहियौक जे परिस्थिति कतेक बदलि गेलैक ! तोरा अपन दिनचर्या सुनयबौक त' विश्वास नहि हेतौक ? सोचबें, सार गप्प हाँकि रहल अछि। मुदा ई कनियो झूठ नहि छैक जे अन्हारे उठि, नहा-धोक' तैयार होइत छी जे भोरमे अपन किताब देखलाक बाद आठ बजेसँ दस बजे धरि ट्यूशन क' सकी, मात्र तीस रुपैयाक हेतु ! साढ़े दससँ चारि बजे धरि एम० ए०क क्लास करैत छी। फेर साँझमे दू टा ट्यूशन ! एकटा पाँचसँ सात आ दोसर सातसँ नौ बजे धरि, मात्र तीस आ चालिस रुपैयाक हेतु। एहि सय रुपैयामे मास भरिक खर्च चलब' पड़ैत अछि। घरसँ रुपैया नहि अबैत अछि ! भोरसँ राति दस बजे खटलाक बाद भरि राति निश्चित सुतैत छी—सपनाक निन्न नहि, मुर्दाक निन्न ! प्रत्येक राति आ प्रातमे आतबे फर्क होइत अछि, जतबा एकटा मृत्यु आ पुनर्जन्ममे ! रातुक मुर्दा भोर होइत मशीनक बान्हल गतिसँ काज शुरू क' दैत अछि, ओहि सूर्यक संग जे राति भरि सुस्ता क' भोरे अपन यात्रापर बहरा जाइत अछि।

तों फेर हंसबे जे भाजि रहल अछि। स्कूलमे जकरा घरसँ दू-दू सय रुपया मास खर्च अबैत छलैक से एम० ए०मे आबिक' सय रुपैयाक हेतु छौ घंटा ट्यूशन कियैक करत ?

यैह भाग्यक क्रूर परिहास अछि आइ पहिल बेर तोरा एकटा सत बात कहि दैत छियौक जे तोहर एहि नवाब दोस्तक बाप एकटा गरीब आदमी छैक, औसत हिन्दुस्तानी जकाँ रोटी कमयबाक हेतु दिन राति खट'वला बुद्धिजबी। तोहर इ भाग्यहीन दोस्त सौभाग्यसँ ओहि बापक सभसँ पैघ बेटा छैक जे ओकरा राजकुमार जकाँ पोसलकै, प्रायः एहि आसपर जे ओकर बेटा एकदिन असली राजकुमार बनतैक आ ओ एकटा राजा बेटाक भाग्यशाली बाप बनबाक गौरब प्राप्त करत। मुदा तोहर दोस्त किछु नहि बनि सकलौक—एकटा आदर्शवादी भीरू नवयुवक, हवाक झोंका पर उड़ैत सुखायल पात।

आ ई जुआनी हमरा पर बड़ अन्याय कयलक अछि। थोड़ेक बास्तविकतासँ परिचय करा देलक अछि, कल्पनाक आकाशसँ यथार्थक मरूभूमिमे उतारि देलक अछि। किछु-किछु सज्ञान भेल जाइत छी। आ ई ज्ञान दिनसँ ओकर मस्ती आ रातिसँ स्वप्नक निन्न छीनि लेने अछि। आब दिन क' कर्त्तव्यक बान्हल मशीनी गति आ राति क' मुर्दा निन्न। तैं कहलियौक जे जखन कखनो अवकाशक क्षण हाथ

अबैत अछि, अतीतक अन्हार बाटपर छिड़िआयल कोनो सुखद क्षणकें बीछि तोरासँ भरि मोन बतिया लैत छी। तोहर ई काल्पनिको सम्पर्क मोनमे एकटा नव उत्साह भरि दैत अछि। तो तँ जनैत छें, हम पक्का भीरू छी।

तोरा ओ दिन मोन छौक जहिया हम डरे थरथर कँपैत तोहर डेरापर गेल रहियौक ? यद्यपि देहदशाने तोरासँ दुन्ना छलियौक आ ताकतियो तोरासँ कम नहि छल। कियैक तँ हमरा सुनल छल जे तोहर घुस्सामे बड़ शक्ति छौक। कड़ासँ कड़ा वस्तु एक चाटमे दू फाँक। हमरा डर छल जे कही तों हमर कपार दू फाँक ने क' दे ? कियैक तँ हेड मास्टर लग हम तोरा पर नालिश कयने छलियौक आ हेडमास्टर तोरा खूब छड़ीपिटौने छलौक।

हम गामक स्कूलसँ नव नव आयल रही। तोरासँ एकबेर मामूली गप्प भेल छल। हम शहरूआ तौर तरीकासँ अपरिचित रही, देहाती भुच्चर। एकदिन रमेश हमरा सामने तोरा कहलकौक—"अरौ सरबा रणेन, तों हमर किताब नहि अनलें ?' हमरा इ बात बड़ अधलाह लागल छल। रमेश तोरा सार कहलकौक, एतेक भारी बात, बहिनक गारि। मुदा तों चुप्प रहि गेलें। हमरा भेल जे प्रायः तों ओकर बात नहि सुनलहिक। कहलियौक—"तों नहि सुनलहिक रणेन ? रमेश तोरा बहिन लगा क' गारि पढ़लकौ।

हम अपन बात समाप्तो ने कयने रही कि तोहर कसरती हाथक जबर्दस्त घुस्सा मुँहपर लागल छल आ हम जमीनपर चितंग पसरि गेल रही। लागल जेना सभटा दाँत झड़ि गेल। आँखिक आगाँ अन्हार घुप्प।

हम कनैत कनैत हेडमास्टर लग गेल रही आ नालिश कयने छलियौक। सफाइमे तों विचित्र बात कहने छलहिक। कम सँ कम ओहिदिन हमरा ओ बात विचित्र लागल छल। तों कहलहिक जे—"सार कहब कोनो गारि नहि छैक। मुदा बहिनक नाम लगा हम तोरा गारि देने छलियौक।" जकरे लेल चोरी कयलहुँ सैह कहलक चोरा।

हेडमास्टर साहब किछु नहि सुनलथुन। खूब थुराइ भेलौक तोहर, मुदा ओतेक मारि खाइयो क' तोहर चेहरापर कष्टक कोनो अभिव्यक्ति नहि जागल छलौक। हम आतंकित भ' गेल रही।

लड़कासभ हमरा डेरौलक जे हमर जयपन्थी आबि गेल। तों हमर औंठा कम सँ कम अवस्से तोड़ि देबें जाहिसँ हम जिनगी भरिक हेतु बेकार भ' जायब, पढ़ि लिखि नहि सकब। हम गाम आपस जयबाक बात सोच' लागल रही।

अही बीच एक दिन छुट्टी भेलापर तों कहि बैसलें—"चल, हमर डेरा चल।"

हम डरे थरथरा गेलहुं। अपन औंठाकें सशंकित भावें मुट्ठी बान्हि नुका लेलहुं। लागल जेना आब पढ़ाइ-लिखाइ छूटल। मुदा तों कहने छलें—"तों त' बड़ नीक लड़का छें। मिला हाथ, हमर तोहर दोस्ती पक्का।" मैथिली नीक बाजि लैत छलैं तों।

हम डेराइत-डेराइल हाथ बढ़ौने छलियौक जे कतहु आङुर ने मचोरि दे। मुदा बड़ आत्मीयता आ उत्साह सँ हाथ मिलौने छलें। तोहर डेरा जायमे तैयो डर लागल छल। तों हँसि क' बजलैं—डेरो नहि, आब नहि पिटबौक।

हम तोहर घर गेलियौक। एकटा बड़का हातामे पैंघ सन पीरा मकान उदास ठाढ़ छल। बाहर सँ लगैत छलैक जेनाबरखोसँ खाली पड़ल होइ—उजाड़। देवाल पर कतेको बरख सँ पोचारा नहि कराओल गेल छलैक, कतेको ठाम कारी दाग पड़ि गेल छलैक। हाता बड़ पैंघ, मुदा जंगल-झाड़ आ पैंघ-पैंघ घास उगल। पयरे लगातार चलबाक कारणें मुख्य द्वार सँ मकान धरि रस्ता बनि गेल रहैक। पयरक रगड़िसँ घास उड़ि गेल रहैक आ नीचाँक चिकनी माँटि झलकैत छलैक।

हम दरबज्जा पर लजायल ठाढ़ रही। तों दौड़िक' भीतर गेलें। तोहर बुनू जेठ बहिन बाहर अयलौक आ हमर हाथ पकड़ि भीतर घीचैत कहलक—बायरे कैनो दाँड़िए आछो ! भीतोरे एसो।

भीतर जा क' चुपचाप एकटा कुर्सी पर सिकुड़ि क' बैसि गेल रही। भीतर एकटा वृद्धा बैसल छलीह—तोहर माय। साठिक लगभग बयस। सभटा केश उज्जर आ आँखि पर पातर फ्रेमक चश्मा। तों सभ सँ परिचय करौलें—आमार माँ मेज दी, छोट दी "आ फेर हुनका लोकनि कें कहलहुन"—आमार नतुन बन्धु, प्रोकाश।

तोहर डेरा सँ बहराइत काल हम ने खाली तोहर पक्का दोस्त बनि गेल

रहियौक, अपितु ओइ अनभुआर शहर मे हमरा एकटा ममता भरल माय आ दू टा स्नेहमयी बहिन भेटि गेलि छलि। पहिलेबेर तोहर घर गेलापर लागल, जेना पहिनो बेर-बेर एत' अबैत रहल होइ, घर चिन्हार अछि...... ।

पहिले दिन तोरा बारेमे सभ किछु जानि लेने रही । तों अपन बाप आ भाइ सभकें खा गेल छलें । बाप शहरक नामी वकील छलथुन । जनमिते हुनका तों सांसारिक कष्टसँ मुक्त क' देलहुन । फेर छबो भाइकें बिदा कयलहुन—एक-एक क' । खाली तीनटा पँध बहिन बाँचलि छलौक । बड़की बहिन सासुरमे छलौक, आ छोटकींक सेहो विवाह भ' गेल छलैक । मंझिली बहिन कुमारि छलौक, पचीस बरखक । हमरा सन देहातिक लेल ई बात बड़ विचित्र लागल रहए जे पचीस बरखक बड़की बहिन कुमारि छलैक आ छोटकीक विवाह भ' गेल रहैक । ओहि दिन हमरा नहि ज्ञात छल जे आइ-काल्हि विवाहक हेतु कुमारि कन्याकें प्रदर्शनीमे बैस' पड़ैत छैक । इहो ज्ञान नहि छल जे मंझिलीक कारी चामसँ छोटकीक गोर चाम बाजी जीति लेने रहैक । ओ प्रदर्शनीमे चुनि लेल गेल छलि—हमर गमार बुद्धिमे इहो नहि सन्हिया सकल........।

तोहर माय हमरा इहो कहि देने छलीह जे कोना तोहर बापक कमाइपर तोहर कका लोकनि मौज करैत रहलौक आ कोना हुनकर बाद आँखि फोर लेलकौ । दू टा कका कलकत्तामे नौकरी करैत छलौक आ परिवारक संग ओतहि रहैत छलौक । मकानमे खालो तोहर सभसँ छोट विधवा काकी रहैत छलथुन । तोहर दुनू कका हुनकर आ हुनकर दुनू बेटाक खर्च-बर्चक हेतु रुपया पठबैत छलथिन । मुदा तोरालोकनिसँ कोनो मतलब नहि छलनि । मकानक चौथाइ हिस्सा मे तोरालोकनि उपेक्षित जकाँ रहैत छलें । ओ सभ बात सुनिक' हमर आँखि नोरा गेल छल जकरा नुकयबाक हेतु हम, जयबाक हेतु उठिक' ठाढ़ भ' गेल रही । बिदा होइत नमस्कार कयलियनि तँ तोहर माय हमर माथपर स्नेहसँ हाथ फेरैत कहलनि—"जाबे ? किन्तु मोने राखो । तोमाके रोज आसते हबे.............।"

वचन देने छलियनि आ बाटमे बेर-बेर दोहरबैत अपन डेरा घुरल रही—"मेज दी......छोट दी........माँ.......छोट दी.......मेज दी........माँ........।"

...तकर बाद प्रत्येक प्रात लोक सभ हमरा दुनूकें एक संग जगैत देखलक । प्रत्येक दिन स्कूल हमर तोहर हंगामा आ शैतानी देखलक । प्रत्येक साँझमे शहरक सड़क सभ हमर दूनू गोटेक पैरक ध्वनि संग-संग सुनलक । प्रत्येक राति एक दोसर

सँ चिपटल सूतल हमरा लोकनिकें अपन कोरामे समेटि दुलार कयलक । संगतुरिया सभ हमर तोहर दोस्तीपर जरि मरल आ बुढ़बासभ अनेरे टीका टिप्पणी कयलक ।

तोरा हम अपन गाम सेहो ल' गेलियौक । हमर माय अपन देहाती स्वभावक कारणे तोरा सामने आब'सँ लजाइत रहय । हमरा लोकनि खाय बैसलहुँ त' ओ केबाड़क फाँकसँ देखैत रहय । तों चुप्पेचाप लग जा पयर पकड़ि कहलहिक—"अपन बेटाकें आशीर्वाद नहि देबैक माँ ?"

आ हम छोट भ' गेल रही—एक दम बाओन । सभदिन तोहर मायकें नमस्कार करैत छलियनि; मुदा पयर कहियो नहि छूने रहियनि । हमर मायक पयर छूबि तों हमरा बाओन बना देलैं ।

गामसँ घुरलापर रातिमे संग-संग सूतल दुनू गोटे मायक गप्प मोन पाड़िक' हँसि रहल रही कि तोहर माय लग आबि फुसफुसा क' बाजलि छलीह—"एकटू आस्ते बोलो बाबा ।"

हम अचकचा क' चुप भ' गेल रही । तों फुसफुसा क' बाजल रहैं—"ओहि कातमे हमर काकी रहैत अछि—नम्बरी खुराफाती । हमरा लोकनिकें बदनाम करबाक ठीके लेने छथि । जे क्यो एहि डेरामे अबैत अछि, सभपर सी. आइ. डी. जकाँ नजरि रखैत छथि । बहिन सभक संग झूठ-फूस खिस्सा बना लोकके कहैत फिरैत छथिन । आब तोरोपर नजरि पड़ि गेलनि अछि । हमरालोकनि नहि किछ बजैत छी, तें माथ चढ़ल जाइत छथि । हमर दोस्तकें आयब जायब अधलाह लगैत छनि, मुदा अपने घण्टो नीलूदाकें बैसौने रहतीह । फूसियोकें भगतिन बनलि रहैत छथि ।

तों तामसे लाल भ' गेल रहैं आ हम लाजे गड़ि गेल रही । हमरा गेला-अयलासँ कोनो दिन एहन बात उठतैक, तकर कल्पनो नहि छल । कमसँ कम हुनका अवस्थाक फर्क तँ देखबाक छलनि ।

दू-चारि दिन तोरा ओत' जायसँ कनछी कटैत रहलहुँ । मुदा मानैत के अछि ? पकड़ि क' ल' अनलें आ माय लग नालिश कयलें—"परकसवा रूसल छौक माँ ।"

माय पुछलनि—"केनो बाबा । मायेर ऊपर कीसेर राग ?"

"नहि माँ, रूसब किएक ? सोचलहुँ जे हमरा अयलासँ अहाँ लोकनिक बदनामी होइत अछि तें नहिए आयब ठीक।"

'सुनलें माँ। सार हमरा लोकनिक उपकार कर' चलल अछि, बदनामीसँ बचाब' चाहैत अछि। अरे डर ककरा छैक एहि बदनामीक ? जेना अबैत छलें, आयल कर, नहि तँ हड्डी-गुड्डी तोड़ि देबौक।"

हम फेर ओहिना आब' जाय लागल रही। खाली तोहर बहिन सभसँ बड़ लाज लागय। काकीक लगाओल आरोप किन्नहु नहि बिसरय।

एक दिन तोहर डेरा अयलहुँ तँ तों मायक संग अस्पताल गेल रहय. खाली मंझिली दीदी डेरामे रहथि। छोटका दीदी सेहो सासुर चल गेलि छलीह। मझिली दीदीक हम बड़ इज्जति करैत छलियनि। मुदा लाजें हुनकासँ पड़ाइत रही। हुनका एकसरिये डेरामे देखि हम घुर' लागल रही।

"कहाँ जाइत छें, रणेन अबिते हेतौक। बैसि जो। आ कि हमरा लग बैस'मे डर लगैत छौक ? मझिली दीदी सेहो नीक मैथिली नीक जकाँ बजैत छलीह।

"नै दीदी अहाँसँ कोन डर ?" हम हुनका लग बैसि गेल रही। मुदा भीतरे भीतर डेरा जरूर गेल रही।

मझिली दीदी मुसकिया उठलीह - पीड़ासँ सानल मुसकी। हमर हाथ पकड़ि बजलीह - झूठ नहि बाज। तों ठीके डेरा गेल छें ? देख, तोहर हाथ थर-थर काँपि रहल छौक। डेरयबें कोना नहि। मौगी जाति होइते तेहने भयंकर अछि —आदमखोर। मौगी अपन सन्तानोकें चिबा जाइत अछि। तों हमरा सामने कतेक बच्चा छें, रणेनोसँ छोट। तैयो काकी अपवाद लगबैत छथि। मौगीक कोनो ठेकान नहि। अपन चेहरा क्यो नहि देखत। खाली अनकर दोष निहारैत चलत। कह तँ, कहाँ तों आ कहाँ हम...?

मझिली दीदीक मुट्ठीमे हमर हाथ कसा गेल। उत्तेजनासँ हाँफ' लगलीह। हाथ गर्म तव जकाँ लहकि उठलनि आ आँखिमे कोनो चिनगी चमकि उठलनि। कने काल बाद मुट्ठीक पकड़ि ढील भ' गेलनि। मुँह फेरि लेलनि, भरिसक बहैत नोरकें नुकयबाक हेतु। सर्द भ' गेल हुनकर हाथ बड़ी काल धरि हमर जाँघपर पड़ल रहल।

तों मायक संग घुरैत पुछलें—"कखन अयलें ?"
"बस आबिये रहल छी।"

तों जल्दीमे छलें। हाथ घिचैत कहलें—"आ' हमरा संग चल।"

तोरा संग अस्पताल गेल रही—मौगी वार्डमे। एकटा बेडपर तोहर काकी आँखि मुनने पड़लि रहथुन। एकदम उज्जरि, जेना देहक सभटा शोणित बहि गेल होनि। आँखिक नीचा कारी खाधि, एकदम धसल-वसल।

'की भेलनि अछि ?' हम तोरासँ पुछने छलियौक। लगमे ठाढ़ि नर्स ठिठिया उठलि छलि। बड़ तामस भेल। एहिमे हँसबाक कोन गप्प भेलैक ? तों जरैत आँखिये नर्सकें तकलहिक। ओ सिटपिटा क' चुप्प भ' गेलि।

"तों नहि बुझबहिक। आ, चल।"

तों हमरा बाहर ल' अनलें। सत्ते हम किछु नहि बुझलियैक। मुदा ओहि दिन सभटा बूझि गेलियेक जहिया तोहर काकीकें स्वस्थ भ' डेरामे घुरि अयलाक दू मास बाद नीलूदाकें हुनकर कोठलीमे जाइत देखि तों दाँत पीसिक' बाजल रहय "हम कोनो दिन एहि सारकें जानसँ मारि देबैक।"

मैट्रिकक परीक्षा लगीच आबि गेल रहय। दुनू गोटे भरि-भरि राति जागि क' तैयारी कयलहुँ। कोर्स पछुआ गेल छल। सभटा काँपी किताब पसरल छोड़ि भोर होइत होइत दुनू गोटे सूति रही। दिन चढ़लापर हमरा झिकझोरैत तों उठा दैत छलें—रौ चण्ठ। हमर छातीपरसँ अपन पहलमानी जाँघ हटा। हमर साँस रूकल जाइत अछि :

तोहर साँस कहियो ने रुकलौक, मुदा हमर गरामें फँसरी लागि गेल छल। गुण्डासभ जान लेबाक धमकी देने छल। हम डरें अधमरु भ' गेल रही आ तों तामसे बताह—'बस, एहि साहसपर प्रेम कर' चलल छलें। हजार बेर कहलियौक जे ओकर ध्यान छोड़ि दे। ओ हरामजादी तोरा जोग नहि छौक। मुदा के सुनैत अछि ? बौआ रोमान्स कर' चलल छलाह। ले रोमान्सक स्वाद। लैलाक भाइ सभ छूरा लेने घूमि रहल छौक, एकाध नहि दर्जनक दर्जन। शहर भरिक भाइ। ओस्ताद मजनूक नाम ल' क' शहीद भ' जो बौआ।"

हम खाली कनिते रही आ तों किछुओ उठा नहि रखलें। गुण्डा सभक

प्रत्येक चालि केँ बेकार करैत अपन आश्रय मे सुरक्षित रखलैं। मुदा मैट्रिक पास कयला पर हम गुण्डा सभक डरेँ शहर छोड़ि पटना चल आयल रही। विदा होइत काल प्लेटफार्म पर छातीसँ लगा बाजल छेलैं— आखिर ओ हरामजादी तोरा···हमरा सँ छीनिये लेलक'' हम प्रतिवाद करैत कहलियौक—''ओकरा गारि पढ़ला सँ कोन लाभ ? एहि मे ओकर'' तोँ फेर बमकि उठल छले—''फेर वैह मजनू बला बात। ई बात हमरा कहियो ने बिसरत जे ओकरे कारण सँ तोँ ई शहर छौड़ि क' जा रहल छँ''। हमरा छोड़ि क' जा रहल छैं।

एम्हर हम कालेज मे एडमिशन लेलहुँ आ ओम्हर तोँ मेडिकल कालेज मे नोकरी धयलैं—आर्टिस्ट कम लेबोरेटरी असिस्टेन्टक। कहियो तोहर चिरचिरी पाड़ब देखि क' हम हँसि दैत छलियौक। की पता छल जे ओहि चिरचिरीक बलें जीविका भेटि जयतौक।

दूर भ' गेला पर पत्रक क्रम आरम्भ भेल छल। प्रत्येक हफ्ता चिट्ठी भेटय, लिखी। कनेको देरी भेला पर रूसी, मान करी।

साल भरिक बाद भेट भेल छल। तोँही पटना आयल छलैं। मँझिली दीदीक विवाह भ' रहल छलनि ओहि मास। तोँ उत्तरदायित्व सँ मुक्त भ' रहल छलैं। विवाह मे बजौने छलैं।

हम नहि जा सकल रही। अपन शुभकामना पठा देने रहियौक मुदा साल भरि बाद ओहिठाम पहुँचल रही। खूब नीक समय कटल। कतेको पुरान गप्प, कतेको नवका चाशनी। आ अन्त मे टेबुल पर राखल अपन फ्रेम मे जड़ल फोटोकेँ हाथ मे उठा ओकरा खोलि पाछाँ सँ एकटा फोटो बहार क' हाथ मे दैत नवकनियाँ जकाँ लजाइत कहलैं—ले अपन, भौजी केँ देख।

एकटा सुन्दर कन्याक फोटो। पन्द्रह सोलहक बयस। लजायलि। अर्धविकसित। सिकुड़लि सिमटलि। हम तोरा बधाइ देने छलियौक।

साल भरि बाद फेर गेल रही। तोँ घर सँ निपत्ता रहय, माय एकसरि बैसलि, उदास दृष्टिये बाट निहारैत छलथुन। हमरा देखिते प्रसन्न भ' उठलि छलीह। बड़ी काल गप्प भेल। ओ अप्पन निस्संगताक बात कहलनि।

तोहर अयला पर हम मायक दुखक गप्प चलौने छलियौक। तोँ फेर अपन फोटो उठा ओकर पाछाँ सँ फोटो बहार क हाथ मे दैत कहलैं—ओकरो इन्तजाम भ' गेल छैक। ले, देख।

फोटो कोनो दोसर छौंड़ीक छलैक। पहिलकीक नहि। पुछला पर बजलैं—ओकर गप्प नहि कर। ओकर घरवला सभ बड़ स्वार्थी छैक। हम चीज वस्तु दैत छलियैक तेँ स्वागत करैत छल। विवाहक गप्प कयलियैक त' भड़कि गेल। अखनो हमरा सँ प्रेम करैत अछि। मुदा ओकर लोक सभ नहि मानतैक। तोँ ओकर गप्प छोड़। अपन नवकी भौजी केँ देख। केहन छौक ?

हम नीक जकाँ फोटो देखलियैक। भरल पूरल देहवाली युवती, चंचल नचैत आँखि, देहमे अनाकर्षक उभार आ वक्रता। हमरा नहि पसिन्द भेल छल। तैयो खूब तारीफ कयने छलियौक।

साल भरिक बाद फेर भेंट भेला पर एकटा दोसर छौंड़ीक फोटो दैत कहलैं—काजल फ्लर्ट छलि। मुदा झरना पर हमरा पक्का विश्वास अछि। ले देख।''
हम फोटो बिना देखने घुरा देने छलियौक। देखबाक इच्छे नहि भेल छल। जानि गेल छलियौक जे खिस्सा अखन आरो चलतैक, फोटो अखन आरो बदलतैक। तोरा सन सय रुपया कमाय वला किरानी आ लेबोरेटरी असिसटेन्ट अपन फोटोक पाछाँ नुका क' फोटो राखि सकैत अछि, मुदा ओकरा अधिकारपूर्वक अपन फोटोक संग जोड़ि क' टेबुलपर नहि राखि सकैत अछि। इ फोटो अखन आरो बदलतैक, आरो···

आ दू साल सँ फेर निपत्ता छेँ। ने कोनो चिट्ठी, ने समाद ? ने भेंट-घांट। एक बेर दू घण्टाक लेल तोहर डेरा पर गेल रही। माय सँ पता लागल जे तोँ कोनो आनन्दमार्गी स्वामीजीक फेरा मे छेँ। घूमि ले बौआ। मोन केँ परतार' लेल इहो रस्ता बेजाय नहि। मुदा कहियो भेटलैं त' तेहन मरम्मति करबौक जे स्वामीजीक नाम बिसरि जयतौक। चिट्ठी लिख' मे हाथ टुटैत छौक ?

गर्मीक छुट्टी मे भेंट कर' अयबौक। स्वामीजीक चक्कर छोड़ि हमरा संग घूम' पड़तौक। नहि तँ हमर तामस बड़ खराब अछि, तोरा बुझले छौक।

आ खबरदार जे एहि बेर फोटो देखा क' कहलेँ जे ले, अपन भौजी केँ देख। हमर बात मान आ ई कुचालि छोड़ि दे। गिरगिट जकाँ रंग नहि बदल। नहि तँ यदि एहिना स्टुडियोक अलबम सँ फोटो चोरा क' गप्प हँकैत रहलेँ तँ एकदिन बड़का हवेली जा क' रहबेँ। आ तखन पुलिस डण्टा ल' क' कहतौक—ले, अपन बाप केँ देख। ●

अप्रैल १९६४

क्लान्त

आँखि खुजला पर राम अपना केँ कोठलीमे एकसर पौलक !

ओ सबेरे कहियो नहि उठैत अछि ! दिन चढ़लापर रेडियो सिलोनक एनाउन्सरक चिकरैत स्वर, धीयापूताक चनचनी, भनसाघरक खटपट आ गन्हाइत "चाल' क घोंघाउज ओकरा जगा दैत छैक । एकटा खौंझायल तिक्तता मोनभे लेने ओ आँखि खोलिक' खाली कोठली मे भरि रहल कोलाहल केँ देख' चाहैत अछि । जेना ओहि कोलाहलमे जुटल भिन्न-भिन्न स्वरक अस्तित्व केँ चीन्ह' चाहैत हो ! सभटा स्वर आँखिक बाटे मोनमे पैस' लगैत छैक । घबरा क' आँखि फेर मूनि लैत अछि । गेरूआ मे मुँह गाड़ने पेटक बलेँ पड़ल-पड़ल प्रत्येक दिन प्रातःकाल पहिल गप्प मोन पड़ैत छैक—विश्रामक राति गेल आ काजक दिन शुरू होब'बला अछि—बड़कीटा अकछल कटाह सन दिन । पपनी पर जोर द' क' फेर सँ आँखि केँ नीक जकाँ बन्द कर' चाहैत अछि । प्रायः एहि व्यर्थ आसपर जे आँखि फेर लागि जाय आ राति फेर घुरि आबय !

आँखि जुजला पर सभ दिन जकाँ कोठलीमे भरि रहल कोलाहलकेँ देख' लागल । ओहि कोलाहल मे जुटल भिन्न-भिन्न स्वरक अस्तित्व केँ चीन्ह' चाहलक आ ओकरा आँखि बाटे भीतर पैसैत देखि भय सँ आँखि मूनि लेलक । मुदा ओ कोलाहल नीक जकाँ भीतर पैसि गेल छलैक । रेडियो सिलोन सँ सलीमक अनारकली चिचिया रहल छलैक—"जब प्यार किया तो डरना क्या ?" आब ओकरा केँ बुझबितैक जे बिछाओन पर पेटकुनियाँ देने पड़ल क्षुद्र प्राणी मामुली सम्पादक छल, शहंशाह अकबर नहि । बेकार ठोंठ फाड़ला सँ की लाभ ? बगलक कोठलीमे धीया-पूता सभ कोनो वस्तुक हेतु आपसमे छीना-झपटी करैत गर्द मचौने छल । ओहि गर्दम-गोलमे जुटल प्रत्येक स्वर केँ ओ नीक जकाँ चिन्हैत छलैक, फराक-फराक सँ ! ओहि चारू अबोध स्वरक ओ स्वयं निर्माता छल ! इच्छा भेलैक जे एक बेर अपनो जोर सँ चिचिया उठय जाहि सँ ओहि स्वरक नीचाँमे अनारकलीक निर्भय घोषणा आ धीया-पूताक चनचनी दबा-पिसा क' चूर भ' जाइ ! मुदा एना नहि क' सकल । भनसा घरसं बर्त्तन टनटनयबाक आ कड़छु-पिटबाक स्वर लगातार सुनीताक उपस्थितिक एलान क' रहल छलैक । ओ नीक जकाँ अनुभव कयलक जे विश्रामक राति बीति चुकल छलैक आ काजक दिन शुरू भ' रहल छलैक । आरामक लोभमे पड़ल रहब नितान्त मूर्खता हेतैक ।

चिचिआइत-चिचिआइत अनारकलीक ठोंठ बैसि गेलैक आ ओकर निर्भय प्रेमक समर्थक कोनो अलबेला 'मोहब्बत जिन्दाबाद'क नारा लगाब' लागल ! ओकरा तेहन क्रोध भेलैक जे उठि क' कान ऐंठिक' दू-चारि थापड़ लगा दियैक । मुदा ओ ओहिना पेटकुनियाँ देने पड़ल रहल । एहि अकछल वातावरण सँ ओ समझौता क' चुकल छल । समझौता करबाक हेतु विवश छल ! पत्नी छलैक, चारिटा सन्तान छलैक, मुदा ओ एकसर छल । चारू कात जिनगीक चहल-पहल आ गति छलैक, मुदा ओ एकसर छल । ओहि कोलाहलपूर्ण एकसरपन सँ ओ अगुताइ छल, कतहुँ भागि जयबाक मोन होइत छलैक । मुदा विवश छल पयरमे जिन्जिर बान्हल छलैक । समझौताक हेतु विवश छल । किएक तँ जीवनो एकटा विवशते छलैक । ओकर कारण कहब सम्भव नहि छलैक । किएक तँ विवशता विवशता थिक ! ओकर कारणो विवशते हेतैक ।

ओकर जिनगी ओही विवश समझौता पर टिकल छलैक । प्रत्येक वस्तुसँ समझौता, प्रत्येक लोक सँ समझौता, अपन मोन सँ समझौता । पड़ाय चाहैत छल, मुदा पड़ा नहि पबैत छल । किएक तँ तोड़' नहि चाहैत छल । ओ चाहैत छल जे घरक चार पर सँ एकटा खढ़ जकाँ उड़ि जाय । मुदा ओकरा लगैत छलैक, जेना ओ घरक खढ़ नहि, बरेड़ी छल । भलेँ ओकरा सम्पूर्ण घरक बोझक नीचाँ दबिये क' कियैक नहि रह' पड़ैक । यैह ओकर समझौता छलैक—विवश समझौता !

कौखन दिन भरिक श्रमसँ थाकल ठेहिआयल बिछाओन पर मुर्दा जकाँ पड़ि रहैत अछि । तखन ओकरो मोन होइत छैक जे मनपसिन्द चीज सुनी ! कोनो नीक स्टेशन लगाकऽ पड़ि रहैत अछि आ आँखि मूनि लैत अछि । कोनो शास्त्रीय गीत गबैत-गबैत बढ़ गुलाम-अली खाँ मौगियाही स्वरमे "ओ बसन्ती पवन पागल" गाबऽ लगैत छथिन आ आँखि खोलि देखैत अछि जे सार महाशय मोस्तैदीक संग रेडियो

पर झुकल छथि। कौखन सितार बजबैत-बजबैत रविशंकर थाकि क' नविआइत स्वरमे "रूक जा ओ जानेवाली रूक जा" गाब' लगैत छथि आ सुनीताक एहि कार्य पर ओ चाहियोक' किछु नहि बाजि पबैत अछि। आ कौखन वी० बी० सी० सँ शेख चिल्लीक पाठशालाक घटा सुनि बमकि क' गरज' चाहैत अछि तँ रेडियो लग जुटल चारू सन्तानक उल्लास देखि मुँहमे ताला लागि जाइत छैक। एहि स्थिति सँ समझौता-निर्वाहक ओ चेष्टा क' रहल अछि—प्राण-प्राण सँ।

एकाएक ओकरा किछु जाड़ जकाँ लगलैक। राति मेघ जोरगर फसाद कयने छलैक आ बूँद लगातार बरिसल छलैक। तैयो पंखा राति भरि कोठलीमे नचैत रहलैक। रातुक भीजल हवा प्रायः बहिये रहल छलैक! उठि क' स्विच आफ क' देलकै।

लटकल पंखा घरघराइत ठाढ़ भ' गेलैक। पंखाक तीनू ब्लेड कें ओ बड़ी कालधरि देखैत रहल। ओकरा लगलैक, जेना ओहो पंखे सन छल जकर तीनू ब्लेड कें पेँच सँ जोड़िक' नचा देल गेल छलैक आ नचैत काल तेहन लगैत छलैक जेना एकटा पंखा नाचि रहल होइ, ब्लेडक पृथक अस्तित्व जेना रहबे नहि करैक। मुदा वास्तविकता ई छैक जे पंखाक प्रत्येक ब्लेड एकसरूआ छल, नितान्त एकसरूआ, पेँच सँ जोड़ल। ओकर सह-अस्तित्व मात्र धोखा छलैक।

पंखा निर्जीव अछि, ओकर ब्लेड निर्जीव छैक, ओ यांत्रिक जोड़पर राति भरि नाचि सकैत अछि! मुदा राम त' जीवित मनुक्ख अछि एखन मुर्दा नहि भेल अछि! ओ कोना यांत्रिक बल पर जिनगी भरि नचैत रहय! ओकरो देखिक सभकें भ्रम होइत छैक जे ओ सभक संग जुटल अछि, फराक ओकर कोनो अस्तित्वे नहि छैक। एकसरे वैहटा जनैत छल जे ओहो पंखा जकाँ पेँच पर जोड़ल सभक संग नाचि रहल छल—बिलकुल एकसरूआ। जिनगी गतिक नाम छैक आ गतिमे नचैत ब्लेडक पृथक् अस्तित्व देखब सम्भव नहि छैक। गति रूकले पर ओकर दूरी देखल जा सकैत छैक।

केवाड़ीक भिड़कल पल्ला कें ठेलि' सुनीता हुलकी देलकै आ रामकें बिछाओन पर बैसल देखि फेर सँ केवाड़ बन्द करैत चल गेलैक। राम ओकरा हुलकी द' क' जाइत देखलकै आ बुझि गेलैक जे कन्नियें कालक बाद चाहक पियाली हाथमे

लेने ओ फ़ेर औतेक। पियाली राम कें द' क' बड़ी काल धरि चुपचाप टाढ़ि रहतैक आ राम डरें एक्को बेर मूड़ी उठाक' नहि देखतैक जे कहीं भोरे-भोरे कोनो तगादा नहि क' बैसय—बच्चा सभक स्कूलक फीस, मकानक किराया, दूधबलाक हिसाब आ………।

कौखन ओकरा लगैत छैक, जेना सुनीता सम्पूर्ण रूपें ओकर भैयो क' ओकर नहि छैक। ओकर पत्नी छैक, ओकर चारू सन्तानक जननी छैक, ओकर गृहस्थी ओकरे बलपर टिकल छैक, मुदा तैयो ओ ओकर नहि छैक। ओकर इच्छा सुनीता कौखन नहि बुझैत छैक। मोनो राख' लेल ओकर आग्रह नहि मानैत छैक! दिन-राति गृहस्थीक जंजाल मूड़ीपर लदने अपस्याँत भेल रहैत छैक। कौखन दू-चारि पलक हेतु लग आबि बैसिते छैक तँ ओकर आकृति पर जमल क्लान्ति आ व्यग्रता देखि राम कें किछु कहि नहि होइत छैक! कहियो कहि दैत छैक तँ बादमे अपन कमजोरी पर तामस होइत छैक! ओकरा लगैत छैक, जेना ओकर आग्रह टारिक' सुनीता जानि-बूझिक' ओकर मोन तोड़ैत छैक। कहियो ओकरा बुझबाक चेष्टा नहि करैत छैक, काजक लाथें टारैत छैक। पहिने जखन धीया-पूता नहि भेल छलैक, सिनेमा आ स'खक कोनो आन प्रस्ताव कें पैसाक तंगीक बहाने टारि दैत छलैक। आब जखन पैसाक कोनो तेहन तंगी नहि छैक, ओकर प्रस्ताव कें धीया-पूताक बहाने टारि दैत छैक। वास्तविकता यैह छैक जे सुनीता ओकरा टारैत छैक। कम सँ कम राम यैह सोचैत छल! ओकरा ई सिकाइत छलैक जे ओकरा क्यो नहि बुझैत छैक! ओकर अपने दु सभसँ ऊपर छलैक! अनका बारे मे ओकरा फुरसतिये नहि छलैक।

ओकरा लगैत छैक, जेना ओ तेहन खेत अछि जाहिमे बीयाक धान खसाओल जाइत छैक आ फेर सभटा बीया उखाड़ि क' दोसर खेतमे रोपि देल जाइत छैक! तहिना सभ ओकरा सँ किछु लेबहि चाहैत छैक, देबाक क्यो नहि सोचैत छैक! ओकर कमाइ ओकर सम्बन्धक गेंठ छैक जेना।

ओकर स्वभाव तेहन भेल जाइत छैक जे धीया-पूताक स्नेहमे सेहो ओकरा स्वार्थक गंध भेट' लागल छलैक। मुँहमे मुँह सटा जखन कोनों सन्तान किछु माँगि बैसैत छलैक, ओकरा लगैत छलैक जेना घूस देल जा रहल होइ, माङक पूर्तिक हेतु। सभ सोचैत छलैक जे हाड़-मांसक इच्छा ओकरा नहि छैक। ओ मात्र एकटा माध्यम छल—आवश्यकताक पूर्तिक! एक निर्जीव यंत्र जकाँ, यांत्रिक-विधिसँ बिना कोनों

प्रतिदानक अपेक्षा रखैत सभकें किछु दैत रहैक, सभ कयो ओकरा सँ एतबे आस रखैत छलैक।

माध्यम बनबा सँ ओकरा कहाँ आपत्ति छलैक। बापकें पैतृक भूमिसँ स्नेह छनि, डीह नहि छोड़ताह! हुनका आवश्यकता समयपर जुटा दैत छनि। भतीजा-भतीजीक भरण-पोषण आ भविष्यक चिन्ताक भार वैह सम्हारैत अछि! पत्नी आ बारु सन्तानक प्रत्येक सुख-सुविधाक ध्यान ओकरे रहैत छैक! सर-सम्बन्धीक दावा बेर-कुबेर मानिये लैत छनि! एतबो पर ओकरा ई अधिकार नहि छैक जे हुनको सभसँ किछु आस राखय? कम सँ कम अपनत्व आ स्नेहक जोर तँ रहैक। मुदा ओकरा लगैत छैक, जेना प्रत्येक सम्बन्धक न्यों ओकर दान पर टिकल छैक! ओ देब' सँ असमर्थ भ' जायत, तँ प्रायः सम्बन्धो टूटि जयतैक।

चाहक पियाली लेने सुनीता कोठली मे अयलैक। राम चुपचाप चाह पीब' लागल। सुनीता गुमसुम ठाढ़ि छलैक। किछु बाज' चाहियैक तँ सुनीता बाजलि—आइ सबेरे उठि गेलहुँ।

राम टेबुल पर राखल घड़ी दिस तकैत बाजल—सबेर कहाँ? नौ बाजि गेल। दस बजे आफिसक लेल बिदा होयब।

सुनीता मुसकिया उठलैक—रवि दिन कोन आफिस जयबाक अछि?

राम आराम सँ पसरि गेल। सुनीता खाली पियाली उठा चल गेलैक।

पड़ल-पड़ल राम सोच' लागल, किछुये काल बाद प्रीतम औतैक, नवीन पीढ़ीक कथाकार! बड़ी काल धरि अपनैती देखौलाक बाद अन्तमे पाकिट सँ एकटा पुलिन्दा बाहर करैत कहतैक "ऐ बेर तेहन चीज आने ची जे देखिक' फड़कि उठब।" आ पुलिन्दा जबरदस्ती हाथमे ठुसैत कहतैक—"तँ अगिला हप्ताक आस करू? आश्वासन पाबि कोनो आवश्यक कार्यक बहाना बना बिदा भ' जयतैक! तखन जमुना औतैक, अपन नवीनतम उपन्यासक दूटा प्रति लेने किछु काल भूमिका बन्हलाक बाद मतलब पर ओतैक—"यदि अपने अपन पत्रमे एकर एकटा सुन्दर समालोचना छापि दी, तँ आभारी रहब।" श्याम सरकुलेशन डिपार्टमेंटमे नोकरीक सिफारिश ल' क' औतैक आ मोहन जाइत-जाइत किछु टाका पैंच मङतैक। आब' जायवलाक ई क्रम राति बितला पर टुटतैक आ दिन भरिक स्वार्थ पूर्ण गप्प सभ सँ थाकल—अकछल राम निन्नमे शान्ति पाओत! प्रत्येक रवि कें यैह क्रम दोहराओल जाइत छलैक आ राम चाहियो क' एकरा नहि तोड़ि पबैत छल!

ओकर दृष्टि अपन छोटसन शेल्फमे कोंचल किताब पर गेलैक! लगलैक जेना ओहि शेल्फक प्रत्येक किताब पर ओकर जिनगीक अर्थ लिखल छैक। प्रत्येक किताब पहिल पृष्ठ पर लिखल छैक—समालोचनार्थ! ओकरा लग बिना मतलब के क्यो नहि अबैत छैक! ई किताब सभ ओकरा समर्पित नहि कयल गेल छलैक। काज लेबाक हेतु अपनत्व अढ़मे ठकबाक प्रयास कयल गेल छलैक।

राम उठि क' ठाढ़ भ' गेल! खुट्टी पर टाङल कमीज पहिरैत सोचलक जे आइ स्वार्थपूर्ण वातावरणसँ दूर रहत। मैदानमे बौआयत, निरुद्देश्य घूमत, मुदा कोठलीक औनाइत वातावरण सँ दूर रहत! पयरमे जुत्ता पहिरि बाहर आबि गेल।

भोरे-भोरे बहराइत देखि सुनीता कें आश्चर्य भेलैक! रास्ता रोकि पुछलकै—भोरे-भोर कहाँ बिदा भेलहुँ?

"बेकार पड़ल छलहुँ! सोचलहुँ, दोकानसँ अहाँक समाने आनि दी!" राम झूठ बाजल!

"सामान तँ पहिले हफ्ता आनि देने रही! आइ तँ दस तारीख छैक।

"हँ, हँ, मोन पड़ल। लाउ, झोरी दिअ'! तरकारी हाट सँ ल' अनैत छी।

—तरकारीवाली भोरे आयलि छलि। सभ चीज कीनि लेने छी।"

कनेककाल राम चुपचाप ठाढ़ रहल! कोनो बहाना नहि फुरलैक! फेर बिना किछु बजने बिदा भ' गेल।

"—कहाँ चललहुँ?" सुनीता टोकलकै। "—बस, कने घूमि-फिरि अबैत छी।"

"—पहिने अयनामे अपन चेहरा देखि लिय'। सूति क' उठलहुँ आ बाहर बिदा भ' गेलहुँ। एना कोनो आदमी घुमैत अछि?

राम बमकि उठल—हँ, हँ जे मोन मे आबय कहि लिअ', हम आदमी नहि, बड़द छी, बोझा ऊघ' बला गदहा छी। बस।

सुनीता नहि बूझि सकलि जे एकाएक ओ कोन अनर्गल बात बाजि गेल। दुःखसँ आँखि नोरा गेलैक, भीतर मे किछु उमड़' लगलैक। मुदा राम किछु नहि देखलकै। तामसे हनहनाइत बहरा गेल!

सड़क पर रातुक बरखाक असरि छलैक—कादो-कादो भेल! कादो मे लेढ़ाइत—पयजामाक मोहरीक बिना कोनो चिन्ता कयने आगू बढ़ैत गेल! गुमती सभ दिन जकाँ बन्द छलैक! बाट खुजबाक प्रतीक्षामे रिक्सा मोटर आ ताँगाक

साइन लागल छलैक। चक्करदार रास्ता सँ निकलि राम लाइनक बीचमे आबि गेल। बहुत रास लाइन एक दोसरक समानान्तर बिछाओल छलैक —दूर-दूर धरि पसरल। ओकरा भेलैक, जेना ओहो लाइन जकाँ पसरल अछि, दूर धरि, प्रत्येक व्यक्तिक समानान्तर ! सम्बन्धक सुखायल काठक पटरी ठाम-ठाम एहि समानान्तर लाइन केँ जोड़ने छैक ! मुदा वास्तविकता यैह छैक जे प्रत्येक लाइन समानान्तर पसरल अछि एक दोसर सँ सदा सर्वदाक लेल दूर ! बगल सँ देखनिहार केँ भ्रम होइत छैक जे एक्केटा लाइन बिछाओल छैक ! लाइनक बीच मे ठाढ़ भ' ठीक-ठीक देखल जा सकैत छैक जे बहुत रास लाइन समानान्तर बिछाओल छैक। दूर पर ई लाइन सभ मिलैत सन देख' मे अबैत छैक मुदा ओत' पहुँचला पर इहो मिलन धोखा प्रमाणित भ, जाइत छैक।

राम लाइन पार कं प्लेटफार्म पर आबि गेल ! लगले एकटा गाड़ी आयल छलैक। बेस चहल-पहल रहैक !

एकाएक ओकर मोनमे एकटा विचार अयलैक ! इच्छा भेलैक जे गाड़ी पर चढ़ि कतहु बिदा भ' जाइ ! सभ झंझट सँ चैन ! ई विचार तेहन बेगसँ अयलैक जे बिना किछु विचारने ओ एकटा डिब्बा दिस लपकल।

तखने चारिटा हाथ ओकर रास्ता रोकि लेलकै ! बाधा पाबि किछु बाज' चाहलक, मुदा सामने पसरल चारू तरहत्थी जेना ओकर मुँह पर बैसि गेलैक। फाटल मँहकैत पैण्ट आ हाफ शर्ट पहिरने ठाढ़ दू टा शिशुक हाथ ओकर सामने पसरल छलैक। ओहि दुनू शिशुक चेहरा ओ ध्यान सँ देखलकैक।

"--नहि।" ओकर मोनमे क्यो जोर सँ चिचिया उठलैक, जेना कोनो डेराओन चेहरा सामने आबि गेल होइ। दुनू शिशुक तरहत्थी पर ओ एक-एकटा चौअन्नी राखि देलकै आ दुनू शिशुक आँखिमे क्षण भरिक हेतु जिनगीक हेरायल चमकी घुरैत देखलकै। दोसर-दोसर मुसाफिरक सामने हाथ पसारैत दुनू शिशुकेँ बड़ी काल धरि ओ देखैत रहलैक।

ककरो हाथ सँ छूटि क' शीशाक गिलास तड़ द' प्लेटफार्म पर खसलैक। रामक पयर लग शीशाक छोट-छोट कुन्नी छिड़िया गेलैक आ ओकरा लगलैक, जेना पपनी तर बन्द नोरक चमकैत कुन्नी जमीन पर छिड़िया गेल होइ !

गाड़ी जखन प्लेटफार्म छोड़ि रहल छलैक, राम कदोआह सड़कपर भारी डेगेँ डेरा दिस घुरि रहल छल, कोलाहलपूर्ण एकसरपन मे !

मई १९६४

क्लान्त

दिनचर्या

कैन्टीनक देवाल काँप' लगैत छैक, अपस्याँत दौड़ैत बैरा सभ खसैत-खसैत बँचैत अछि, सधल हाथसँ कौर छूटि जाइत छैक आ अभ्यस्त आङुरसँ दबल चम्मच काँटा छिटकि क' टनटना उठैत छैक—एक बेर नहि, दू बेर नहि, अनेक बेर, बेर बेर।

उत्तर दिस गंगाक पसरल विस्तार आ सुदूर दोसर कछेरमे पतियानीसँ ठाढ़ गाछक स्याह हरियरी झलकैत छैक आ बीच गंगा मे उगल दीयरि पर जकरा सभ "आइलैण्ड आफ रोमान्स" कहैत छैक, बालुक रजत-कण चमचमा उठैत छैक जखन ओकरा सूर्यक स्वर्णिम किरणक स्पर्श भेटैत छैक। सुनैत छियैक जे साँझक झलफल मे अनेको छोट-छोट नाव पर युनिभरसिटीक कतेको युगल जोड़ी लहरिक हिलकोर पर झुलैत एहि दियरि पर अबैत अछि आ एकर निर्जन उदासीकेँ अपन मधुर सम्भाषण आ प्रसन्न क्रीड़ा सँ सजीव बना दैत अछि। इमानदारीक गप्प, हम अपने कहियो ने देखलियैक अछि। मुदा एतेक लोक अनेरो किएक बजतैक ?

घंटी बजैत अछि। पीरियड शुरु होइत अछि आ खतम सेहो भ' जाइत अछि। मुदा हमरा लोकनि अपनामे मस्त, फिकर नॉट, परवा इल्ले।

गप्प आ ठहाका। ठहका आ गप्प। हमरा लोकनि मस्त हँसीक अभद्र ध्वनि आ उच्च अट्टहासक प्रतिक्रियासँ अनभिज्ञ नहि रहैत छी। मुदा एकटा बलधकेल उच्छृंखलता प्रदर्शित करबामे नहि जानि कोन आन्तरिक सुख भेटैत अछि। जेना बाजी लागल रहैत अछि, ककर ठहाका कतेक दूर जायत, ककर स्वर कतेक उच्च हैत। एकटा अतिरिक्त उत्साहक निष्प्रयोजन आ अभद्र मुदा सप्रयास अभिव्यक्ति।

सभ दिन सबेरे नौ बजे एक टा पातर सन एक्सरसाइज कौपी ल' क' युनिभरसिटी दिस बिदा होइत छी। मुदा अशोक राजपथ पर आबि डेग दरभंगा हाउसक बदला मेडिकल कालेजक कैंटीन दिस बढ़ि जाइत अछि—अनायास।

आ ओत' कैन्टीनक कोनवला टेबुल पर चण्डाल चौखड़ी पहिनेसँ जूटल रहैत छैक। हमहुँ एकटा कुर्सी घीचि बेसि जाइत छी आ चारूकातसँ "हेलो राइटर, हेलो पोयट, हेलो डार्लिंग" क स्नेह सिंचित सम्बोधन छिड़िया जाइत अछि। अन्तरसँ फूटल सम्बोधन, कतहु कोनो कृत्रिमता वा अभिनय नहि। आ छूटल क्लास आ ट्यूटोरियलक ध्यान तखन अबैत अछि जखन कैन्टीनक देवाल घड़ी दिस दृष्टि जाइत अछि —छोटका सुइ पाँच आ बड़का बारह पर। मात्र एतबे सन्तोष रहैत अछि जे यरबा सभ प्रोक्सी अवस्से कयने हैत—रीयल फ्रेन्ड्स जिन्दाबाद।

चौखड़ीक सदस्य संख्या कहबाक हेतु हमरा अपनो फेरसँ गन' पड़त। कैन्टीनक कोनबला टेबुल पर जकरा चारूकातसँ घेरिक' दस आदमी आसानीसँ बैसि सकैत अछि, साधारणतया दोसर लाइन लगाब' पड़ैत अछि। परमानेन्ट मेम्बर कहियो गैर हाजिर नहि होइत छथि मुदा कोखन मस्तीक हेतु नवका रंगरूट सभ सेहो जुटि जाइत छथि।

दोस्तक बीच पहिल नाम निश्चय राजेशक लेबैक—राजेश शर्मा, पिण्डश्याम रंग, पँघ-पँघ किछु बजैत सन आँखि आ सुन्दर रोबियल मोंछ। कद ६ फीट १ इंच। पछिला छः बरखमे हमरालोकनि कोना एतेक समीप आबि गेल छी, से कहब हमरा लेल असंभव। राजेश एकटा नामी डाक्टरक बेटा अछि, हमरा सँ कतेक गुना बेसी हैसियत बला। मुदा ओकरा सँ आ ओकरा परिवार सँ जे आत्मीयता आ स्नेह हमरा भेटल अछि, ओ कहियो नहि बिसरत। जखन कोनो आवश्यकता पड़ि गेल अछि, ओकरा सँ सहायता लेब' मे कनियो संकुचित नहि भेल छी—केहनो आवश्यकताक हेतु। दोसर नाम प्रमोदक अबैत छैक। ओ लम्बाइमे राजेशसँ बड़ छोट अछि मुदा रंग खूब साफ छैक। सुदर्शन अछि, धनिक बापक एकमात्र पुत्र। विचार मे पूर्ण प्रौढ़ रहितो व्यवहार मे बाल-बुद्धि देखायब ओकरा पसिन्न छैक। पहिले भेंट मे ककरो प्रभावित करबाक क्षमता ओकरा मे छैक। रंजन लम्बाइ मे राजेशो सँ पँघ अछि। क्रिकेटक बेस शौकीन, सिनेमाक प्रेमी। (हमरा लोकनि कचकचब' लेल कौखन ओकरा "ग्रेगरी पेक" सेहो कहि दैत छियैक।) मोंछ रखबाक मे बड़ यत्नशील अछि आ ओकरा कारी आ चमकदार बनयबाक हेतु ओहि मे "फिक्सो" लगबैत अछि। दीपक एकटा रईस बापक रईस बेटा अछि जकर चेहरा मे मैदा आ सिन्दूरक मिश्रण छैक आ केश मे स्वर्णिम चमक।

अंग्रेजी आ हिन्दीक डायलग बड़ स्टाइल सँ बजैत अछि हरदम, सभक संग, पूर्ण नाटकीय ढंग सँ। हरीशक बाप आइ० ए० एस० छैक। ओकर प्रारम्भिक शिक्षा कनवेन्ट मे भेल छैक। नीक कपड़ा सीटिक' पहिरबाक शौकीन अछि आ गप्प-सप्प मे कन्वेन्टक वातावरणक असरि ओखन छैक। अशोक के हमरालोकनि "पटौदी" कहैत छिऐक। दिन भरि मे पचास सिगरेट फूकि देब ओकरा लेल सहज बात छैक। राजू आ मुन्नू लम्बाइ सँ मारि खा गेल अछि, नहि तँ चुस्ती आ मस्ती मे ककरो सँ उनैस नहि। जीवन राजनीति सँ दिलचस्पी रखैत अछि आ घंटो कोनो राजनैतिक विषय पर वाद-विवाद करब ओकर हौबी छैक।

फराक-फराक नाम जनयबा सँ नीक हैत जे एकट्ठे कहि दी जे नाम आ रूपरंगक अन्तरे भ' सकैत अछि मुदा भीतर सँ हमरालोकनि एक्के रंग छी। जिनगीक बड़ सहज भाव सँ लैत छियैक जेना केन्टीनमे बैसल-बैसल दिन मे पचीस कप चाय पीबि लेब वा दर्जनो सिगरेट फूँकि देब। एहि सँ बेसी नहि।

हमरालोकनि जुटैत छी आ गप्प शुरु भ' जाइत अछि—प्रत्येक क्षेत्रक गप्प, प्रत्येक विषयक गप्प, लोकल, नेशनल आ इन्टरनेशनल। (नेहरूक मृत्यु, लालबहादुर शास्त्रीक पद ग्रहण, अब्दुल्लाक स्थिति, जयप्रकाशक डिसएप्वाइण्टमेन्ट, कामराजक जादू आ चीन आ पाकिस्तानक खुरापात सँ ल' क' दिलीप कुमारक एक्टिंग, मीना कुमारीक संभावित डाइभोर्स, कृष्णनक निराशाजनक फार्म आ भारतीय टेनिसक भविष्य, केनिया भारतक हाकी संघर्ष, आस्ट्रेलियाक दुर्बल टेनिस टीम आ डेविस कप मैच, विश्व विजेता कैसियस क्लेक गर्वोक्ति धरि।) आ सभसँ अन्त मे बिहारक राजनीतिक उथल-पुथल। मिनिस्टीरीयलिस्ट आ डिसिडेन्टक लेटेस्ट न्यूज। जातीयता आ गुटबन्दी, युनिभरसिटीक राजनीतिक स्थिति आ जातीयता—किछुओ नहि बचैत अछि। सभटा घाँगि जाइत छी।

बीच बीच मे मस्ती'क हेतु ककरो बोर करब शुरु क' दैत छियैक—टिपिकल अपन गोष्ठीक बोलीमे—की रे बाबू! हम तोहर बाप कें लिखैत छियौ जे बेटा बरबाद हो गेलौ (लौंडिया सभ कें फेर मे।)

—अरे बाबू, हमर बाप तोरा से बेसी चालाक छौ। ओ तँ हमर शादी ठीक क' देलकौ!

—अरे कहाँ रे बाबू!

—हौ एक गो ! इहें मगध महिला कालेज मे पढ़ै हौ।

—अरे कर ले रे बाबू ! तर जेबे, बड़ा टय्यर हौ !" आ फेर ठहाका। ठहाका आ मस्ती। मस्ती आ ठहाका। आर किछु नहि।

मुदा ककरा सोचल छलैक जे एक दिन इ ठहाका मलिन पड़ि जयतैक आ मस्ती पर एकटा उदास दुश्चिन्ता जमि जयतैक।

ओहि दिन कैन्टीन दिस जाइत रही तँ रस्ता मे प्रमोद भेटि गेल। उदास आ चिन्तित। संगे घाट पर घीचि लँ गेल।

—की बात छैक प्रमोद ! एना चिन्तित किएक छँ' ? हम पुछलिऐक।

प्रमोद बड़ उदास स्वरमे बाजल—की कहियौक भाइ ! एहिबेर बिना बेइज्जत भेने उपाय नहि अछि। इन्टरमीडियट मे सभके आस रहैक जे एनाटोमीमे आनर्स आनत। मुदा हम सभके निराश कयलियैक। फस्ट एम. बी. बी. एस.मे तँ पैथोलोजीमे गुड़कैत-गुड़कैत बचलहुँ। आब फाइनल आबि रहल अछि ! पासो करब कि नहि, तकरो चिन्ता भ' गेल अछि। कहीं रिजल्ट खराब भेल तँ लोकके कोना मुँह देखयबैक ? की कहियौक भाइ, तेहन ने ग्रूपमे पड़ि गेल छी...।

प्रमोद उदास स्वरमे बजने जा रहल छल आ हम गंगाक पसरल विस्तारमे भुतिआयल सोचैत रही जे आइसँ छौ वर्ष पूर्व हम डाक्टर बनबाक सपना देखैत पटना आयल रही। डाक्टरीक स्वप्न पाछाँ छूटि गेल आ रहि गेल अछि खाली डाक्टरी पढ़'बला किछु पुरना दोस्त। आइ. एस. सी.मे साइन्स छोड़ि देने रही, तहिया लाजे माथ कोना झुकि गेल रहय ? आ एम. ए.क इम्तहान फेर माथपर अछि। पढ़ाइक यैह हाल। माथ ऊँच रहत तँ कोना ?

प्रमोद ओहि दिन बड़ व्यस्त बुझाइत रहय। घंटी बजैत देरी क्लासमे दौड़ल। हम फेर कैन्टीन दिस बिदा भेलहुँ। कैन्टीनमे हमरा लोकनिक टेबुल आइ खाली छल। खाली रंजन एकसरे बैसल छल—शान्त आ उदास।

—आइ ई सन्नाटा केहन ? हम बैसैत पुछलियैक।

—बैस, सभ अबिते हेतौक। सभक लेक्चर घटि रहल छैक। सेन्ट-अप हैब मोस्किल। किरानीक फेरामे गेल अछि सभ।

—तों नहि गेलें। तोहर लेक्चर कम्प्लीट छौक ?

—लेक्चर कम्प्लीट भेलासँ की हैत ? परीक्षामे लिखबैक की ? इन्टरमीडिएट आ फस्ट एम. बी. बी. एस.मे सप्लीमेन्टरीसँ घुसकलहुँ। एहि बेर साल बूड़ि जायत तेहने लगैत अछि। पढ़ाइ, खेल सभ चौपट। स्कूलमे क्रिकेट नीक खेलाइत रही। मुदा एहिठाम प्रैक्टिसक हेतु फुरसतिये नहि। की करू, तेहन ने ग्रूपमे पड़ि गेल छी...।

एक क्षणक हेतु हमरा भेल जे रंजन हमरापर आरोप लगा रहल अछि। हमहीं अपन कालेज छोड़ि अड्डा मारैत छियैक, क्लास छोड़बैत छियैक। मुदा ओकर चेहरापर कोनो तेहन भाव नहि छलैक। आश्वस्त भेलहुँ।

साँझखन राजेशक ड्राइंगरूममे बैसल-बैसल दिनभरिक घटनापर विचार करैत रहलहुँ—कालिहसँ दिनचर्या बदलबाक, पढ़ाइक लेल सचेष्ट हेबाक। मोने-मोन नीक जकाँ बुझैत जे दिनचर्या नहि बदलत, पढ़ाइक वैह हाल रहतैक।

बीचमे टेलीफोनक घंटी टनटना उठलैक। राजेश लपकल आ हमरा ठोरपर मुस्की आबि गेल। ओहि टेलीफोनक इतिहास हमरा लोकनिक दोस्ती जकाँ छौ साल पुरान छैक आ हमर मुस्कीक इतिहास ओकरे संग जुटल अछि। राजेश फुसफुसाक' उल्लासपूर्वक गप्प करैत अछि। अपन अभ्यासवश दोसर पार्टीकँ हमर उपस्थितिक ज्ञान करा हमरापर उपकारक बोझ लदैत अछि। हम कोनो अखबार उठा लैत छी। अनेरो पढ़लो समाचारके फेर पढ़ैत छी—बड़ी काल धरि।

टेलीफोन राखि राजेश पुछलक—बेसी बोर तँ नहि भेलें ?

—नहि, नहि, बोर कियैक हैब। हमरा तँ आनन्द आयल। बहुत दिन पहिने एकटा कथा पढ़ने रही "डेमोक्रेटिक लव", आब हमरो एकटा कथा लिख' पड़त—"टेलीफोनिक लव।"

राजेश भरिमोन हँसल आ हम ओकर हँसैत आकृतिमे एकटा दोसर आकर्षक आकृतिक हँसी ताक' लगलहुँ।

राति बितलापर होटलसँ भोजन क' राजेन्द्र नगर फ्लैट दिस बिदा होइत छी। फ्लैटक सीढ़ीपर अन्हार छल। टोइया-टापर दैत अपन नम्बरक सामने ऊपरका तल्लापर पहुँचि दरवज्जा खटखटाब' लगलहुँ। किछु काल बाद मकान-मालिक ओंघायल स्वरेँ किछु बड़बड़ाइत दरवज्जा खोललनि। हम झट द' अपन कोठलीमे पैसि गेलहुँ, एहि डरे जे कहीं कह' लागथि ने जे आइ कियैक देरी भ' गेल।

अन्हारेमे जूता खोलि बिछौनपर पड़ि रहलहुँ। दिन भरिक घटना अन्हारमे जगजियार होइत सामने पसरि गेल।

गोष्ठीमे असन्तोष पसरि गेल अछि। एक दोसरपर लाँछना। अपराधबोध सँ सभ ग्रस्त। पाठ्यक्रम सम्बन्धी अज्ञानता आ परिणामक कल्पना क' सभ डरा जाइत अछि। दोस्तीमे, बरखो पुरान दोस्तीमे दरार पड़ि रहल अछि।

मुदा ई भय निरर्थक थिक? आबो सम्हारलासँ सभटा ठीक भ जायत। अभ्यास छूटि गेलासँ आगूमे पसरल सभटा पाठ अनचीन्हार लगैत अछि। हमरा लोकनिमे अविश्वास जनम ल' रहल अछि। एकरा मार' पड़त। कमजोरी हमरा लोकनिक चिन्तनक दिशामे अछि। मस्ती आ उल्लासक संग जिनगी बितबैत कर्त्तव्यक पालन नहि भ' सकैत छैक? बरखो अपन कर्त्तव्यमे पड़यबाक कारणे एकटा अपराध-बोध जकाँ जकड़ि लेने अछि। एकरा झटकि क' दूर फेक' पड़त।

सोचैत-सोचैत एकटा वृद्ध चेहरा सामने आबि गेल - परास्त, निरन्तर संघर्षरत, झोखड़ल। ओकर संग एकटा नारी चेहरा— दिन राति खटैत, रुग्ण मुदा कार्यरत। चारूकात किछु अबोध चेहरा, छोट-छोट, सभ आशा भरल दृष्टिये हमरे दिस तकैत। चारूकात हँसैत लोक ठहाका दैत, अपमान करैत। मुदा सभ किछु सहैत हुनका लोकनिक दृष्टिमे एकटा आस, एकटा विश्वास।

हमरा लागल जेना काँटक बिछौनपर सूतल होइ। छटपटा उठलहुँ। ओही छटपटी मे नहि जानि कखन आँखि झँपि गेल।

पुबरिया खिड़कीसँ सूर्यक पहिल किरण आबि जगौलक। प्रात भ' गेल। नव दिन शुरू भेल।

नहि, नव नहि। पुरने दिन फेर घुरि आयल अछि।

जुलाई १९६४

असाध्य

एना कहियो नहि भेल रहैक—आश्चर्य!

भोरे सँ ओहि बाटे क्यो नहि गेलैक जाहि बाटे भोर सँ निसबद्ध राति धरि आब' जाय बलाक लाइन लागल रहैत छलैक! बिना ओहि बाटे गेने ने क्यो गाम सँ बाहर जा सकैत छल, ने भीतर आबि सकैत छल! मुदा ओहि दिन जेना सभ घर सँ नहि बहरयबाक सप्पत खयने बैसल छल। उदास निस्तब्धतामे ठाम-ठाम सँ मुड़ल ओ बाट तेहन लागि रहल छलैक जेना कोनो विरोगिनी ककरो तलाशमे अगस्याँत बौआ रहल हो।

एना पहिने त' कहियो नहि भेल रहैक।

जनवरीक धोअल-पोछल आकाश सामने उघरल पड़ल छलैक जाहि पर बरसातिक कदोआह मेघक कतहु नामो-निशान धरि नहि छलैक! कदोआह बौआइत मेघ केँ जेना क्यो लठिया क' भगा देने रहैक! मायक हाथे धोअल-पोछल चिलका जकाँ स्वच्छ आकाश आ जाड़क मोलायम सोनपंखी सूर्य किरण! मुदा सभ किछु सहमल, उदास-उदास! कोनो भयावह शांति। वातावरणक ताजगी केँ उदासीक झपसी झपने छलैक जेना! आश्चर्य!

ओना गामक पुरना रौनक नहि रहलैक आब! लोक सभ नोकरिहारा भ' गेलैक! छुट्टीमे कहियो कोनो साल सभकेँ जुटला सँ गामक हेरायल रौनक घुरि अबैत छैक। नहि तँ सौंसे गाम खाली आ सुन्न! गाममे खाली वृद्ध, स्त्रीगण आ धीया-पुताक अतिरिक्त वैह लोकनि रहैत छथि जिनकर नोकरी गामक पंचायत, खादी भण्डार आ स्कूलक छनि वा जे लोकनि अशिक्षित रहबाक कारणें गाममे अपन पुस्तैनी जमीन जोति-कोड़ि गुजर करैत छथि। गामक पुरना बाबति आब नहि रहलैक जहिया सैकड़ो पढ़ल-लिखल बेकार घरक अन्नक विध्वंस करैत दिन राति ताश शतरंजक अड्डा मारैत छलाह, नोकरी करब अपन शानक खिलाफ बुझैत छलाह! वैह शानबला सभ गतल-गुथल नोटक हेतु फाइलक गर्दी झारैत छथि! समय-समयक बात!

वीरेन बाबू केँ लागि रहल छलनि जेना गामक खालीपन बढ़ि गेल होइ, जेना सौंसे गाम श्मशानक स्तब्धता ओढ़ि लेने होअय ! भोर सँ एक्कोटा चेहरा नहि अभरल छलनि ! नहि जानि कहाँ मरि गेल सभ !

जेना-जेना समय बीति रहल छलैक, वीरेन बाबूक छटपटी सेहो बढ़ि रहल छलनि ! बाहर दलानमे चटकुन्नी बिछा जाड़क रौदमे बैसल छलाह । सभ दिना अभ्यास छलनि ! पातर सन छड़ी देवाल सँ लागल ठाढ़ छलनि आ अपने बिना खोलक मैल गेरूआ पर ओङठल बैसल छलाह । चेहराक हड्डी पातर चमड़ाक अवरोध हटा हुलकी देब' चाहैत छलनि आ हफ्तोक बिन बनाओल दाढ़ी ओकरा झपबाक असफल चेष्टाभे लागल छल । नोसिदानी एक कात ओंघरायल आ नाकक दुनू पूड़ामे नोसिक तह जमल ! चारू कात किताब सभ छिड़िआयल-बालजकक ड्रौल स्टोरीज बाल्मीकि रामायण, महाभारतक शांतिपर्व आ गीता जाहि पर राखल रुद्राक्ष फेर सँ गरामे झुलबाक हेतु ललकि रहल छलनि ! वीरेन बाबू एहि सभ वस्तुक अस्तित्व सँ असम्पृक्त व्यग्रतापूर्वक बाट निहारि रहल छलाह—अजीब छटपटीक स्थितिमे ।

दलानक ठीक सामने बड़का पोखरी छलैक जाहि मे हरियर सेंवार आ करमीक पूर्ण जनघट छलैक । पोखरि मे पानियो छलैक वा नहि से सहजे बुझब मोस्किल ! चारू कात सेवार आ करमीक हरियरी पसरल छलैक जेना ओ कोनो पोखरि नहि, निचला जमीनक चौखुट टुकड़ा छलैक जाहि पर हरियर सेंवार आ करमी चतरल छलैक । मच्छड़ मौका देखि अपन डेरा खसा लेने छल आ सड़ैत सेंवारक दुर्गन्धि चारूकात पसर' लागल छलैक ! गामक उत्साही नवयुबक सभ कतेको बेर ओहि पोखरिक जीर्णोद्धारक प्रयास कयने छल ! मुदा गामक अनुभवी जाठि सभ नव वयसक अज्ञानता केँ सफल नहि होब' देने छलैक ! हुनका लोकनिक केँ विश्वास छलनि जे इलाकाक बी० डी० ओ० ओहि पोखरिक जीर्णोद्धारक हेतु अवस्से सरकारी अनुदान देतैक ! व्यर्थ श्रमदान कियैक कयल जाय ?

बेचारा पोखरि मुदा सरकारी अनुदानक प्रतीक्षा करैत-करैत सेंवार करमीक तरमे औना क' दम तोड़ि रहल छल आ सड़ल सेंवारक दुर्गन्ध चारूकात पसरि क' अनुदानक काज सहज बना रहल छलैक ! वीरेन बाबू कतेको बेर सोचने छलाह जे दलानक बैसकी छोड़ि देताह, बड़ गन्ध अबैत छलैक ! मुदा अभ्यासवश ओ खास क' जाड़मे रौदक लोभमे आबि बैसैत छलाह । रहले ने जाइ छलनि !

मुदा ओहि दिन एना लागि रहल छलनि जेना दलान मे नहि उजाड़मे बैसल छलाह जत' चारूकात भयावह स्तब्धता व्याप्त छलैक ! पोखरिक चारू भीड़ पर सँ रस्ता अबैत छलैक आ पुबरिया दक्षिणबरिया कोन पर सभटा रस्ता मिलिक' एकटा मुख्य बाटमे बदलि जाइत छलैक आ वैह बाट गाम सँ बाहर निकलि हाट दिस जाइत छलैक ! हरदम बाट पर चुट्टी जकाँ लोकक पतियानी लागल रहैत छलैक ! मुदा ओहि दिन क्यो नहि अभरलनि ! आश्चर्य !

बीरेन बाबूक दृष्टि थाकि क' किछु कालक हेतु बगलक दलानमे चल गेलनि । दलान सुन्न छलैक ! उदास ! ओही सुन्न दलानमे कहियो गामक एकटा व्यक्तित्व बैसैत छलैक । महेश बाबू, वीरेन बाबूक बाल-सखा । लंगोटिया दोस्ती छलनि, जान दैत छलाह एक-दोसर पर ! महेश बाबू डील-डौलमे वीरेन बाबू सँ दस गुना बेसी छलाह आ हरदम हँसैत-हँसबैत रहैत छलाह ! वीरेन बाबू खौंझाब' लेल कहथिन—धोम याने मोटकू ! आ महेश बाबू जबाव देथिन—अचोरहरण माने जकरा चोरयबाक मोन चोरो केँ नहि होइ ! महेश बाबूक अभावमे वीरेन बाबूक एकाकी जीवनक एकमात्र आत्मीय सम्पर्क सेहो टूटि गेलनि ।

वीरेन बाबूक आँखि नोरा गेलनि । भरल आँखिसँ सुन्न दलान आ दलानक सामने पसरल बड़का मैदानकेँ देखैत रहलाह ! ओही मैदानमे भालसरीक विशाल गाछ छलैक जाहिपर नहि जानि कत' कत' सँ रंग-विरंगक चिड़ै आबि बास करैत छल । गामक लोक भालसरीक फूलक माला गँथैत छल आ बच्चा सभ भालसरीक फलक खसबाक आस मे दिन भरि ओकर छायामे बौआइत रहैत छल । ततेक विशाल गाछ छलैक जे ओकर मथनी दू-चारि कोस फराके सँ झलकैत छलैक । गामक कोनो व्यक्ति जखन कोनो नवान्तुक पाहुनक संग स्टेशनपर उतरैत छलाह, तँ ओतहि सँ भालसरी गाछक मथनी देखा कहैत छलथिन—वैह देखू हमर गाम । आ पाहुन दू माइलक रस्ता कोना पयरे नाँघि जाइत छलाह से हुनका बुझाइते नहि छलनि ! आ गाममे प्रवेश करैत देरी हुनका गामक दू टा महान व्यक्तित्व सँ साक्षातकार होइत छलनि—महेश बाबूक भव्य व्यक्तित्व आ भालसरीक विशाल गाछ ! जे एकबेर देखथि बेर-बेर देखबाक लोभ भ' जानि !

गामक ई दुनू महान व्यक्तित्व एक्के संग बिदा भ' गेलैक ! पट्टीदार सभक ध्यान बरखोसँ गोसबरियामे पड़ल मैदान पर गेलनि आ झट ओकरा टुकड़ी-टुकड़ी क' आपस मे बाँटि लेलनि । गाछ बेचि लेलनि आ टाका बाँटि लेलनि ! चारि मास धरि व्यापारी ओहि विशाल गाछक जड़ि, धड़ आ डारि-पात केँ लादिक' ल' जाइत

रहल ! ओही वर्ष महेश बाबू सेहो विदा भ' गेलाह ! गाम श्रीहीन भ' गेल। आब रंग-बिरंगक चिड़ै नहि अबैत छलैक, घर-घर सँ भालसरीक फूलक सुगन्धि नहि पसरैत छलैक, धीया-पुता सभ भरि दिन भालसरीक फलक लोभमे नहि बौआइत छल, एकटा मस्त हँसीक ध्वनि सौंसे गाममे पसरल नहि रहैत छलैक। भालसरी तर बौआइत प्रत्येक धीया-पुताक गाल ऐंठि आब क्यो नहि कहैत छलै—आ, नानीक सगाइ देखबियौक।''

वीरेन बाबू जखन ओहि दलान दिस देखैत छलाह, बाल-संगीक स्मृति कचोटैत छलनि आ लगैत छलनि जेना ओहि सुन्न दलान मे बैसल क्यो खौंझा रहल छनि—अचोहरण।

आ अपन अस्तित्वक यथार्थता आ निस्संगताक इतिहास आर स्पष्ट भ' क' टीसैत छलनि ! निताइ भाइ कहैत छलथिन—बुझलह वीरेन ! हमरा लोकनि भेलहुँ कोल्हु मे पेड़ल कुसियार, रस पाछू खसल, अपने सिट्ठी जकाँ आगू भागल जा रहल छी ! बस आब सुखायल सिट्ठीमे चिनगी पड़बाक विलम्ब अछि। सभटा समाप्त भ' जायत।'' निताइ भाइ सेहो नहि रहलाह मुदा हुनकर स्मृति वीरेन बाबू केँ सदिखन होइत छलनि।

वीरेन बाबू दलान सँ हटा अपन दृष्टि फेर बाटपर लगा देलनि ! कोनो अज्ञात रिक्तता भीतर-बाहर भरि गेल रहनि ! एना सतत होइत छलनि ! भीतरक शून्यता केँ बाहरक चीजसँ भर' चाहैत छलाह, मुदा शून्यता आर बढ़ि जाइत छलनि ! बाहर भीतर सभ खाली !

नहि जानि कियैक ओहि दिन कक्को एक्को बेर नहि बहरायल छलथिन। कोनो आर दिन रहितनि तँ हुनकर खड़ामक खटर-पटर कतेको बेर सुनबा मे आयल रहितनि। आ आङनमे की भ' गेल छलैक। काल्हि केहन चहल-पहल रहैक भरि घरमे धूमस-मचल छलैक ! वीरेन बाबूक जेठका भातिज शहर सँ गाम आयल छलनि ! ओकरा घेरि धीयापुता सभ गर्द मचौने छल ! घरमे उल्लास पसरल छलैक !

ओही गर्दम गोलमे वीरेन बाबूक आँखि खुजि गेलनि। दू दिन सँ मोन बड़ अस्वस्थ छलनि ! भरि राति नीन्न नहि भेल छलनि। भोरे आबि क' कनेक आँखि झपल छलनि। दू-दिन सँ देहक पोर-पोरमे दर्द छलनि। लगैत छलनि जेना बोखार

होनि, थर्मामीटरमे सन्तानबें सँ ऊपर उठिते नहि छलनि। खाली भितरे-भीतर बोखारक ज्वाला हरदम बुझाइत छलनि ! ततेक कमजोरी जे बिछौनो सँ उठबाक मोन नहि होइत छलनि, मुदा भोरे-भोर हल्ला-गुल्ला सुनि उठिक' बाहर आबि गेल छलाह ! भातिज प्रणाम कयने छलनि आ वीरेन बाबू फुसफुसाक' आशीर्वाद देने छलथिन। प्रणाम क' भातिज अपन चीज-वस्तु सरिआब' लागल छल आ वीरेन बाबू चुपचाप ठाढ़ छलाह। राम नव विवाह कयने छल, बहुत रास चीज अनने छल। प्रणाम करबाक बाद तेना व्यस्त भऽ गेल जे ओकरा बिसरि गेलैक जे लग भे काका ठाढ़ छलथिन।

''—कोनो छुट्टी छैक ? वीरेन बाबू तेना पुछलथिन जेना गप्पक क्रम जोड़' चाहैत होथि।

''जी नहि, ओहिना दू-चारि दिन लेल चल अयलहुँ।'' रामक जबाब छलैक आ ओ पूर्ववत अपन वस्तु निकालि सैंति रहल छल। गप्पक क्रम फेर छुटि गेलैक। वीरेन बाबे सोचैत छलाह जे आब की पुछियैक ?

''—कोनो मैगजीन अनलह अछि ? वीरेन बाबू फेर पुछलथिन।

—हँ-हँ बहुत रास अछि। ''राम कहलकनि आ बहुत रास पत्र-पत्रिका सूटकेस सँ बहार क' देलकनि। पत्रिका लैत काल वीरेन बाबू अपन हाथ रामक हाथ सँ छुआ देलथिन। मुदा ओ ध्यान नहि देलकनि।

''—हमर हाथ गरम नहि अछि'' । वीरेन बाबू असली बात पर अयलाह

—जी नहि तँ, मोन खराब अछि की ? पुछबा लेल राम पूछि लेलकनि मुदा ओ अपन काज मे पूर्ववत् लागल छल। ओकर प्रश्न महज औपचारिक छलैक।

मुदा एतबे सँ वीरेन बाबू उत्साहित भ' उठलाह—दू दिन सँ बड़ विकल छी। कमजोरी सँ उठलो नहि जा रहल अछि।

— टेम्परेचर लेने रही ?

—टेम्परेचर ल' क' की हैत ? ओत' सन्तानबें सँ ऊपर घुसकिते नहि अछि। मुदा नाड़ी मे वेग अछि ! लैह, देखि लैह।'' वीरेन बाबू अपन हाथ बढ़ा देलथिन। मुदा राम अपन काज मे लागल रहल। माथ झुकौनहि, मात्र एतबे बाजल ककरो पठा क' ओहि पार सँ दवाइ मङवा लिय'।'' रामक स्वर मे एहन किछु नहि छलैक जाहिसँ आत्मीयतापूर्ण आशंकाक आभास भेटनि।

राम गाम मे घुम' निकलि गेल आ वीरेन बाबू ओतहि ठाढ़ रहि गेलाह । डाक्टर मङा क' की हैतनि ? पुरान जीर्ण रोगी छलाह, डाक्टर रोगक तहमे जाइते नहि छलनि, बाहरी सिमटम दे खैत छलनि, भितरिया तकलीफ क्यो नहि बुझैत छलनि ! पेटेन्ट दवाइ आ टेबलेट ! पुरना जमानाक वैद्यक बाते दोसर छलैक । नाड़ी हाथमे अयलैक कि रोगीक सभ हाल बूझि गेलैक । पछिला बेर छः मास दरभंगोक नामी डाक्टर सँ इलाज करबौलनि मुदा ओकरो वैह रटल रटाओल बात---कोई ट्रबुल नहीं हैं ! टेम्परेचर नहीं हैं, महज कमजोरी है ! टानिक खाइये ।" आब एहि नवका जमानाक डाक्टर सभकेँ के बुझाबय जे खाली बोखारे रोग केँ लक्षण नहि होइत छैक ? टौनिके खयला सँ कमजोरी नहि दूर भ' जाइत छैक ! रोगक जड़ि हटब' पड़ैत छैक, तखन दवाइ असरि करैत छैक । मुदा क्यो नहि सुनलकनि । घुरि अयलाह ! पछिला तीस बरखमे भरिसक्के एहन कोनो साल भेल हैतनि जाहिमे बाहर जा क' नीक डाक्टर सँ इलाज नहि करौने हेताह । मुदा डाक्टर सभ हुनका नीरोग प्रमाणित करबाक ठीका लेने छनि जेना ! रोगकेँ मनक भ्रम कहैत छलनि । हृद भ' गेल ।

ताहूसँ दुखक बात ई छलनि जे अपन परिवारोक लोक डाक्टरक सँग दे ब' लागल छलनि । बीमारीकेँ मोनक भ्रम बुझैत छलनि ! जाधरि परिबारक एहि भ्रमक इलाज नहि हेतैक, वीरेन बाबूक इलाज के करतनि ?

वीरेन बाबू ई सभ सोचैत बड़ी काल धरि ठाढ़ रहलाह ! फेर भारी डेगे बाहर दलानमे अयलाह ! कका पहिने सँ बैसल अखबार उनटि रहल छलथिन ! ई अखबार अवस्से तीन दिन पुरान हेतैक ! ककाक अभ्यासे सैह छनि । नव पुरान जे भेटि जाइत छनि एहिपारसँ ओहि पार धाङिग जाइत छथि समय काटबाक एकटा बहाना ।

'केहन मन छह वीरेन ? कका बड़ सिनेह सँ पुछलथिन । स्वरक आत्मीयता वीरेन बाबू केँ छुलकनि । एकदम छोट बच्चा जकाँ बाजि उठलाह—मोन ठीक नै अछि कका ! भरि राति नीन्न नहि भेल, बड़ विकल छलहुँ !

—'तेँ त' कहैत छियं' जे एहि रोगक चिन्ता छोड़ि दैह । दुखित ओ पड़य जकरा क्यो देखनिहार होइ, सेवा कयनिहार होइ । तोहर काकियो केँ बेर-बेर सैह कहैत छियनि जे दुखित पड़ैत अछि भाग्यशाली लोक जकर बीमारीमे अपस्यांत दौड़निहार अनेको लोक रहैत छैक । अहाँ केँ के देखत ? पुतहु बाहर रहैत छथि । हम भेलहुँ बूढ़ लोथ । असगरि छी अहाँ ? के देखत अहाँकेँ ? तखन बीमारीक मोह कियैक ?

हम त' तोरो कहैत छियह वीरेन, एहि रोगक मोह छोड़ि दैह । जीवाक एतेक मोह कियैक ! एकेटा बेटा छह—नीक कमाइत खाइत छह । बेटी सासुर गेलह । पोता-पोती सेहो देखलह । 'कनियाँ' अपन चिन्ता सँ पहिने मुक्त क' गेल छथुन । आव के रोकैत छह तोरा । आब जीबाक मोह होइते किएक छह ?

कका एके साँस मे बाजि गेलथिन । बजैत-वजैत उत्तेजित भ' उठलथिन ! मुदा वीरेन बाबू जनैत छलाह जे ओहि उत्तेजना मे क्रोध नहि, विवशता छलैक, अपन अनुभवक अभिव्यक्ति छलैक । दुनू गोटेकेँ एक्के रंगक उपेक्षा आ निस्संगता घेरने छलनि । वीरेन बाबू बजलाह—मोह नहि कका, जीवाक कनियो मोह नहि ! गलि-गलि क', साड़-सड़ि क' मरबाक भय ! प्राग एक्के बेर कहाँ छुटैत अछि ? ई पीड़ा, ई रोग—बस एकरे भय ! मोह कथुक नहि...किन्नहु नहि ।

वीरेन बाबू फेर उठि क' आँगन मे आबि गेलाह ! छोट भाइ अपन धीया-पुताक संग बैसल रहथिन । वीरेन बाबू लग जा बैसि गेलाह । अपन हाथ आगू बढ़बैत कहलथिन—कनेक नाड़ी देखह त' नरेन, किछु वेग बुझाइत अछि ।

नरेन बाबू नाड़ी दैखबैत बजलाह—नहि त' "नाड़ी त' खूब पुष्ट अछि ।" आ फेर वच्चा सभक संग खेलाय लगलाह । वीरेन बाबू उठि क' बेटाक कोठली दिस अयलाह ! बेटा गामेक हाइ स्कूल मे मास्टरी करैत छथिन । स्कूलक समय भ' गेल रहैक, जयबाक हेतु अपन साइकिल झाड़ि-पोछि रहल छलाह ! वीरेन बाबू कहलथिन—छुट्टीक बाद कने डाक्टर केँ बजौने अबियहक ।

बेटा कोनो जबाब नहि देलथिन ! किछु काल ठाढ़ रहि बीरेन बाबू आँगनसँ बहरा गेलाह !

रस्ता पर गामक बूढ़ किसान गणेश जा रहल छल । वीरेन बाबू ओकरे रोकि क' नाड़ी देख' कहलथिन । नाड़ी टोहियबैत ओ बाजल—कनेक बेग त' बुझाइत अछि ।

वीरेन बाबू प्रसन्न भ' उठलाह । बस, यैह सभ हिनकर रोग बुझैत छनि । नाड़ी देखब आसान बात छैक ? बड़का-बड़का चूकि जाइत छथि । तेँ वीरेन बाबू गणेश आ ओकर सन-सन आर अनपढ़ मुदा गुणी किसान मजदूरक बड़ सम्मान करैत छलथिन, वैद्यराज कहि बजबैत छलथिन । जखन जे भेटि जानि ओकर हाथ मे अपन नाड़ी थम्हा दैत छलथिन । ओहो सभ मोनक बात सुना दैत छलनि ।

गणेशक बात सँ बीरेन बाबू आश्वस्त भेलाह। अपन नहि बुझलकनि, डाक्टर नहि चिन्हलकनि मुदा क्यो त' चिन्हलकनि हुनकर रोग।

मुदा ओहि राति नीन नहि भेलनि। बेर-बेर लगलनि जेना सिरमां मे क्यो ठाढ़ होनि। बीरेन बाबू चिन्हलथिन। भरिसक तीस वर्ष भ' गेलैक। निस्संगताक इतिहास भरिसक ताहू सँ पुरान छलनि। लगलनि जेना सिरमामे ठाढ़ ओ छाया किछु बाजि रहल छलनि, फुसफुसा रहल छलनि। कनबो कयलनि। बड़ी काल धरि सिरमा मे ठाढ़ कनैत रहलनि। भरिसक सभटा भ्रमे छलनि! रोगी मनक भ्रम...के जानय?

आ सबेरे सँ चटकुनी दलान पर रौद दिस बिछा बीरेन बाबू अपन वैद्यराज सभक प्रतीक्षा क' रहल छलाह। मुदा पता नहि, आइ कहाँ मरि गेल छलनि सभ? आर त' आर, आइ कक्को नहि बहरेलथिन एक्को बेर। आश्चर्य। भयावह सन सुन्न बाट पर दृष्टि अनेरो बौआ रहल छलनि। रौद माथ पर आबि गेल छलैक, तैयो रौद नीक लागि रहल छलनि—जाड़क कोमल रौद।

थाकि क' बीरेन बाबू आँखि मूनि लेलनि। सोच' लगलाह—"नहि आयल क्यो त' नहि आबह। ताहि सँ हमरा की? सत्ते कहैत छैक, बेर पर तुच्छ चीज सेहो अनमोल भ' जाइत छैक। आब नहि करबैक ककरो प्रतीक्षा, नहि कहबैक अपन रोगी मोनक हाल। कौन फायदा? सभ हमर बीमारी के' मोनक भ्रमे बुझैत अछि। कोन ठेकान इहो सभ सैह बुझैत हो, मोन रखबा लेल हमरा परतारि रहल हो। आब नहि कहबैक—ककरो नहि कहबइ।

—"काका चलू ने; थारी परसल अछि।"

बीरेन बाबूक आँखि खूजि गेलनि आठ वर्षक भातिज श्याम खयबा लेल बजब' आयल छलनि, उठि बैसलाह। श्याम कें आर लग बजौलथिन। अपन हाथ ओकर मुट्ठी मे दबबैत, कहलथिन—"कनेक देखू त' बाउ, नाड़ी मे वेग त' नहि अछि।

आ आठ वर्षक श्याम मुट्ठी मे दबल नाड़ीक धुकधुकी गनबाक बदला टुकुर-टुकुर अपन काकाक मुँह देखि रहल छल।

अगस्त १९६४

अरगनी

आङनमे किछु खसबाक स्वर अबैत अछि आ हम दौड़ि क' भीतर पहुँचैत छी। अरगनी टूटि क' खसल छैक आ आङनक कदोआह माटि मे छिड़िआयल बिछाओन आ भीजल कपड़ाक ढेरी लग माय चिन्तित सन ठाढ़ि अछि। कात-महक दूनू खम्भा ओहिना ठाढ़ छैक। मुदा दुनू खम्भाक कान्ह पर राखल बाँसक टुकड़ा बीचेसँ टूटि क' दुनू कात झुकि गेल छैक।

हमरा हँसी लागि जाइत अछि—नीक भेलैक। आब कमसँ कम कपार तँ नहि फूटत। हमर बस चलैत तँ कहिया ने उखाड़ि क' फेंकि देने रहितियैक। मुदा माय हरदम बीचमे आबि जाइत छलि। हमर किछु सुनिते नहि छलि।

नहि जानि, कतेक बेर अन्हारमे एहि अरगनीसँ ढेहा लेने हैब? नहि जानि कतेक बेर कपार सोनितायल हैत, आ पँघ सन टेटर उगि आयल हैत, मुदा जहिया कहियो अरगनीकेँ उखाड़ि क' फेंक' चाहलियैक, माय सभ बेर टोकि दैलक—"देखि क' चलब सीखह। ई वेचारा तँ अपन जगह पर ठाढ़ अछि, अनेरो तोरासँ ढ़ेहा लेब' नहि अबैत छह। अपने देखि क' चलबह नहि आ सभटा तामस निरपराध अरगनी पर।" मायक एहि तर्कक आगाँ हम विवश भ' जाइत छलहुँ।

आङनक नक्शा कतेक युगसँ नहि बदललैक अछि। जहियासँ ज्ञान-प्राण भेल अछि, एहिमे कोनो हेर-फेर नहि भेलैक अछि। चारूकात ईंटाक मकान आ सभक ऊपर मे टीन पाटल। वर्गाकार आङनक बीच मे एकटा आयताकार मड़बा, छोट मुदा सजल-सजाओल, सुन्दर। बाबी कहैत छलि जे पहिने ई मड़बा आर सुन्दर छलैक। १९३४क आतंककारी भूकम्पमे पुरान दुमहला-तीनमहला कोठा सभक संग ई मड़बो ढनमना गेलैक। दुमहला-तीन महलाक जगह पर पुरान ईंटा जोड़ि क' टीन पाटि देल गेलैक आ विशाल काय मड़बाक एकटा छोट मुदा सुन्दर संस्करण सेहो जेना-तेना बनिये गेलैक।

एहि मड़बाक पुबारी कात मे कनेक उत्तर दबि क' ई अरगनी ठाढ़ अछि। भोर दस बजे धरि जे रौद एत' पहुँचैत छैक से साँझ धरि रहैत छैक। दिन भरि अरगनी पर हमर छोट भाइ-बहिनक मूतसँ भीजल कपड़ा सभ सुखाइत रहैत अछि।

ई अरगनी वयस मे हमरासँ जेठे हैत। छोट छलहुँ, तँ ई हमरा बड़ पसिन्न छल। स्नान कयलाक बाद भीजल पैण्ट कूदि-कूदि क' एहि अरगनी पर फेकब अपूर्व सुख दैत छल। ओहि दिन एकर ऊँचाइ हमरा लेल एवरेस्टसँ कम नहि छल।

मुदा जहियासँ ई हमर कान्ह धरि आबि गेल अछि, हमरा फूटलो आँखिये नहि सोहाइत अछि। अन्हार मे बेर-बेर हमरासँ ढ़ेहा लैत रहैत अछि। मायक लेहाज नहि रहैत तँ कहिया ने उखाड़ि क' फेंकि देने रहितियैक।

आइ यार अपने चित्त भ' गेलाह। हमरा हाथे एकटा हत्या होइत-होइत बाँचि गेल। आब नहि बरदाश्त होइत हमरा। उखाड़ि क' फेकिए दितियैक।

मायो हद करैत अछि। हमरा हँसैत ठाढ़ देखि टोकैत अछि—"ठाढ़ भेल ठिठिआइत की छह ? बिलसवाकेँ कहक, एकटा नव बाँस आनत।"

—"जाय दही माय, आङनक बीच मे ई अरगनी हमरा नीक नहि लगैत अछि।" हम अपन मनक बात कहैत छियैक।

माय किछु काल हमर मुँह देखैत अछि, जेना कोनो सोचमे पड़लि हो। फेर उदास मुद्रा, तिक्त स्वर मे बाजि उठैत अछि—"खाली नहि नीक लगलासँ काज नहि चलतह। कोनो इन्तजाम तँ चाहबे करी, नहि त' काल्हिसँ कपड़ा कत' सुखायत।

हम निरूत्तर भ' जाइत छी। माय बिलसवाकेँ सोर पाड़' लगैत छैक। हम चुपचाप बाहर चल अबैत छी।

आइ सात दिनुका बाद रौद उगलैक अछि। झड़ी लागल छलैक, दिन-राति टिप-टिप। कौखन झहर-झहर। दिन-रातिक फर्क मेटा गेल छलैक। आइ सभ किछु साफ छैक—बदलल आ धोअल-पोछल। कतहु-कतहु मेघक एकाध टिक्कर बौआ रहल छैक, मुदा निःशक्त। रौद प्रखर भ' रहल छैक मुदा तैयो नीक लागि रहल छैक।

दिन-राति घरमे गोंजल लोकसभ बाहर रौदमे बैसल अछि। हमहु अपन बरण्डासँ नीचा उतरैत छी।

बाट एकदम कदोआह। चारूकात पानि ओहिना जमकल छैक। जमकल पानि आ पिच-पिच कादोकेँ लँघैत आगू बढ़ैत छी। बरखाक बाद एना खाली पयर घास पर भीजल माटि पर चलब नीक लगैत अछि। अपन नेनपन मोन पड़ैत अछि।

आ नेनपन संग मोन पड़ैत अछि भोलू आ मण्टू—अपन लंगोटिया दोस्त। बिचारैत छी, ओकरे घरसँ भ' आबी। बहुत दिन भ' गेल।

भोलूक माय भनसाघरमे भेटैत छथि। प्रणाम करैत छियनि। चीन्हि क' प्रसन्न होइत कहैत छथि—"धन्न भाग। तोहर तँ आब दर्शनो दुर्लभ भ' गेल। पँच लोक भ' गेल छें।"

—"नहि काकी। से गप्प नहि। गाम आयब तँ बिना अहाँ लोकनिसँ भेट कयने कोना जायब ? आइ-काल्हि अबिते कम छी। भोलू कोना अछि, कत' अछि ?

काकी उपराग दैत कहैत छथि—'दोस्त छौक तोहर आ खबरि हमरा पुछैत छें ! तों तँ ओकरो चिट्ठी नहि लिखैत छही। आइ-काल्हि झरिया मे अछि, ओतहि "मनीजर" भ' गेल अछि।

—"सुनि क' खुशी भेल काकी। ओ चोरा त' हमरा खबरियो नहि देलक। अहाँ ओकर पता दिय' हमरा, हम दू-चारि दर्जन गारि लीखि क' पठा दैत छियैक।

काकी हँस' लगैत छथि। हमहुँ हँसैत छी आ हँसैत-हँसैत सोचैत छी जे आर की बाजू। काकी हमरा टोकैत छथि—"आइ-काल्हि तों की करैत छें ?

—"किछु नहि काकी।"

—"तोहर पढ़ाइ त' खतम भ' गेलौक ?"

—"हँ काकी ।"

—"तखन आब की करैत छें ?"

—"काज तकैत छी काकी ।"

—"आ ओ जे हाकिमबला इम्तिहान देलहिक, तकर की भेलौक ?"

—"एखन ओइमे देरी छैक काकी । एक्के बेरें नहि होइत छैक । कय-कय बेर इम्तिहान देब' पड़ैत छैक ।"

—"पास भेलापर की बनबे ?"

—"हमर एहन भाग कहाँ काकी, जे पास करैत अछि, सोझे एस.डी.ओ. बनि जाइत अछि ।"

—"एस. डी. ओ. केँ कतेक दरमाहा भेटैत छैक ।" काकी बड़ उत्सुक भ' उठैत छथि । हम मोनक बात बुझैत छियनि । हँसी लगैत अछि मोने-मोन ।"

—"इंजीनियरसँ कम्मे भेटैत छैक काकी । फेर अपन भोलू तँ माईनिंग इंजीनियर अछि । ओकरा रुपैयाक कोन कमी ।

काकी प्रसन्न भ' जाइत छथि । आश्वस्त । हम उठि क' ठाढ़ होइत छी ।

—"आब चलैत छी काकी ।"

—"कनेक थम्ह, ओना कोना जाय देबौक । किछु पनपियाइ.......।"

"नहि काकी, एखन नहि, फेर कखनो ......।"

बाहर आबि किछु काल बाटपर इतस्ततः करैत ठाढ़ रहैत छी । फेर अनायास मण्टूक घर दिस विदा होइत छी । मण्टूक माय नहाक' कपड़ा पसारि रहलि छथि । झुकि क' प्रणाम करैत छियनि ।

—"अरे तोँ छें, कखन अयलें ?'

—"आइ सात दिन भेल काकी । बरखा द्वारे कतहु बहरायब मस्किल भ' गेल छल । मण्टू कोना अछि ?

—"ओ तँ एखन आसनसोलमे अछि । ओतहि एक टा "मैन" मे नोकरी लागि गेल छैक । एखन अढ़ाय सय रुपया दैत छैक ।

—"तखन मधुर खुआउ काकी ।"

हम प्रसन्नतापूर्वक कहैत छियनि । मण्टू माइनिंगक डिप्लोमा कोर्स कयलक अछि आ भोलू डिग्री कोर्स । एही साल । आ चट दुनूकेँ नोकरियो लागि गेलैक ।

सत्ते कहैत छैक गाममे लोक, आइ-काल्हि जे 'सेन्स' नहि पढ़लक, से पास पढ़लक । नहि तँ एम. ए. पास क' क' एना बेकार किएक बैसल रहितहुँ, हम सोचैत छी ।

—"की मधुर मङाउ ? कोन एहन मनीजर भ' गेल अछि ।" काकीक स्वर उदास छनि । हम हुनकर व्यथा बुझैत छियनि ।

—"मैनेजर नहि भेल तँ भ' जायत । ई कोन मस्किल छैक ।"

—"सत्ते कहैत छें ?"

—"झूठ किएक बाजब काकी ।"

—मुदा भोलूक माय कहैत छलीह जे मण्टू 'मनीजर' नहि भ' सकैत अछि, ओ छोट पढ़ाइ पढ़ने अछि आ भोलू बड़का पढ़ाइ पढ़लक अछि ।" हमरा हँसी लागि जाइत अछि, चेष्टा पूर्वक रोकैत छी ।

—"नहि काकी । भोलू मण्टू दुनू बड़का पढ़ाइ पढ़लक अछि—साइन्स । छोटका पढ़ाई तँ हम पढ़लहुँ अछि । एकटा परीक्षा हेतैक तकर बाद भोलू जकाँ मण्टूओ मैनेजर भ' जायत ।"

—"तोरा मुँहमे अमृत" काकी गदगद होइत बजैत छथि । किछुकाल दुनू गोटे चुप रहैत छी गुमसुम । फेर काकी टोकैत छथि—"तोहर हाकिम बला इम्तिहान कहिया हेतौक ?

—"हाकिम कपारसँ बनैत अछि काकी, आ हमरा कपारमे त' बौआयबी लिखल अछि ।"

—"एना जुनि बाज । बौअयतौक तोहर दुश्मन । तोँ अवस्से हाकिम बनबें । मण्टूक बाबू तोहर बड़ तारीफ करैत छथुन, सदच्छन । कहैत छथिन जे एहन विद्यार्थी देखबे नहि कयलहुँ जिनगीमे । तोँ सभ दिन फस्ट करैत छलें, मण्टू सेकिण्ड आ भोलू थर्ड । तोँ सेन्स छोड़ि देलें तेँ कनेक गड़बड़ा गेलौक ।

तखने हमर छोट बहीन हमरा तकैत ओत' पहुँचि जाइत अछि । साँसे गाम बौआ आयलि अछि हमरा तकैत-तकैत । दादा (बाबूजी) बजौने छथि । हम चुपचाप ओकरा संग बिदा होइत छी । काकी फेर अयबाक आग्रह करैत छथि ।

हमर चरबाह बिलसंबा तीन-चारिटा चरवाहक संग बथानपर बैसल अछि । हम आगू बढ़ैत छी ।

"ई मालिक की करै हइ आब" पाछाँसँ एकटा स्वर अबैत अछि।

"पढ़ै हइ" बिलसवाक स्वर हम चिन्हैत छियैक।

"बूढ़ हो गेलै आ अभी ले पढ़िते हइ" दोसर स्वरमे आश्चर्य छैक।

हम आगाँ बढ़ि जाइत छी। स्वर पछुआ जाइत अछि। एकटा दोसर स्वर कानमे पड़ैत अछि। माय आ दादामे कोनो बातपर बहस भ' रहल छनि जकर स्वर बाहर धरि आबि रहल छैक। हमरा देखिते देरी माय बाजि उठैत अछि—"आब तोँही फैसला करह।"

"की भेलौक अछि माय।" हमरा किछु नहि बुझाइत अछि। माय कागज कलम हमरा हाथमे दैत कहैत अछि "लिखह।"

बहुत रास सामान सभ, ओकर मात्रा आ मूल्य माय लिखबैत अछि, हम लिखैत जाइत छी।

बड़का फिरिस्त तैयार भ' जाइत अछि।

—"आब तोँही कह' जे महीना भरिक हेतु एहिमे कोन वस्तु बेसी छैक।" माय पुछैत अछि।

हम फेर एक बेर फिरिस्त पढ़ैत छी—ई तँ बड़ कम छौक माय।'

—"आब एकर दाम जोड़ह" माय हमर बात जेना नहि सुनैत अछि।

हम मूल्यक टोटल करैत छी—"दू सय भेलौक।"

—"आब कनेक अपन बापकेँ बुझाबह। हम डेढ़ सय मङैत छियनि तँ कहैत छथि जे आर कम करू। एहिसँ कममे कोना चलतैक, तोँही कह' ?

हम दादा दिस तकैत छी। ओ हमरा नहि देखि रहल छथि, ओ ककरो नहि देखि रहल छथि। दृष्टि देवालपर अटकल छनि। कहैत छथि—"चलत से तँ हम नहि कहैत छी कहै छी जे चलाब' पड़त।

कनेक काल चुप्प रहि हमरासँ कहैत छथि—मायक फिरिस्त तँ लिखि चुकलह, आब कनेक हमरो फेरिस्त लिखि देह।

हम फेर कलम उठा लैत छी। दादा लिखबैत छथि।

दरमाहासँ आमदनी—३५० रुपया।
पिछला कर्जक किश्त कटौती—२००) रुपया
सुनील (हमर बहनोइक) पढ़ाइ—६०) रुपया
लाइफ इन्स्योरेंस प्रीमियम—४०) रुपया
रमेश (हमर छोट भाइक) पढ़ाइ—५०) रुपया

हम हाथ रोकि लैत छी—"आब तँ एक्को पाइ ने बाँचल।"

"सैह तँ हमहूँ कहैत छियनि तोहर मायकेँ जे एक्को पाइ नहि बँचैत अछि तँ हम कहाँसँ दिय'।" दादा कहैत छथि।

"तँ फेर हम की करू। सभक मुँह सीबि दियैक। जवाब दिअ'।" हमरा लगैत अछि जे ई सवाल माय हमरेसँ क' रहल अछि—मात्र हमरेटासँ।

हम ओकरा दिस तकैत छी। ओ दोसर दिस ताकि रहल अछि। हम दादा दिस तकैत छी, ओ पूर्वत् देबाल दिस ताकि रहल छथि।

हम किछु बाज' चाहैत छी। की बाज' चाहैत छी, नहि बुझाइत अछि। किछु बाजले नहि जाइत अछि।

सभ चुप्प अछि। ई स्थिति हमरा असह्य लगैत अछि। हम उठि क' आङनमे चल अबैत छी।

अरगनी फेर बना देल गेलैक अछि। दुनू पुरना खम्भा पर नव बांसक एकटा टुकड़ा राखि देल गेल छैक। हम बड़ी काल धरि ओकरा देखैत ठाढ़ रहैत छी। माय पाछाँमे आबि क' ठाढ़ि होइत अछि—'चलह, पर्रसि दिय' !,

हम भनसा घरक ओसारा पर पीढ़ी पर बैसि जाइत छी। माय थारी परसि क' आगाँमे दैत अछि।

खाइत-खाइत हम ओहिना ओसारा पर बैसल रमेशकेँ टोकैत छियैक—"स्कूल नहि गेलहिक आइ ?

—"किताब नहि अछि, गुरुजी मारैत छथि।"

—"आ दिनेश तोँ। तोँ कियैक ने गेलहिक ?"

—"हमर स्लेट फूटि गेल। माय दोसर नहि मँगा दैत अछि।'

हम माय दिस तकैत छी। ओ मुह घुमा लैत अछि।

भनसेघरक ओसारापर हमर सभसँ छोटकी बहीन नङटे खेला रहलि अछि। ओकरे लग ओकरासँ पैघ बहीन पुरान-फाटल सायाक कपड़ाक सीयल फ्राक पहिरने बैसल अछि। ओकरासँ पैघ दुनू बहीन कलपर अपन भौजीक संग कपड़ा खीचि रहल अछि।

हम हाथ-मुँह धो क' अपन कोठलीमे बिछाओन पर पड़ि रहैत छी। बड़ थकनी बुझाइत अछि, आँखि झलफला रहल अछि।

"सूति रहलहुँ ?" नहि जानि कतेक कालक बाद ज्योति हमरा हिलबैत छथि। हुनकर कपड़ासँ हरदि आ धनी-मेरचाइक गन्ध आबि रहल छलनि। आँचरसँ कण्ठ लगक पसेना पोछैत ठाढ़ि छथि। हम चुपचाप हुनकर आँखिक नीचामे स्याह रेखाकेँ देखैत छी।

"की सोचैत छी ?" ओ टोकैत छथि। "किछु नहि। सोचैत छी जे आइ राति चल जाइ।" हम करोट फेरि लैत छी।

"कोनो खबरि आयल अछि की ?"

ज्योतिक स्वर मे आकुल उत्कण्ठा छनि।

"एखन तँ कतहुसँ किछु खबरि नहि आयल अछि। मुदा गाम मे बैसल रहलासँ की हैत ?"

ज्योति चुप भ' जाइत छथि। हम खिड़कीसँ बाहर आङन दिस तकैत छी।

एकाएक ज्योति हमर पीठ पर छिड़िया जाइत छथि जेना टूटि गेलि होथि। एकदम हारल, पराजित, याचना भरल स्वर मे बजैत छथि—

—"हमरा कहिया ल' चलब ?"

हम कोनो जवाब नहि देत छियनि।

ओहिना पड़ल-पड़ल खिड़कीसँ आङनमे ठाढ़ अरगनीकेँ देखैत छी जाहि पर आइ बाँसक नव टुकड़ा राखि देल गेल छैक आ ओहि पर बहुत रास कपड़ा सुखा रहल छैक। ●

फरवरी, १९६५

सूर्यास्त

परेश बाबू पड़ल पड़ल अखबार उनट' लगलाह। अखबार तीन दिन पुरान छलनि, आ दि इण्डियन नेशन सँ प्रिन्टेड एण्ड पब्लिश्ड बाई'—··· तक अनेक आवृति पहिनहि क' चुकल छलाह! अखबार हाथमे लेने किछु तारतम्य मे रहलाह जे कहाँ सँ शुरू करी! फेर मुख्येसँ आवृति शुरू कयलनि।

भोजनक उपरान्त विश्राम करबाक अभ्यास सभ दिन छलनि। जहिया ओकालति करैत छलाह तहियो। दूटा मोट-मोट गेरुआ दुनू जाँघ तर आ एकटा पैघ मसलंग सिरमा मे। मोट गद्दा पर अलस भाव सँ पड़ल अढ़ाइ मोनक विशाल मुदा वृद्ध शरीर। प्राचीन मिस्रक कोनो वृद्धफेरो सन आकृति आ आकृति पर ओहने कान्ति आ रोब।

सुन्न दुपहरिया मे वैशाखक तीक्ष्ण रौद चारुकात आधिपत्य जमौने छल। अपेक्षाकृत कने नीच कोठाक छत तबि गेल छलैक आ पसेना सँ परेश बाबू तरब-तर भेल जा रहल छलाह। पड़ले पड़ल कने क्रुद्ध होइत बजलाह—"रे रमचरना। सूति रहलें की ? डोरी खींच जोर सँ।"

पतिक क्रुद्ध स्वर सुनि दोसर चौकी पर पड़लि महामाया दाइक हाथ मे अनवरत चलैत बिअनि रुकि गेलनि। पड़लि-पड़लि भर्त्सनाक स्वर मे बजलीह—'बूढ़ वयस अहूँ के मति-भ्रम भेल जाइत अछि। रमचरना पन्द्रह बरख पहिने अहाँक नौकरी छोड़लक, सेहो की हमरे मोन पाड़य पड़त।"

परेश बाबू पत्नीक भर्त्सना पर कने सकपका गेलाह। फेर एकटा शुष्क हँसी ठोर पर आबि गेलनि—गत गौरवक अवसाद भरल हँसी। रमचरना हुनकर खास खबास छलनि, चौबीस घंटाक ड्यूटी। चालीस वर्ष धरि संगे रहलनि। आब संगहि कियो नहि छलनि, रमचरनो नहि रहलनि, पुरना चीज सभ एक एक क' छोड़ि गेल छलनि।

स्मृति शेष छलनि। कोठाक छत सँ अखनो तीन हाथ लम्बा झालरिदार पंखा लटकल छलैक जकर डोरी टुगर जकाँ सिमेंट पर ओंघरायल छलैक।

अखनो कतेको दिन बिछौन पर पड़ितहि लगैत छलनि जेना डोरी धयने रमचरना ओंघा रहल होनि आ टोकि दैत छलथिन—"रामचरना, सूति रहलैं रौ ?" मुदा रमचरनाक "नहि सरकार"क बदला मे कान मे पड़ैत छलनि पत्नीक उपहासपूर्ण भर्त्सना आ सकपका क' चुप भ' जाइत छलाह ।

सभ दिन जकाँ आइयो परेश बाबू पत्नीकेँ कोनो उत्तर नहि देलथिन । हाथ बढ़ा डोरी घीचि लेलनि आ घीचैत रहलाह । पसेना सँ भीजल देह पर पंखाक हवा बड़ सुखद लगलनि । मुदा मोनमे जेना एकटा अवसाद आ रिक्तता भरि गेलनि । बामा हाथमे दबल अखबार फरफराइत रहलनि ।

कौखन परेश बाबू अपनो मुट्ठी मे दबल अखबार जकाँ फरफरा उठैत छथि—मुक्तिक हेतु व्याकुल । अइ संसार आ सांसारिक बंधन सँ मुक्ति । आब कोनो मोह नहि, कतहु कोनो गाँठ नहि । सभ अपन अपन बंधन सँ मुक्त क' देने छनि । जिनगीक कगार पर ठाढ़ परेश बाबू एकसर मुक्तिक प्रतीक्षा क' रहल छथि । मुदा समयक अन्तराल जेना बढ़िते जा रहल होनि । आ सभ किछु असह्य लाग' लगैत छलनि । जेना रमीक खेलमे मात्र एकटा पत्ता लेल कतेको कालसँ रूकल होथि आ रूकले रहि जाइत होथि, बाजी हारि जाइत होथि ।

वस्तुतः बाजी हारि गेल छथि परेश बाबू ! जिनगीक कगार पर ठाढ़ मुक्तिक प्रतीक्षामे बाजी हारि गेल छथि । यदि ओ मुक्ति दस बरख पहिने भेटितनि तँ जीति जैतथि । एकदम भरल बाजी ! एकदम भरल घर । एक एकटा बंधन मजगूत । एक-एकटा तन्तु सटल । फुट प्वायन्ट्स ।

आब सभ किछु टूटि गेल छनि । लगाथोल ट्रेल, लगाथोल सीक्वेंस, सभटा बेकार भ' गेल छनि । परेश बाबू हारि गेल छथि—ए मोस्ट अनएक्सपेक्टेड डिफीट ।

मुक्तिक बाट मुदा भेटैत छनि । आंगनक मुँहथरि पर ठाढ़ ललन इशारा द' रहल छनि । परेश बाबूक ठोर पर हंसी आबि जाइत छनि । हाथसँ इशारा करैत छथिन जे तोँ चल, हम अबैत छी ।

ललन आश्वस्त भेल चल जाइत अछि । परेश बाबू व्यस्त भ' उठैत छथि । सभसँ पहिने पत्नीक बिछौन पर दृष्टिपात करैत स्थिर कर' चाहैत छथि जे ओ सूतलि छथि वा जागलि । हुनका निद्रित बुझि आश्वस्त होइत छथि, अखबार

केँ नीक जकाँ मोड़ि बामा काँख तर लैत छथि आ दहिना हाथमे अपन मोट छड़ी उठा जमीन पर टेकैत छथि । चौकी तर राखल खड़ाम पहिरि लैत छथि । उठबा मे कष्ट होइत छनि, जमीन परसँ उठ'मे आरो बेशी । ठेहुनक जोड़ पकड़ि लेने छनि । आस्ते-आस्ते उठिक' ठाढ़ होइत छथि । तखन कोनो कष्ट नहि । छिहत्तरि बरखक देह अखनो सोंटल छनि आ आँखिक रोशनी अखनो तीक्ष्ण । डेग आगू बढ़बैत छथि ।

विशाल शरीरक बोझसँ दबल खड़ाम सीमटी पर खटखटा उठैत छनि । ओंघाइत महामाया दाइ उठि बैसैत छथि आ आग्नेय दृष्टिसँ पति दिस तकैत छथि । परेश बाबू चुपचाप डेग आगू बढ़ौने जाइत छथि ।

महामाया दाइ पाछाँसँ गरजि उठैत छथि "लाज नहि अछि अहाँक कोनो गत्र मे । काल्हिये सप्पत खयलहुँ अछि जे फेर सींग तोड़िक पड़रू मे नहि मिझरायब मुदा आइ फेर वैह चालि । हम एकसरि सुन्न आँगनमे किलोल करैत रहू आ ई धीया-पुता संग चौन करैत रहताह । सौख ने देखू, बुढ़िया घोड़ी लाल लगाम ।"

सभटा सुनैत परेश बाबू निर्विकार भाव सँ खड़ाम खटखटबैत आँगन सँ बाहर भ' जाइत छथि ! तखन महामाया दाइक गर्जना क्रन्दन मे बदलि जाइत छनि आ ओइ दग्ध दुपहरियाक सुन्न घर आँगनमे अहुरिया कटैत रहैत छनि ।

× × × × ×

—नो ट्रम्प्स ।

—टू स्पेडस ।

—थ्री हार्ट्स ।

—फोर क्लब्स ।

—फोर स्पेड्स ।

—डबल ! परेश बाबूक बिड रहि जाइत छनि । ललन डमी बनैत अछि । परेश बाबूक ताश देखैत छनि—"नो ट्रम्प्सक अगेन्स्ट अहाँ कौल कोना ओपेन क' देलियैक बाबा ? अहाँ के त' एक्को ट्रिक नहि अछि । आ फेर फोर सेहो बाजि देलियैक ।" ललन कने रुष्ट होइत कहैत छनि । लगातार हारि रहल छल ।

—"तोँ सपोर्ट कियै कैलह ?"

—"हमरा त' अढ़ाइ टा ट्रिक अछि । अहाँ सभ बेर अहिना कौल द' दैत छियैक बाबा ।" ललन उलहन जकाँ दैत छनि ।

परेश बाबू ओकर व्यथा बुझैत छथिन। ओ स्कूलिया छौंड़ा अछि। जीत' लेल खेलाइत अछि, आर कथुक लेल नहि। ओकर दूटा संगतुरिया छौंड़ा जकरा ओ अपना सँ कमजोर खेलाड़ी बुझैत छलैक से जीति रहल छलैक, सेह ओकरा अखरि रहल छलैक। ओ परेश बाबूक परमानेन्ट पार्टनर छल। परेश बाबू सभ दिन हारैत छलाह मुदा बिड सभसँ हाइयेस्ट दैत छलथिन।

अहू बेर ओवर कौल छलनि ! पाँच हाथ डाउन भेलाह ! ललनक मुँह लटकि गेलैक।

परेश बाबू ओकरा आश्वासन दैत कहलथिन—मुँह नहि लटकाउ पार्टनर। अहाँ नेना छी, जीत' सँ प्रसन्न होइत छी। मुदा हम त' हारि-जीत लेल नहि खेलाइत छी।"

बाबाक अन्तिम वाक्यक अर्थ स्कूलिया छौंड़ा सभके नहि लगैत छैक। टुकुर टुकुर परेश बाबूक मुँह ताक' लगैत अछि।

परेश बाबू ताश बाँट' लगैत छथि आ ताश उठबितहि अति प्रसन्न होइत बजैत छथि—"टू नो ट्रम्प्स।"

ललनक कोंढ़ फेर धड़क' लगैत छैक।

\+ \+ \+ \+ \+

झलफल अन्हार धरि ताशक अड्डा जमल रहैत छैक। जखन ताश सूझ' मे कष्ट होम' लगैत छैक, तखन परेश बाबू उठैत छथि।

उठैत छथि आ अङना दिस बिदा होइत छथि ! आंगनक मुँहथरि लग आबि किछु मोन पड़ैत छनि। फेर घुरैत छथि। बगले मे हाइ स्कूलक हेडमास्टरक घर छनि। परेश बाबूक भातिज ! दालान मे कुर्सी पर बैसैत परेश बाबू काँख तर सँ अखबार बहार क' दैत कहैत छथिन—"ई अखबार राखह। कल्हुका छह। अजुका त' स्कूल पर हेतह ? कोनो खास न्यूज ?

—"नहि काका ! कोनो नहि !"

अखबार ल'क' परेश बाबू फेर आंगन दिस बिदा होइत छथि। नीक जकाँ अन्हार भ' गेल छैक। अन्हार मे पैर थरथराइत छनि। मुदा आंगन पहुँचि जाइत छथि। ओसारा पर लालटेन बारिक' राखल छनि। इजोतमे परेश बाबू ओसारा पर चढ़ैत छथि। अपन चौकी पर महामाया दाइ गुमसुम बैसलि छथि। ओतेक टा आंगन आ ओहन पैघ पैघ घरक बीच एकसरि। परेश बाबू द्रवित भ' उठैत छथि।

महामाया दाइक मुद्रा तनल छनि। तामसे फटवा लेल मोन बैसचि छथि।

खवासिन साँझे चल गेलनि। रातिक' नीक जकाँ सुझैत नहि छनि तेँ साँझे भानस क' लैत छथि। खवासिनक छुइल कोना खयतीह ?

परेश बाबू चुपचाप अपन बिछौन पर बैसैत छथि आ हाथ बढ़ा लालटेन उठा सिरमामे खिड़की पर राखि पड़ि रहैत छथि। अखबार खोलिक' आँखिक आगाँ पसारि लैत छथि।

किछु क्षण मौन। संझिया रातिक निस्तब्धता—'खायब ? परसि दिय' ? एकटा प्रश्न !

—"जे विचार हो"।

सभ दिन एकटा उत्तर।

भोजनक उपरान्त परेश बाबू फेर अखबार पसारि लैत छथि। महामाया दाइ भोजनक उपरान्त अपन बिछौन पर पड़ि बिअनि हौंक' लगैत छथि।

फेर एकटा चुप्पी, असह्य मौन।

महामाया दाइ कुहर' लगैत छथि, पहिने कने आस्ते सँ, फेर जोर-जोर सँ। परेश बाबू अखबार सँ आँखि नहि उठबैत छथि।

कुहरब बन्द बन्द भ' जाइत छनि ! फेर मौन —किछु काल !

—"बहीर भ' गेल छी ?" पत्नी अप्रत्याशित प्रश्न पर परेश बाबू चौंकि क' अखबार सँ दृष्टि हटबैत छथि।

—"आइ सात दिन सँ हम मरि रहल छी। सभ राति बोखार होइत अछि, दर्द सँ माथ-कपार फटैत अछि आ अहाँ अखबार पसारने निश्चिन्त पड़ल रहू !

—"उपाय ?" परेश बाबू जेना प्रश्न करैत छथिन।

—"हमरा घरदनि दबाक' मारि दिय' " महामाया दाइ लोहछिक' बजैत छथि।

—"नीक त' सेह होइत।" परेश बाबू बुदबुदाइत छथि।

महामाया दाइ सुनि लैत छथिन। तिलमिलाक उठि बैसैत छथि। माल पर नोर टघरि जाइत छनि।

"आब कियैक ने कहब से। आब हम छी कथी जोगरक। पचपन वर्ष धरि मुदा अहीं लेल घिसरी कटैत रहलहुँ अछि सदिखन। आइ हमरा घेंट दबाक मारि दिय'। मुदा अपन की हैत? के देत कांचो पाकल रान्हिक आगाँ मे?

—'तें' त' कहैत छी जे चुपचाप पड़ल रहू, जे होइत अछि चुपचाप सहैत रहू। माथमे दर्द होइत अछि, बोखार अछि मुदा हम की करू? अइ अन्हार मे जाउ डाक्टर लग? नौकर बैसल अछि जकरा दौड़बियौक इम्हर-ओम्हर! बेटा-बेटी नाति पोता अछि लग मे जे सेवा-सुश्रुषा करत! माथ दबाओत, तरबा मालिश करत? तखन की करू हम? तैं कहैत छी जे नीक होइत जे घेंट दबा अहूँ के मारि दितहुँ आ अपनो फाँसी लगा लितहुँ। बस, सब झंझट चैन!

परेश बाबूक विशाल शरीर थर-थर काँप' लगैत छनि। क्रोध, उत्तेजना वा विवशता, नहि जानि कथीसँ? महामाया दाइ आहत आ विदीर्ण भ' क' अपन बिछौन पर पड़ि रहैत छथि। आगू एक शब्द नहि बजैत छथि। परेश बाबूक थरथर कँपैत देह क्रमशः स्थिर भ' जाइत छनि? फेर अखबार पढ़' लगैत छथि।

महामाया दाइक पतिक संग बिताओल अनेको वर्ष मोन पड़ैत छनि। सुख ऐश्वर्य आ प्रेमसँ भीजल जीवनक पचास टा वर्ष। परेश बाबू सभ किछु देने छलथिन हुनका –सुख, सन्तति आ स्निग्ध प्रेम।

आइ पाँच वर्ष सँ सभ किछु बिला गेल छलनि जेना। सन्तति, सुख आ पतिकप्रेम, सभटा हेरा गेल जलनि! सभ क्रिछु रहियो क' किछु नहि छलनि। भीतर-बाहर सभ सुन्न।

पैघ आंगन! आंगनक चारूकात पक्का मकान! पैघ कोठली, पैघ केबाड़ पैघ खिड़की। सुन्दर सज्जित! कतेको वर्ष सँ मुदा झोल लटकल सभ पर। सभ मे ताला बन्द। मात्र एकटा कोठली आ भंसा घर खूजल। ककरो कुंजियो नहि छलनि महामाया दाइक संग। पुतोहु लोकनि कुंजी संगहि रखैत छलथिन। दू-बरख सँ नहि अबैत जाइत छथि तें ओ कोठली सभ ओहिना बन्द रहैत छनि।

जेठ बेटा पहिने फराक भेलनि! ओ महामाया दाइ सँ रूष्ट छलनि जे ओ छोट बेटाके बेशी मानैत छलीह! माय भ' क' दू रंग व्यवहार! खसिक' बेटा फराक भ' गेलनि! आंगन मे पोता पोती खेलाइत रहैत छलथि आ महामाया दाइके नहि बुझाइत छलनि जे बेटा फराक छनि!

एकटा बेटी छलनि! कम्मे वयस मे विधवा भ' गेलनि! एकटा नतिनी सेहो छलनि! बेटी-नतिनी सभ दिन महामाया दाइक संग रहलनि!

नौकर-चाकर भनसीया आ जिरतिया! भरि दिन आंगन मे हूलि मचल रहैत छलनि! महामाया राजरानी छलीह।

फेर सभटा बिलाय लगलनि! जर जमीन, कर-कचहरी, नोकर-भनसीया सभटा बिलाइत गेलनि। तैयो महामाया दाइ सुखी छलीह! भरल घर छलनि! पोता-पोती आंगन मे खेलाइत छलनि। छोट पुतोहु सेहो अयलथि। सुन्नरि, पैघ घरक। हुनको धीया-पुता भेलनि। फेर छोटको बेटा फराक भ' गेलनि। महामाया दाइ ककरो दोष नहि देलथिन। आंगन मे पोता पोती खेलाइत रहलथि। कहियो कोनो दुख कचोट नहि भेलनि। सभ दिन भरल पुरल रहलीह।

भरल घर खाली होम' लगलैक। नतिनीक विवाह करौलनि आ नतिनीक संग बेटियो चल जाइत रहलनि।

आ जर जमीन घटलैक त' बैसल खाइ मे असुविधा होम' लगलैक। दुनू बेटा नौकरी कर' लगलनि। आंगन सुन्न भ' गेलैक। दुनू बेटा अपन-अपन परिवार संग कयलक। बूढ़ा-बूढ़ी, कोनो परिवारक नहि छल। ओकरा क्यो नहि पुछलकैक। सुन्न घर आँगन मे दुनू पड़ल रहल, पाँच वर्ष सँ पड़ल अछि! जिनगीक कगार पर ठाढ़ दू टा बूढ़-एकसर आ अवश।

× × × ×

एक बेर महामाया दाइ जगलीह।

राति बहुत बीति गेल छलैक मुदा परेश बाबू अखबार पसारने जागल छलाह। पसरल अखबारक अक्षर सभ अदृश्य छलथि। आँखिक आँगा झलफला रहल छलनि—गत जीवनक कतेको गौरवमय दिन। भविष्यक कल्पना सँ आतंकित भ' उठल छलाह आ आँखिक नीन्न पड़ा गेल छलनि।

महामाया दाइ पतिक मोनक अस्थिरता बुझलनि । बड़ स्निग्ध भ' उठलीह।—"नीन्न नहि होइत अछि ।" पत्नीक स्निग्ध स्वर पर परेश बाबू चौंकलाह। ई स्वर आब कतेक अनचिन्हार भ' गेल छनि।

"बस आब भ' गेल।" अखबार मोड़िक' सिरमा तर रखैत परेश बाबू कहैत छथिन।

—बड़ गर्मी छैक ! बिअनि हौंकि दिअ' ?" महामाया दाइ उठबा लेल उद्यत होइत छथि !

"नहि, नहि अहाँ पड़ल रहू। अहाँक मोन खराप अछि। सबेरे सूति रहू।"। खिड़की पर सँ लालटेन उठा ओकर टेमी कम क' क' ओकरा चौकी तर रखैत परेश बाबू कहैत छथिन।

घुप्प अन्हार मे हुनू गोटे बड़ी काल धरि जगैत छथि। मोन मुदा स्निग्ध अतीत मे भोतिआयल।

× × × ×

एक बेर परेश बाबू जगलाह।

प्रात हैबा मे बेशी विलम्ब नहि छलैक। भोरक ठण्ढा हवा रातुक उष्णता केँ कष्ट करैत सिहकि रहल छल। मुदा परेश बाबूक मोन भारी छलनि। अपन चौकी पर महामाया दाइ कुहरि रहल छलीह—अनवरत।

आइ कतेको दिन सँ ठीक अही बेर मे परेश बाबूक नीन्न टूटि जाइत छनि आ सभ दिन नीन्न टूटला पर पत्नीक कुहरनाइ कान मे पड़ैत छनि।

आ मोन तड़फड़ा क' रहि जाइत छनि। मोन होइत छनि जे कहुना उठथि आ लग मे बैसि माथा दबा देथिन। मुदा अपनो देह जकड़ल सन लगैत छनि। अवश भाव सँ पड़ल रहैत छथि आ पत्नीक कुहरनाइ सहसमुखी भ' कान मे गोंगिआय लगैत छनि।

आ फेर नीन्न नहि होइत छनि परेश बाबू केँ।

× × × ×

फेर महामाया दाइ जगलीह।

चारूकात रौद पसरि गेल छलैक। परेश बाबू मुँह हाथ धो क' अपन बिछौन पर बैसल पत्नीक उठबाक प्रतीक्षा क' रहल छलाह।

खवासिन आबि गेल छलनि। बर्तन-बासन माजि क' भंसे घर मे चूल्हा चक्कीक इन्तजाम मे लागल छलनि।

महामाया दाइ बिछौन सँ उठबाक चेष्टा कयलनि। मुदा असफल रहलीह। लगलनि जेना अंग अंग अशक्त भ' गेल होवि। आँखि मे धाही छलनि आ देहक गीरह कनकना रहल छलनि। विवश पड़लि रहलीह आ गाल पर नोर टघर' लगलनि। रोकबाक चेष्टा कयलो पर दाबल हिचकी स्पष्ट भ' उठलनि।

परेश बाबू भोरे-भोर पत्नी केँ एना कनैत देखि चिन्तित भेलाह—"की भेल ? एना कनैत कियैक छी ?

महामाया दाइ अश्रुपूर्ण दृष्टि सँ पति के देखलनि आ फेर आँखि मूनि अजलीह—,आइ त' उठबो सँ असमर्थ भ' गेलहुँ। काँचो असिद्ध के देत रान्हि क' ? साँझे राति खयने छलहुँ।"

—"अहाँ अनेरो चिन्ता नहि करू। हम आइ असिद्धे किछु खा लेब। खवासिनी केँ कहि दैत छियैक, इन्तजाम क' देत" परेश बाबू उठि क' पत्नीक बिछौन लग अयला। माथ पर हाथ देलथिन। माथ जरि रहल छलनि धाह सँ। महामाया दाइ आँखि मुनने पड़लि रहलीह। पतिक स्पर्श नीक लागि रहल छलनि।

—"अहाँ लेल बार्ली दूधक इंतजाम करबा दैत छी।" परेश बाबू कहलथिन।

"नहि, हम नहि खायब बार्ली दूध।" महामाया दाइ बच्चा जकाँ मूड़ी झंटलनि। परेश बाबू केँ हँसी लगलनि। पचास पचपन बरख पहिला बात मोन पड़लनि। तहियो बार्ली खयबाक नाम पर एहिना महामाया दाइ मूड़ी झाट' लगैत छलीह।

मुदा हँसी तत्क्षण बिला गेलनि। मोन पड़लनि जे कोना एक्को दिन बोखार लगला पर फलक ढ़ेरी लगा दैत छलथिन—अंगूर बेदाना आ समतोला। महामाया दाइ मात्र फलक रस पीबैत छलीह। एकटा खवासिनी तरबा रगड़ैत छलनि आ दोसर माथ।

आइ ज्वर सँ दग्ध शरीर लेने महामाया दाइ एकसरि बिछौन पर पड़लि छलीह आ लगमे परेश बाबू असहाय ठाढ़ छलाह। बार्ली दूध नहि खबतीह ? तखन उपाय !

परेश बाबू घुरि क' अपन चौकी पर बैसि रहलाह ।

× × × ×

परेश बाबू पैर दबने ओसारा पर चढ़लाह । आध घंटा लेल सोचने छलाह मुदा तीन घंटा सँ ऊपर लागि गेल छलनि । बैसलाह त' फेर उठिये नहि भेलनि ।

ललन जखन आंगनक मुहथरि लगसँ इशारा कयने छलनि त' ओकरा हाथक इशारा सँ घुरा देने छलथिन । महामाया दाइ ज्वर मे बेसुध पड़लि छलीह आ परेश बाबू मसलंग पर पड़ल चुपचाप सुन्न घर आंगन मे पसरल रौद केँ देखि रहल छलाह ।

ललन के घुरा देलाक बाद मोन आगू-पाछू कर' लगलनि । भोर सँ बैसल-बैसल अकछि गेल छलाह । आध घण्टा लेल भ' अबैत छी, अखन त' आंखि लागल छनि । लगले घुरि आयब, बुझबो नहि करतीह ।

आ आध घंटा लेल उठला त' सांझ भ' गेलनि । परेश बाबू चोर जकाँ दाबल पयरे ओसारा पर चढ़लाह ।

खबासिन नहि आयल छलनि । महामाया दाइ ओहिना बेसुध पड़लि छलीह । परेश बाबू आइवस्त भेलाह ।

आकाश पर कारी मेघ जुटि रहल छलैक, बिहाड़िक लक्षण बुझा रहल छलैक । पश्चिमी आकाश पर डुबैत सूर्य मेघाच्छन भेल जा रहल छल ।

अकस्मात एकटा सिसकी परेश बाबूक कानमे पड़लनि । महामाया दाइ कानि रहलि छलीह । सम्पूर्ण देह क्रन्दन केँ रोकबाक चेष्टा मे काँपि रहल छलनि । अस्फुट स्वर मे बाजि रहल छलीह—"एक गिलास पानियो देनिहार नहि अछि घर मे क्यो । आब अइ अभगली केँ उठा लिअ' भगवान ।

आ परेश बाबू केँ लगलनि जेना आकाश पर मड़राइत सभटा कारी मेघ हुनकर मोन केँ झाँपि देने होनि । कोनो प्रचण्ड 'बिहाड़िक' आशंका सँ थरथरा उठलाह आ आकाश पर मेघ मे डुबैत सूर्य केँ देखि बुदबुदा उठलाह—द सनसेट वुड बी हारीबुल । □

नवम्बर १९६५

[सूर्यास्त

अनचिन्हार अप्पन

ओहि दिन स्टीमर पर अनायास तरुणसँ भेँट भ' गेलैक ।

दरभंगा—पहलेजा घाट पैसेन्जर कनेके काल पहिने पहलेजाघाटक वलुआह माटि पर ससरैत ठाढ़ भेल छलैक । गाड़ी आ जहाज सभ दिन जकाँ खचाखच यात्रीसँ लदल छलैक । जूनक सूर्य उगिते धधक' लागल छल । जहाज खुजबा मे बेसी बिलम्ब नहि छलैक, तैयो कतेको यात्री गंगा स्नानक पुण्य हथिअयबा मे तत्परता देखा रहल छलाह— ओहि पार मग्गह मे कोना नहयताह ? गंगा स्नानक पुण्य मे रूचि नहि रखनिहार यात्री जहाजक कलक पानिक छिटका मारि-मारि चेहरासँ रात्रि जागरणक चेन्ह मेटा रहल छलाह । किछु यात्री अलस भावेँ कुर्सी आ बेंच सभ पर पसरल भोरक जलहबाक थपकी पर झपकी ल' रहल छलाह ।

स्टीमरक टी-स्टाल पर सभ दिन जकाँ ठेलमठेल मचल छलैक । मस्किलसँ एक प्याला चाह ल' भीड़क धक्का सँ अपनाकेँ बचबैत प्रकाश जहाजक कात मे, रेलिंगसँ भिड़ले ठाढ़ भ' गेल । चाह पिबैत ओ ओहिना एम्हर-ओम्हर तकैत रहल । लगेमे, दहिनाकात, एकटा नव जोड़ा रेलिंग पर झुकल चाहक चुस्की लैत पसरल फूलल गंगाक हिलकोर निहारि रहल छल । ओ ओम्हरसँ दृष्टि हटा लेब' चाहलक । तखने ओहो एम्हर तकलकैक आ दुनू एक दोसरके चोन्हि गेलैक । ओ तरुण रहैक ।

दुनू लपकि क' भरि पांज धयलक एक दोसरके ! दुनूक हाथक प्याला खसैत-खसैत बँचलैक । बड़ी काल धरि दुनू लपटल रहल ।

—"तों तँ बड़ मोंटा गेल छेँ रौ ! डाइटिंग' कर !" ओहिना लपटल तरुण कहलकै ।

प्रकाश किछु नहि बाजल । खाली मुसकियाइत रहल ।

—"बहुत दिन पर भेँट भेल ने रौ ? पाँच बरख भेल हेतैक ?"

तरुण ओहिना लपटल फेर बाजल ।

—"हँ, पाँच वर्ष पहिने कनेकालक हेतु मेडिकल कालेज—हास्पिटल मे भेंट भेल छल । तों अपन बाबूक डेथ सर्टिफिकेटक हेतु आयल छलें पटना । मुदा नीक जकाँ गप्प भेला त' आठ वर्षसँ ऊपर भ' गेल ।" कनेक हटैत प्रकाश बाजल ।

दुनूक हाथक प्याला मे बाँचल-खुचल चाय सेरा क' पानि भ' गेल रहैक । अवशिष्टके गंगा मे फेकि दुनू गोटे प्याला काउन्टर पर राखि देलकै । प्रकाश पैसा देब' लगलैक तँ तरुण बाँहि पकड़ि घीचि लेलकैक "पैसा द' देलकै गीता !"

—"के गीता ?" प्रकाश अकचकायल ।

—"आ ने, परिचय करा दैत छियौक ।"

रेलिंग पर झुकलि ठाढ़ि नवयुवती लग आबि तरुण बाजल—"तोरा दुनू गोटेके आपसमे परिचय करा दियौक । ई थिकीह गीता चटर्जी आ गीता, ई प्रकाश थिक, जकर हम बरोबरि चर्चा करैत छलियौक ।

गीता परिचित भावसँ हाथ जोड़ि मुसकिया उठलैक । प्रकाशो नमस्कार कयलकैक ।

गीता सत्रह—अठारह वर्षक पिण्डश्याम सन छौंड़ी छलैक । चश्माक भीतरसँ चमकैत ओकर दुनू पैघ-पैघ आँखि, बड़ सुन्दर हेतैक—प्रकाश अन्दाज कयलक । पातर ठोरपर मुसकी नीक लागि रहल छलैक । गीता सुन्नरि नहियो होइत, आकर्षक छलि—प्रकाशके मोने-मोन स्वीकार कर' पड़लैक ।

तीनू रेलिंग पर झुकल-झुकल, अपन आकृति पर जलहवाक स्पर्श अनुभव करैत गप्प करैत रहल । गीता बजैत कम छलैक, मुदा हरदम मुसकियाइत रहैत छलैक । प्रकाशके ई बड़ नीक लगलैक ।

तरुण गीताकें स्कूली—जीवनक बहुत रास गप्प उत्साहपूर्वक सुनबैत रहलैक । गीता मुसकियाइत रहलैक । प्रकाश कखनो तरुण, कखनो गीताकें निहारैत रहल । जहाज पानि पर ससरैत रहलैक ।

रौद मुहँ पर आबि गेलैक । पसेना छूट' लगलैक । प्रकाश बाजल—चल' दोसर दिस ठाढ़ होइ ।

—"रह' दही ! एतबा रौदक कोन डर ? की गीता ?"

गीता जबाब नहि देलकै । खाली मुसकिया देलकै । ओहिमे जिनगी भरल छलैक—लबालब । प्रकाशके अपन प्रस्ताव पर अकारण लाज भेलैक ।

—"तों बहुत बदलि गेल छें प्रकाश ?" एकाएक नहि जानि, की सोचि तरुण बाजि उठलैक ।

"के ? हम ?" प्रश्न करैत प्रकाशके लगलैक जे आब फेर सभटा उलहन दोहरौतैक तरुण—"विवाहमे नहि बजौलें, एकटा बेटीक बाप बनि गेलें मुदा भौजीसँ भेंटो नहि करौलें ।' ओकर उलहन उचित हैतै, प्रकाश सोचलक ।

तरुण फेर बाजि उठलैक—हँ, प्रकाश तोंही । एकदम बदलि गेल छें तों ! तोहर गप्प-शप्पक ढ़ंग बदलि गेल छौक । लगैत अछि जेना तों हमरा सँ बड़ पैघ भ' गेल छें—एकदम बूढ़ ।

—"बूढ़ तँ भेये गेल छी । बेटीक बाप बनि गेल छी । दस बरखमे ससुर बनब । आब ओ गप्पक आ ओ ढ़ंग कहाँसँ लाउ ?" बात मजाकमे टारबाक चेष्टा करैत प्रकाश शुष्क हँसी हँसल ।

—"बातके टार नहि, सत्त-सत्त बाज ।" तरुण अपनत्वसँ बाजल ।

—"नुकयबाक कोन बात छैक । समयक संग परिवर्त्तन होइते छैक । देख, कतेक मोटा गेल छी । पहिने एहने रही ?

तरुण बूझि गेलैक जे ई प्रसंग प्रकाश टार' चाहैत अछि । ओ फेर चर्चा नहि कयलकै ।

लगातार रौद मुँहपर पड़लासँ गीताक पिण्डश्याम मुँह पर लाली आबि गेल छलैक । रौदसँ बचबा लेल ओ माथ पर आँचर राखि कनेक घोघ जकाँ काढ़ि लेलक । ई देखि दुनू गोटेके हँसी लागि गेलैक । हँसैत-हँसैत तरुण गुनगुना उठल—

आमि चेये छी तोमाय
से की मोर अपराध ?
शुधु एइ जीवनेर नेइ
इतो जेनो आमार कतो जनमेर
साध ....

गुनगुनाइत ओ दुष्टतापूर्वक गीताकें देखि रहल छलैक। गीता लजा क' हँसि रहल छलैक। प्रकाशो हँसीमे संग दैत एकटा दुष्टता क' बैसलैक। तरूणकें डाँड़सँ पकड़ि अपना दिस झीकि गुनगुना उठलैक—

आमि चेये छी तोमाय...............

× × × ×

तरूण आ गीताकें पटना जंक्शन पर दानापुरवला गाड़ी मे चढ़ा जखन प्रकाश डेरा पहुँचल दस बाजि रहल छलैक।

ओकरा एना असमय आयल देखि किरण चिन्तित भ' उठलैक। ओकरा एना चिन्तित होइत देखि प्रकाशके अकारण प्रसन्नता भेलैक। विलम्ब हैबाक कारण ओ ओकरा कहि देलकैक।

किरण आश्वस्त भ' चाह बनाब' भनसा घर चल गेलैक। जाइत-जाइत टेबुल फैन आॅन करैत गेलैक।

जूता खोलि प्रकाश बिछाओन पर पसरि गेल। बड़ थकनी लागि रहल छलैक। सौंसे देह टूटि रहल छलैक।

तरूण परसू अयबाक वादा कयने छलैक। आइ ओ सभ नहि रूकलैक। आइ ओकर गुरूजीक भाषण छलैक। तरूण कोनो स्वामीजीक चककरमे छल आइ-काल्हि।

कनेक काल बाद चाह लेने किरण कोठली मे अयलैक। चाह पीलासँ किछु स्फूर्त्ति अयलैक। कमीज खोलि किरणकें देलकैक आ फेर ओहिना खाली देह बिछाओन पर पसरि गेल।

—"ओझाजी कत' छथि।" पड़ल-पड़ल किरणसँ पुछलकैक।

—"ड्यूटी पर गेल छथि—बख्तियारपुर। राति क' घुरताह।" जबाब भेटलैक।

—"आ प्रभा ?" ओ जनैत पुछलकैक।

—"ओहि कोठलीमे छथि। अहाँक बेटियो ओतहि अछि।" किरण जेना ओकर अगिलो सवालक जबाब दैत बजलैक।

"ओकर घाओ कोना छैक आब ?" प्रकाश कनेक व्यग्रतासँ पुछलकै।

—"एकदम छूटि गेल छलैक, मुदा एम्हर फेरं दाना बिकलि गेलैक अछि, पछिला हप्ता डाक्टर बजौने छल, कहाँ गेलियैक ?

प्रकाश कोनो उत्तर नहि देलकै। बेबी दोसर कोठली मे कानि उठलैक। किरण ओम्हरे दौड़लि।

किरणकें एहि डेरामे अयला दोसर मास बीति रहल छलैक। दू मास पूर्व प्रभा एकाएक दुखिताहि भ' गेल छलैक। पेटमे जनमारा दर्द उठलैक। डाक्टर कहलकैक जे एपेण्डिसाइटिसक आपरेशन कराब' पड़तैक।

प्रभा एकसरि छलि। ओझाजीक ड्यूटी रेलवेमे, रिलीविंग हेण्ड। आइ एत' काल्हि ओत'। माय-बाप कहलथिन, नहि जानि, कहिया कोन प्रयोजन पड़ि जानि। कनियांकें पहुँचा दहुन।"

किरण आबि गेलि एहि डेरामे: तकर दू मास बितलैक, आपरेशन एखन धरि नहि भेलैक अछि। आब तँ दर्दो नहि होइत छैक। सैकड़ो एण्टीवायटिक कैपसुल खोआ देलकैक डक्टरबा सभ। आब कहैत छैक—एपेण्डिक्स नहि, इलियाक एबसेस छल। कैपसुलसँ सुखा गेल।

मुदा घाओ सुखयलैक वा नहि, किरण नीक जकाँ सुखा गेल छैक। दुब्बरि तँ पहिनो बड़ छलैक, मुदा एहि बीचमे एकदम निष्प्रभ भ' गेल छलैक। टोकला पर टारि दैत छलैक।

—आब अहाँ चश्मा लगाउ।

ओकर एना सुखयबाक कारण प्रकाश जनैत छल। बिना कारण, बिना कष्टक ओ सुखायलि जा रहल छलैक। कारण प्रकाश जनैत छल। जहिया एहि डेरा पर आयल छलैक चेहरा उत्साहसँ चमकि रहल छैक। रातिक एकान्तमे प्रकाशक चौड़ा छाती पर ओंघराइत पुछने छलैक—"अहाँ कहिया धरि जायब काज शुरू कर'।"

—"बस दू-चारि दिनमे बजाहटि अयबाक चाही। प्रकाश पूर्ण विश्वाससँ कहलकैक।

दू मास पूर्व एकटा सरकारी नोकरीक हेतु प्रकाशक सेलेक्शन भ' गेल छलैक। केरेक्टर भेरिफिकेशनक हेतु फार्म भरि देने छलै। दौड़—बरहा क'

पुलिस आ सी० आइ० डी० रिपोर्ट पठबा देने छलैक। आब बस नियुक्ति पत्रक प्रतीक्षा छलैक।

—"शुरूमे कते भेटत ?" किरण ओहिना छाती पर ओंघराइत बाजल छलि।

—"अढ़ाइ तीन सय।"

किरण चुप भ' गेलैक जेना मोने-मोन किछु सोचि रहल होइ।

"बहुत कम अछि ने ?" प्रकाश टोकलकैक।

—"नहि तँ। शुरू-शुरू मे कोन कम अछि ? आरो नीक कतहु भेटि जायत तँ छोड़ि देबैक।

—"अहाँ चला लेब एतबा मे ?" प्रकाश प्रश्न कयलकै।

—"नीक जकाँ।" किरण उत्साह मिश्रित विश्वाससँ बाजलि।

—"सय-पचास गामो पठाब' पड़त ?" प्रकाश चेतौलकै।

—"सेहो भ' जायत।" किरण ओहिना विश्वास पूर्वक बजलैक।

—"बड़ चतुर गृहिणी छी तखन तँ अहाँ ?" ओकर पीठ पर मुक्का मारैत प्रकाश हँसल।

—"अच्छा वाबा, छी चतुर गृहिणी। मुदा एना हड्डी-गुड्डी किएक तोड़ि रहल छी।"

किरण सत्ते बड़ प्रसन्न छलैक। गुनगुना रहल छलैक। अपन देह पर ओकर स्पर्श अनुभव क' रहल छल प्रकाश। ओहो दुलारि देलकैक ओकरा।

एकाएक किरण कोनो निश्चयसँ तनिक' बैसि रहलैक—"मुदा पहिल दरमाहा हमरा देब' पड़त। ओहि मे सँ एक्को पाइ नहि देब।"

—अच्छा बाबा देब। मुदा की हेतैक ओहि रुपयाक, कने हमहूँ तँ सुनी ?

—"अहाँ लेल कपड़ा सिआयब, जूता लेब। केहन फाटल कपड़ा पहिरने घसल चट्टी घिसियबैत इन्टरभ्यूमे जाइत छी।"

प्रकाश मुग्ध भ' गेल। आर लग घीचि कहलकै—"आर की करब ?"

कोनो उत्साहित नेना जकाँ किरण बाजलि—"एकटा बढ़ियाँ डेरा लेब। ओकरा खूब सजायब। तलन एकटा रेडियो लेब आ नीक-नीक फर्नीचर। नहि, नहि, रेडियो, फर्नीचर बाद मे लेब। पहिने एकटा गाड़ी लेबैक, बेबीक हेतु जाहिमे बैसि ओ भोर साँझ घूमत।"

प्रकाश खौंझौलकै—"मुदा गाड़ी कने पँघ लेब' पड़त। बेबीक संग बेबीक मायो बैसतैक ओहिमे।"

'जाउ, हटू।' किरण लजाक' ओकर छातीमे घुसिया गेलैक।

......दोसर कोठलीमे बेबी जोर-जोरसँ कानि रहल छैक। एखन एहिना कनतैक। किरणक दूध सुखा गेल छैक। छ मासक अछि आ मायक दूध सुखायल। किरण बहुत रास बेबीफुड आ ड्राप्सक पुरजा लिखा चुकल छैक, मुदा प्रकाश एखन धरि एकोटा नहि आनि सकलैक अछि।

बेबीक पैराम्बुलेटर सेहो नहि आबि सकलैक। ने नव डेरा भेटलैक, ने प्रकाशक नव-नव कपड़ा बनलैक। एहि डेरापर अयबाक दसम दिन खबरि अयलैक—नियुक्ति पत्र नहि भेटतैक। ओ अण्डरएज अछि।

प्रकाश सुन्न भ' गेल। अण्डरएज डिटेक्ट करबाक ई नव तरीका छलैक। ने इन्टरव्यू कालमे देखलक आ ने सेलेक्शनक काल। प्रकाश मोने-मोन हजारो गारि देलकैक।

ओकरा हताश देखि किरण साहस देलकैक—जाय दियौ। अहाँकेँ तँ मोने नहि छल ई नोकरी करबाक। हमहीं जिद कयने छलहुँ।"

मुदा किरण सुखायलि जा रहलि छलि। कारण प्रकाश जनैत छल। बेबीक पैराम्बुलेटर नहि अयलैक। किरणक दूध सुखा गेल छैक आ बहुत रास लिखल पुर्जा प्रकाशक पाकिटमे पड़ल छैक कहियासँ।

डेढ़ वर्ष पहिने जहिया प्रकाशक विवाह भेल रहैक, ओकर गिनती होनहारमे होइत छलैक। उज्जवल भविष्य छलैक लोकक दृष्टिमे। बर्षे दिन बाद बेबी आबि गेलैक। आ ओही दिन अखबारमे एम० ए०क रिजल्ट सेहो आबि गेलैक। छः मासमे एकटा छोटछीन नोकरी नहि ताकि सकल प्रकाश।

चारिटा इन्टरव्यू देने छल—तीनटा लेक्चररशिपक आ एकटा सरकारी कार्यालयक हेतु। दू ठाम बिना भेकेन्सीक बिज्ञापन भेल रहैक, आफिसक अनियमियता प्रशस्त करबाक हेतु आ तेसर ठाम एकटा मंत्रीक सारक नियुक्ति भ' गेल रहैक, इन्टरव्यूसँ पहिने।

चारिम नोकरी ओकरा भेटि गेलैक। किरण बेबीक लेल पैराम्बुलेटर पसिन्न कयलकै, नव मकान देखलकै। बड़ प्रसन्न छलि ओ।

प्रकाश अण्डर एज भ' गेल। ओ पच्चीसममे पयर देने छल आ अधिकारी वर्ग कम सँ कम पच्चीस पूर उम्मीदवार चाहैत छलाह। मुदा, एहि अनिवार्य शर्तक परीक्षा सेलेक्शनसँ पूर्व क' लेबाक गलती ओ लोकनि किएक करितथि। सभ तँ अपने हाथ छलनि।

दोसर कोठलीमे बेबी कनिते जा रहलि छलि। जकरा चुप्प करयबाक चेष्टामे किरण जोर-जोर सँ चिचिया रहल छलैक—"चुप्प करमघट्टी बिछाओन पर नहि रहती, हरदम क्यो टङने रहौन, जेना आर कोनो काजे नहि अछि हमरा। बाप चारिटा नोकर जे रखने छथिन......

प्रकाशकेँ इच्छा भेलैक जे किरणकेँ कहैक जे बेबी केँ एम्हर द' जाउ, हमरा लग। मुदा कण्ठलँ बकार नहि फुटलैक।

तेसर दिन तरुण अयलैक। प्रकाश सभकेँ कहि देने रहैक ओकरा बारेमे......।

कनेके कालमे तरुण सभसँ हँसि मिलि गेलैक। बेबीकेँ कोरामे खेलबैत रहलैक, किरण सँ बेर-बेर हँसी करैत रहलैक। बेबी ओकर पैण्टकेँ भिजा देलकै तैयो ओहिना खेलबैत रहलैक।

प्रकाशकेँ ओ दिन मोन पड़लैक जहिया कपड़ा कने छू देला सँ तरुण बिगड़ि उठैत छलैक। ओकरा एके टा पैण्ट रहैत छलैक जकरा नित्य खीचि ओ पहिरैत छल। आब ओ नीक कमाइत अछि। पढ़ाई त' मैट्रिकेक बाद छोड़ि देने छल मुदा एकटा नीक फर्ममे मेडिकल रिप्रजेन्टिटिव भ' गेल छल।

तरुण कहलकै—भौजी त' नीक अनने छैं प्रकाश, मुदा हमरा एक टा संदेह भ' रहल अछि। तोहर पहलवानी डिजाइनक संग एहन छड़ीकेँ शहर बाजारमे देखि लोक सोचैत हेतौक जे तोँ हिनका विआहिक' नहि, भगाक' ल' जा रहल छहुन आ बेचारी डरक मारे मदति लेल चिचिआइयो ने रहल छथि।

तीनू गोटे केँ तेहन हँसी लगलैक जे हँसैत-हँसैत पेट दुखाय लगलैक।

जाइत काल तरूण कहलकै—त' परसुक्का प्रोग्राम निश्चित। परसू तोँ भौजीकेँ ल' क' दानापुर आबि रहल छेँ। माय देख' चाहैत छनि भौजीके दानेपुरमे अछि अखन बड़की बहिन लग।

तरुणके रिक्सा पर बैसा जखन ओ घुरल त' कोठलीमे भ' रहल गप्प सुनिक' पयर बाहरे थकमका गेलैक। ओझाजी कहि रहल छलथिन—मास दिन सँ प्रकाश बाबू कहैत छथि जे बेबीकेँ देखयबा' लेल रुपया नहि अछि। मुदा दानापुर जयबाक बातपर तैयार भ' गेलाह।

—"भैया" तँ एहिना कहैत छथि सभ दिन जे एको पाइ नहि अछि, मुदा सैर-सपाटामे सैकड़ो रुपैया बूकि दैत छथि।" प्रभा बाजि रहलि छलि।

—"बुकैत नहि छथि तँ टाका होइत की छनि ? सय पचास त' रेडियो आ मैंगजीन सभसँ भेटिये जाइत छनि।"

प्रकाश चुपचाप दोसर कोठलीमे घुरि गेल। ओ जनैत छल, सभटा गप्प किरणकेँ सुनाओल जा रहल हेतैक। ओकरा किछु दिन पहिलुका गप्प मोन पड़लैक। सप्ताह भरि दौड़लाक बाद गामक सभटा तात्कालिक समस्याक समाधान क' जाहि दिन पटना जाय चाहैत छल, आङनमे खूब बहस भ' रहल छलैक। ओ ओहिमे सम्मिलित नहि छल, मुदा सभटा सुनि रहल छल।

ओकर छोट भाइ मैट्रिक कयने छलैक एहि साल। कालेजमे नाम लिखा देल गेल छलैक। खर्चक हेतु ओ मासमे डेढ़ सय माङि रहल छलैक, मुदा माय-बाबू एक सयमे चलाब' कहि रहल छलथिन।

बिगड़िक' प्रमोद बजलैक—"भैयाकेँ तँ सभ दिन डेढ़ सय-दू सय बिन मङने देलियनि। हमरा बेरमे एक सय मे आँखि लगैत अछि।

बाबू बुझबैत कहलथिन—"देबामे कहाँ आपत्ति अछि हमरा। मुदा आइ-काल्हि हाथ एकदम सिकस्त अछि। प्रकाशक नोकरी लाग' दहक, तखन जे मङबह, देबह।"

"लागि चुकलनि नोकरी हुनकर। साल भरि सँ तँ सुनि रहल छी। आ नोकरी लगलो सँ की ? लेब रुपैया हुनू हाथे ? पहिने अपन परिवारक बोझ तँ उठाबथु।" प्रमोद उदण्डता पर उतरल छलैक। माय-बाबू चुपचाप सुनि लेलथिन। हुनका अपनो भरिसक एकरे डर छलनि। प्रमोद भरिसक हुनके मोनक बात बाजल छलनि। एना स्पष्ट रूपसँ तँ नहि मुदा एहने गप्प सभ साल भरिसँ एहि घरमे ओ सुनि रहल छल। आइ प्रभा ओ ओझाजी सेहो बाजि रहल छलथिन। सभ एक्के बात बाजि रहल छलैक।

गामसँ बिदा होइत काल कतहु सँ पँच आनि दस टाका ओकरा हाथमे दैत माय कहने छलैक—"कहुना किरायाक इन्तजाम कयने छियह, मुदा चिन्ता नहि करिह'। जहिना इन्तजाम हैत आर पठा देबह। मुदा एना कतेक दिन चलतह? कोनो काज ध' लैह।

प्रकाश यैह सोचि रहल छल। कोनो काज शुरू क' देबाक चाहियैक। कोनो काज, केहनो काज। सोचबाक-विचारबाक आब समय नहि छलैक।

ओकरा घुरबामे बेसी देरी देखि किरण कोठलीसँ बेबीकेँ कोरामे लेने बहरयलैक। ओकरा बिछाओन पर पड़ल देखि चुपचाप लग आबि बैसि रहलैक। प्रकाश सभटा सुनि गेल छलैक, ओ बूझि गेलैक।

किरण लगमे बैसल ओकर माथक केश छिड़ियबैत रहलैक। प्रकाश बेबीकेँ छातीपर बैसा खेलाइत रहल। दुनू बातकेँ टार' चाहैत छल। अन्तमे किरण मौन तोड़लकै—"अहाँ जयबाक बातपर हँ किएक कहलियैक? रुपैया अछि?"

"भ' जायत।" प्रकाश ओहिना पड़ल कहलकै।

—"कोना?" किरणकेँ विश्वास नहि भेलैक।

"काल्हि एकटा कथाक रेकार्डिंग अछि। पच्चीस टाका भेटत!"

किरण फेर कोनो प्रश्न नहि कयलकै! प्रकाश बेबीक संग खेलाइत रहल। बेबी ओकर नाक अपन दाँत विहीन मुँहमे ल' चिबा'ब' लगलैक! ओकरा गुदगुदी लगलैक, ओ हँस' लागल!

किरण बेबीकेँ लेब' चाहलककै। ओ मना कयलकै "खेलाय दिऔ।"

× × × ×

बड़ मनहूस दिन छलैक—गर्मीसँ चिपचिप करैत।

प्रकाश दिन भरि कोठलीमे पड़ल रहल। साँझ बितलैक आ राति सेहो आबि गेलैक। भोरे आइ० ए० एस०क परीक्षाक परिणाम बहार भ' गेलैक। सफल व्यक्तिक सूचीमे प्रकाश दू-बेर तीन बेर अपन रौल नम्बर ताकि गेल। मुदा ओकरा निराश होब' पड़लैक। ई ओकर पहिल आ अन्तिम वर्ष छलैक। अगिला सालक हेतु एज नहि छैक।

ओकरा सफलताक आशा छलैक। ई बेर ओकरा नीक जकाँ तोड़ि देलकै! दिन भरि कोठलीमे नुकायल रहल। खाली एक घण्टा लेल जा क' रेकार्डिंग करा आयल।

दू चारि टा सम्बन्धी आ शुभ चिन्तक शान्त्वना देब' सेहो अयलथिन! जाइत जाइत किछु उपदेश सेहो—"परिश्रम करू! बिना परिश्रम कम्पीट करब मस्किल! ई खिस्सा-फिस्सा लिखब छोड़ू किछु दिन।"

प्रकाश किछु नहि बाजल। ओ पिछड़ि गेल छल आ पछड़ि क' खसल व्यक्तिकेँ सभ किछु सहबाक चाहियैक।

राति क' जखन किरण बिछाओन पर अयलैक त' बाजब आवश्यक भ' गेलैक—भोरे उठि क' चाह जलखै बना लेब। भोरे सात बजेक गाड़ीसँ जायब आ साँझ धरि घूरि आयब।

किरण किछु नहि बजलैक। ओ बुझलक जे किरण सुनि लेलक अछि। सुतबाक उपक्रम कर' लागल!

—"अहाँ जगतक बहिनसँ बीस टाका पैंच लेने छियैक।" किरण एकटा दोसरे सवाल कयलकैक।

—"हँ।" ओ कहलकैक।

—तँ फेर घुरौलियैक कियैक ने?"

किरणक प्रश्न आ प्रश्न करबाक ढंग ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक।

—"घुरा देबैक। इन्तजाम होब' दियौक।"

—"आ प्रभाक दस रुपैया?"

किरण जेना खाता पसारने छलैक।

—"ओहो घुरा देबैक।"

—"घुरा देबैक नहि, काल्हि भोरे घुरा दियौक। हमरा लोकनि दानापुर नहि जायब।" किरण निर्णयक स्वरमे बजलैक।

—"किएक?" प्रकाश कनेक खिसिआइत पुछलकैक।

—"किएक की? अहाँ केँ बहुक संग घुमबा-फिरबा लेल टाका अछि, मुदा पैंच सधयबा लेल नहि। सभक टाका घुरा दियौक।" किरण अपन बात पर अड़लि छलि।

—मुदा हम तरुणके वचन देने छिएक।

—"अहाँक वचनक कोन मूल्य? वचन तँ अहाँ रुपैया लेत काल देने छलियैकजे तुरंत घुरा देब। दू मास भ' गेलैक। वचन तँ सभ दिन तोड़िते छी, एकटा आर सही!" किरण किछु कठोरता सँ बजलैक।

बात बड़ तीत छलैक मुदा ओ पीबि गेल। आइ ओ लड़' नहि चाहैत छल। ओ टूटल छल। सहानुभूति चाहि रहल छल। किरण ओकरा आर तोड़ि रहल छलैक!

—हमर वचनक कोनो मूल्य नहि? ओ व्यथित होइत पुछलकै।

—"हँ हँ, अहाँक वचनक किछुओ मूल्य नहि। बचन तँ एकटा अहाँ अपन बापोके देने छलियनि जे पढ़ि-लिखि अहाँक भार हल्लुक करब! मुदा अखन धरि अपने बोझ बनल छी! वचन अपन मायोके देने छलियनि जे एहन पुतोहु देबौ जे तोरा चुलहा चक्कीसँ फुरसति देतौक। मुदा अहाँ एकटा फैशनेबुल मेम उठा अनलहुँ। वचन तँ एकटा अपन भाइयो-बहिनकें देने छलियैक जे ओकर हक नहि छिनबैक। ओकर आश्रय बनबैक मुदा अखन धरि अहाँ अपने आश्रय ताकि रहल छी। वचन तँ एकटा अपन पत्नियोकें देन छलियैक"····जाय दिअ'। कतेक गनायब, अहाँ उलटे अपन असमर्थता सुनाब' लागब।

प्रकाशके लगलैक जेना धोखासँ कोनो दोसर स्त्रीक बिछाओनपर आबि गेल हो। किरणक चेहरा ओकरा एकदम अनचिन्हार लगलैक। उठि क' कोठलीसँ बाहर आबि गेल। राति बहुत बीति गेल छलैक—उमसल राति। ओ निरुद्देश्य सड़कपर बौआइत रहल। लगैत छलैक जेना कोठलीमे घुरिते ओकर साँस बन्द भ' जेतैक, ओ अनचिन्हार वातावरण ओकरा बरदास्त नहि हेतैक।

ओ बेर-बेर माय, बाबू, भाइ, बहिन किरण, बेबीक आकृति मोन पाड़बाक चेष्टा कयलक मुदा किछुओ मोन नहि पड़लैक। लगलैक जेना ओ एकदम एकसर अछि। संसारक सभ चेहरा ओकरा अनचिन्हार लागि रहल छलैक। परिचित चेहरा क्यो नहि, एकोटा नहि। प्रकाश सड़कपर बौआइत रहल—अशान्त आ उद्विग्न।

भोरुकबा चमक' लगलैक। प्रकाशक थाकल, हारल देह डेरा दिस घुरलैक। भोरुका हवा थाकल देहके सुखद लागि रहल छलैक।

कोठलीक दरबज्जा ओहिना खुजल छलैक आ भीतर ओहिना बल्ब जड़ि रहल छलैक। प्रकाश कोठलीमे आबि गेल। किरण पेटकान देने सूतलि छलैक। बेबी चित्त पड़लि इजोत दिस तकैत हाथ पयर फेकि रहल छलैक। ओकरा देखिते हँस' लगलैक। बिनु दाँतक मुँहमे ओ हँसी बड़ नीक लगलैक प्रकाशके आ लगलैक जेना किछुओ अनचिन्हार नहि छलैक।

सभ परिचित छलैक, सभ अपन छलैक। ओकरे बेटी हाथ-पयर फेकैत हँसि रहल छलैक।

ओ झुकि क' बेबीकें कोरामे उठा ओकर मुँह, गाल, आँखि, कान सभके चुम्मासँ भरि देलकैक।

आ फेर दहिना हाथ बढ़ा सूतलि किरणक पीठ सोहरा देलकै—अपनत्व आ स्नेहक स्पर्शसँ।

ओकर स्पर्श मात्रसँ किरणक सम्पूर्ण शरीर थर-थराक' हिलि गेलैक। ओ सूतलि नहि छलैक, कानि रहलि छलैक।

सितम्बर १९६९

धमकी

एना नुका क' कत' पड़ायल जाइत छैँ, रौ ? आब एहि अभगली काकीक टुटली मड़ैया मे पयरो दैत लाज होइत छौ ? पहिने तँ एहि आंगन सँ ताधरि नहि जाइत छलेँ जाधरि अपन आंगनसँ तीन-तीन बेर बजाहटि नहि होइत छलौ ! हमरे भनसाक जरल-पाकल कतेक स्वादि-स्वादि क' खाइत छलेँ ? अही लतामक गाछ पर, अही शरीफाक फुनगी पर दिन भरि छड़पैत रहैत छलेँ ? आब तोरा कोना मोन रहतौक ओ सभ गप्प ? आब तँ एकोबेर हुलकियो क' नहि देखैत छैँ जे एहि आंगन मे, इहो देखबा लेल जे काकी जीविते अछि वा मरि गेल ? किएक देखबेँ आब ? आब त' तोँ बड़का लोक भ' गेल छैँ--हाकिम !

की कहलेँ ? हमरा लग कोना हाकिम बनबेँ, हमरा लग तँ आइयो ओतबेटा छैँ । ···· ··· से तँ ठीके कहैह छैँ रे । हमरा लेल तँ आइयो ओतबेटा छैँ । कोरा मे खेलौने छियौ ! नङटे आंगन मे खेलंइत देखने छियौ । तोरे किएक, तोहर बापोके ! जहिया पहिल देर एहि आंगन मे पैर देने रही, तोहर बापो नङटे खेलाइत छलौ ! खुब गुलथुल रहौ । फुलल-फुलल आ थूलथुल देह ! सब कचकचबैक—मोटमल ।

तोरा हँसी लगै छो ? आइ त' विश्वासो ने हेतौक जे कहियो तोहर बाप एहन मोटायल रहौ । लगातार बिमारीसँ कोना सुखा क' काँट भ' गेल छौ । मुदा हमर विश्वास कर, कहियो रहौ तोहर बाप एहन ! मुदा ! भेटब कठिन छलौक ! किछुओ मोनक खिलाफ भ' जाउक तँ अन्हड़ बिहाड़ि बनि जाइत छलेँ । सभटा नोचि-नाचि, उजाड़ि-पजाड़ि फेकि दैत छलेँ । सभटा थुर्री लतामक आंगन ने पथार लगा दैत छलेँ । सभ डराइ छलौ तोरासँ आ नाम राखि देने रहौक—गोरा पल्टन । गोरे सभ सन उज्जर-धपधप आ ओहने रोब दाब । हम तँ ओहो दिन बुझि गेल छलियौक जे वड़का हाकिम बनबेँ ।

की कहबेँ, सब हमरे आशीर्वाद सँ भेल छै ? से त' छौहे हमर आशिर्वाद तोहर संग हरदम ।······ मुदा तोँ एना ठाढ़ किएक छैँ, बैसि जो ! कनेक नीक जकाँ देखबौक ! आब आँखियो अन्हरा गेल अछि ! नीक जकाँ सुझितो कहाँ अछि ?

की कहलेँ ? नहि सुझैत अछि तँ चरखा लेने किएक बैसल छी ? लिय', आर सुनू ! चर्खा नहि काटब त' पेट कोना चलत ? आर नहि अछि किछुओ संग मे, मुदा पेट मे अन्न त' चाहबे करी । आ सिद्ध-असिद्ध किछुओ जुटय तकरा लेल चर्खा छोड़ि दोसर साधने कोन अछि ? अही अन्हरायल आँखिये तूर तुनैत छी, पीर बनबैत छी, सूत कटैत छी आ अही बूढ़ टाँङे अपने पोला ल' खादी भण्डार धरि जाइत छी । तैयो की भेटैत अछि ? जुआनकी छौंड़ी सभक मोटका पोला केँ नीक नम्बर भेटि जाइत छैक आ बुढ़ियाक नीकहा पोला छँटा जाइत छैक ! कपार तँ संगे लागल रहैत अछि ।

की कहले ? हिस्सा ? सम्पत्तिये की छल जे हिस्सा भेटैत ? आ जेहो छल से तोहर मास्टर काका हथिया लेलथुन । हमरा हिस्सा मे किछु नहि रहल । भेटल एकटा फूसक खोपड़ी, छोट सन आङन आ आङन मे एकटा लताम आ एकटा शरीफाक गाछ ! तोरा कहाँ मोन हेतौक ई सभ ? बहुत छोट छलेँ ताहि दिन ।

तोरा तँ आरो बहुत रास गप्प नहि मोन हेतौक । इहो नहि बूझल हेतौक जे तोहर ई अभगली काकी जीवनक पचास वर्ष कोना एहि गाम मे बितौने छौक । सुनबेँ हमर खिस्सा ? तोँ तँ अपन सन्तान जकाँ छेँ । तोरासँ की लाज ? कथीक पर्दा ?

की कहलेँ ? सुनबेँ ? तँ फेर बैसि जो नीक जकाँ । ई ले, चारिटा लताम छौक, खाइतो रह ! बड़ पसिन्न रहौ तोरा ई लताम ! नहि जानि, आब नीक लगतौ वा नहि ?

की कहलेँ ? नीक छौ ? त' खो । आर अछिये की जे देबौ आगू मे । सूर्य माथ पर आबि गेलाह, मुदा चूल्हियो नहि पजारने छी ।

की कहलेँ ? विवाह ? विवाह कोना मोन रहत ? पाँचे बरखक त' रही । के ? तोहर काका ? ओ कोना मोन रहताह ? विवाहे यात्रा मे तँ देखने रहियनि ।

खाली एतबा मोन अछि जे खूब गोर रहथुन। सभ बयो दिन भरि घेरने रहनि। धीया-पुता सभ मीसर मीसर करैत रहैत छलनि। हमहुँ ओोहि गोल मे मिलि जाइत छलहुँ आ 'मीसर मीसर' कर' लगैत छलहुँ। माय झीकि क' ल' अनैत छलि, दोसर घर ल' जाइत छलि आ डँटैत छलि—"तों किएक मीसर कहैत छहुन ? ओोहि घर किएक जाइत छें, तोहर त' वर छथुन।" हम की जान' गेलियैक वर, फेर पड़ा जाइ ओोही घर। अकच्छ भ' सभ छोड़ि देलक। हम दिन भरि हुनके लग बैसलि रही।

तोरा हँसी लगैत छौक मुदा हमर हँसी तँ भदबारि रौद जकाँ देखिते बिला गेल छल। विवाहक यात्रा तोहर काका घुरलथुन, सभ भरल मोने विदा कयल-कनि ! हमरो उदास उदास लागल ! सभ चहल-पहल खतम ! आ तकर बरखे दिनक बाद आङन मे कन्नारोहटि मचि गेल। माय छाती पीटैत आ बाबू माथ पर हाथ रखने बैसल ! आङन मे भीड़ आ सभक मुँह तकैत अवाक ठाढ़ि हम जखन काकी हमर चूड़ी फोड़ि देलक आ हजमा के बजाक' माथक केश कटा देलक त' हमहूँ चीत्कार कर' लगलहुँ। केहन सुन्नर चूड़ी आ केहन घुघरू सन केश छल ! हम कनैत कनैत आङन मे ओंघराइत रहलहुँ। मुदा ताहूसँ बड़का काण्ड भेल श्राद्धक दिन। ब्राह्मण लोकनि चूड़ा-दही खा रहल छलाह। हम जिद्द ठानि देलियैक, हमहूँ पाँती मे बैसि क' पात पर चूड़-दही खायब। माय पहिने मनौलक आ फेर दूनू हाथेँ धुन' लागलि। मुदा बाबू मायक हाथ छोड़ाक' पात पर बैसा देलनि—"आब जानेसँ मारि देबैक की ? खाय दियौक।" माय कनैत घर पड़ा गेलि आ बाबू मुड़ी झुकौने ठाढ़ रहलाह ! हम खूब गब्बर-गब्बर चूरा-दही खयलहुँ !

तोरा फेर हँसी लागि रहल छौक ! कोना ने लगतौक। काजे तेहने कयने रही हम ! स्वामीक श्राद्धमे पाँती मे बैसि क' गब्बर-गब्बर चूड़ा-दही खयने रही। तें देखि ले, आब फुटहो जुड़ब कठिन भ' गेल अछि।

की कहलें ? एहि गाम मे कहिया अयलहुँ ? पन्द्रहम वयस रहय तहिया। विधवा रही, मुदा बाबू कहियो तकर बोध नहि होब' देलनि। कहियो सासुर नहि जाय देलनि। तोहर मास्टर काका बेर-बेर दौड़ कर' लगलथुन, नचार भ' बाबू केँ विदा कर' पड़लनि। पन्द्रहम बयस मे द्विरागमन भेल आ स्वामीविहीन

सासुर मे प्रथमबेर पयर देलहुँ। ने बाजा-गाजा, ने हर्षोल्लास ! मृत्यु सन सर्द छलैक ओ द्विरागमन !

बाप रे बाप ! ओहि दिनमे तोहर ई गाम रहौक। आइ बुढ़-बुढ़ानुस तोरा सभ पर हँसैत छौक जे धीया-पुता सभ बितु कहल भ' गेल, उदण्ड आ अवारा भ' गेल। मुदा तोरा लोकनि तँ हुनका सभसँ सात कच्छे नीक छें। बाहर पढ़ैत लिखैत छें, नौकरी करैत छें, जे मोन मे अबैत छौक, करैत छें। मुदा अपन घरमे अपने तँ नहि थुकै छें ! ओ जमीन्दारीक जमाना रहैक ! तोरा लोकनि मालिक आ हमरा लोकनि भगिनमान ! चारूकात रोबदाब ! नोकरनी-बनिहारिनीक कथे कोन, सर-सम्बन्धीक सेहो लेहाज नहि रहैक ! सभ गामे मे रहैक, नौकरी करब शानक खिलाफ बुझैक। धनक कमी रहबे ने करैक, आ ने खयबा पिबाक चिन्ता। मस्त साँढ़ जकाँ बौआयल फिरय ! मुदा ई सभ तों कतहु लिखिक' छपवा नहि दियहिक। गामवला सभ ओहिना तोरा पर बिगड़ल रहैत छौक ! सभक नीक-बेजाय लिखिक' छापि दैत छहीक। मुदा ई सभ नहि छपा दियहिक, तोहेर संग हमरो जानक आफत भ' जायत।

हँ, त' की कहि रहल छलियौक ? हँ, पन्द्रहम वयस मे एहि गाम मे आयल रही ! पन्द्रहम वरख आ ओ रूप ! आइ ई जरल चेहरा तोरा देखि क' तोरा विश्वासे नहि हेतौक जे कहियो एहु चेहरा पर रूप अँटैत नहि छलैक। जे देखय आङनक चक्कर लगब' लागय। गामक सम्बन्धे ककरो भौजी, ककरो काकी। मुदा तकर ककरा लेहाज ? सासु नहि, बूढ़ ससुर मतिभ्रम मे पड़ल, ननदि सासुर वसैत आ एक मात्र देओर गामे गाम मास्टरी करैत ! मास-दू मास पर गाम आबथि। लागय जेना सौंसे गाम दिने-देखारे नोचि क' खा जायत।

नोचवा लेल पहिल हाथ घरे मे बढ़ल। ससुर सभ राति पयरमे तेल लगबाबथि। कहियो संकोच नहि होअय। वृद्ध रूग्ण ससुर। मोन लगा क' सेवा करी। एक राति वैह ससुर हाथ पकड़ि झीक' लगलाह। हाथ छोड़ा भागि पड़यलहुँ। लागल जेना घिनाओन पिलुआ सँ भरल खाधि मे खसि पड़ल होइ आ सौंसे देह सहसह करैत हो पिलुआ सभ। घृणासँ जी ओकाय लागल।

की कहलें ? बाबू लग किएक नहि गेलहुँ ? कौना जइतहुँ ? की कहितियनि ? कहितियनि जे हमर ससुर……? चुप्पे रहि गेलहुँ। उनटे ससुरे बाज' लगलाह। आब रातिकें तेल लगाब' नहि जाइत छलियनि, तें दिन राति गारि शाप देब' लगलाह। कहियो बेटा घर अबथिन तँ दस हजार शिकायति जे ओ भरि दिन किलोल करैत छथि आ हम रंग रभसमे लागल रहैत छी। तोरा लाज होइत छौक एहन बात सुनिक'। मुदा आइ कह' बैसल छियौक तँ सभ कहबौक। बहुत दिनसँ सभ किछु भीतरमे औना रहल छल। आइ तोरा कहि देबौक, तँ मोन हल्लुक भ' जायत।

हँ, तँ एहिना पाँच बरख बीति गेल। बूढ़ ससुर हमरा गारि-शाप दैत संसार सँ विदा भ' गेलाह। मरितो काल हमरा क्षमा नहि कयलनि। मुदा तों विश्वास कर, हमरा बड़ दुःख भेल हुनक मरबाक। केहनो छलाह, आङनमे पड़ल रहैत छलाह, तँ एकटा विश्वास रहैत छल जे एकसरि नहि छी, एकटा पुरुष आङनमे अछि। हुनकर मृत्युक बाद आङनमे एकसरि रहि गेलहुँ। बीस बरखक विधवा। देयोर परदेसी। मास-दू-मास पर घर आबथि तैयो मोन चौंकल रहय। देयोर छलाह, मुदा वयसमे तँ दू बरख जेठे छलाह। नहि जानि, कखन मोन बदलि जानि।

एकटा रस्ता भेटि गेल। छोट बहिन कमला विवाह जोगरि भ' गेलि छलि। बाबूकें कहुना मनाक' तोहर मास्टर काकाक संग ओकर विवाह करा देलियैक। सोचलहुँ जे दोसर घरक बेटी आओति तँ उपद्रव करति, लांछन लगाओति। कमला छोट बहिनक दुख बूझति।

कमला माय बनलि। पहिने एकटा बेटी, फेर दूटा बेटा, फेर दूटा बेटी आ तखन फेर एकटा बेटा। घर भरि गेल। ओकरे सभक मुँहक देखि हमरो समय कट' लागल।

धोया-पूता सभ पैघ भेलैक तँ घरमे तंगी आर बढ़ि गेलैक। एकटा स्त्रीक पेट सभकें भार लाग' लगलैक। बहिन झगड़ा कर' लागलि आ देयोर लाल-जूतासँ मार' लगलाह। तंग भ' फराक भ' गेलहुँ। भेटल एकटा फूसक खोपड़ी, छोट छीन आङन, आङनमे एकटा लताम आ एकटा शरीफाक गाछ। ने एक्कोटा वर्त्तन, ने एक्को चुटकी अन्न। तों तँ हरदम अही अङनामे देखने छें, तों की जान' गेलें ओ सभ गप्प। आरो बहुत रास गप्प छैक, तोरा सेहो कहाँ बूझल हेतौक ?

नहि बूझल छौक तँ आब बूझि ले। आइ सभ कहबौ। आब सहि नहि होइत अछि। हमर निसाफ कर। बिना एको चुटकी अन्न आ एक्कोटा पाइक एहि आङनमे आयलि रही। तैयो निराश नहि भेलि रही। हाथमे यश छल। दस घर खयनाइ बनौलहुँ। तोरो मुड़न आ उपनयनमे सभटा हमहीं कयने रहियौक। दसटा टाका जमा भेल। चर्खा लेलहुँ आ सूत काट' लगलहुँ। तहियासँ आइ धरि ककरो आगाँ हाथ नहि पसारलहुँ अछि। बेर-कुबेर तोहर मास्टर काकाक मदति सेहो कयलियनि अछि। आखिर हमरे देयोर छथि। हमरे बहीन थिक। ओकर परिवार पैघ छैक, अपने घरक खर्च नहि जुटैत छैक, ओकर कोन दोष ? अभावमे मति भ्रष्ट होइते छैक।

हमर शिकायति ओकरासँ नहि, तोहर बाप-पित्तीसँ अछि। बड़ मालिक कहबैत छथि, हुनका लोकनिकें ई शोभा दैत छनि ?

तों नहि बुझलें ? तँ ले, आब साफ-साफ कहैत छियौक। दस वर्ष चर्खा काटि पाँच सय टाका जमा कयने रही। तोहर मास्टर काका लग नहि रखलहुँ। रखलहुँ भोला बाबू लग जे पढ़ल लिखल प्रतिष्ठित लोक छथि, एकटा विधवाक संग बेइमानी नहि करताह। पछिला साल सभ स्त्रिगण सभ बद्रीनाथ गेल। हमरो बड़ इच्छा रहय। मँङलियनि तँ कह' लगलाह जे खर्चमे पड़ि गेल छी, हाथपर अबिते द' देब। हम हुनकर परिस्थिति बुझलियनि, जिद्द नहि कयलियनि। मुदा आब नीक जकाँ सुझैत नहि आँछ। चर्खासँ पेट नहि चलैत अछि एहि महगीमे। छौ माससँ मङैत-मङैत हारि गेलहुँ, कोनो असरिये नहि होइत छनि। परसू कहलनि "केहन रूपैया ? कथीक रूपैया ?" लोक सभकें जमा कयलहुँ तँ सभक सोझाँमे कथा कह' लगलाह। एहि वयसमे की-की नहि कहलनि, ककरो बकार नहि फुटलैक।

मुदा तों हमर निसाफ कर। हाकिम बनल छैं, तँ पहिल फसला घरमे कर। हमर रूपैया हमरा देया दे। तों चुप किएक छें ? नहि छौक साहस ? तँ सुनि ले, हमरा साहस अछि। हम चुप नहि रहबौक ? एहि वयसमे ओ क' बैसबौक जे आइ धरि नहि कयलियौक। बूढ़ि ब्राह्मणी विधवा भ' क' ककरो, कोनो जातिक घर जा बसबौक। तखन रहतौक तोरा लोकनिक इज्जति।

बाज, हमर निसाफ कर। एना चुपचाप उठिक' पड़ायल कत' जाइत छें ? हम खाली धमकिये नहि दैत छियौक। जे कहलियौक अछि, से क' बैसबौक !

जनवरी १९७०

सत्ते……

दुःख

कार्यालयक डाकक मध्य ओहि लिफाफक टेढ़-मेढ़ परिचित लिपि हम देखि लेने छलियैक मुदा तत्काल ओकरा एकटा 'पेपरवेट' सँ दबा राखि देने छलियैक। कार्यालयक सभटा पत्र पढ़ि, चिन्हित क' ओकरा विभिन्न भागमे वितरणक हेतु आदेश द' जखने 'रेकर्ड क्लर्क' केँ विदा कयलियैक, फेर ओहि लिफाफ पर दृष्टि गेल। मायक पत्र। बड़ बेमनसँ बिना कोनो प्रसन्नताक अनुभव करैत ओहि लिफाफकेँ फाड़ि पत्र पढ़ैत छी। दुइये-चारि पाँती पढ़ि मुँह लटकि जाइत अछि। पत्रकेँ बिनु सम्पूर्ण पढ़ने ओहिना छोड़ि दैत छियैक आ एकटा कागत पर छुट्टीक आवेदन लिखि ओकरा टाइपक हेतु चपरासीक हाथे टाइपिंग सेक्सनमे पठा दैत छियैक। दराजसँ टाइम-टेबुल निकालि सभसँ पहिने भेट' वला गाड़ीक समय देख' लगैत छी।

तखने दरबज्जाक परदा उठा सेक्सन हेड शर्माजी हुलकी दैत छथि—"मे आइकम इन सर।'

—'कम इन प्लीज।'

शर्माजी भीतर आबियो क' ठाढ़े रहैत छथि, बैसैत नहि छथि। —'की बात छैक शर्माजी ? कोनो विशेष काज ?" हम प्रश्न करैत छियनि।

'हँ सर। विशेषे काज बूझू।" शर्माजी ओहिना ठाढ़ रहैत छथि।

—त' कहू ने। तारतम्य मे किएक पड़ल छी ? पहिने बैसू आ तखन कहू जे की बात छैक ?" हम हुनका उत्साहित करैत छियनि।

हमरा अनुकूल देखि शर्माजी बैसि जाइत छथि आ पाकिटसँ एकटा कागज बहार क' हमरा दिस बढ़ा दैत छथि।

—"ई की थिक, छुट्टीक दरखास्त ?" हम प्रश्न करैत छियनि।"

—नहि सर ! छुट्टीक दरखास्त नहि। एक्सटेनशक दरखास्त। एही साल दिसम्बरमे 'रिटायर' भ' रहल छी। छोट-छोट धीया-पुता अछि, एकटा बेटीक विवाह करबाक अछि, कमसँ कम एको सालक एकसटेनसन भेटि जाय तँ……।"

बीचमे बात काटि हम कहैत छियनि—'अहाँ तँ स्वयं जनैत छी शर्माजी जे एहि व्यवस्थामे ककरो एक्सटेनसन नहि भेटैत छैक, एको दिन नहि।'

—"जनैत छी सर। मुदा अपने यदि हेड आफिस स्पेशल केस बूझि रिकोमेण्ड क' दी तँ……।

हम फेर टोकैत छियनि—"हमर रिकोमेण्ड कयलासँ की हैत ? हेड आफिस नहि मानत, अहाँ नीक जकाँ जनैत छी। आ यदि मानि जायत त' की हैत ? एक सालमे धीया-पूता सभ चेतन त' नहि भ' जायत।

—'भ' जायत सर। एक सालमे बहुत किछु भ' जायत। कमसँ-कम कम बेटीक विवाह त' अवस्से भ' जायत।' शर्माजी आशान्वित होइत बजैत छथि।

—'मुदा अहाँक दुनू जेठका बेटा तँ खूब कमाइत छथि, तखन अहाँकेँ चिन्ता कियैक ? ओ लोकनि सम्हारि लेताह सभटा जिम्मेदारी। अहाँ किएक बुढारी मे घाम-पसेना बहाब' चाहैत छी ?'

हमर प्रश्न पर शर्माजी किछु काल मौन रहलाह आ फेर आस्तेमँ बजलाह—'बेटाक निन्दा नहि करैत छी हम मुदा जखन जिम्मेदारी समानान्तर दौड़ैत छैक, बाप-बेटाक सम्बन्ध नहि रहैत छैक। हमरे धिया-पूताक वयसक ओकरो बहुत नेना सभ छैक। अपने जिम्मेदारी सम्हारय मे बेहाल रहैत जाइत अछि।'

हुनकर उत्तर सुनि हम सोचमे पड़ि जाइत छी। हमरा चुप देखि शर्माजी गिड़गिड़ा उठैत छथि—'हम नहि मानब सर। यदि अपने हमर केस रिकोमेण्ड नहि करब, तँ पयर पकड़ि लेब अहाँक हम" शर्माजी सत्ते हमर पयर दिस हाथ बढ़बैत छथि।

—ई की करैत छी शर्माजी। हम अवस्स रिकोमेण्ड क' देब अहाँक केस। मुदा गामसँ घुरला पर। आइये हम छुट्टी पर जा रहल छी, बाबूजी बीमार छथि।'

ताबत टाइपिस्ट हमर आवेदन टाइप क' स्वयं उपस्थित होइत छथि। ओहि पर दस्तखत क' शर्माजीकेँ ओकरा हेड आफिस पठा देबाक आदेशक संग

अन्य आदेश द' हम झटपट आफिससँ विदा होइत छी। काते मे क्वाटर अछि, हम डेग झटकारैत छी।

बाटे मे कपूरसँ भेँट भ' जाइत अछि, संगमे तीनटा अपरिचित युवक। देखिते हनरा दिस लपकैत अछि—"अहीँ दिस जाइत छलहुँ। हिनका लोकनिसँ परिचय करा दी, ई मनोज वर्मा, बंगला फिल्मक सहायक निर्देशक, ई राजहंस, नव पीढ़ीक कवि आ कथाकार, आ ई नीरेन दास, संगीतकार।

हमरा लोकनि परस्पर हाथ जोड़ैत छी। कपूर बजैत अछि—अहींसँ भेँट करय आयल छलाह सभ। बड़ प्रभावित छथि अहाँक लेखनसँ।" अपन प्रशंसा हमरा नीक लगैत अछि। झट आग्रह करैत छियनि—आउ, आउ, डेरे दिस आउ।'

असमयमे डेरा आयल देखि अकचकायल नोकरकेँ पाँच कप काफी आ पान सिकरेटक आदेश द' हम ड्रॉइंग रूममे बैसि जाइत छी। हमरा आयल देखि पिंकी दौड़ैत देह' मे लपटि जाइत अछि। हमर आदेश पर ओ झट अतिथि लोकनिकेँ नमस्ते करैत अछि, बेर-बेर सभकेँ—नमस्ते अंकल···नमस्ते अंकल। हम सगर्व अतिथि लोकनि दिस तकैत छी। मनोज झट हमरा अनुगृहीत करैत बाजि उठैत छथि—बड़ी स्वीट बेबी है, आओ, मेरे पास आओ।

एहि बेर पिंकी नीक जकाँ हमर पयरसँ लपटि जाइत अछि। ठेललो पर मनोज दिस नहि बढ़ैत अछि। हमरा अकारण क्रोध होइत अछि आ खिसिआयल हँसी हँस' लगैत छी।

नोकर एहि अप्रिय स्थितिसँ हमरा उबारैत अछि। एकटा ट्रे मे पाँच कप कॉफी आ प्लेटमे पान सिकरेट राखि जाइत छथि। अतिथि लोकनि काफीक चुस्कीक संग सिकरेटक धुआँ छोड़' लगैत छथि। पिंकी अवसर पाबि भीतर पड़ा जाइत अछि।

सिकरेटक एकटा लम्बा कश लैत आ नाक मुँहसँ धुआँ छोड़लाक बाद कपूर बजैत अछि—'असल बात कहबे बिसरि गेलहुँ। आइ साँझ एकटा गोष्ठीक आयोजन कयलहुँ अछि अहींक डेरा पर। किछु आर मित्र लोकनि आयल छथि, सभक आग्रह छलनि अहाँसँ भेँट करबाक। बिन पुछने सभटा तय क' लेलहुँ, माइण्ड नहि करब।"

"एहिमे माइण्ड करबाक कोन बात छैक। ई तँ खुशीक बात थिक। अवस्से करू गोष्ठी।" हम उत्साह पूर्वक बजलहुँ, मुदा तखने पाकिट मे राखल मायक चिट्ठी मोन पड़ल आ सभटा उत्साह बिला गेल। कपूर एकाएक हमरा चुप होइत देखि प्रश्न कयलक—"की बात छैक? कोनो असुविधा?"

"नहि, असुविधा कथीक। गोष्ठी अहाँ लोकनि अवस्स करू, मुदा हम नहि रहि सकब। आइये गामसँ मायक पत्र आयल अछि। बाबू बड़ दुखित छथि। हम गाम जा रहल छी।

अतिथि लोकनि समवेत स्वरे सहानुभूति प्रकट करैत छथि आ काँफीक अन्तिम घोँट पीबि, सिकरेटक आखिरी कस ल' पान मुँहमे दबा विदा भ' जाइत छथि। काल सभ जाइत एकेटा आग्रह—'एकटा पत्र अवश्य लिखि देब बाबूजी बीमारीक सम्बन्ध मे। हमरा लोकनिक मोन लागल रहत।

अतिथि सभकेँ बाहर धरि अरियाति जहिना कोठली मे पयर दैत छी, श्रीमती बाट छेकि ठाढ़ भ' जाइत छथि—'ई गाम जयबाक गप्प की कहलियैक?" कोनो उत्तर नहि द' हम पाकिटसँ मायक पत्र बहार क' हाथमे द' दैत छियनि। पत्र पढ़ि ओहो उदास भ' जाइत छथि—'कहिया जायब?

—आइये, एखने।

—हमहूँ चलब?

—जयबाक त' चाही!" हम औचित्य पर जोर दैत बजैत छी!

आध घण्टाक भीतरे मीरा तैयार भ' गेलीह। पिंकी आ गुड्डूकेँ सेहो तैयार क' लेलनि! नोकर टैक्सी ल' आयल आ ओकरा डेराक सुरक्षाक आवश्यक निर्देश द' हमरा लोकनि विदा भ' गेलहुँ! भरि बाट पिंकी आ गुड्डू खुशीसँ चहकैत रहल। मीरा सेहो प्रसन्न छलीह! मुदा टैक्सी जखन सिनेमा हौल लगसँ आगू बढ़ल, मीरा उदास होइत बजलीह—"कतेक मोन छल ई सिनेमा देखबाक! आइये ई सिनेमा आयल आ आइये हमरालोकनि जा रहल छी! जा घरि घूरब, ई चलिये जायत! अइ जरलाहा शहरमे कोनो सिनेमा एक सप्ताहसँ फाजिल चलबे नहि करैत छैक! हमरो हुनकर दुखमे सम्मिलित भ' उदास होब' पड़ल!

स्टेशन पर मीरा पुनः प्रसन्न भ' गेलीह! फस्ट क्लासक डिब्बामे खाली हमरे लोकनि रही! मीरा प्लेटफार्म पर ठाढ़ अन्य यात्रीकेँ हेय दृष्टिसँ तकैत

रहलीह ! रातिक' सभके तेना नीन्न भेल जेना गाड़ीक डिब्बामे नहि, अपन घरेमे सूतल होइ !

भोरे गामक स्टेशन पर उतरैत मोन पड़ल जे बाबूजी दुखित छथि आ मोन उदास भ' गेल ! मीराकें वेटिंगरूममे जा क' अंग्रेजी आंचरकें हिन्दी माने उल्टा आंचरकें सोझा कर' पड़लनि आ ओहो असन्तुष्ट सन बूझि पड़लीह ! पिंकी गुड्डू खुशी-खुशी नव-नव सीनकें देखैत रहल !

बाबूजी अपन कोठलीमे बिछौन पर आँखि मूनने पड़ल छलाह ! ततेक दुब्बर भ' गेल छलाह जे चीन्हब मस्किल छल ! पयर छुलियनि त' आँखि खोलि देलनि ! एक क्षण देखैत रहलाह आ फेर आँखि बन्न भ' गेलनि ! ठोर पटपटयलनि मुदा शब्द नहि बहरयलनि ! बन्न आँखि सँ एकटा पैघ बुंद टघरि गेलनि । भीजल मोन लेने हमहुँ लगमे बैसल रहलहुँ । एकटा टेबुल पर दवाइक बहुत रास शीशी सभ राखल छलैक आ दोसर टेबुल पर पेशाव जंचवाक हेतु टेस्ट ट्यूब, बेन्डिक्ट सोलुशन, आ स्प्रीट लैम्प । हम बैसल बैसल खाली ओकरे निहारैत रहलहुँ आ भीजल रोगिआह चुप्पी कोठलीमे पसरल रहल ।

छोट भाइ रमेश बहुत रास प्रेसक्रिप्शन आ रिपोर्ट हाथमे द' देलक । भारी मोनसँ सभटा प्रेसक्रिप्शन आ रिपोर्ट देखैत रहलहुँ । फेर सभटा मोड़ि-माड़ि पाकिटमे राखि कोठली सँ बाहर आबि गेलहुँ ।

बाहर ओसारा पर मीराक संग माय आ हमर भाइ-बहिन सभ ठाढ़ छल । सभ हमर पयर छुलक मुदा हम जहिना मायक पयर छूबा लेल झुकलहुँ ओ हाथ पकड़ि भगवती घर ल' अनलक । भगवतीकें प्रणाम क' जहिना मायक पयर छुलियैक, ओ कनैत ओहीठाम माटि पर ओंघरा गेल । ओकरा चुप्प करबाक चेष्टामे अपनो कनैत कहलियैक—चुप्प भ' जो, कनैत किएक छें ! सभ ठीक भ' जयतैक । आब हम आबि गेल छियौक, सभ ठीक भ' जयतौक……

बाबूजीकें दरभंगाक बड़का डाक्टर सँ देखा अनलियनि ! सभटा दवाइ शुरू भ' गेलनि ! बाबूजीक हताश आकृति पर आशाक चेन्ह उग' लगलनि आ माय आश्वस्त लाग' लागलि ।

गामवला सभकें मुदा डाक्टरक आश्वासन पर विश्वास नहि भेलैक । भोर

सँ सांझ धरि स्त्री-पुरुषक गोल बना बना क' हमरालोकनिके शान्त्वना देब' अबैत रहल ! एहन मौका पर अपन सामाजिक दायित्वसं पिछड़ि जयबा लेल क्यो तैयार नहि छल । भोरे फूलकाकी टोलक चारिटा स्त्रीगणक संग अयलीह ! हमरा आंगनमे देखि सकपका गेलीह ! उठिक' पयर छुलियनि त' आँखिमे नोर आनि बजलीह—तोहूँ आबि गेलह ! की करबह ! भगवान दुखे तेहन देलथुन अछि ।

—तेहन कोनो बात नहि छैक काकी ! डाक्टर कहलक अछि, सभ ठीक भ' जयतनि !

फूलकाकीकें हमर बात पर विश्वासे नहि भेलनि ! शान्त्वना देबाक उत्साह अपेक्षित उत्तर नहि पाबि ठण्डा पड़' लगलनि ! हमरा बुझबैत बजलीह—तों पैघ छ', साहस करहेक चाहियह ! तों घबड़ा जयबह, त' सभ घबड़ा जयतह ! एहन असाध्य रोग……

फूलकाकी नहि जानि की की कह' जा रहल छलीह कि हम बीचेमे टोकि देलियनि—रोग पैध छैक त' डाक्टरो पैघ छैक । घबड़यबाक कोनो गप्प नहि छैक ।

फूलकाकी एकदम हतोत्साह भ' गेलीह ! हमरा अनुपयुक्त पात्र मानि अपन टोलक संग भनसा घर दिस बढ़ि गेलीह । माय भनसे घरक ओसारा पर एकटा पटिया बिछा देलकनि आ पटिया पर बैसितहि जहिना माय अपन जेटकी देयादनीक पयर छूब' लागल, फूलकाकी ओकर कान्ह पर माथ राखि हिचुकि हिचुकिक' कान' लगलीह—भगवान बड़ पैघ दुख देलनि कनियां ! साहस करू !

माय भरिसक शानवनाक एहि पद्धतिक अभ्यस्त भ' गेल छलि । ओ कोनो विरोध नहि कयलकनि । फूल काकी अपने चुप्प भ' गेलीह आ आँचरसं अपन नोर पोछैत बजलीह—अरूण आयल अछि, आब तँ चिन्ताक कोनो गप्प नहि । रुपया-पैसा त' खूब अनने हैत ।

माय एहू प्रश्न पर चुप रहलि । फूलकाकी खोध' लगलथिन—ओहुना त' सय दू सय मास अवस्से पठबैत हैत ।

माय गप्प टारैत कहलकनि—"अवस्से पठाओत" अखन अपने नहि बंचैत छैक । ओकर अपने खर्च पैघ छैक :

एहि बेर फूलकाकीक आँखि आश्चर्यसँ पसरि गेलनि— केहन बाहरि छी अहूँ कनियाँ। ओकरा खर्चे की छैक ? सुनैत छी, अफसर अछि, हजार रुपया दरमाह छैक। ऊपरी आमदनी सेहो हेबे करतैक।

माय चुप रहलि। प्रायः ई चुप्पी सहमतिक छलैक। प्रसंग टारैत बाजलि— हुनका नहि देखलथिन बहिन ?

फूलकाकी झट उठैत बजलीह —नै कनियाँ। हमर कलेजा बड़ कमजोर अछि। कोनो दुखिताह केँ देखले ने जाइत अछि। आब जाय दिय' हमरा...।"

फूलकाकी उठि क' ठाढ़ भ' गेलीह। माय दौड़िक' सुपारी अनलक आ सभक हाथमे चारि-चारि खण्ड द' देलकनि। सुपारीक टुक मुँहमे दैत फूलकाकी बजलीह—आइ एकर कोन काज ?

आँङनसँ बहराइत काल फूलकाकी आ हुनकर टोलक मौगी सभ हमरा विचित्र दृष्टिये देखलक। माय फेर भनसा घरमे पहुँचि पथ्य, भानस-भातक व्यवस्थामे व्यस्त भ' गेलि। हम आङन सँ उठिक' दरबज्जा पर आबि गेलहुँ। सामने पोखरिक भीड़पर किछु गोटेक संग मास्टर काका गप्प क' रहल छलाह। हमहूँ ओम्हरे बढ़ि गेलहुँ। सभ वयस आ सम्बन्धमे पैघ छलाह। पयर छूबि प्रणाम कयलियनि। प्रश्नक ढ़ेरी लागि गेल—

—कखन अयलहँ ?

—काल्हिये अयलहुँ काका।

—एखन रहबह, छुट्टी छह ?

—छुट्टी कहाँ, छुट्टी ल' क' आयल छी। बाबूजी दुखित छथि।'

— हँ, हँ से त' बिसरिये गेल। कोना छथुन आब ?

—पहिने सँ नीक छथि, दबाइ भ' रहल छनि।

—नोकरी केहन चलैत छह ? मोन लगैत छह ?

—मोन त' लगाब' पड़ैत छैक भाइ।

"किएक ने लगैबह ? सुनैत छी, हजार रुपया दरमाहा दैत छह, ऊपरी आमदनी सेहो होयबे करतह।

—नहि भाइ। ऊपरी आमदनीक ने समावेश छैक, ने इच्छा।

—किएक झूठ बजैत छह। कमाइत छह, अपने माय-बापके दैबह। हमरालोकनि त' हिस्सा नहिये मँगबह। झूठ किएक बजैत छह ? बिना ऊपरी आमदनीक अफसरी केहन ?

विरोध करब बेकार बूझि हम चुप भ' गेलहुँ। किछु एम्हर-ओम्हरक' गप्प क' फेर अपने दरबज्जा दिस बढ़लहुँ। मास्टर काका हमरे संग अयलाह। दरबज्जा लग आबि आस्ते सँ बजलाह—तोरा सँ एकटा बात कहबाक अछि अरुण ! अधलाह नहि मानिह'। तोहर बाप बड़ दिक्कतिमे छथुन। बीमारी आ एतेक टा परिवार। बड़का बेटा धरनि होइत छैक। घर भरिक बोझ सहैत छैक। फेर तोहर सन बेटा। ओकरा मेँ तँ आरो आशा रहैत छैक। हम पढ़ौने छिअह तोरा, तँ कहैत छिअह, अधलाह नहि मानिह'।"

मास्टर कका अपन घर दिस चल गेलाह, हम ओतहि ठाढ़ रहलहुँ। घर दिस ध्यान गेल। सत्ते बाबूजी कोना चला रहल छथि सभटा। दू माससँ बिछौन धयने छथि। दरमहो नहि भेटैत छनि। अपन इलाज, सभक पढ़ाई-लिखाई, दस प्राणीक खोराक ? कोना चलि रहल छनि ई सभ ? हमरा घर दिस देखबाक चाही— मास्टर कका ठीके कहैत छलाह।

दस दिन बितैत-बितैत लागल जेना अनेरो गाममे बैसल छी। मोरा उदास रह' लगलीह। बेर-बेर टोक' लगलीह— पिंकीक पढ़ाइ बरबाद भ' रहल छैक—मास्टर रोज घुरि जाइत हेतैक। अपनो लागल जेना छुट्टी अनेरो बरबाद भ' रहल अछि। आब तँ मोनो पहिने सँ नीक छनि।

बाबूजी सुनि क' बजलाह—जयबह, बेश जाह।" फेर आँखि बन्द क' लेलनि। हमहूँ चुप्प बैसल रहलहुँ, आगाँ किछु बजबा लेल फुरबे नहि कयल।

कनेक कालक बाद फेर कहलियनि दबाइ सभ खाइत रहब, 'फल सेहो खाइत रहब। एखन कमजोरी बेसी अछि। दबाइ आ पथ्य परहेज बड़ जरूरी अछि।

हमर बातपर बाबूजी फेर आँखि खोलि देलनि। किछु क्षण हमर मुँह देखैत रहलाह आ फेर बजलाह—जरूरी अछि से तँ हमहूँ बुझैत छियैक। मुदा आरो बहुत रास चीज जरूरी अछि। खाली जरूरी रहले सँ की हैत ? तोँ अपने सँ मिला क' देखि लैह। तोरा एक हजारमे दू गोटेमे सिकस्ती भ' जाइत छह आ एत' पाँच सयमे दस गोटे छी। तीन माससँ ओहो पाँच सय बन्द अछि। तखन की जरूरी वा नहि जरूरी, से सोचिये क' की हैत ?

एक सांसमे एतेक बाजि क' प्राय: बाबूजी थाकि गेलाह। निश्चेष्ट बिछौन पर पड़ि रहलाह आ आँखि बन्द क' लेलनि। हमरा किछुओ नहि फुरल। चुपचाप उठिकेँ चल अयलहुँ।

माय सुनिक' बाजल—जयबह, बेश जाह। मुदा आब नहि पठेबह मासे-मासे किछुओ तँ बाप नहि बचथुन।

हम ओकरा बुझोलियैक जे पठेबासँ कहाँ आपत्ति अछि हमरा। मुदा एखन बहुत रास सामान सभ किश्त पर लेने छियैक। सभक किश्त कटैत अछि। सात-आठ मासमे सभक सधि जयतैक तँ निश्चय पठयबौक।

"बेस सात-आठ मास बादे सही। सात-आठ मास हमरा लोकनिक पेट तँ भरिसक मानि जायत मुदा बीमारी भरिसक्के मानतह।" माय कनैत दोसर दिस चल गेल। हम कोनो आश्वासन नहि द' सकलियैक।

ठसम-ठस्स भीड़मे हमर छोट भाय सभ ठेलि ठालिक' कहुना हमरा लोकनि केँ गाड़ीमे चढ़ा देलक। बांचल-खुचल पाइ सँ कहुना थर्ड क्लासक टिकटक इन्तजाम भ' सकल छल। गाड़ी जखन खुजल मीराक आकृतिपर आब' काल बला गरिमामय मुद्रा नहि छलनि। कोनो हीन भावसँ ग्रस्त लागि रहल छलीह। बक्सा आ बेडिंगक ऊपर दुनू हाथसँ पिंकी आ गुड्डू केँ सम्हारने अपस्याँत बैसलि छलीह। हमहुँ कहुना एक टाङ पर ठाढ़ छलहुँ। हमरा लागल एखन जेना दुनू गोटे एक्के बात सोचि रहल छी—निरर्थक एतेक टाका अयबा-जयबामे खर्च भेल। घुट्टी बरबाद भेल से फराके। एहिसँ तँ एतेक टाका मनिआर्डर क' दितियनि। कोनो तेहन दुखिताह तँ नहि छलाह......। ●

अप्रैल १९७०

आठम दशकक कथा : प्रभासक

- ☐ युद्ध-विराम
- ☒ पिता
- ☒ उत्तरकाण्ड
- ☒ ढेप
- ☐ मलाहक टोल
- ☒ पुरान चरित्रक नव कथा
- ☐ भयाक्रान्त

युद्ध-विराम

एना त' कहियो ने भेल छलैक। ओसारा पर बड़की बैसलि छलि—उदास. एकसरि। अन्हार ससरल जा रहल छैक। आन दिन भोरे अन्हरोखे फूले तोड़ैत काल सँ शुरू भ' जाइत छलैक।

—"हमर गेनाक एहू बेर एहन-एहन थोका जेना पीयर गुलाब हो।" बड़की बजैत छले।

—"हमर तीरासँ भरि गाम पूजा होइत छैक, दू-चारि थोका गेनाकेँ के पूछय !" अपन बाड़ीसँ छोटकी बजैत छलि।

बड़की फूल तोड़ि आङन मे अबैत छलि। नूआ ल' स्नान करबा लेल विदा होइत छलि। पाछाँ-पाछाँ छोटकी। धारक कातमे, जल लग दुनू पाँच हाथ दूरे दूर बैसैत छलि। बालुसँ दाँत मँजैत बड़की कहैत छलैक, बिना ककरो सम्बोधित कयने—'कमला माइ तँ प्रात होइते देरी हमरे बाट तकैत रहैत छथि, जा धरि हम नहि आबी, अनका अपन जल मे पयरो ने राख' दैत छथिन।"

पानिमे डूब द', नूआ बदलि, हाथमे एक लोटा जल ल', ऊपर महादेव मन्दिर दिस जाइत छोटकी बजैत छलि—'भोला बाबाकेँ तँ बिनु हमर लोटाक जल पीने कण्ठे सुखायल रहि जाइत छनि, भोरेसँ बाट तकैत रहैत छथि।'

बड़की पाछुए लागलि अबैत छलैक। दुनू बेरावेरी भोला केँ जल ढ़ारि आङन दिस विदा होइत छलि। बाटमे बड़की बजैत छलि—लोको सभ केहेन-केहेन पाखण्डी होइत अछि, मुँह मे भोला-भोला आ मोन मे पाप..........."

चारिये डेग पाछूसँ छोटकी बजैत छलि—"सैह, कोना पार लगैत छैक ककरो ? भगवानो लग प्रपंच !"

दुनू आङन आबि अपन-अपन ओसारा पर बैसि जाइत छलि। भानस-भातक कोनो जल्दी नहिये रहैत छलैक। एकसर प्राणी। कथीक हड़बड़ी ?

निश्चिन्त बैसलि बिअनि होंकैत बड़की बजैत छलि— "हमर नूनू। एवको दिन किनु चिट्ठी लिखने नहि रहैत छथि, चलि आ,…… एकसरि गाम मे की करैत छे', कोना मोन लगैत छौक? कोना लिखियौन जे ऐ ठाम इइनियाँ सभके आँखि अ'टकल रहैत छैक। चारि दिन घर छोड़ि दिय' त' सभटा नोचि-खसोटि क' खा जायत।"

अपन ओसारा पर पाया सँ ओंठगलि छोटकी बजैत छलि— 'हमर मुन्नू त' तार पर तार दैत रहैत छथि— चलि आ, चलि आ। छोड़ गामक मोह। मुदा कोना छोड़ि दिय' ई राजपाट। हड़ाशंखिनी सभ चारिये दिन मे उजाड़ि-पजाड़ि क' सभ टा चौपट क' देत।"

बड़की आङन मे बैसलि-बैसलि अगुता जाइत छलि। उठि क' बाहर दलान दिस अबैत छलि—"एहन-एहन सजमनि क्यो देखने हैत? परुकाँ एक बोरा नूनूके पठा देने रहियनि त' भरि टोलक लोक अकच्छ क' देने रहनि— आर मङाउ, एहन स्वादिष्ट सजमनि बजारमे कत'भेटत?'

छोटकी पाछाँ-पाछाँ अपन हिस्साक मचान दिस चल अबैत छलि। कनेक जोरसँ सुनबैत बजैत छलि—अनेरुआ सजमनिके के पूछय? हमर मुन्नू जे अपन कुम्हरक मोरब्बा शहर मे अपन संगी-सभके देलथिन से आइ धरि सभ हाथ चटैत अछि। कनियाँके बनयबाक लूरियो तेहने छनि। सभक हाथ मे थोड़े ओ गुण रहैत छैक।

बड़की सहटि क' लग आबि आरो बेसी जोरसँ कहैत छलैक—लूरि त' क्यो इमर बड़की कनियाँ सँ सीखय? जेहने आमिल बनबैत छथि, तेहने अदौड़ी। शहर जा क' तँ आरो किदन-किदन बनायब सीखि लेने छथि! धुर जो, हमरा की नामो मोन रहैत अछि।

छोटकी मुँह बिचकबैत फेर आङन दिस जाइत बजैत छलि—'छोटकी कनियाँ त' हीरा छथि। जेहने भानस-भात, तेहन सियाइ-कढ़ाइ। ऊपरसँ पढ़लि-लिखलि, अपर पास।

आङन आबि दुनू भनसा मे लागि जाइत छलि। कनेक काल लेल आङन मे मौन पसरि जाइत छलैक। ओना चूल्हियो लग दुनू किछुने किछु

बजैत रहैत छलि, मुदा भनसा घर दू छोर पर रहलाक कारणे एक दोसरक गप्प सुनि नहि पबैत छलि। एके गोटेक भानस। समये कतेक लगैत छलैक? फेर वैह क्रम।

मुदा एना त' कहिओ ने होइत छलैक? आङन मे अपन ओसारा पर बड़की एकसरि बैसलि छलि। चारूकात अन्हार पसरि गेल छलैक। आङन सुन्न आ भयावह लागि रहल छलैक। पैघ सन आङन, चारूकात चारिटा घर, बीच मे मड़बा बाड़ी। मे ठाढ़ पैघ-पैघ आमक गाछ आ ओसारा पर एकसरि बैसलि बड़की। अनेरो बिसरलाहा कतेक बात मोन पड़लैक, नहि जानि, कतेक दिन पर। एना त' कहियो ने मोन पड़ल छलैक।

पहिने बड़की आयलि छलि एहि आँगन मे। आँगन-घर पसिन्न पड़ल छलैक। पैघ आँगन पैघ-पैघ घर, कोनो वस्तुक कमी नहि। जखन जे चाहय, भेटि जाइक। खाली एकसरुआ हैब कखनो-कखनो अखरि जाइ। ने सासु-ससुर ने ननदि। खाली एकटा देयर, सेहो चेतन, विवाहक योग्य। बड़की के एकटा बाट सूझि गेलैक। छोटकी दस वर्षक भ' गेलि रहैक, बाबूसँ गप्प कयलक। बाबू एके घर मे दुनू बेटी देबा लेल तैयारे ने होइत छलथिन। बड़की जिद्द पकड़ि लेलक। छोटकीके ल' अनलक एही आँगन मे।

दस बरखक छोटकी। सदिखन जेठकी बहिनक पाछाँ लागलि रहय—भोरसँ राति धरि। राति के बड़ मस्किल भ' जाइ बड़कीके। छोटकी अपन कोठली जयबे ने करैक, बहिने लग सूति रहैक। तखन कोनहुना उठा-पुठा ओकरा अपन कोठली मे द' अबैक बड़की।

सन्तान पहिने छोटकीये के भेलैक—बेटा। बड़की भरि आँगन नचैत-फिरलि। छठिहार मे भरि गामक मौगीकें खुऔलक। फेर अपनो बेर अयलैक—पहिल बेटे भेलैक, फेर दूटा बेटी आ तखन फेर एक टा बेटा। छोटकीयो के चारिये टा भेलैक—दू बेटा, दू बेटी। एकदम हिसाब बराबरि।

मुदा भगवानक एहि बराबरि हिसाब जकाँ घर-द्वारक हिसाब संभव नहि भेलैक। नहि जानि कहिया, दू बहिनक स्थान पर दूटा पट्टीदार ठाढ़ भ' गेलैक आ बात-बात पर कलह शुरू भ' गेलैक जकर अन्त आङनक बटबारासँ भेलैक।

पुबरिया आ दछिनबरिया घर बड़कीकेँ तथा पछबरिया आ उत्तरबरिया घर छोटकीकेँ। आंगन आ मड़बा साझी। बाड़ी-घरक पाछांवला, घरक पट्टीक संग।

मुदा झगड़ाक अन्त कहाँ भेलैक? दुनूक मुँहाबज्जी त' फराक हैबाक पहिनेसँ बन्दे छलैक, मुदा अप्रत्यक्ष सम्बोधनक संग आक्रमण-प्रत्याक्रमण भोरेसँ आरम्भ भ' जाइत छलैक। दुनू अपन-अपन ओसारा पर बैसि जाइत छलि आ बाज' लगैत छलि जेना अपनेसँ गप्प क' रहलि होअय।

—"लोको केहन-केहन बैमान होइत अछि। एकटा फुलही लोटा आ थारी नुका लेलक बाँट बखराक बेरमे। एहिसँ वरू माङि लैत। एकटा फुलही लोटाकेँ के कहय, सभटा बर्त्तन ओहिना छोड़ि दितियैक" बड़की बजैत छलि।

छोटकीयो कनेक कण्ठस्बर केँ ऊँच करैत बजैत छलि की—"बैमान के भरि दुनियाँ बैमाने बुझाइत छैक। दू भरिक बाजूबन्द छल, से तँ नहि जानि कत' निपता क' देलक, ओकरे तोड़ाक' गहना गढ़ौलक। लोक नहि बुझैत छैक?

एहि प्रकारेँ भोरसँ साँझ धरि दुनूक स्वागत भाषण चलैत छलैक। प्रत्यक्ष युद्ध कहिओ नहि होइत छलैक। भोरसँ साँझ धरि दुनू बजैत रहैत छलि, अपन दिनचर्या सेहो करैत रहैत छलि।

समय बितलैक। धीया-पुता सभ पैघ भेलैक। बेटा पढ़'-लिख' लगलैक। बेटी विवाहक योग्य भेलैक। पहिने छोटकीक जमाय अयलैक। बड़की सुस्त जकाँ सभटा देखैत रहलि। सभटा काज तिहारक बाद, जमायकेँ विदा क' छोटकी एक दिन अपन ओसारा पर बैसलि बजलि—"हमरा सभकेँ तँ नहि पार लागत जे लोढ़ी सन सन छाती लेने कुमारि बेटी गाममे बौआयल फिरत आ हम निश्चिन्त बैसल रही। नहि जानि लोक सभकेँ कोना रहि होइत छैक निश्चिन्त?"

बड़की अपन ओसारा सँ कनेक जोर सँ बाजलि—"लोढ़ी सन छातीवाली लेल अनलक अछि बिनु दाँतवला वर आ गुमान ने देखू लोकक? एना तँ क्यो दुश्मनोक गरदनि नहि कटैत अछि।"

छोटकी कनेक आरो जोर सँ बाजलि—"महादेव झा पाँजि छैक आ घरमे सोना चानीक पथार। लोकक छातीपर त' साँप लोटयबे करतैक।

बड़की चैनसँ नहि बैसलि। दोसरे शुद्धमे अपन बेटी वियाहलक। छोटकी सुस्त भेलि सभटा देखैत रहलि। जमायकेँ विदा क' एक दिन अपन ओसारापर बैसलि बड़की बाजलि—"एकरा कहैत छैक राधा-कृष्णक जोड़ी। जेहने वर तेहने कनियाँ। एहनो कोन वियाह जे बाप-बेटी लागय। लोको सभ केहन आन्हर होइत अछि।"

छोटकी आँगनमे पटिया पर चाउर पसारैत बाजलि—"छोटहापर एहन गुमान। जकर पानि ल' क' लोक लग्धी नहि करैत छल, तकरा भार साँठि रहल अछि लोक।"

समय आरो बितलैक। छोटकी पहिने विधवा भेलि। श्राद्धकर्म भ' गेलापर एक दिन दुनू बहीन आन अपन ओसारापर बैसलि छलि। बड़की बाजलि—बेचारा लाज लेहाजवला छल। एहन एहन कुकर्मी सभक फेरामे पड़ल जे आँखिये मूनि लेब उचित बुझयलैक। आब तँ ओहो रोक टोक नहि रहलैक, उमकल फिरो जत'-जत'।

छोटकीक कण्ठ किछु वेसी तीव्र भेलैक—"अमृत पीबि क' के अयलैक अछि से देखबैक। ओना तँ बेचारा जिनगियेमे काठ भ' गेल अछि।"

भगवान फेर जल्दीये हिसाब बराबरि क' देलथिन। बड़काकेँ सेहो भाइ लग बजा लेलथिन। छोटकी गुम-सुम बैसलि छलि काज-तिहारक बाद। बड़की अपन ओसारासँ बाजलि—"लोकक करेज ठंढा भेलैक, कबुला-पाती कयने छलि।"

छोटकी किछु कहितैक मुदा बेटा सामने आबि गेलैक। जवान भ' गेल छैक। पुतोहु घरमे आब'क चाही—छोटकी विचारलक। अगिले साल पुतोहु आबि गेलैक—सुन्नरि आ काजुल। छोटकी अपन ओसारासँ बाजलि—"एहन पुतोहु लोक के भागसँ भेटैत छैक। जेहने सुन्नरि तेहने काजुलि। एकटा काठी ने उठब' दैत अछि। रानी जकाँ बैसलि रहैत छी।

बड़की के बात अखरलैक। सभ मे पछुआ गेल छलि ओ। वियाहि क' पहिने ओ आयलि, मुदा पहिने माय बनलैक छोटकी, जमायो ओकरे पहिने अयलैक आ पुतोहुओ। बड़की के हड़बड़ी लागि गेलैक। एकके शुद्धमे दुनू बेटाक वियाह-

द्वि रागमन करा छोटकीसँ अगुआ गेलि। फेर अपन ओसारा पर बैसि निश्चिन्त भ' बाजलि—"बैसलि-बैसलि लोथ भेल जाइत छी हम। ने कोनो काज, ने झंझट। खढ़ो उसकयबाक काज नहि। एक टाङ छोटकी कनियाँ दबैत छथि तँ दोसर बड़की कनियाँ। भागसँ भेटैत छैक एहन पुतोहु आइ-काल्हि।"

छोटकीयो बेसी पछुआयलि नहि रहलि। दोसरो पुतहु ल' अनलक। बेटी एके रहि गेल छलैक, ओकरो सासुर विदा कयलक। बड़कीयोक दोसर बेटी सासुर गेलैक। पोता-पोती दुनूक आंगनमे खेलाय लगलैक। बेटा सभ कमाय शहर चल गेलैक। मुदा दुनू बहीनक दिनचर्यामे अन्तर नहि अयलैक। बड़की अपन ओसारा पर बैसलि बजैक—"हमर नूनू, बड़का हाकिम, चपरासी, नोकर, बंगला कथूक कमी नहि, लोक देखतैक त' छाती फटतैक।"

छोटकी अपन ओसारासँ बजैक—"छाती फटतैक ओकर जे कहियो अपने देखनहि ने होअय। हमर मुन्नू तँ अपने हेड। बाकी सभ मातहत। कथूक कमी नहि छनि, देखनिहारक छाती फाटि जयतैक।

बड़की तेना बाजय जेना सुनने नहि होअय किछु—"हमर बच्चा। कहबा लेल किरानी, मुदा बाड़ली आदमी ततेक जे हाकिमो खुशामदो करैत छनि, तर-तरकारी लेल।"

छोटकीयो तेना बाजय जेना किछु ने सुनने होअय--"हमर बल्लम त' पेशकार! सभ किछु काटियो-छाँटि क' डेढ़-दू सय रोज! बड़का बड़का हाकिम की परतर करतनि?"

आरो समय ससरि गेलैक। चारू पुतोहु-धीयापुता संग अपन अपन वर लग चलि गेलनि। पावनि-तिहारमे दू-चारि दिन अबैत छनि-वर्ष दू पर। कखनो सेहो नहि। मुदा दुनूकेँ कोनो अभाव नहि छलैक। खयबा-पीबा जोग नीक उपजा भ' जाइत छलैक।

"हमर बाड़ीक झिमनीसँ तँ ऐ बेर गाम अघा गेल। ककरा ने पसेरी दू पसेरी देलियैक।" बड़की कहैत छलि।

"हमर बाड़ीक ओल त' ऐ बेर मालो-जालो ने पुछलक। ढाकीक ढाकी डबरामे फेकबा देलियैक। भरि गाम अछिन्नरो खयलक, से फराक।" छोटकी अपन ओसारासँ बियनि होंकैत बजैत छलि।

बड़की करोट फेरि एक बेर आंगन दिस देखि फेर बियनि होंकैत बजैक छलि—लोककेँ झूठ बजैत लाजो नहि होइत छैक। एकटा सड़ल आँठी तँ ककरो देबाक हियाब छैके ने आ भरि गाम खुअयबाक गप्प करैत अछि।"

छोटकी उठि क' बैसि जाइत छलि—"सूप सन छातीवाली केँ की लोक चिन्हैत छैक? गूहों परसँ पाइ उठाब' वाली भरि गाम दानक गप्प करैत अछि।"

मुदा आइ बड़की ककरासँ गप्प करओ? एना तँ कहियो नहि भेल छलैक। अपन ओसारापर बड़की एकसरि बैसलि छलि—उदास। आङनमे अन्हार पसरल छलैक। बाकी कतहु किछु नहि। छोटकीक घरक दरबज्जा खूजल छलैक, मुदा कतहु कोनो आबाज नहि।

बड़की एकसरि उदास स्तब्ध बैसलि छलि, भोरेसँ। भोरे शहरसं पंचूबाबूक बेटा आयल छलैक समाद ल' क'। छोटकीक पोताक मूड़न बैद्यनाथ धाममे भेल छलैक, तकरे खबरि देब' आयल छलैक। किछु पेड़ा आ अड़ाँचीदाना सेहो द' गेल छलैक। छोटकी सुन्न भेल बैसलि रहि गेल छलि। बड़की बाजलि छलैक—"हमर नूनू एना करतथि तँ जिनगी भरि मुँह ने देखितियनि। मूढ़न करा क' समाद?" छोटकी जेना नीन्न सँ जागलि छलि। हाथक पेड़ा आ अड़ाँची दाना फेंकि उठि क' कोठलीमे चलि गेल छलि। बड़की एकसरि बैसलि रहि गेलि। बारह बाजि गेलैक, चूल्हियो ने पजारलक। कोनादन लागि रहल छलैक। छोटकीक कोठलीक दरबज्जा खुजल छलैक मुदा भीतर कोनो सुगबुगी नहि जेना घर एकदम खाली होइक। आइ पहिल बेर बड़की केँ आङन एतेक सुन्न लगलैक। दू वर्षसँ आङन मे क्यो नहि रहैत छलैक मुदा कहिओ ध्याने नहि गेल छलैक जे एतेक टा आङन एतेक खाली छैक। छोटकीक संग अप्रत्यक्ष सम्भाषणमे दिनराति कटि जाइत छलैक। आइ छोटकी नहि छलैक, त' सभ किछु बेसी सुन्न आ उदास लागि रहल छलैक।

बेर बितला पर बड़की चूल्हि पजारलक। भानस कयलक मुदा खायल नहि गेलैक। कयल भानस झाँपिक राखि देलक। भूख लागल छलैक, मुदा छोटकीक खूजल कोठलीक निस्तब्धता बेर-बेर निहारि बड़की भूख-पियास बिसरल जा रहल छलि। भनसाघरसँ उठि क' फेर सूत'वला घरक ओसारा पर आयलि आ पटिया

बिछा पड़ि रहलि । मुदा आँखि बेर-बेर छोटकीक कोठली दिस जाइत रहलैक ! ओहने निस्तब्धता ।

साँझ भ' गेलैक । अन्हार जमकले गेलैक । बड़की उठिक' बैसि रहलि । मोन कोनादन क' रहल छलैक ? भितरे भीतर किछु खदकि रहल छलैक ।

परुकाँ ओकरो पोताक मूड़न छलैक । सभ क्यो प्रयाग गेल छलैक । बड़की ई बात छोटकी सँ नुका गेल छलि । क्यो नहि बुझने छलैक । बड़कीकेँ समाद-चिट्ठी किछुओ ने आयल छलैक । बादमे चिट्ठी आयल छलैक । ओहो एहिना घरमे पड़ि रहल छलि । छोटकी ककरो आङन पूजामे गेल छलैक । क्यो नहि बुझलकै ।

फेर जिनगी भरि मुँह नहि देखबाक गप्प कोनो कहलकै छोटकी केँ ? मुँह देखबाक ओहिना कतेक अवसर भेटैत छैक । साल दू सालमे दू चारि दिन । ओहूमे बेसीकाल धीयापुताकेँ शहरे छोड़ने अबैत छैक—कखनो परीक्षा, कखनो पढ़ाइ हर्ज हैबाक गप्प ।

मुदा ई सभ गप्प किएक मोन पड़ि रहल छलैक बड़कीकेँ ? ई सभ त' हैबे करैत छैक जिनगीमे । सभक घरमे होइत छैक । एहिमे नव की छैक ?

तखन छोटकी एना पेटकान किएक देने छैक—बताहि । ओकरा छोटकीपर तामसो भेलैक । फेर जेना मुँहमे नोराइन स्वाद आबि गेलैक, आँखि अनेरो भीजल ! कण्ठ अवरूद्ध ! एना किएक भ' रहल छलैक ?

बड़की उठि क' ठाढ़ि भ' गेलि । आङन मे ठाढ़ि होइत काल एक बेर सिहरि गेलि । सौंसे आङन अन्हार छलैक । डेराओन चुप्पी आ चतरल अन्हार । बाड़ीक झमटगर गाछ सभ अन्हारमे डेराओन लागि रहल छलैक । बड़की जल्दी जल्दी डेग उठबैत छोटकीक कोठली धरि आयलि । चौखटि लग कनेक थकमकायलि मुदा फेर धड़फड़ायल कोठलीमे पैसि गेलि । अन्हारमे पहिने किछु ने सुझलैक । फेर ठेकनबैत देखलक—छोटकी माटिये पर पेटकान देने पड़लि छलैक । बड़की लगमे बैसि गेलैक आ पीठपर हाथ फेरैत कहलकै—"एना क्यो मोन छोट करय सीता ! बताहि, उठ, हमर संग आ । दिनेसँ भानस कयल पड़ल अछि, दुनू बहीन बाँटि कूटि खा लेब ।"

मार्च १९७३

पिता

जीवकान्त एक बेर चिट्ठी लिखने छथाह । मुदा तकर गप्प बाद मे । पहिने एकटा गामक गप्प कहैत छी—कोनो, ककरो गामक । जेहन एकटा गाम होइत छैक, तेहने । मुदा खूब घनगर नहि, छेहर, दूर-दूर पर घर सभ । टोलो सभ खूब पैघ नहि—छोट-छोट । दस घर, बीस घर सँह । खाली गामक बीच महक पोखरि बड़ी टा—दैत्यक खुनायल पोखरि सभ सँ कनियेँ छोट । मुदा सौंसे कुम्भीसँ छारल । जाठि धरि निपत्ता । जाठिक मूड़ी कें अगर्त्ता छौंड़ा सभ हिला-हिला तोड़ि देने छलैक, हेलैत-हेलैत पचासो गोटे एके बेर लुधकि जाइत छलैक । किछु दिन टुटलाहा टुनगी पानिक ऊपर लिबलिब करैत रहैक । फेर कुम्भी तर झँपा गेलैक । आब क्यो ने नहाइत छैक एहि पोखरि मे । भानसक अदहनो जोगर नहि रहलैक एकर पानि । सभ कलेक पानिसँ भानस-भात करैत अछि गाममे—धनुखटोली सँ बभनटोली धरि आ मलहटोली सँ खतबेटोली धरि । सभ टोल पर कल छैक—जय हो स्वराज के ! जय हो सरकार के !

सरकार तँ आरो बहुत रास बात कर' चाहैत छलैक गाममे । कल त' पहिले एलेक्सन मे लागि गेल छलैक टोले-टोल । ओही दिनमे दरभंगा सँ अब'बला कचिया सड़क पर खूब माटि द' क' रोड़ा खसा देने छलैक । पिच बनतैक- सौंसे इलाका मे ढोल पिटा गेल छलैक । गनेसी झा प्राइवेट बस ओही पिच पर चलयबाक लाइसेंसक जोगार मे लागि गेल छल आ मन्नू कडवटरीक सपना देख' लागल छल । निरसन झा अपन चाहक दोकान घुसका क' चौराहा लग ल' जयबाक योजना बना लेने छल आ एकटा नीक सन साइनबोर्ड अपन चाहक दोकान लेल बनयबाक भार गामक कलाकार फूदन चौधरीकेँ द' देने छलनि । बिजलीक खम्भा सभ बाधे-बाध अबैत कल्लू बाबूक पछुआर धरि आबि गेल छलनि आ गामक लोकके अनेरो कल्लू बाबूसँ ईर्ष्या होब' लागल छलैक जे बिजलीक पहिल लाइन हुनके भेटि जयतनि ।

मुदा से सभ त' एलेक्सनक गप्प छलैक । वोटक बाद रोड़ा सभ निपत्ता होइत-होइत एकदम लोप भ' गेलैक आ खेतमे खसल बिजलीक खम्भा नहि जानि

कहिया उठलैक—लोको ध्यान नहि देलकैक ठीकसँ। गणेशी झा एखन धरि आँटा-चक्की चलाक' संतोष कयने छथि आ बसक लाइसेन्सबला गप्प पर आब तामस होइत छनि आ लोकके मार' दौड़ैत छथिन। मन्नू कण्डक्टरीक सपना देखैत-देखैत बहलमान बनि गेल अछि। एकटा टायरगाड़ी कीनि भट्ठा परसँ सभकेँ ईंटा खसबैत छैक आ दरभंगा गुदरी बजार सँ सामान लादिक' अनैत अछि। निरसन झाक चाहक दोकान एखनो सड़कसँ हटिक' खत्ते लग छैक, जत' पानि पड़लासँ डबरा बनि जाइत छैक, आ कल्लू बाबूक घरमे आइयो डिबिये टिमटिमाइत छनि।

दरभंगा सँ आब'बला कचिया सड़क दुसघटोलीक कात दने जाइत छैक, हाइ स्कूलसँ सटिक'। स्कूलक हाल आइ स्थापनाक तीसो बरखक बाद ओहिना छैक—टूटल फूटल घर, ढनमनायल देबाल आ उजड़ल सन पैंघ प्रांगण! आजादीक दोसरे बरख जखन कहुना जोर लगा वित्तमंत्रीकेँ इलाकाक लोकसभ एहि स्कूलमे अनने जल, त' प्रधानाध्यापकक करूण विवरण सुनि वित्तमंत्री बाजल छलाह जे वित्त मंत्रीकेँ देखि प्रधानाध्यापककेँ लोभ भ' गेल छनि। अपन विशाल काफिलाक संग मंत्री महोदय चल गेलाह आ वित्तमंत्रीक आगमनसँ आशान्वित स्कूल आइयो ओहिना ढनमनायल-उजड़ल सन पड़ल अछि। छात्रक संख्या दिनानुदिन बढ़ले जाइत छैक मुदा आर हालत शोचनीय छैक। सालो भरि हेडमास्टरीक लेल मोकदमाबाजी होइत छैक, मान छौ मास पढ़ाई होइत छैक। मास्टर सबहक गुट जकाँ विद्यार्थियो सभ गुटमे बटल अछि आ कने मौका भेटलैक कि छुटले—ले-ले···पुर्र····।

ई त' भेलैक बाहरी सिमानपरक स्कूलक गप्प। भितरिया हालति सेहो तेहने छैक। तीन बेर कन्या पाठशालाक लेल चन्दा भेलैक, धरनि-चार सेहो ठाढ़ भेलैक, जमीनक रजिस्ट्री भेलैक, मुदा आइयो स्कूल-मास्टरनीक दलाने पर क्लास होइत छैक। अपर स्कूलक हालति आर बिगड़ल। ओत' क्लासक हेतु मास्टरनीक दलानो नहि, बेलक गाछक छाहरि। कँटहा छाँह आ छोटछीन धीयापूता। रौद-बसात आ शीतलहरी। किछु सरकारी अनुदान कहियो भेटलैक, कोनो पता नहि छैक आइ। गामोक लोक सभ चन्दा कयलक एक-दू बेर, ओकरो कोनो पता नहि छैक आइ। एक बेर बालु पर टैक्स लागल। जे कोनो अनगौआँ नदीक कछेरसँ बालु ल' जायत, त' फी टायरगाड़ी दू टाका टैक्स। एहि विलक्षण 'आइडिया' सँ लोक

आशान्वित भेल जे आब स्कूल बनि जायत। मुदा टैक्स कलक्टर' अनको उत्पन्न भ' गेलाह। के कहिया ओसूललक तकर कोनो हिसाब नहि। योजना फेल। बेलक गाछक छाहरि जिन्दाबाद। नव पीढ़ीक निर्माणक लेल दृढ़ ठाढ़, गामक एकमात्र व्यक्तित्व—बेलक झमटगर गाछ।

धारक हाल सेहो कोनो नीक नहि छैक। सालमे दुइये-तीनमास, जेठ बैसाख मे हेलाह होइत छैक, ने त' अथाह पानि। नावक लेल घटवार, ओकर सीधा चाही। आ सभसँ पहिने एकटा नीक सन नाव। पुरना नाव मे भूरे-भूर। उपछैत-उपछैत तंग भ' घटवार पड़ा जाइत अछि। आब बुढ़बा मलाह लालजी थोड़े जीबैत अछि जे कतबो बाजि-भूकि फेर घाटे पर पड़ल रहत! नवका घटवारकेँ नव नाव चाहियैक आ नव नाव लेल चाहियैक चन्दा। से के देत? ककरा देत? कतेक बेर देत? नाव अधिक काल बालू पर उनटल रहैत अछि आ लोकसभ घुरि क' पुल पर दने धार पार करैत अछि। जेठ-बैसाखमे जखन हेलाह होइत छैक, लोक सभ धोती उछाहि क' हेलि जाइत अछि। स्त्रीगण सभ पर्यन्त एम्हर-ओम्हर ताकि जांध धरि नूआ उघारि पार भ' जाइत अछि। कोनो-कोनो नव-कनियाँ लाजे घुस्स द' धारक कातमे बैसि जाइत अछि। घंटाक घंटा बैसले रहि जाइत अछि कि केम्हरोसँ क्यो···गे-माय-गे-माय··· हाथसँ उठाओल नूआ छूटि जाइत छैक। बोदरि भेल घर अबैत अछि। एकदम नवकी सभ लाजे कान' लगैत अछि।

मुदा कुम्भीसँ छारल पोखरि द्वारे तँ भीड़ परक सभ लोक कानि रहल अछि। पैंघ-पैंघ मच्छड़! दुर्गन्धि! दरबजापर बैसब मोस्किल। पोखरि गोसचरिया, पचासो मालिक। भीड़ पर दुइये-तीन पट्टीदार, बाँकी गौआँसभ। विशेष चिन्ता ककरो नहि। मुदा पोखरिक भीड़परक लोग सभ अगुता गेल। निर्णय कयलक जे मछहर कराओल जाय आ जे माछ होइक ताही सँ पोखरिक सफाइ भ' जाय। दू-चारि टा अगुआ छौंड़ा सभ दौड़-धूप क' बाबू-भैयाकेँ मना लेलक। मछहर भेलैक। शुरू मे सभ शान्त रहलैक। मुदा जहाँ महाजाल खसलैक आ पाँच-सात टा बड़का ललमुँहाँ रहु आ भाकुर कुदलैक कि पट्टीदार सभ चारू कातसँ दौड़लाह—हिस्सा दिय', सफाइ सँ हमरा कोन मतलब? नहि, हम त' कहियो ने कहलहुँ जे हमर हिस्सा सफाइ मे जायत, हमरा बाँटि दिय'। हिस्सा बँटा गेल, पोखरि कुम्भी सँ छारल ओहिना पड़ल अछि··· दुर्गन्ध करैत—मच्छड़ भनभनाइत! की करबैक? आइ-काल्हि तँ मच्छड़ सभ ठाम रहिते छैक।

मुदा पढ़ल-लिखल गाममे एकटा लाइब्रेरी तँ रहिते छैक। एहि गाममे किएक ने हेतैक ? नवयुवक सभ जोर लगौलक, आ घर-घरसँ किताब आनि एकटा छोट-छीन घर ठाढ़ कयलक, दू-तीन टा कठही आलमारी आ दू चारि टा बेंच जुटौलक। नीक जकाँ चल' लगलैक। एक दिन ओकरा सभके ध्यान गेलैक जे एहि गाममे एकटा कवीश्वर भेल छलाह, हुनके डीह पर स्मारक-स्वरूप लाइब्रेरी हैबाक चाही। हुनक डीह पर छोट छीन जगह घेरि घारि क' एक टा छोट छीन स्मारकक रूप देलक। दू बेर दीयाबातीमे दीप जरौलक आ फेर सभ समाप्त भ' गेलैक। टेबुल बेंच निपत्ता, किताब सभ आधा दाम मे बजारमे बिका गेलैक आ स्मारक लग भाटा-रामझीमनीक खेती होब' लगलैक। बात पुरना क' बिसरियो गेलैक लोक सभके।

मुदा एकटा बात गामक लोकके कहियो ने बिसरैत छैक जे एहि गामक एकटा इतिहास छलैक, इलाकामे क्यो कहबैत छल, भलें आइ क्यो घर पैसि बात कहि जाइक। लोकके आइयो बड़ दावी छैक जे हमरा लोकनि बड़ पढ़ल-लिखल छी, मिथिलाक प्रमुख गाम साक्षरता आ भलमानसाहत मे ! भलें आइ गामक स्कूल बेलक गाछ तर होइत छैक, एकटा लाइब्रेरी नहि छैक, अस्पताल आ डाक्टर नहि छैक, बिजली आ सड़क नहि छैक, बाट कादो आ विष्ठासँ घिनाइत रहैत छैक। ई सभ तँ होइते रहैत छैक। गाम-गाम छैक। सभटा होब' मे समय लगैत छैक। मुदा हमरा लोकनि क्यो कहबैत छी, आइयो लोक चिन्हैत अछि, मान-सम्मान करैत अछि। इलाका मे आर कोन गाम परतर करत ? छोटहा सभ अछि।

× × × ×

क्षमा करब, ई त' हम कदिन सभ कहि गेलहुँ। हम त' एक टा गामक गप्प कह' चाहैत छलहुँ, जत' हमर पिता रहैत छलाह, हमर जन्म भेल छल। गामक हाइ स्कूलक हेडमास्टर हमर पिता जे वित्त मन्त्रीक समक्ष विद्यालयक विवरण पढ़ि अनुदानक सांकेतिक याचना कयने छलाह। जे गामक प्रत्येक सभाक सभापतिक हेतु पाँचो मिनट पहिने कहि देला पर स्वागत-गान लिखैत छलाह आ दुर्गापूजा - कालीपूजाक राति नाटक मे अभिनय करबा लेल अयनाक समक्ष ठाढ़ भ' घण्टो रिहर्सल करैत छलाह.आ प्रदर्शनक राति मेक-अप करबा काल भरि धरके दौड़ा क' अपस्याँत क' दैत छलाह। बजारसँ त'र तरकारीक बदला—फूलक

गाछि, आमक कलम आ नव-नव फ्रेम कयल फोटो अनैत छलाह आ बरहो राज-मिस्त्रीक संग डिजाइन बनबैत काल खायब पियब बिसरि जाइत छलाह। शिक्षक, कवि, कलाकार, इंजीनियर, आ सभसँ पैघ —एक टा पिता, सन्तानक हेतु सम्पूर्ण उत्सर्ग कर'वला पिता।

साँझ होइत देरी लालटेन ल' नोकर घरे-घरे तकैत छल, चेतनो भेला पर। गाड़ी मे बैसला पर प्लेटफार्म पर ठाढ़ देखि मिनटे-मिन्ट टोकैत छलाह— बैसि जाह, चलती गाड़ी मे नहि चढ़ी। बाहर जाइत काल दू दिन पहिनेसँ आवश्यक निर्देश दैत छलाह आ जहिया स्कूल-कॉलेज बन्द भेला पर गाम अबैत छलहुँ, पहिनेसँ घारक कात मे ठाढ़ रहैत छलाह। घरक नव फल, नव अन्न—कतहु रही, पहुँचि जाइत छल आ सप्ताह मे दू टा नियमित चिट्ठी......। से 'दादा'......हमर पिता आइ नहि छथि......ओहि बेर गामसँ बिदा होइत काल 'दादा'क पयर छूबि ठाढ़ भेलहुँ, तँ ठाढ़े रहि गेलहुँ। 'दादा' किछु नहि कहलनि। हम ठाढ़े रहि गेलहुँ जे दादा आब कहताह—ठीकसँ जैह'। चलती गाड़ी मे नहि चढ़िह'। सामान गनि लिह'। पहुँचि क' चिट्ठी दिह'। आ संगे-संगे घारक कात धरि चल औताह। मुदा 'दादा' रैपरमे मूड़ी गोतने पड़ल छलाह। माय कने विचलित होइत कहलकनि—"हड़बड़ जाइत छथि, किछु कहबनि नहि।"

"अयँ।" दादा हड़बड़ा क' ओढ़ना हटबैत छथि। "जाइ छथि, बेस।" आ फेर ओढ़ना ओढ़ि लैत छथि।

हम कनैत आङनसँ बाहर भ' जाइत छी......भरि बाट कनिते चल जाइत छी। दादा आब कहियो किछु नहि कहताह......। जाइ छथि, बेस'......सँ अधिक नहि कहताह कहियो। 'यूरीमिया' मे पड़ल छथि, सभटा बिसरि गेल छनि......ममता......चिन्ता-क्लेश......सभटा। कहियो किछु नहि कहताह आब......प्रायः नहि देखबनि आब......

सत्ते नहि देखलियनि फेर। एतेक पैघ निर्ममता कोना संभव भेलनि दादा सँ। बिनु भेँट कयने चल गेलाह......बिनु देखने... बिना किछु कहने...... जिनगी भरि जे कहियो कोनो सजाय नहि देने छलाह, जयबाक काल एतेक कठोर दण्ड कोना द' गेलाह ? आइयो गामसँ घुरैत काल हुनक समाधिके प्रणाम करैत काल एतबे प्रश्न पुछैत छियनि आ घुरि क' बिदा होइत काल लगैत अछि जेना

क्यो पाछासँ कहि रहल होअथ—'ठीकसँ जैह'······चलती गाड़ीमे नहि चढ़िह'······मोटरी-चोटरी गनि लिह'······।'

नहि, दादा दण्ड नहि द' सकैत छथि। ई शब्द हुनक नहि छलनि। ओ त' मात्र ममता, स्नेह आ आत्मीयतासँ परिचित छलाह। दण्ड कहियो ककरो नहि देलथिन। मृत्युसँ पूर्व अपन जीविकाक हेतु संघर्ष करैत काल सेहो मात्र आत्म-रक्षामे लागल रहलाह, दण्ड वा प्रतिहिंसाक बात नहि उठलनि मोन में। कहियो नहि, कखनो नहि।

× × × ×

क्षमा करब, ई त' फेर किदन सभ कह' लगलहुँ हम। बात तँ जीवकान्तक पत्र स' शुरू भेल छल। ओ लिखने छलाह, कने थम्हि जाउ, ओ की लिखने छलाह, से फेर कहब। पहिने 'दादा' की लिखैत छलाह, से कहैत छी।

आठमे क्लाससँ हम गामसँ बाहर रहैत छी—दरभंगा, पटना, नागपुर, बिहारशरीफ आ फेर पटना। दादाक पत्र नियमित अबैत अछि आ पत्रमे अबैत अछि गाम-घरक सभटा समाचार—महंथ भाइ हमरा लोकनिके छोड़ि गेलाह, छोटकी काकी इनारमे खसि पड़लीह, महादेव नहि रहलाह, यदु भाइ बिछौन ध' लेने छथ···तुरन्ता दुखित पड़ि गेल, सम्पतियाक बियाह भेलैक, धान नीक अछि, सजमनि फड़ल अछि, दुर्गाजीक चाल लागि गेलनि, घोघनाक गाय बिआयल छैक, उठौना दैत अछि······

आ, गाम हमरा कहियो ने छुटैत अछि। गाम-घर हमरा संग लागल रहैत अछि। दादा अपन चिट्ठीमे गाम आ गामक लोकके हमरा संग क' दैत छथि।

मुदा छुट्टीमे गाम अबैत छी त' देखैत छियनि गाम दादाक संग नहि छनि। बाहर दरबज्जा पर दादा आँखि बन्द कयने पड़ल छथि······चारू कात सुन्न, क्यो कतहु नहि······कहाँ छनि दादाक गाम आ गामक लोक······ओ त' एकसर रुग्ण पड़ल छथि बिछौनपर।

दस बजैत-बजैत स्कूल जयबाक लेल दादा तैयार भ' जाइत छथि। रुग्ण देहके कहुना सोझ क' स्कूल विदा होइत छथि। छड़ी हाथ मे लैत पहिल डेग

दैत बजैत छथि''—''सभ दिन विदा होइत काल लगैत अछि जेना स्कूल नहि, युद्ध क्षेत्र मे जा रहल होइ।''

मुदा युद्ध क्षेत्रक बात दादाके बिसरि जाइत छनि। मोन रहैत छनि गाम आ गामक लोक। एकसरे पड़ल-पड़ल गामक लोकक चिन्ता—हुनक जमाय अयलथिन कि नहि, हुनक बच्चाक बोखार उतरलनि कि नहि, ओ पास भेल कि नहि······

सभ दिन स्कूल जयबाक काल फेर युद्ध-क्षेत्र जयबाक गप्प। तहिया शरीर आरो रुग्ण भ' गेल रहनि। कपड़ा-लत्ता मायेक मदति सँ पहिरैत छलाह आ कहुना पकड़ि क' रिक्शापर बैसा दैत छलनि। हमहुँ गाम आयल रही। एना स्कूल जाइत देखि क' कहलियनि—''छोड़ि दिय' ने स्कूल। एना नित्य जयबाक कोन काज ?

दादा किछु नहि कहलनि। खाली हमर मुँह तकलनि जेना पूछि रहल होथि—काज की सत्ते नहि ? ओ चल गेलाह। जाइते रहलाह, अन्तिम समय धरि। हम फेर दोबारा नहि कहि सकलियनि जे जयबाक नहि काज। सामने सौंसे परिवार ठाढ़ल।

तहिना दादाके इहो नहि कहि सकलियनि जे चिट्ठीमे अपन गप्प लिखू, गाम भरिक गप्प लिखबाक कोन काज ? एकटा अनगौआँ दरबज्जापर आबि मायके बात कहलक आ गामक लोक सुनलक, तेहन गाम आ गामक लोकक बात लिखबाक कोन काज ? अहाँ एकसर संघर्ष मे निमुआन छी, दिन-प्रतिदिन टूटि रहल छी आ अहाँक दुख-सुखसँ उदासीन गामक खबरि लिखबाक कोन काज ? मुदा से दादाके नहि कहि सकलियनि। बूझल छल जे ओ एतबे कहताह—आह, अप्पन गाम थिक, अपने लोक सभ अछि।

आइ लगैत अछि जे तहिया यदि दादा नहि लिखतथि त' गाम हमरासँ बीस बरख पूर्वे छूटि गेल रहैत। सोरहम बरखमे गामसँ बाहर आबि गेल रही। मुदा गाम आइ धरि अपरिचित नहि भेल अछि, ओहिना लग अछि—अपन गुण-अवगुणक संग।

एहि बेर सते क्षमा करू अहाँ। एहि बेर अवस्से जीवकान्तक चिट्ठीक गप्प करब। ओ लिखने छलाह—"अहाँक कथाक नायक बड़ 'एकोमोडेटिंग' होइत अछि। अहाँक कथामे दू टा बिन्दु रहैत अछि—एकटा पिता आ एक टा पत्नी आ कथाक नायक दुनूक बीच डोलैत रहैत अछि।" डोलैत प्राय: ओ नहि लिखने छलाह, प्राय: ओसिलेट करैत लिखने छलाह। ठीकसँ मोन नहि पड़ि रहल अछि।

ओ पहिल बिन्दु आब टूटि गेल अछि। दादा नहि छथि। दोसर बिन्दुक बात जीवकान्त लिखने छलाह, हमर कथामेसँ एक्के टा बिन्दु छल, ओकरे चारू कात छोट-छोट बहुत रास बिन्दु......माय, पत्नी, भाइ-बहीन, धीया-पूता, गाम-घर आ संसार...एहि सभसँ पैघ बिन्दु छलाह—छलाह नहि, छथि, आइयो वैह सभसँ पैघ बिन्दु छथि। दादा नहि छथि, ओ बिन्दु अछि, हमर सम्पूर्ण लेखक आ व्यक्ति-सामर्थ्यक बिन्दु। ओ सभ दिन रहत।

मुदा से हम अहाँकें कियैक कहि रहल छी? ई तँ हमरा पत्र लिखबाक छल जीवकान्तकें।

आब सत्ते माफ करू हमरा। हम सत्य कथा नहि लिखि सकलहुँ। हम तँ फेर पुरने बिन्दु पर अहुरिया काटि क' रहि गेलहुँ। ●

सितम्बर १९७१

उत्तरकाण्ड

गाड़ी ठीक दस बजे दिन मे पहुँचल छलैक। कम्पार्टमेन्टक खिड़की सँ नीक जकाँ चारू कात ताकि ओ प्लेटफार्म पर उतरि गेल छल, सभटा समान उतारने छल। सभ किछु ओहिना छलैक—अनमन। चौदह वर्ष मे कनियो किछु नहि बदलल छलैक, जेना समय ठहरि गेल होइक। ओहने प्लेटफार्म पर बौआइत दू-एक-टा कुली—सेहो पुरने। ओ सभकें चीन्हैत छैक, मुदा ओकरा क्यो नहि चीन्हैत छैक। परदेशी बूझि ओकर सामानक ढेरी लग घुरिआइत छैक मुदा ओकरा अनमनस्क देखि दोसर दिस चल जाइत छैक। कतेको परिचित आकृति ओकरा दिस देखि, बिना कोनो परिचयक भाव अनैत आगू बढ़ि जाइत छैक। नहि जानि कियैक ओ वेटिंग रूमक भीतर जाइत अछि। ओकर मलिछौन अयना मे अपन आकृति देखैत अछि—चौदह वर्षक वनवाससँ परिवर्तित अपन आकृति। बत्तीस वर्षक परिपक्व आ कठोर आकृतिक पाछाँ एकटा कोमल नौजवान आकृति कहिया ने बिला गेलैक। अयना मे ओकरा तकबाक ओ चेष्टा करैत अछि मुदा अपन ओ आकृति अपनो मोन नहि पड़ैत छैक। चौदह वर्षक प्रत्येक दिन अपन छाँह चेहरा पर छोड़ि गेल छैक। आँखि मे एकटा कठोर उदासीनता पसरि गेल छैक आ गोर कपार ताम्रवर्ण भ' गेल छैक। कनपट्टी पर दू-एक टा उज्जर केश—दूनू कात। नाकक टुनगी कने आरो पातर भ' गेल छैक जेना। दुनू गालक हड्डी बेसी उभरल बुझाइत छैक आ छौ फीटक देह किछु आगू झुकल सन। अयनाक समक्ष ठाढ़ अपन आकृति ओकरा तमसायल आ उत्तेजनापूर्ण लगैत छैक, जेना घुरि अयबाक अपन निश्चय पर अखनो अपना सँ नाराज हो। एहि चौदह वर्ष मे हजारो बेर घुरि जयबाक विचार भेल छलैक, मुदा विचारक संग सौंसे गामक हँसैत, भर्त्सना करैत लोकक बीच दबकल बाबूजीक आकृति सोझाँ आबि जाइत छलैक आ ओकर निश्चय सहमि क' गलि जाइत छलैक—'हुनका सोझा कोना ठाढ़ हैब? की कहबनि? किएक पड़ायल छलहुँ? आबो कहबाक काज पड़त? सीता कहने हेतनि? भरि गाम घोन करने हैत आ भरि गाम थू-थू कयने

हैत। बाबूजी घर मे नुकायल हैताह। बाट-घाट सभक हँसी हुनका छेदैत हैतनि ! नहि, हुनका लग ठाढ़ हैबाक मुँह नहि अछि, जिनगी भरि नहि हैत। "आइ चौदह वर्षक बादो ओकरा सीता पर ओहिना घृणा आ तामस होइत छैक जेना गामसँ पड़यबाक काल सँ ल' क' आइ चौदह वर्ष धरि होइत रहलैक अछि—प्रत्येक दिन, प्रत्येक क्षण ! ओकर सम्पूर्ण जीवनकेँ व्यर्थ क' क' राखि देलकै, सभटा स्वप्न, सभटा महत्वाकांक्षा केँ ढाहि देलकै- एवके क्षण मे, मात्र एक क्षण मे। आइ एतेक वर्षक बादो ओहि क्षणक स्मरण सँ ओकर रोइयाँ भुलकि जाइत छैक। अयना मे एकटा गाछी, गाछी मे एकटा एकान्त दुपहरिया, आ एकान्त दुपहरिया मे एकटा घटना। नहि, ओ अयना लग सँ हटि जाइत अछि। ई दृश्य ओ हजारो-लाखो बेर देखि चुकल अछि, ओकर मोनक अयना मे ओ स्थायी रूप सँ अंकित छैक। आ संगे-संग छैक एकटा कनैत धमकी—हम कहि देबैक··· ···· लाल काकाकेँ कहबनि··· ··· सौंसे गाम केँ कहबैक···· ·····

ओ वेटिंग रूम सँ बहरा क' प्लेटफार्म पर घुरि अबैत अछि। मोन होइत छैक, टाइम समय-सारणी मे घुरबाक समय देखय। ओ गाम मे पयर नहि देत। किन्नहु नहि। लोक सभक सोझा ठाढ़ नहि भ' सकत। बाबूजी सँ आँखि नहि मिला सकत।

मुदा, बाबूजी केँ देखबाक जे इच्छा ओकरा एहि चौदह वर्ष मे बेर बेर उसकबैत रहलैक अछि, सैह ओकर डेग फेर थकथका दैत छैक। नहि जानि, बाबूजी कोना हेताह ! कोना बीतल हेतनि ई चौदह वर्ष ? के छनि देख' वला ? माँ त' मोनो ने छथि। जहिया सँ होश भेल, बाबूजी के एकसरे देखलियनि अछि। हमहीं छलियनि सभ किछु, बाबूजीक सम्पूर्ण संसार। से बाबूजी हमर बनवासक बाद····

बनवास शब्द सँ ओकर देह सिहरि जाइत छैक। बनवासक बाद तँ फेर भेँट···। ओ जल्दी सँ विचारधारा केँ मोड़ैत अछि। नहि, ई बनवास नहि छलैक, ई त' आत्मनिर्वासन छलैक। खाली नाम भेला सँ सभ क्यो राम नहि भ' सकैत अछि। ओ त' राक्षस अछि, ओकर पापक हेतु बाबूजी किएक दण्डित हैथिन ?

ओ डेग झटकारैत सामान दिस अबैत अछि। दू टा कुली ओकर सभटा सामानकेँ ओगरैत बैसल छैक आ ओकरा दिस आश्चर्य सँ तकैत छैक जे के ए ा सामान छोड़ि क' निश्चिन्त निपत्ता छल। प्रायः ओकर परदेशी हैबाक विश्वास दुनू कुली केँ भ' गेल छैक। तीन-तीन रुपैया मंगैत छैक गाम जयबाक। ओ दुनू कुली केँ चीन्हैत छैक। ओकरा मोने मोन हँसी लगैत छैक जे चिन्हलापर दुनू कोना लजेतैक ? छौ आनाक बदला तीन रुपैया। मुदा तत्क्षण बितलाहा चौदह वर्ष मोन पड़ैत छैक आ लगैत छैक जे कोनो वेसी नहि छैक, एतबा तँ हैबेक चाहियैक आनो वस्तुक मूल्य-वृद्धिक हिसाबे। ओ कुलीक पाछाँ-पाछाँ गाम दिस विदा होइत अछि।

रौद नीक जकाँ पसरल छैक। मुदा, जाड़क रौद प्रिय आ सुखद लागि रहल छैक। तैयो गाम दिस ससरैत डेगक संग एक टा अप्रिय कछमछी ओकर मोनकेँ व्याकुल कयने जा रहल छलैक ! लागि रहल छलैक जेना कखनो क्यो ओकरा चीन्हिक' चिचिया उठतैक—यैह अछि रमुआँ। चौदह वर्ष पर घुरल अछि मुदा चौदहो जन्म मे की ओहि पापक प्रापक प्रायश्चित हेतैक ? ताही कछमछी मे डेग अनेरो सुस्त हो त गेलैक आ मोटा उठौने दुनू कुली बड़ी दूर निकलि गेलैक। जखन ओ गामक सीमामे प्रवेश कयलक, दुनू कुली समान राखि बाट पर बैसल छलैक— बड़ी देर लगा देली मालिक ! कखन सँ बैसल हती ! किनका ओत्तँ जयबैक ?

बाबूजीक नाम लैत ओकर जीह किछु थरथरयलैक मुदा दुनू कुलीबाक आकृति पर सेहो भाव परिवर्त्तन भेलैक। किछु चिन्हार सन भाव। मुदा किछु बजलैक नहि। सामान उठा विदा भेलैक आ ओहो पाछाँ लागि गेल।

परिचित घर सभ सोझाँ आब' लगलैक आ फेर अप्पन दरबज्जा। गामक बहुत रास धीयापुता ओकर अपरिचत आकृति, डील-डौल आ वेशभूषा देखि पछोर धयने दरबज्जा धरि अयलैक। दरबज्जा ओहिना छलैक मुदा किछु श्रीहीन-सन। एकदम्म सुन्न। ओकर करेज धक्क द' रहि गेलैक। बाबूजी त' कहियो आङन मे नहि बैसैत छलाह। मोनक आशंका केँ ओ फेर एक बेर दबौलक। कुलीबा सामान लेने आङन चल गेलैक आ तकर बादे लाल कालाक स्वर ओ नीक जकाँ चिन्हलकनि--के थिकाह ?"

ओ आगू बढ़ि गोड़ लगलकनि । लाल काका कनेकाल ओकरा निहारैत रहलथिन आ फेर डेन पकड़ि चिचिया उठलथिन— राम छह हौ ? आ फेर छाती सँ लगा कान' लगलथिन । दहो बहो नोर खस' लगलनि । ओहो कान' लागल । बड़ी काल धरि कनैत रहल । नहि जानि कहिया सँ सुखायल आँखि भीजिक ठण्ढा भ' गेलैक । मुदा तखने एकटा शब्द ओकरा भीतर धरि दागि देलकै—देरी सँ अयलें राम, कने देरी सँ अयलें ! भाइ कें विश्वास छलनि जे तों घुरबें, मुदा चौदह वर्ष वितला पर आस टूटि गेलनि आ आस टूटि गेलनि तँ तोहर बाट नहि देखि सकलथुन आगाँ ।

लाल काका एक बेर फेर हिचुकि हिचुकि क' कान' लगलथिन । मुदा राम एहि बेर नहि कानल । सुन्न भेल लाल काकाक दूनू बाँहि मे बन्हायल रहल । लाल काकाक कानब, हिचकब किछुओ ने सुनलकनि ओ । ओ त' जेना ज्ञान-संज्ञा शून्य भ' गेल छल । लाल काकाक बाँहि सँ छुटैत देरी लुद्द द' ओतहि माटि पर बैसि रहल···बैसले रहि गेल ।

भरि गामक लोक दरबज्जा पर जुमि गेल छलैक आ आङन मे स्त्रीगणक भीड़ । भीड़ बढ़ले गेलैक···गाम मे भरिसवके क्यो रहि गेल होइ जे ओहि काल ओकर दरबज्जा पर नहि जुटलैक !

ओकरा होश भेलैक ? उठिक' ठाढ़ भेल । चारू कात तकलक । केम्हरो सँ कोनो भर्त्सनाक स्वर नहि उठलैक । ओ आश्चर्यपूर्वक प्रतीक्षा करैत रहि गेल ।

× × × ×

राति वेसिये बीति गेल छलैक । मुदा ओकर आँखि मे नीन्न नहि छलैक । साँझ धरि दरबज्जा पर ठेलमठेल छलैक । सभक एक्केटा प्रश्न—एना किएक निपत्ता भेल छलाह, कोम्हर छलाह ? एतेक दिन पर घुरलाह कोना ? ओ ककरो सत्य बात नहि कहि सकलैक । मुदा ओकरा आश्चर्य भेलैक जे लोक सत्त बात किएक नहि जनैत छलैक । मुदा ककरो प्रश्न मे ओकरा कोनो छद्म वा कटाक्ष नहि लागल छलैक ।

आ रातुक एकान्त मे यैह ज्ञान ओकरा मथने जा रहल छलैक । तखन त' व्यर्थ ओकर जीवन नष्ट भेलैक ? बाबूजीक प्राण अनेरो गेलनि आ ओ अनेरो बाबजीक स्नेह आ अप्पन घर-समाज सँ दूर पड़ायल ? ओ बाबूजीवला कोठली मे पड़ल छल मुदा कोठली मे बाबूजीक स्मृतिस्वरूप किछुओ ने छलैक ! प्रायः

लाल काका तैसार बना लेने छलथिन ओकरा । बाबूजीक एक एक वस्तु चुनि क' हटा देल गेल छलनि जेना । हुनक रूद्राक्ष, नोसिदानी, छड़ी छाता, खड़ाम पुस्तक आ गीता कोनो वस्तुक अस्तित्व नहि छलैक घर मे । मायक बड़का फोटो आ माय-बाबूजीक संग-संग वला फोटो सेहो देवाल पर सँ निपत्ता छलैक आ बाबूजीक संग ओकर अपन जे एक मात्र फोटो छलैक सेहो गायब छलैक । ओकरा सभटा असह्य लगैक आ जोरसँ चिचिया उठल—'लाल काका' !

काका प्रायः जगले छलथिन । खड़ाम खटखटबैत कनिबे काल मे पहुँचि गेलथिन—'की बात छैक राम ! किछु चाहियह ?

काका कें एना आबि गेला सँ ओकरा अपन उत्तेजना पर ग्लानि भेलैक । कने लजाइत बाजल—किछु नहि काका ! अनेरो तंग कयलहुँ अहाँके । एहिठाम देवाल पर बाबू आ मायक फोटो छलनि, से की भेलैक ?

ओकरा आश्चर्य भेलैक जखन ओकर प्रश्न पर काका तेना संकुचित भेलथिन जेना कोनो चोरी पकड़ा गेल होनि । सफाइ जकाँ दैत बजलथिन—''खराप भेल जाइत छलैक फोटो । दूनू देबाल एहि कोठलीक वेसी सर्द छैक, तें उतारि क' तोहर काकी बक्सामे राखि देने छलथिन । कालिह टांङि देबैक ।'

काका चल गेलथिन । ओकरा काकाक देल कारण यथेष्ट नहि लगलैक । फोटो कें एना देवाल सँ हटा क' बक्सा मे राखि देनाइ, ओकर स्थान पर सस्त रुचिवाला कलेण्डर सभ टांङि देनाइ ओकरा अरुचिकर लगलैक । काकाक सहमब आ सफाइ देब ओकरा मोनमे तरह-तरहक बातक जन्म देलकै । मुदा सभके दबा पुनः बाबूजीक स्मृति आ बिछोह ओकरा बेर-बेर कचोट' लगलैक ।

पढ़' लेल शहरक स्कूल जाय लागल छल त' बड़ी काल धरि करेजा सँ सटने रहि गेल छलथिन । प्रायः पीठ पाछाँ आँखिक नोर पोछने छलथिन । तैयो भीजल आँखि सभटा देखार क' देने छलनि । जबर्दस्ती हँसैत कहने छलथिन—''मोन लगाक' पढ़िह'··· सभ शनि क' गाम पर जरूर अबिह' ! बूढ़ बापो कें देखिह' !''

आ, ओ शनिये—शनि गाम अबैत छल—नियमित । प्रत्येक सप्ताह । भरि रिजल्ट भेला पर गाम अबैत छल त' सत्यनारायण पूजा करैत छलथिन । भरि गाम प्रसाद बटैत छलथिन आ सभ साल कहैत छलथिन—एहि परीक्षा मे

फर्स्ट कयला सँ की हैतह ? मैट्रिक मे स्कॉलरशिप चाही । कमसँ कम जिला मे फस्ट ! जहिया फस्ट डिवीजन सँ स्कॉलरशिपक संग मैट्रिक पास कयने छल खुशी सँ बताह भ' गेल छलथिन । दरबज्जा पर लाउडस्पीकर आ रशनचौकी बजबा देने छलथिन । भरि गाम केँ भोज खोआ देने छलथिन ।

कालेज सभ नहि खूजल छलैक । एडमिशनक हेतु मास दिनसँ वेसी गाममे रहबाक छलैक । जेठ-बैसाखक मास छलैक — आम सभ पाकब शुरू नहि भेल छलैक । डम्हायल डम्हायल, बनाएल आम सभ ! अपन झमटगर गाछीक एकान्तमे मचानपर पड़ल छल कि तखने........ नहि, ओ सभ आब नहि मोन पाड़त । सभटा बिसरि जाय पड़तैक, नवसँ जिनगी शुरू कर' पड़तैक । गाममे लोक किछु नहि जनैत छैक, से नीके छैक । ककरो जनबोक नहि चाहियैक । ओ सुतबाक चेष्टा करैत अछि, मुदा सूत'सँ पहिने बेर-बेर मोनमे प्रश्न उठैत छैक जे गामक लोक कोना-ने जनैत छैक ओ बात ? आ बेर-बेर नीन्न उचटि जाइत छैक, भोरुकबा धरि जगले रहि जाइत अछि । खिड़कीसँ भोरक हवा देहकेँ स्पर्श करैत छैक आ राति भरिक जागल भारी पिपनी झँपा जाइत छैक ।

× × × ×

एकटा बारह तेरह वर्षक छौंड़ा बड़ी कालसँ दरबज्जापर बैसल छैक । टुकुर-टुकुर ओकर मुँह ताकि रहल छैक । जिज्ञासु आकृति बड़ सुन्नर आ अपन सन लगैत छैक ओकरा । आकृति पर कोनो परिचितक छाया सन मुदा ठीक ककर, से मोन नहि पड़ैत छैक । बेराबेरी कतेको लोक दरबज्जा पर अयलैक आ चल गेलैक । मुदा ओ छौंड़ा ओहिना बेंच पर बैसल रहलैक — टुकुर-टुकुर ओकर मुँह तकैत ! एकटा फाटल सन हाफ पैन्ट पर मोड़ल-मोचड़ल सन पुरान कमीज पहिरने छैक आ पँघ-पँघ कारी केश कपार पर लटकल छैक । दरबज्जा सुन्न भेलो पर ओकरा बैसल देखि राम ओकरा दिस ध्यानसँ देखैत छैक आ कने मुसकिया दैत छैक । ओकर मुसकी पर छौड़ा केँ बल भेटि जाइत छैक । कने ससरि क' लग अबैत पुछैत छैक — हमरा चिन्हैत छी राम मामा ?

'मामा' सम्बोधन पर ओ अन्दाज करैत अछि जे गामक कोनो बेटीक सन्तान अछि, मुदा चेष्टा कयलो पर ककरो आकृति ध्यान पर नहि अबैत छैक ।

— अहाँ त' नहि चिन्हलहुँ, मुदा माय कहलक जे तोँ जो, तोरा अवस्से चिन्हथुन ।

— ककर बेटा छेँ तो ? एहि बेर राम प्रश्न कयलकै ।

— "सीताक"

छौड़ाक उत्तरसँ स्पष्ट चौंकि गेल ओ । सीता गामे मे छलैक, ओकर बेटा छैक तेरह चौदह वर्षक, जीवनक सभ सुख भोगि रहलि अछि आ हमरा एना ठाम-ठाम बौआ देलक ! जीवनक सभ सुख छीनि लेलक । ओकर चेहरा कठोर भ' जाइत छैक । मुदा ओ छौँड़ा ओकर भाव परिवर्त्तन लक्ष्य नहि करैत छैक । ओहिना उत्साहित होइत कहैत छैक — 'हमरा ओहि ठाम नहि चलब राम मामा ! अहाँ त' मायक संगी छलियैक !"

ओ किछु जबाब नहि द' मुस्किया दैत छैक । छौँड़ा आरो उत्साहित होइत बजैत छैक — अहाँ तँ बहुत दिन पर गाम आयल छियै राम मामा ? कत' गेल रहियैक ? किए गेल रहिऐक ?

आब राम केँ कनेक तामस जकाँ होब' लगैत छैक । भरि गाम जकाँ इहो छौँड़ा वैह प्रश्न कर' चाहैत छैक ! मुदा फेर ओहि छौँड़ाक अबोध आकृति आ जिज्ञासा भरल आँखि पर ध्यान जाइत छैक आ अपन तामस केँ रोकैत कहैत छैक — "ओ सभ सुनिक' तोँ की करबेँ ? तो अपन सुना । कत' पढ़ैत छेँ ?

एहि बेर ओ छौँड़ा लजा जाइत छैक — "कहाँ पढ़ैत छिऐक ? अपर स्कूल धरि कहुना पढ़लियैक । फेर नानी मरि गेलैक । एकसरि माय । आब त' एकटा महींस रखने छियैक अप्पन आ एकटा गामक पोसिया लेने छी । ओकरे मे लागल रहैत छी ।"

ओहि छौँड़ाक बुढ़ायल सन उत्तर पर ओकर मुँह बन्न भ' जाइत छैक । फेर मोन पड़ैत छैक जे जहिया गामसँ पड़ायल छल, एहि छौँड़ा सँ दुइये-तीन वर्ष त' जेठ छल हैत । मैट्रिकक रिजल्ट संग छलैक, सर्टिफिकेट त' भेटलो नहि रहैक । पटना आ कलकत्ता । पटना मे त' भूखे मर' लागल छल । दू चारि दिन मजदूरी कयने छल । फेर कलकत्ता । एकटा पंजाबीक संग दोस्ती, ओकरे संग एकटा छोट-छीन कोठली आ एक टा मिल मे नौकरी । आइ० ए०, बी०ए०, एम० ए० आ फेर 'ला' इ परीक्षा । कालेजमे नाम लिखब' लेल चुपचाप एक बेर पुरवा स्कूल आयल

आ सार्टिफिकेट ल' क' घुरि गेल रहय। पढ़ाइक संग ट्यूशन। पढ़ाइ खत्मो भेला पर ट्यूशन। एक डेरा, दोसर डेरा, फेर तेसर डेरा! मिलक नोकरीक बाद प्राइवेट स्कूल आ फेर एकटा पैंघ फर्ममे नोकरी। नोकरीक संग स्त्री, कतेको स्त्री, बंगाली, पंजाबी, मद्रासी, क्रिश्चियन आ नेपाली। जखन जकर काज भेलैक। मुदा पहिल बेर ओहि दोस्तक स्त्री छलैक। दोस्त के नाइट ड्यूटी रहैक अधिक काल। ओम्हर ओ ड्यूटीपर एम्हर ओ बिछाओन पर। गाम छोड़' काल एकटा क्षणिक आवेश मे जे काण्ड कयने छल, से एकटा अभ्यास मे बदलि गेल छलैक। रंग-विरंगक स्त्री, अपन इच्छा सँ संग भेलि स्त्री, अपन पाइसँ कीनलि स्त्री, मुदा सीता जकाँ क्यो कानलि नहि छलैक. कानि क' क्यो धमकी नहि देने छलैक।

सीताक नामपर फेर ओहि बेंच दिस ध्यान जाइत छैक। ओकरा अनमनस्यक देखि ओ छौंड़ा बिच्चेमे घसकि गेल छैक कखनो। ओकरा बड़ जोर इच्छा होइत छैक जे सीताक आङन दिस जाय आ ओकरा देखैक। मुदा ओ दरबज्जा सँ उठि अपन कोठली दिस अबैत अछि। दोसर कोठलीमे लाल काका आ काकीमे किछु गप्प भ' रहल छलनि। बिन चाहलो ओ गप्प सभ सुन' लागल—

—"ई कहाँसँ बज्र खसल हमर नेना सभक कपार पर। बारह वर्ष पर तँ लोक श्राद्धो क' दैत छैक। अहूँ के कहने रही जे करबा दियौक श्राद्ध, नहि मानलहुँ। तें ने मुर्दा जीविक' आबि गेल।"—लाल काकीक स्वर।

—"आस्ते बाजू, दरबज्जे पर अछि, सूनि लेत। जे हैबाक छल, से भ' गेल। सभटा ओकरे त' छैक। भाइ संग राखि लेने छलाह, कहियो पितियौत नहि बुझलनि, अप्पन जकाँ रखलनि।"

—"मुदा मरबा काल कहाँ लिखि गेला एक्को धूर अहाँक नाम। बूढ़ा भितरिया छलाह। हेरायल बेटा लें' सभ किछु छोड़ि गेलाह आ हमरा लोकनि जे जीवन भरि सेवा कयलियनि, से बेकार। स्त्री नहि छलथिन। पचीस-तीस वर्ष धरि तैयो जीबैत रहलाह। के कयलकनि सभटा?"—लाल काकीक स्वर आरो तीव्र होब' लगलनि।

"अहाँ चुप्प हैब की नहि।—" लाल काका एहि बेर जोरसँ डँटलथिन —"दरबज्जे पर छथि राम, सुनता त' अनर्थ हैत।"

—"आब आर की अनर्थ हैत।"- लाल काकीक कनौन स्वर तीव्र छलनि—"नेला त' कटि गेलैक चारू भाइक। तीन तीन टा के कालेजमे देने छियैक! आब कहाँ सँ जुटत खर्च? एकटा कमौआ छथि, तनिका त' अपने बहु-बेटासँ नहि बचैत छनि। की हमरा-अहाँ के देता आ की भाइ सभके देता। कप्पारे फूटल अछि तें। ने तँ मरलो लोक घुरैत छैक कहियो?"

रामक छाती पर एक एक टा शब्द हथौड़ा जकाँ बजरैत छैक। लाल काकी ओकरा कोरामे खेला पोसने छलथिन, मातृहीन राम के अपन दूध पियौने छलथिन। से आइ ओकर घुरलापर दुखी छथिन। हुनक सन्तानक मुहसँ कौर छिना गेल छनि। मुदा ओ सम्पति पर अधिकार कर' कहाँ आयल छल? ओ तँ बहुत रास कमा लेने छल अपनो। ओ त' बाबूजी के देख' आयल छल।

बाबूजीक नाम पर देबाल पर टाङल फोटो दिस दृष्टि जाइत छैक। काकीक बक्सा नहि, अरजाल-खरजाल बीच फेकल तीनू फोटोके ताकि, ओकरा पोछि-पाछि क' फेर टङने छल देबाल पर। एकसरि मायक एक टा पैंघ फोटो, आ एकटा मे माय-बाबूजी दुनू कुर्सी पर बैसल आ तेसर बाबूजीक संग सटि क' ठाढ़ राम - दस वर्षक राम। फोटो कें निहारैत ओकरा गाम अयबाक अपन निश्चय पर अपने तामस होइत छैक। कोन काज छलैक? सौंसे गाम त' मुर्दा मानि लेने छलैक। एकटा बाबूजी के प्रतीक्षा छलनि, चौदह वर्ष धरि प्रतीक्षा छलनि। मुदा तकर बाद मासो दिन नहि रहलाह। आस टूटि गेलनि। घुरबेक छलैक तँ किछु दिन पहिने किएक ने घूरल? बाबूजी कें एक बेर देखि त' सकैत!

फोटोक सोझाँ ठाढ़ राम कान' लगैत अछि। आब संसारमे क्यो नहि छैक ओकर। एहि बेर गामसँ घुरला आ पड़यला पर ककरो ओकर घुरबाक प्रतीक्षा नहि रहतैक। ओ निश्चय करैत अछि जे एहि खेप गामसँ जाइत काल तीनू फोटो अपना संग लेने जायत।

× × × × ×

मोन अकछ' लागल छलैक। दुइये सप्ताहमे गाम असह्य लाग' लागल छलैक। आब गामबलाक जिज्ञासा खतम भ' गेल छैक। आब ओकर दरबज्जा पर भोरसँ साँझ धरि भीड़ नहि रहैत छैक। लाल काका आब लाल काकीके जोरसँ बजबा

लेल डँटैत नहि छथिन, अपनो संग संग फुसुर-फुसुर कर' लगैत छथि । बड़ी-बड़ी राति धरि दुनूक फुसुर-फुसुर ओ सुनैत अछि। गौआँ सभक संग लाल काकाक खुसुर-फुसुर होइत रहैत छनि । किछु ओकरो लब अबैत छैक—बितलाहा चौदहो वर्षक हिसाब लियनु । मालिके बनल छलाह। सभटाक हिसाब लियनु पाइ पाइक । एतेक टा राज-पाट अछि । सभ टा हथियौने छथि । अपन कब्जामे करू ।"

राम सभटा सुनि क' अनठा दैत छलैक । गामक संग कोनो स्नेह-सम्बन्ध नहि जुड़ल छलैक आब । फेरसँ घुरि जयबामे कोनो बाधा नहि छलैक । कहियो कोनो क्षण बिदा भ' सकैत छल ।

ओहि दिन ओहिना गाममे टहल' विदा भेल छल । कतेको ठाम घुरलाक बाद सीताक घर लग पयर थकमका गेल छलैक । घर नहि, एकटा खोपड़ी सन । एकेटा घर आ ताहू घरक टाटमे सौंसे भूर । उजड़ल आङन, जंगलाह पछुबार. जेना कोनो बोनमे एकटा खोपड़ी ठाढ़ हो—उपेक्षित । खुट्टा सँ बान्हल महींसक पाँजर सकटल जेना महीनोसँ खोराकी नहि भेटल होइक । बड़ी काल धरि ओतहि ठाढ़ रहल । भीतर आंगनमे जयबाक साहस नहि भेलैक । तखने एकटा स्त्री बहरयलैक घरसँ बाहर--पातर देह, उज्जर सन साड़ी, मुदा सींथमे सुन्दर, पैंतीस-चालीसक वयस, रूच्छ केश आ मुखाकृति ओहिना कोमल आ स्वच्छ । ओकरा ठाढ़ देखि चौंकलैक आ मुँहक भाव परिवर्तित भेलैक आ ओहि क्षणमे ओ चिन्हलकै—ओ त' सीता छलैक । ओकर सौंसे शरीर झनझना गेलैक । सीताक एहन स्वरूप ? ओकरा एक टा आर सीता मोन पड़लैक !

सीताँ हँसैत लगमे ठाढ़ि छलैक- नहि चिन्हलहुँ ?

—"चिन्हबौ कोना नहि ? मुदा एना किएक ? सीता ओहिना हँसैत रहलैक— "सभ टा त' देखिये रहल छी ।"

ओ एक टा अवाधिकार प्रश्न कयलकै– सासुर किएक ने चल जाइत छैं ?

ओ ओहिना हँसैत रहलैक—"लैये ने जाइस छथि । जबंदस्ती जाउ ?"

ओकरा आगू किछु नहि फुरयलैक । बड़ी काल चुप्प रहल । डेगो आगू नहि बढ़लैक । फेर पुछलकै—"तोहर बेटी बड़ सुन्नर छौक । हमरा सँ भेँट कयने छल । तोँ त' देखौ ने अयलैँ । ओ ओहिना हँसैत रहलैक—'कोना अबितहुँ ?

हमरे डरे ने पड़ायल रही । डर भेल जे हमरा देखैत बेरी फेर पड़ायब तँ फर चौदह वर्ष धरि गामक दिस मुँह नहि करब ।" एहि बेर ओकरो हँसी लागि गेलैक । अपराधी भैयो क' ओ अनेरो एतेक वर्ष धरि सीता पर खिसिआयल रहैत छल । ई त' एकदम मुक्त छैक । आब गामसँ बेशी हल्लुक आ ग्रंथिहीन भ' क' घुरि सकत । आब कोनो अपराध बोध नहि कचोटतैक ।

सीता टोकैत छैक—'की सोच' लगलहुँ– फेर डरा गेलहुँ । सत्ते एतेक डर भेल हमर बातक ?"

चारू कात सँ लोक हुलकी देब' लागल छलैक । सभक ठोर पर मुस्की छलैक—कोनो विशेष अर्थ भरल । चौदह वर्ष धरि बाहर रहल ओकर चरित्र केँ रहस्यमय आ संदिग्ध मानैत छैक सभ । आनो स्त्री आ छौँड़ी सभक ठोर पर अर्थ-पूर्ण हँसी बेर-बेर देखनें छैक एहि पन्द्रह दिनमे । सीताक उपेक्षित घर आ चारू कातक अर्थपूर्ण हँसी । बहुत किछु स्पष्ट भ' जाइत छैक ।

राम सीताक बातक उत्तर बिनु देने जल्दी-जल्दी डेग उठबैत अछि—एकटा निश्चयक संग । आब ठहरब बेकार छैक । छाती पर राखल पाथर आब हटि गेल छैक । अपराध-बोधसँ मुक्त भ' गेल अछि । आब निश्चिन्त भ' गामसँ घुरि सकत । मुदा नहि जानि कियैक, सीताक उजड़ल उपेक्षित घर-आङन, ओकर बेटाक सुन्दर अबोध आकृति ओकरा बेर-बेर कचोटैत छैक । पढ़बा-लिखबाक वयस मे महीस चरबैत छैक । ओ किछु मदति देतैक तँ सीता लेतैक ? उत्तर ओकरा बूझल छैक । तैयो ई प्रश्न बेरबेर ओकरा मोन मे उठलैक— कतेक दिन धरि ई प्रश्न ओकर मोन मे अहुरिया कटैत रहलैक । मुदा ओकरा सीताक घर दिस जयबाक साहस नहि भेलैक ।

× × × × ×

लाल काका आग्रह कयने छलथिन—"किछु दिन आर रहि जाह । एतेक बर्ष पर अयलह आ एतेक जल्दी जाइ छह । लोक की कहत हमरा ।

लाल काकी खूब कनलथिन—"पहिल बेटा छह हमर । दूध पियौने छियह । एतेक कठोर नहि बनह । किछु दिन रूकि जाह ।

तीनू फोटो अपन बक्सा मे राखि ओ विदा भ' गेल छल । बाबूजीक नोसिदानी, छड़ी, चश्मा, गीता आ पुस्तक सभ सेहो ताकि-ताकि क'

वन्हबा लेने छल। लाल काका कनैत कहने छलथिन—"एकरा नहि ल' जाह। भाइक आखिरी निशानी अछि।"

ओ सभटा बन्हबा लेने छल। मोटरी-चोटरी ल' दू टा आदमी स्टेशन चल गेल छलैक। दरबज्जा पर फेर भीड़ छलैक। कतेको बात। कनफुसकी—"फेर सभटा राज-पाट छोड़ने जाइत छी, लूटि-पाटि करवा देताह। कमसँ कम व्यवस्था कयने जाउ सभक। कतेको मुँह पर अर्थपूर्ण भाव—"ककरो राखि आयल हैताह कलकत्ता मे। ने तँ एना सभटा छोड़ि-छोड़ि क्यो जाइत अछि।"

ओ विदा होइत अछि। घर-दरबज्जा, गामक लोक, पाछाँ छूटि जाइत छैक। एहि खेप प्रायः अन्तिम। ओ घुरि-घुरि क' तकैत अछि। गामक सिमानसँ बहरा जाइत अछि। अपन गाछी भेटैत छैक—ओहिना पैघ, किछु आरो बेसी झमटगर। ओ मचान कहाँ गेलैक? मुदा मचान कहाँसँ ओतैक एहि जाड़ मास मे। ओ त' जेठ-बैशाख छलैक। मचान पर चित्त पड़ल छल राम।

खिलखिल हँसी सुनि पलटल छल। सीता ठाढ़ि छलैक। गाछी मे सौंसे डम्हायल आम लटकल छलैक आ सोझा मे सीता ठाढ़ि छलैक—खिलखिल हँसैत। ओ टोकने छलैक—"एना हँसैत कियैक छेँ गय? दू मास मे बियाह हेतौक, तकरे खुशी मे मातल छेँ?"

ओ लजा क' चुप्प भ' गेलैक। तखन ओकरा आश्चर्य भेलैक जे दुपहरिया मे एकसरि ओ कोना आयलि छलैक। ओ टोकि देलकै—"दू मासक बाद विवाह छौक आ तोँ गाछिये-गाछिये बौआइत छहीक?"

सीता फेर हँस' लगलैक—"त' की हेतैक।"

तखने ओ एकटा अनर्गल प्रश्न कयलकै—"आ विवाहक बाद की होइत छैक?"

"दुर!"—ओ लजा गेलैक।

"कह ने, की होइत छैक?"—ओकरा अपन जिद्क औचित्यक ध्यान नहि छलैक।

—"हम की जाने गेलियैक? तोँही लाल बुझक्कड़ छेँ, त' कह ने।"—लजाइतो सीता बाजि गेलैक।

आ अनायास ओकर सम्पूर्ण शरीर मे तनाव भरि गेलैक—एकटा अपरिचित उन्मादक तनाव। सौंसे गाछी गमक' लगलैक आ ओहि गाछीक बीच ठाढ़ि भरलि-पूरलि सुन्नरि सीताकेँ ओ नव दृष्टि सँ देखलकै आ पूर्ण आवेश सँ पकड़ि देहसँ साटि लेलकै—"त' ले, हमही देखा दैत छियौक जे की होइत छैक?"

कनहु विरोधक आभास ओकरा नहि भेल छलैक। आवेग शान्त भेला पर देखलकै जे ठेहुन मे मूड़ी गोतने ओ कानि रहलि छलैक, हिचुकि रहल छलैक। ओ लज्जित-सन लग मे ठाढ़ छलैक। कनैत-कनैत ओ ठाढ़ि भ' गेलैक आ ओकरा दिस तकैत बाजि उठलैक—हम कहि देबनि नूनू काकाकेँ। भरि गामकेँ कहबैक। तोँ...... "तो......

सीता बात सम्पूर्ण करब छोड़ि कनैत पड़ा गेलैक। राम किछु क्षण सुन्न भेल ठाढ़ रहल। फेर आतंकित भ' गेल। सीता बाबूजीकेँ कहतनि, सौंसे गामकेँ कहतैक......। आतंके देह सिहरि गेलैक—ज्ञान-परान लुप्त भ' गेलैक। ओ पड़ायल। पड़ायले चल गेल। दू दिन धरि भूखल-प्यासल दौड़ैत रहल.......।

"राम मामा!......राम मामा।" क्यो पाछाँसँ सोर पाड़ि रहल छलैक। आइ राम पड़ायल नहि जा रहल छल। आइ त' सभक सामनेसँ जा रहल छल। तखन के पाछाँ सँ खेहारने आबि रहल छलैक?

राम पाछाँ तकलक। सीताक बेटा दौड़ल आबि रहल छलैक। ओकर हाथ मे एकटा मोटरी छलैक। लग आबि ओ एकटा चिट्ठी हाथ मे देलकै। अकचकायल राम चिट्ठी खोललक—

'हमरा बूझल छल, अहाँ गाम मे नहि टिकब। जहिये अहाँ गाम आयल रही, तहिये सँ बूझल छल। चिट्ठी तहिये सँ लिखि क' रखने रही, मुदा द' नहि सकलहुँ।

"हम अहाँ के की कहू ? कहियो किछु नहि कहलहुँ। जहिया गाम भरिक छौंड़ी नाम द्वारे अहाँक नाम लगा क' हँसी करैत छलि, जहिया जबरदस्ती अपना दिस झिकने रही, तहियो किछु नहि कहने रही। बाद मे कानलि रही, कानि क' धमकी देने रही। मुदा ककरो किछु नहि कहलियैक। माइयोकें नहि।

चतुर्थीक राति हुनका कहि देने रहियनि। नहि जानि कियैक ? अहाँ अपन क्षणिक आवेग मे हमरा किछु द' गेल रही, ओकरा हुनका सँ नुकयबाक पाप हमरा बुते नहि भेल। नीक लोक छलाह। हल्ला-फसाद नहि कयलनि। ककरो किछु नहि कहलथिन। चतुर्थीक प्राते जे गेला से फेर नहि घुरलाह। सुखी छथि, बाल-बच्चा छनि। हम अभारी छियनि।

मुदा, अहाँक देल भार आब नहि सम्हरि रहल अछि। मायो नहि रहलि। एकसरि नहि सकैत छी। अहाँक बेटा महींस चरबैत रहय, से अहाँकें नीक लागत ?

हमर चिन्ता नहि करू। आत्महत्या नहि करब। असली सीतो नहि छी, हमरा लेल धरती नहि फाटत। बज्जर धरती पर जीबि लेब हम। चौदह वर्ष हम अहाँक देल वस्तु कहुना सम्हारि क' रखलहुँ, आइ घुरा रहल छी। अहुँक हिसाब बरोबरि भ' जायत। सीता पर कोनो तामस नहि रहत। तामसो हैत त' उपाय कोन ? आब हम नहि सम्हारि सकब। मुन्नूकें ल' जइयौक। मनुक्ख बना दियौक।"

पत्र पढ़िक' राम एकटा नव आवेग सँ कांप' लागल। मुन्नूक हाथ पकड़ि लेलकै—"माय कहाँ छौ ?"

मुन्नू हाथ सँ संकेत कयलकै—" ओत', ओहि गाछक पाछू मे ठाढ़ि अछि।"

मुन्नूक हाथ पकड़ि राम ओम्हरे दौड़ल जेना सीता पड़ायलि जाइत होइ, जेना एखने धरती फाटिक' सीता के ग्रहण क' लेतैक। ओकरा ओहि सँ पहिने पहुँचबाक छैक।

गाछक मोट जड़िक ओहिकात सीता ठाढ़ि छलैक। लग आबि हाथ पकड़ि लेलकै। दोसर हाथ मे मुन्नूक हाथ छलैक – "अहाँक लेल धरती नहि, हम्मर बज्जर हृदय फाटल अछि सीता। अहाँ ओहि मे धँसि जाउ। मुन्नू के नहि, पहिने हमरा मनुक्ख बना दिय' ?"

सीताक आँखिक नोर प्रसन्नता सँ चमक' लगैत छैक। स्टेशन दिस डेग उठबैत कहैत छैक—"चलू।"

—"नहि सीता, ओम्हर नहि, गाम दिस चलू। चौदह वर्ष पहिने जे बात अहाँ लोककें नहि कहलियैक, से हम कहबैक, ने त' कथा असम्पूर्ण रहि जायत।"

सीता आ मुन्नूक हाथ पकड़ि गाम दिस घुरैत राम मोन पाड़बाक चेष्टा क' रहल छल जे रामराज्य मे की-की भेल छलैक ?

अप्रैल १९७४

ढ़ेप

बड़का काण्ड भ' गेलैक ओहि राति। चरवाह ढ़ेप फेकि सूति रहल आ भरि गाम घोल होइत रहलैक। भरि गाम नोत छलैक। भोरे-भोर रामेश्वर झा सभक आङनक मुहथरि पर जा जोरसँ चिचिया आयल छलाह—"लूटनबाबू ओइ ठामसँ पुरखदहा दिस नोत!" पुरखदहा दिस माने पुरखाहा दिस। आब स्त्रीगणे-पुरुष नोत कहियो-कहियो होइत छैक—पाँच साल, दस साल पर क्यो साहस करैत अछि। नहि त' भरि गाम पुरखदहा दिस! आ, आब त' भरि गामोक माने बड़ छोट भ' गेल छैक! दुगोला आ भतबरी। भगिनमान टोलकेँ भगवानपुरसँ दुगोला छनि। अपना कारणे नहि! चौधरी घरक भगिनमान छथि ओ लोकनि। मुदा ओ लोकनि मानि लेने छथि जे चौधरी परिवार माने सुनील चौधरी। हुनका दुगोला त' हमरा लोकनिकेँ दुगोला! ओना भगिनमान टोल कहलापर ओ लोकनि आब बिगड़ि जाइत छथि। हमरा लोकनि कथीक भगिनमान? जनिका जमीन देलथिन, बसौलथिन, से भगिनमान! हम त' तेसर पीढ़ी मे छी! अपन बाहुबलेँ उपार्जन करैत छी, जीबैत छी। एहि बात पर आब गाममे दू मत नहि छैक। उपार्जन चाहे जतबा कयने होथि, संचय ओहि सँ अधिक अबस्से छनि। सभ घर-सुखी-सम्पन्न। एकाधे घर टूटल छथि, सेहो सभक मुँह धयने रहैत छथि। खाली सन्तू बाबू वोटमे ठाढ़ भ' अपन सभटा गमा चुकल छथि। अर्जित कयल जमीन नित्य जा रहल छनि। ने त' सभ किछु ने किछु जोड़ने जा रहल छथि। तेँ गाममे आब भगिनमान टोल नहि कहैत छनि, कहैत छनि 'बिड़ला टोल'। मुदा ताहू पर तामसे होइत छनि, व्यंग्य बुझाइत छनि। ओना भगिनमान टोलक लोक सभ बड़ प्रतिभाशाली। पढ़बा-लिखबामे आगू। देखबा-सुनबामे भव्य—गोरनार-चारि हाथ लम्बा! नीक-नीक ओहदापर। मुदा प्रवृत्तिसँ भेड़िया धसान। जे सुनील चौधरी कहथिन, ताही मे हाथ उठा देताह। अपन कोनो स्वतंत्र मत नहि। ई बात पछिला तीस-चालिस वर्षसँ आबि रहल अछि। अन्तर एतबे भेलनि अछि जे जा भरि सुनील बाबूक स्थिति ठीक छलनि, साँझुका बैसार हुनके दरबज्जापर होइत छलनि। आब भोर साँझ सुनील चौधरी भगिनमान टोल जाइत छथि। भगिनमान टोल नहि, बिड़ला टोल।

सुनील चौधरी द्वारे बिड़ला टोलकेँ भतबरी भगवानपुरसँ आ भोला चौधरी द्वारे पछबारि टोलकेँ। मामिला-मोकदमा भेल छलनि भगवानपुरक चौधरीसँ। बहुत दिन धरि चललनि। आब ने मोकदमा छनि, ने भगवानपुरक चौधरी जीवित छथि। मुदा दुगोला ओहू टोलकेँ छैक। हकारो-तिहार नहि।

मुदा, लूटन बाबू ने त' पछवारिये टोलमे छथि आ ने बिड़ले टोलमे। ओ तँ गामक बीचमे छथि। ओकरा लोक कहैत छैक—बड़ टोल।

कहियो एकटा बड़का बड़क गाछ छलैक ओहि टोलमे। ओ गाछ कटि गेलैक, मुदा नाम छैक—बड़ टोल! एहि दुगोलामे सभसँ वेसी फायदा अही टोलक लोक सभकेँ भेलैक। कोनो अवसर अयलापर अपने टोलमे निमहि जाइत अछि। झट कहत—हमरा लेल तँ सभ अत्याज्य। जेहने भगवानपुरक चौधरी, तेहने सुनील चौधरी! जेहने पछबारि टोल, तेहने बिड़ला टोल! ककरा छोड़ू, ककरा राखू। हम सभ नहि पड़ब एहि झगड़ामे! अपने टोलमे निमहि लेब।

गामक आबादी बड़ कम आ गठन बड़ सोझ-साझ छलैक। एक परिवारक तीन पट्टीदार, तेँ तीन टा फराक-फराक पट्टी आ टोल। एक पट्टी, कने दूर जा बसलाह, भगवानक मन्दिर बनबौलनि तेँ भगवानपुर। चारि घर मालिक आ बादमे किछु भगिनमान। बेटीकेँ बियाहक बाद सासुर नहि पठौलनि, जमीन-जथा द' गाममे बसा लेलनि। दोसर पछबारि टोल—दोसर फरीकक, गामक पछबारी सिमानपर। हुनक भगिनमान सभ सटले बसल छथिन, मुदा ठोलक नाम फराक छनि—भीड़पर। कनेक ऊँचपर बसल छथिन, पोखरिक भीड़पर। पोखरि कहब ठीक नहि हैत, जाठियो नहि छैक, तेँ लोक कहैत छैक—बुढ़िया वला डबरा। आ तेसर टोल सुनील चौधरी वला, असल चौधराना, पुरना डीह, गामक बीचमे। मुदा, भगिनमान टोल कने हटिक' गामक उत्तरी सिमानपर, आठ-दस घर। पहिलुका भगिनमान टोल, आब लोक कहैत छैक—बिड़ला टोल।

एहि तीनू टोलकेँ—चौधराना, पछवारि टोल आ भगवानपुरकेँ लोक सवा पाँच आना कहैत छैक—फराक-फराक। तीनू मिला क' पौने सोलह आना। बचि गेल एक पाइ—पुरनका, ताहिमे बड़टोल जकर छिकार गामक दक्षिणमे पीपड़ टोल

पुरना जमीन्दारीक मनेजर आ खरखाह आदिक परिवार। पीपड़क गाछ आइयो छैक—बेस झमटगर। दस-दस घरक टोल। आ बड़ टोलमे आठ-दस घर। एकर अतिरिक्त एकटा धनुकटोली छैक—ई सभ पहिने ड्योढ़ीमे खवासी करैत छल, आब कलकत्ता—सिलीगुड़ी रहैत अछि। एकाध गोटे गाममे पकड़ा गेल त' खबासी कयलक। बिड़ला टोलक उत्तरमे खतबे टोली। कहार सभक टोल। पहिने ई सभ पालकी उठबैत छल आ जन-बोनिहारक काज करैत छल। आब त' ने पालकी रहलैक ने खड़खड़िया। नवकी कनियाँ सभ स्टेशनसँ पयरे चल अबैत अछि। मुदा खतबे टोलीमे लोक भेटब मोस्किल। आधा लोक दूधमे पानि मिला दरभंगा जा बेचि अबैत अछि आ किछु आइसक्रीम आ कुलफी बेचैत अछि। किछु जन-बनिहारी कयलक आ बाँकी रातिमे चोरि करैत अछि। पछवारि टोलक पश्चिम दक्षिणमे सेहो एकटा टोल छैक, मुख्य गामसँ बाहर—दुसाध सभक। ई सभ पहिने ड्योढ़ीक बर्त्तन-बासन मँजैत छल आ महीस चरबैत छल। आब दरभंगामे रिक्सा चलबैत अछि आ सिलीगुड़ीमे इंजिनसँ खसाओल-चोराओल कोइला बेचैत अछि। मलेरियामे ई टोल एकदम पतरा गेल रहैक। दू-चारियेटा बचि गेलैक—रोगियाहा सभ। तखन गामक किछु जमाय सभकेँ बसौलक। आब फेर टोल भरि गेल छैक।

पहिने तेँ ई गाम एक परिवारक कहबैत छलैक। स्टेशनपर ककरो पाहुन उतरैत छलैक त' अपन पाहुन जकाँ लोक अरियाति क' अनैत छल। ककरो पुतोहु-बेटी अबैत छलैक, सभक जन कहारमे जाइत छलैक। ककरो चरबाह ककरो महींस दूहि दैत छलैक आ खबास ककरो आङनमे पानि भरि दैत छलैक आ भार ल' कुटुम्बक गाम जाइत छलैक। आब दोसरक पाहुनकेँ लोक चिन्हितो नहि छैक। एक गोटेक जन दोसर गोटेक काज नहि करैत छैक—केहनो बेगरता होअय। बेटी-पुत'हु स्टेशनसँ पयरे गाम अबैत छैक आ ककरो जन अपन पट्टीक मालिककेँ छोड़ि दोसरकेँ प्रणामो नहि करैत छैक। 'हमरा कोन मतलब हे, कोनो हमर मालिक छथि!' उचित बोनि देलोपर आनक पट्टीमे रोपनी नहि करत, मुदा कटनीमे आँटी देबैक त' चल आओत। माने रोबसँ नहि, लोभसँ सुनत।

तहिना बड़टोलक लोक आब मनेजरी आ चरचांङकमे नहि रहैत छथि। मालिक मे ककरो लग काजो नहि छैक। एहू टोलक लोक सभ आब पढ़ि-लिखि बाहर नौकरी करैत अछि, डाक बाजिक' जमीन खरीदैत अछि आ साले-साल पक्का पिटबैत अछि। आ, ताहिमे पहिल नम्बर छैक लूटन झाक बेटा चन्दनक। बाहर रहैत

अछि, खूब कमाइत अछि। सभ साल जमीन खरीदैत अछि। ओहो गाम आयल छल। बाबा एक सय वर्ष जीवि स्वर्गवासी भेल छलथिन। बाप आ दुनू पित्ती सेहो गामे छलैक। सभ मिलि निर्णय कयलक जे एहि बेर टोला ल'क' नहि निमहब। सभकेँ नोत देबैक। जनिका अयबाक हैतनि, औताह। आ भोरे-भोरे रामेश्वर झा गाममे सभक मुहथरि लग जा कहलथिन—'लूटन झा ओहि ठामसँ पुरखदहा दिस नोत दैत छी। पहिने रामेश्वर झा बीच अँगनामे जाइत छलाह आ जोरसँ सुनाक' कहैत छलथिन—'फल्लाँ बाबू ओहिठामसँ नोत।' मुदा आब वयस भेलनि। नवकी कनियाँ सभ सभ आङनमे आबि गेल छैक। तेँ मुहथरिये लगसँ हाक द' दैत छथिन। ई काज गाममे रामेश्वर झा केँ छोड़ि आर क्यो नहि क' सकैत अछि।

मुदा, ओहि साँझ गणेश ठाकुरक चरवाह जे काज कयलक से त' क्यो नहि कयने छल। पहिले खेप बैसल छलैक—धीया-पुता सभ। दही परसले जाइत छलैक कि लूटन झाक आङनमे ढ़ेपा बरिस' लगलैक। धीया-पुता सभकेँ चोट लगलैक, सभ उठि-उठि क' पड़ाय लागल। चारू कात सँ लोक दौड़ल। ढ़ेपा बरिसब बन्द भ' गेलैक। तक्का हेरी भेल। ढ़ेपा फेकनिहार नहि पकड़यलैक। धीया-पूता फेर बैसि गेल। सकरौड़ी परसल जाय लगलैक। तखने फेर तड़ातड़ ढ़ेपा बरिस' लगलैक। एहि बेर चन्दन धपायल छल। गणेश ठाकुरक बाड़ी मे छपकल चरबाह बलेलबाकेँ पकड़लक आ पकड़ि क' चारि हाथ देलकैँ। आरो छौड़ा सभ लुधकल। गणेश ठाकुरक भाउजि ओम्हरसँ दौड़लथिन—"एहन अन्हेर जुनि करू। निरपराध के नहि मारियौक।" तैयो लोक नहि मानलकनि त' चरवाह केँ अपन पाछाँ नुका लेलनि। ओम्हरसँ गणेश ठाकुर सेहो धड़फड़ायल अयलाह, सभक संग बहस कर' लगलाह—"अनेरो ढ़ेपा फेकत हमर चरवाह। झुट्ठे दोष लगा मारैत छियैक, ठीक नहि हैत।" विवाद बढ़ैत देखि चन्दन घुरि क' अपन काज मे लागि गेल। मुदा छौंड़ासभ गणेश ठाकुरक संग भीड़ि गेल। बहस होब' लागल। मन्टू बाबूक बेटा अविनाश अगुआ छल। ओकरा के रोकतैक? मन्टू बाबूक बेटा सभकेँ हुनक जिबितो लोकसभ बेकहल कहैत छलनि गाम मे, किएक त' ओसभ बजैत छल, सभ घटनापर स्वतंत्र रूपसँ बजैत छल। अविनाशक संग गणेश ठाकुरक बहस भैये रहल छलनि कि ओकर बहिन सेहो ओत' पहुँचि गेलि। गणेश ठाकुरक भाउजि हाथ नचा-नचाक' बाजि रहल

छलथिन। अविनाशक बहिन केँ देखिते लग आबि ओकर मुँहपर हाथ नचाक' बाज' लगलथिन—केहन अवण्ड छौ तोहर भाइ। मना नहि क' होइत छौक ?"

अविनाशक बहिन बुझनुक जकाँ बाजलि—"अवण्ड जकाँ त' बूढ़ो लोक सभ क' रहल अछि। ककरा-ककरा मना करियौक ?"

बिगड़ि क' गणेश ठाकुरक भाउजि चाट उठा देलथिन। छौड़ी हँसैत आङन दिस पड़ा गेलि। बहसो कने कालक बाद शान्त भ' गेलैक। मुदा घण्टे भरिक बाद दोसर कुकाण्ड भेलैक। अविनाशक भाइ बिभास पेठियापर सँ अयलैक। ओहो विद्यार्थिये छैक एखन, बीस बाइस वर्षक। सभ टा सुनिते आगि लेसि देलकै। तामसे रङल गणेश ठाकुरक आङनमे पहुँचि गेल। विभास केँ देखिते गणेश ठाकुर सकपका गेलाह। ओकर उग्र स्वभाव सँ ओ परिचित छलाह। लग आबि विभास पुछलकनि—"अहाँ एकटा चरवाहकलेल, जे दोषी छल, एतेक टा काण्ड कोना कयलहुँ ? हमर बहिनपर चाट उठयबाक साहस कोना भेल अहाँ लोकनि केँ ? जवाब दिय' ?" गणेश ठाकुर डरक लेल ततेक सिटपिटा गेलाह जे बोल लाग' लगलनि। मुदा, हुनक भाउजि विभासक लग आबि मुँहपर हाथ चमकाब' लगलथिन। विभास एक-दू बेर रोकलकनि—"अहाँ हटि जाउ काकी', अहाँ स्त्रीगण छी, हम अहाँ सँ गप्प कर' नहि चाहैत छी।" मुदा, ओ ओहिना मुँह पर हाथ चमकबैत रहलथिन। विभास हुनका हाथ सँ ठेलि तामसे बमकैत आङन सँ बाहर चल आयल।

एक घंटा बाद लूटन बाबूक दरवज्जापर भीड़ छल। ब्राह्मण सभ जुटि गेल छलाह भोजनक लेल। आ, सभकेँ सम्बोधित करैत सुनील चौधरी कहि रहल छलथिन—"एकर पंचयती हैतनि। विभास अन्याय कयलनि अछि। स्त्रीगण पर हाथ उठौलनि अछि घर पैसि। ओ आङनमे ओँघरा गेलीह, ऊपर सँ गणेश आ गणेशक बेटा त' डरे बेहोश भ' गेलनि। ई अन्याय नहि चलतनि गाममे हमरा लोकनिक रहैत।

कोम्हरोसँ विभास ओत' पहुँचि गेल। ओकरो नोत छलैक। सुनील बाबूक बात सुनि टोकलकनि—"अहाँ एहि बातमे नहि बाजू। हमरा अहाँकेँ आइ दस-वर्ष सँ दुगोला अछि, बाबुएक समयसँ। मामिलो-मोकदमा छल। आब बाबू नहि छथि, कोनो झगड़ो नहि अछि। नव झगड़ा नहि उठाउ।"

सुनील बाबू बिगड़ि उठलाह—'हम कोना नहि बाजब ? तोँ ककरो घर पैसि जनीजाति केँ बेइज्जति करबहक आ हमरा लोकनि चुप्प रहब ? पंचैती हैबे करतह।"

विभास आरो उग्र होइत बाजल—"के ककर घर पैसैत छैक तकर पंचैती करब' लागब हमसब, त' सभ दिन पंचैतिये होइत रहत।"

बात बढ़ि गेलैक। दुनू गरज' लगलाह। सुनील बाबूकेँ हुनक बेटा रोकलकनि—"अहाँ चुप्प रहू बाबू। अहाँ कियैक एहिमे पड़ैत छी ?" मुदा, ओ नहि मानलथिन। बजिते रहलथिन। विभासकेँ नवयुवक सभ अपना दिस घीचिके पाँतमे बैसा लेलकै, पात परसाय लगलैक। भोजन शुरू भ' गेलैक। गणेश ठाकुर बिड़ला टोलक अश्वस्थामा झाक संग बैसल छलाह। भोजनक संग कनफुसकियो भ' रहल छलनि। अश्वस्थामा झा आस्ते सँ कहलथिन—"अहाँ काल्हि मोकदमा अवस्स करू। रुपैया-पैसा, लाठी, जकर काज पड़त, हम देब।

भरि राति सभ आङनमे एतबे कनफुसकी आ विवाद होइत रहलैक। प्रात भेने महादेव झा एकटा लिस्ट लेने विभासक दरबज्जापर ठाढ़ छलाह, डरे कने सिटपिटायल—"दूत अवध्य होइत अछि। दूत बनि आयल छी। पंचक सूची अछि बत्तीस गोटेक। एहिमे जनिका मानी कहि दिय'। पंचैती हैत।"

सुनील चौधरीक दूत ठाढ़ छलनि। विभास लिस्ट ल' कहलकै—"की भेल ? मोकदमाक गप्प छल राति ! आब पंचैती पर अयलहुँ। लाउ, लिस्ट दिय'। बाद मे हम अपन नाम देब।

दूत चल गेलाह। विभास लिस्ट देख' लागल ! पहिल पंच लग दस वर्षक तीन-तीन टा सरकारी फण्डक हिसाब बाँकी छनि, दोसर साइकिल चोरबैत काल पकड़ा क जेल भ' आयल छथि, तेसर बाध-बोन बाड़ी-झाड़ीमे चरैत लोकक छागर पर्यन्त मारिके खा जाइत छलाह, चारिम एकटा मौगीक संग......। विभास के लिस्ट पढ़ि खूब हँसी लगलैक। ओकरा मोड़िक' पाकिटमे राखि ओ रसूलपुर बजार दिस बिदा भेल।

बाटेमे अश्वस्थामा झा सँ बकबक भ' गेलैक। ओ किछु गोटेक संग रतुके खिस्सा पसारने छलाह आ विभास केँ दोषी करार द' रहल छलथिन। पंचक लिस्टमे हुनको नाम छलनि। विभास टोकलकनि—"अहाँक नाम पंचक लिस्ट मे

देखलहुँ अछि आ अहाँ दूनू पक्षक सुनबाइ स पहिने अपन फैसला द' रहल छियैक। ओहुना, पंच अहाँ लोकनि भैये नहि सकैत छी। अहाँ लोकनिक बुद्धि त' सुनील काका लग बंधक अछि।"

विभासक उग्र रूप देखि अश्वस्थामा झा विशेष बहस नहि कयलथिन। ओतहि सँ ओ रसूलपुर बजार पहुँचल। ओत' बड़ सनसनी छलैक। अखबार आबि गेल छलैक। राति रेडियोसँ ओ न्यूज नहि सुनि सकल छल। बेतिया गोली-कांडसँ अंदेसा बढ़ल छलैक। मुदा, पटनाक घटना त' एकदम अप्रत्याशित छलैक। हिंसा, अगिलग्गी आ लूट-पाटि। पुलिसक गोलीसँ पाँच मृत आ कमसँ कम पचीसो घायल— अखबारक आँकड़ा छलैक। लोक पहिनेसँ उत्तेजित छल। विभासक पहुँचिते युवावर्गमे आरो उत्तेजना आबि गेलैक। झट एकटा सभा भेलैक। छात्र-संघर्ष समितिक गठन भेलैक। विभास ओकर संयोजक छल। एकटा जुलुस निकाललक। सौंसे इलाकामे गामे-गाम नारा लगौलक। सुनील बाबूक घर लग किछु बेसी नारा लगलैक, पुतला सभ जरलैक। जुलुसक बाद सझुका गाड़ीसँ विभास दरभंगा चलगेल, ओतुक्का छात्र नेता सभसँ परामर्श लेब'।

विभासक माय दिन-राति चितामे रहैत छलैक। हरदम कोँढ धड़कैत। दस गोटे दस रंगक समाचार अनैत छलैक। ओ बेटीकेँ कागज कलम द' जेठका बेटाकेँ चिट्ठी लिख' कहलकै "मोन लागल अछि। पटनामे बड़ हल्ला छैक। तोरा लोकनि कोना की छह? एम्हर गामो दुश्मन भ' गेल अछि

× × × ×

शहर जेना बदलि गेल छैक। कर्फ्यू नहि छैक आब, तैयो आतंक छैक, आशंका छैक। आफिसजाइत काल आकाश सोचि रहल छल जे एना कोना भ' गेलैक? सोचलापर बितलाहा किछु दिन एखनो स्वप्न जकाँ लगैत छैक, यद्यपि प्रत्येक घटनाक सबूत उपस्थित छैक शहरमे, कागजमे, लोकक ठोरपर आ आतंकित हृदयमे। ठाम-ठाम अनशनकारी। सत्याग्रही सभक टेन्ट आ टेन्टमे छात्र, स्त्रीगण आ धीयापुता सभकेँ देखैत ओ आफिस पहुँचि जाइत अछि।

आफिसमे आइ-काल्हि उपस्थिति एकदम पतरायल रहैत छैक, भोरक' त' आरो बेसी। घण्टा-दू-घण्टा लेट त' अधिकांश लोक! लेट-मार्क त' होइते नहि छैक। शहरक असामान्य स्थितिक कारणेँ यूनियनक साधिकार मांग अयलोपर घण्टो समूहने समर्थन, तर्क-बितर्क। साफ प्रशासन आ भ्रष्टाचार उन्मूलनक, छात्र— आन्दोलन, महगी एवं बस्तु-जातक अभावक……आ जयप्रकाश नारायणक………।

आकाश चुपचाप अपन कुर्सी पर बैसि जाइत अछि! मोनमे बहुत किछु होँड़ैत छैक, मुदा, कुर्सीपर आँखि मुनि पड़ल-पड़ल मोन स्थिर करबाक चेष्टा करैत अछि! विभागमे आयल चारिये-पाँच व्यक्ति खूब जोर-जोरसँ बहस क' रहल छैक जाहिसँ ओकर ध्यान बेर-बेर उचटि जाइत छैक। दू एक टा शब्द ओकर कानमे पड़ैत छैक—आन्दोलन…… घेराव…… अनशन… …पुलिस जुलुम… …।

ओकरा अनायास ओ दिन मोन पड़ि जाइत छैक। छात्र वर्ग गवर्नरकेँ विधान मण्डलमे भाषण देब'सँ रोकबा-लेल कटिबद्ध छलैक। बारह-एक बजे धरि ई इलाका एकदम शान्त छलैक। बाट सुन्न, सवारी बन्द। बीच-बीचमे हिजैक कयल एकाध बस विद्यार्थी सभके लदने एम्हरसँ ओम्हर चल जाइत छलैक। आर ककरो पता नहि। मुदा, बारह बजैत बजैत सनसनी पसरि गेलैक। दूरसँ धूआँ देखाइ पड़लैक। आफिसक लोक सभ जगह छोड़ि-छोड़ि ऊपर छतपर ठाढ़ भ' गेलैक। ओ सभ तखनो ठाढ़ रहलैक जखन मात्र किछु गोटेक टोल, जाहिमे छात्र एक्कोटा नहि बुझाइत छलैक, सौंसे सड़कपर कब्जा क' लेलकै…… होटल जर' लगलैक……दोकान लुटाय लगलैक। ओ सभ तखनो ठाढ़े रहलैक जखन जरैत मकानक छतसँ उतरबाक चेष्टामे एक टा स्त्री चौमहलासँ धरतीपर आबि गेलैक।

फायर बिगेड नहि अयलैक। पुलिस नहि अयलैक। होटल-दोकान-मकान जरैत रहलैक आ ओकर दफ्तरक सभ लोक तमाशा देखैत रहलैक। आनो-आनो दफ्तर आ घरक लोक जत' आगि नहि लागल छलैक, जे नहि लूटल गेल छलैक, छत पर ठाढ़, गलीमे दुबकल तमाशा देखैस रहल आ मिनट-मिनट पर बिना बेतारक समाचार सुनैत रहल – गवर्नरक भाषण भ' गेलैक……लाठी चार्ज भेलैक……छात्रनेता घायल भेलैक…… सर्चलाइट आफिस जरि गेलैक। गोली चललैक अछि।

आ, जखन-जखन कोनो एम्बुलेन्स सड़क बाटे गेलैक, लोक सभ घेँट नमरा-नमरा बिनु देखनो एक दोसरकेँ समाचार देब' लगैक—हे…… वैह…ओहूमे लाश छैक… शोणित देखैत छियैक—

देखबाक बातपर आकाशकेँ एक टा साँझ मोन पड़लैक! कतेक दिनुका बाद साँझमे दू घंटाक हेतु कर्फ्यू हटल छलैक……। आकाश सेहो बन्द भेल-भेल अकछायल छल, सड़कपर आबि गेल छल। सड़क-बाजारमे भीड़े-भीड़ छलैक। लोकसभ घूमि-घूमिक' सभ सड़ककेँ देखि रहल छल, अपन बहु-बच्चाकेँ देखा

रहल छल……यँह देखियौ……इहो जरल छैक……हे यँह, एतहि गोली चलल छलैक……। जेना कोनो प्रदर्शनी लागल होइ ! फर्क एतबे जे लोक प्रदर्शनी घुमैत काल जकाँ निश्चित नहि छल ! दुइये घण्टाक बाद फेर कर्फ्यू लगतैक । लोक जल्दीमे छल, । बजबामे आशंकितो, कोम्हरो क्यो सुनि ने लैक !

आब कर्फ्यू नहि छैक, ऊपरसँ सभ शान्त छैक । मुदा ओहि दिन त' स्थिति भयावह छलैक । ओ आफिसमे छल कि कर्फ्यू लागि गेल छलैक ! कोनो सबारी नहि ! ओ मुख्य बाट छोड़ि गलीक बाट धयने छल । कहियो गेलो नहि छल ओहि बाटे ! बाटमे क्यो पाछाँ-पाछाँ अबैक त' होइ जे पाछाँसँ मारिये देतैक । जीपक आवाज सुनैत' लगैक जे कोम्हरोसँ आबि पुलिस ओकरे पकड़ि लेतैक । कहुना घर पहुँचल तँ दोसरे समस्या आबि गेलैक । गैस खतम, घरमे कोइला-लकड़ी नहि ! रातुक भोजन बनब मस्किल । वस्तु जात अछैत उपास । घरक पछुआड़मे एक टा कठही बक्सा फेकल पड़ल छलैक ! ओकरे तोड़ि-ताडि कहुना खिच्चड़ि पाकि सकलैक । भोरे फेर देखल जयतैक……

ओहो दिन बितलैक । आब त' सिनेमा-होटल फेर चालू भ' गेल छैक ! ने त' दिन राति कोठलीमे बन्न ! ठाम-ठाम बेसार सभ । हवामे उड़िआइत गप्प-गोलैंजर ! एक दिन त' एहन भ' गेलैक जे घरमे एक्को कनमा चाउर-आँटा नहि ! सुन'मे अयलैक जे चौराहा पर एकटा दोकान खोलबाक' विद्यार्थी सभ दू दू रुपये किलो चाउर आ डेढ़ रुपये किलो गहूम बेचबा रहल छैक ! एक-एक किलो भेटतैक ! पहिने संकोच भेलैक ! एक किलो लेल लाइनमे ठाढ़ हैत ? मोहल्लाक क्यो चिन्हतैक त' की कहतैक ? मुदा चूल्हि जरबाक समस्या सभटा संकोच केँ लगले भगा देलकै । ओहो चौराहाक दोकान पर पहुँचि गेल ! बड़वा लाइन छलैक ! ओहो लाइनमे ठाढ़ भेल ! रौदमे डेढ घण्टा ठाढ़ रहला पर जखन ओकर नम्बर आब' लगलैक कि पुलिस-पुलिसक हल्ला मचलैक आ ओहो एकटा गलीमे बेजान पड़ायल । डेरापर आयल त' पसेनासँ नहायल छल ! दम फूलि रहल छलैक ! कोँढ़ धड़धड़ा रहल छलैक !

आब त' ओहो दिन बीति गेलैक ! साढ़े तीनिये रुपए किलो, भेटि त' जाइत छैक चाउर । मासमे दसे किलो, भेटैत त' छैक गहूम राशन कार्ड पर ! मंत्रिमंडलक पुनर्गठन भ' गेल छैक, । आरो बहुत रास बात भ' रहल छैक, । महगी आ भ्रष्टाचार रोकबाक एहन-एहन बहुत रास उपाय भ' रहल छैक ।

ओहिदिन आकाश सिनेमा देख' चल गेल छल ! करमुक्त सिनेमा छलैक—राष्ट्रप्रेमक सिनेमा ! हाउसफुल छलैक मुदा टिकट भेटबामे कोनो झंझट नहि भेलैक ! खुलेआम दू रुपयावला टिकट ब्लैकमे पांच रुपयामे बिका रहल छलैक ! जकरा नहि भेटलैक ओहूमे, से मुँह विधुऔने छल । ओत'सँ किछुए हटि क' सड़कक कातमे विद्यार्थी सभ सस्त दाममे तरकारी बेचि रहल छल ! ओत' कम्म भीड़ छलैक ।

…… …आकाश चौंकि क' आँखि खोललक ! विभागमे कोनो बात पर जोरसँ ठहाका लागल छलैक ! सामने देबाल पर टांगल घड़ी देखलक ! बारह बाजि गेल छलैक । अखनो आधासँ कम्मे लोक आयल छलैक ! चपरासीसँ हाजिरी-बही मंगबौलक । जहिना लेट' सील मार' लागल कि किछु गोटे धड़फड़ायल आ उत्तेजित होइत लग अयलैक—ई त' अहाँक अन्याय अछि ! शहरमे जनता कर्फ्यू-लागल छैक, तैयो लेट मार्किंग……

ओ सील राखि देलक आ फेर क्लान्त मने ओढंगि गेल । विभागमे गप्प जारिये छलैक ! विधान सभाक विघटनक मांग, विघायकक घेराब आत्यागपत्र । आदि बहुत रास बात कानमे आब' लगलैक । गयाक फायरिंगक न्यायिक जांच पर बड़ी काल धरि गप्प होइत रहलैक आ फेर घुरि क' जे० पी०……जयप्रकाश नारायण ! ओ फेर आँखि मूनि लेलक ! पछिला कतेको अखबारी समाचार, संसदीय भाषण, ओ दू तरफा तर्क मोनमे अहुरिया काट' लगलैक—ई नहि ओ……ओ नहि ओ……।

हम नहि । ओ नहि । बहुत रास आरोप-प्रत्यारोप आ सम्पादकीय टिप्पणी मोनमे गोंगिआय लगलैक ! संगहि मोन पड़लैक सड़कक कातमे लागल एकटा चित्र-प्रदर्शनी आ नुक्कड़ कवि-सम्मेलन । ओहो गेल छल मुदा एकटा छौंड़ा जखन एकटा कागज दस्तखत कर' वास्ते देलकै, त' ओ पढ़ि क' घुरा देलकै । आन्दोलनक संग सहानूभूति फराक गप्प छलैक ! दस्तखत ओ कोना करैत ? सरकारी नोकर अछि ! मुँहजबानी बात आर छैक ।

तखने अपन टेबुल लग किछु गुलगुल बुझयलैक ! आँखि खोलि देखलक त' चारिटा छौँड़ा ठाढ़ छलैक ! ओ डरा गेल ! एहने तीनटा छौँड़ा किछु दिन पहिने बड़ा साहब लग आयल रहथि आ आफिस बन्द कर' कहने रहथि । झट गेट पर ताला लागि गेल रहैक ! ओ डरायल सन तकलक जे ओकरासँ कोन

बेसूर भेलैक। एकटा छौड़ा रसीद आगू बढ़ा देलकै— "भाइ साहब, संघर्ष समितिक हेतु चन्दा!" ओ झट पाकिटमे बंचल एकमात्र पंचटकही बलजोरी हँसैत हाथमे राखि देलकै। छौंड़ा सभ चल गेलैक। ओकर इच्छा भेलैक जे पुछैक जे अहाँ सभ कोन कालेजमे पढ़ैत छी? फेर अपन इच्छा अपने अनर्गल लगलैक!

ओ देह सोझ करैत कुर्सी पर सम्हरि क' बैसि गेल। किछु कर्मचारी अपन-अपन सीट पर आबि गेल छलैक! टिफिन हैबामे आधा घण्टाक बिलम्ब छलैक! चपरासी अजुका डाक राखि गेल छलैक! ऊपरेमे ओकर व्यक्तिगत पत्र छलैक—गामक चिट्ठी! एकदम मैल सन मोड़ल माड़ल लिफाफ, बहुत दिन पर बौआइत आयल छलैक जेना! ओ लिफाफ फाड़ि चिट्ठी पढ़' लागल—

—तोरा लोकनि कोना छ'? पटनामे। बड़ हल्ला छैक! कोंढ़ कँपैत रहैत अछि! एम्हर गाम दुश्मन भेल अछि आ तोरा गामसँ मतलबे नहि छह। भोजमे गणेश ठाकुरक चरवाह ढ़ेप फेकलकै, लोक पकड़बो कयलकै। तैयो दोषी विभास, कियैक त' ओ बजला! गणेश ठाकुरक घर गेला! अन्यायक विरोध कयलनि। असल बात तर पड़ि गेल। पंचैती हुनकेपर हैतनि! गाम माने मुँहगर लोक, जे जोरसँ बाजि सकय। वैह सत्य, वैह न्याय! एकटा दोषी चरवाह छै', एतेक पैघ काण्ड, पंचैती, मामिला-मोकदमाक धमकी। मुदा धन्य कही गामक लोक के। ओकरा कोनो मतलब नहि—'हम किएक बाजब? हमरा कोन मतलब?' ते गाम माने सुनील बाबू······गाम माने अश्वस्थामा झा······गाम माने······

विभासकें आगू नहि पढ़ल गेलैक! लगलैक जेना सभटा माय ओकरे लिखि रहल छैक! गाम माने ओ। ओ माने ओकरा सन लोक। दस्तखत कर' सँ डेरायवला, ब्लैकसँ टिकट-डालडा चीनी खरीद'वला आ जरैत मकान, घर-दोकान सँ कौतुकसँ तमाशा देख'बला। आ गाम माने सुनील चौधरी ··· गाम माने अश्वस्थामा झा···—आ देश माने······

मई १९७४

मलाहक टोल

अपन चेथरी भेल नूआकें फाड़ि-फाड़ि क' फुलेसरी बुढ़िया मलहटोलीक सुखेलहा पीपरक गाछ तर नाचि-नाचि क' गबैत अछि। नचैत-नचैत आंचर माटि मे लेटाय लगैत छैक, माथक केश छिड़िआ क' धोकचल कारी मुँह पर पसरि जाइत छैक, सुखायल चोकटल स्तन कुद क' लगैत छैक मुदा ओ नाचि-नाचि क' गबैत अछि—"हाली-हाली बरिसू इन्नर देबता······"

बताहि छैक बुढ़िया। आकाशमे मेघक एक्कोटा टिक्कर नहि छैक। ऐ साल एक्को दिन बुन्दो नहि खसलैक आ बतही हाली-हाली बरिसबाक गप्प क' रहल छैक। एही बरखाक गप्प पर ओहि दिन बभनटोली मे बड़का काण्ड भ' गेलैक। फिरंगी झा एकदम सोझा-सोझी ललकारने छलथिन सुशील मिसरकें— "एना तँ हैबे करत। ऐ साल सभठाम पानिये पानि छैक। पटना मे दिन-राति पानि, गंगा, पुनपुन—सोनमे बाढ़ि आ अहाँक नदी सुखायल, खेतमे दरारि। आर दिअनु भोट जातिक नाम पर। सभठाम जनता पार्टी जितलैक आ एम्हर अपन इलाका मे जातिक नाम पर मिश्रजीकें जिता देलियनि। ई त' हैबे करत।

सुशील मिसर जोरसँ हँसलाह—बेस कहल अहूँ। देश पर त' जनता पार्टीक राज भैये गेलैक, स्वर्गो पर अधिकार कयलक। बिना ओकर अनुमतिकें इन्द्र महराज धरती पर जल नहि ढ़ारताह।

फिरंगी झा एकदम तरंगि उठलाह—"फेर वैह कांग्रेसी दलालवला गप्प। रस्सी जरि गेल मुदा ऐंठन नहि गेल।"

सुशील मिसर एकदम मार' लेल छुटलथिन—"हमरे दरबज्जा पर हमरे संग टेढ़ी। सभटा नेतागिरी घोसाड़ि देब एखने······।"

बीचेमे लोक सभ पकड़ि क' थोड़थाम क' देलकनि, फिरंगी झा बाँचि गेलाह।

ई इलाका कोना बाँचत? असरेसा बितलैक, मघा बितलैक। एको बुन्न पानि नहि। खेत अफाड़े रहि गेलैक।

आ, फुलेसरी बुढ़िया तैयो नाचि क' गबैत अछि—हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता......।

ओना, गबै छल नीक गुलमा। जखन मलहटोली साँझ होइते अन्हारक चादरि ओढ़ि लैत छलैक आ घर-आँगन सभसँ माछ आ सितुआ जरबाक गन्ध पसर' लगैत छलैक, गुलमाक स्वर ओइ अन्हारसँ बहरा... ओइ गन्धकेँ दबा दूर-दूर धरि पसरि जाइत छलैक। मेही आ दर्द भरल स्वर। पहिने आस्ते-आस्ते आ जहिना ताड़ीक निसाँ थढ़ैत छलैक, स्वर तेज भेल जाइत छलैक आ तेज होइत स्वरमे दर्द बढ़ल जाइत छलैक आ बढ़ैत-बढ़ैत ओइ टोलकेँ लाँघि, नदीक दुनू पाटकेँ लाँघि, सौंसे गाम आ बाध-बोनमे पसरि जाइत छलैक।

आ तहिना ओइ दिन ओ बातो पसरि गेल रहैक—भरि गाम, सौंसे बाध-बोन। सभ बूझि गेल रहैक। मुदा गुलमाकेँ ककरो दिस देखबाक होश कहाँ रहैक। ओ त' खुशीसँ बताह भ' गेल छल। भोरे नेनाक जन्म भेल रहैक आ तकर कनिये काल बाद किछु चेतन आ वेसी धीयापुताकेँ एक पतिआनीसँ चलबैत आ आगू-आगू अपने झंडा लेने मही बाबू मलहटोली मे आयल छलथिन। पतियानीसँ चलैत लोक सभक हाथमे सेहो झण्डा छलैक आ सभ जोर-जोरसँ चिचिया रहल छल। ओ जुलूस ओकर घर-लग आबि गेल रहैक आ कने विलमि मही बाबू कहने छलथिन—तोहूँ चल गुलमा। आ, लाइनमे आबि जो.........

—"की बात छैक मालिक?—गुलमा बिन किछु बुझने पुछलकनि।

—"अरे, आइ बड़का खुशीक दिन छैक गुलमा। देशक गुलामीक दिन आइ समाप्त भ' गेलैक......अंग्रेज चल गेलैक! हमरालोकनिक आजाद भ' गेलहुँ। सौंसे देशमे आजादीक जुलूस बहार भ' रहल छैक। आ' तोहूँ चल...."

—"नहि मालिक। हमरा छोड़ि दिय'। आइ हमरो लेल बड़का खुशीक दिन हय। भोरे एगो ननकिरबा जनमल हय........"

—"वाह, ई तँ बड़ खुशीक बात। बड़ नीक दिनमे जनमल छौक। ओकर नाम हम राखि दैत छियौक। तोहर नाम गुलमा नहि जानिकेँ रखलकौ, मुदा ऐ

ननकिरबाक नाम हम राखि दैत छियौक—आजाद। गुलमाक बेटा आजाद, कोन रहतौक किने——"

आ, सैह नाम पड़ि गेलैक। मुदा नाम पड़बासँ पहिनहि बड़का काण्ड भेलैक। गाम-घर-बाध-बोन सौंसे बात पसरि गेलैक। गुलमाक बहु दस बर्षसँ बसैत छलैक, एक्को टा धीयापुता नहि छलैक। मुदा जखन भेलैक त' एकदम गोर धप-धप। कारी-कारी केश, पैघ-पैघ आँखि। जे देखलकै घरसँ मुसकिआइत बहरेलैक, आ भरि गाम घूमि क' कनफुसकी कयलकै।

मुदा, फुलेसरी त' सामनेमे कहि देलकै। जखन गुलमा कहलकै जे मही बाबू 'आजाद' नाम राख' कहलथिन अछि, फुलेसरी अपन बेटाक मुँह लग हाथ चमका क' कहलकै—"ठीके नाम राखि देलखुन हें बौआ। जखन बहुए आजाद भ' गेलौक, हवेलीमे ढ़ीढ़ फुला तोहर अङनामे अण्डा पाड़ि देलकौ, त' आजाद नाम पड़बे करतैक।"

गुलमा माय पर झपटल। मुदा, बुढ़िया नहि मानलकै। आर हाथ नचा-नचा क' कण्ठ फाड़ि-फाड़ि क' चिचिआय लगलैक। गुलमा तामसे बताह भ' गेल। मायक झोँट पकड़ि ओकरा लाते-मुक्के मार' लगलैक आ ओहिना मारैत-मारैत आङनसँ बाहर क' देलकै। मलहटोलीक पीपड़क गाछ तर बैसलि, जोर-जोरसँ छाती पीटि क' कनैत फुलेसरी ओही बातकेँ दोहरबैत-तेहरबैत रहलि।

बताहि भ' गेलि छलि फुलेसरी। एना क्यो अपन घरक खिस्सा दुनियाँक सोझाँ पसरैत अछि। फुलेसरी कारी छलि आ कारिये छलैक गुलमाक बाप गुदरा। गुलमो कारी छल आ ओकरोसँ बेसी कारी छलैक ओकर बहु। मुदा ओकरा गोर धपधव बेटा भेलैक। मुदा एना तँ हैबे करैत छलैक। मलहटोलीमे सभ कारिये-कारी छल। बीच-बीचमे कोनो उज्जर प्राणी आबि जाइत छलैक। पहिने कनफुसकी, फेर मारा-पिट्टी आ फेर सभ शान्त। मुदा एना क्यो गाछ तर बैसि घरक खिस्सा त' नहि पसारैत छल फुलेसरी जकाँ।

आ, एना अपन मायकेँ क्यो भगबितो नहि छल गुलमा जकाँ। ओइ दिन जे लाते-मुक्के मारि घरसँ बाहर कयलकै से फेर आँगन नहि टप' देलकै। गामे-गाम भीख माङ' लागलि फुलेसरी। मुदा साँझ होइते मलहटोलीमे घुरि

अबैत छलि आ पीपर-गाछ तर पड़ि रहैत छलि। बरखा-बुन्नी भेलैक तँ ककरो ओसारा आ ओलती---···।

अलबत्त अछि फुलेसरी। तैयो तीस वर्षसँ जीबि रहल अछि बुढ़िया। ओकरा छाहरि आ आश्रय देब' वला पीपरक गाछ सुखा क' ठुठ्ठ भ' गेलैक मुदा फुलेसरी ओहिना जीबैत अछि आ ओही ठुठ्ठ गाछतर नाचि-नाचि क' गबैत अछि।

ओइ दिन जेना गुलमा कोनो जानवर भ' गेल छल। मायकेँ लाते-मुक्के मारि-पीटि आङनसँ बैला अपन घरमे आयल। घरमे पटिया पर सहमलि ओकर बहु पड़लि छलैक आ ओकर बगलमे छलैक एकटा कपड़ामे लपेटल ओकर नेना। गुलमा ने सहमल बहुक आँखिक याचना देखलकै आ ने नवे जनमल नेनाक सुन्दरता। ओ त' आगू बढ़ि दुइये दिन पहिने खाली भेल कोखिमे समधानि क' लात मारलकै। चीत्कारक संग गेंचि गेलैक ओकर स्त्री। फेर दोसर, फेर तेसर—फेर चारिम, नहि जानि कतेक लात मारि गुलमा बताह जकाँ ओइ घरसँ बहरायल आ एक दिस पड़ा गेल। घरमे दर्दसँ कुहरैत ओकर स्त्री आ किलोल करैत नेना पड़ल रहलैक। टोलो पड़ोससँ क्यो चुप्प कर' नहि अयलैक।

मुदा, कोखिमे समधानि क' मारल लातक असरि लगले हुलकी देब' लगलैक। बिछौनसँ उठि नहि सकलैक गुलमाक स्त्री। जे छौ मास जीलैक घिसरिये कटलकै। गुलमाकेँ कहिओ कोनो दोष नहि देलकै, ने कनलैक खीझलैक। खाली अपन नेनाक मुँहमे अपन सुखायल स्तन दैत काल आँखिमे नोर भरि-भरि जाइक।

आ, गुलमाक आँखिमे त' जेना बाढ़िये आबि गेलैक। एकटा सोन सन बेटा देने छलैक ओकर स्त्री आ ओ मारलकै ओकर कोखिमे लात। सेहो बेकसूरी। हवेली जाइत छलैक ओकर स्त्री मुदा कोनो बाबू—भैया लग टांग नहि पसारने छलैक। जखन हवेलीमे सुन्नर-सुन्नर गोर-नार धीयापुता सभकेँ देखै आ अपन फूलल पेट देखय, त' सभ ठाम हाथ-जोड़य'—कोइला थानमे···सलहेसक मन्दिरमे, बाबाक मन्दिरमे ''···हमरो एहने देब बाबा, एहने सोन-सन बेटा।''

बाबा सुनलथिन। मुदा गुलमा नहि सुनलकै। सुनलकै गुलमो मुदा कोखिमे लात मारलाक बाद। आ तकर बाद कतबो अहुरिया कटलक गुलमा

ओकर स्त्री नहि रूकलैक, छौओ मास नहि। आ छौ मासक बिन मायक नेनाकेँ लेने गुलमा राति-बिराति विरहा गबैत छल—ताड़ीक निसाँमे भेर···एकसर··· सुतली रातिमे ओकर मेहीं दर्द भरल स्वर गाम-घर आ बाध-बोनमे पसरि जाइत छलैक।

मुदा गुलमाकेँ बाध-बोन जयबामे बड़ दिक्कति होब' लगलैक। जलकरमे अन्हरोखे जाल फेक' जायमे असुविधा होब' लगलैक। आजादकेँ ककरा लग रखितैक ? एक बेर फुलेसरी बुढ़िया आयलि रहैक घरक मुँहथरि धरि—''हमरा आब' दे बौआ। नेनाकेँ के देखतौ ? कनियाँ त' गेलौ······''

गुलमा नेना गुर्रा उठलेक जेना बुढ़ियाकेँ उठा क' ओहीठाम जमीन पर पटकि दैतैक, बुढ़िया जान ल' पड़ायलि। फेर घुरि क' घरक मुँहथरि लग पयर नहि देलकै। गामे-गाम भीख मङैत रहलि।

आ, गुलमा राति-बिराति बिरहा गबैत रहल। कतबो क्यो कहलकै—ककरो बसा ले', नेनाकेँ सम्हारि लेतौक, गुलमा नहि मानलकै। ओ जहिना आँखि बन्न करय ओकरा एकटा तुरत जनमल नेनाक बगलमे पड़लि एकटा स्त्रीक सहमल आँखि मोन पड़ैक आ ओ बताह भ' टेर लगा दिय'······राति-राति भरि गबिते रहि जाय।

दिनमे सुवंशाक बहु राख' लगलैक आजादकेँ। ओकरा अपनो छौ मासक नेना छलैक कोरामे, दूध होइत छलैक। गुलमा किछु टाका द' दैक सुवंशाकेँ। चारि-पाँच टा धीयापूताक रहैक आ एकसर कमैनिहार छल सुवंशा। दिक्कति रहैत छलैक।

ओना, दिक्कति त' घरे-घर छलैक मलहटोलीमे। सभ घरक एक्के हाल। एकटा कमैनिहार आ खयनिहार बहुत। ताहि पर बैसार आ बेकारी। स्त्रीगण सभ सेहो काज करैत छलि, पानिमे पैसि सितुआ बिछैत छलि, चून बनबैत छलि। तैयो बेसी काल वैह हाल—ने पेटमे अन्न ने देह पर कपड़ा आ ने घर पर चार।

गोड़ पचासेक घर छलैक टोलमे। ओइमे रह'वला दू सय, अढ़ाइ सय लोक। प्रति घरमे औसत चारिटा-पाँचटा लोक। प्रत्येक परिवारकेँ औसत

एकटा घर। घर माने खोपड़ी। जे बड़ ऊँच से तीन हाथ। जे बड़ लम्बा-से आठ हाथ दस हाथ। एतबे टा संसार। घरक आगू किछु जमीन काँट-कूस आ करचीसँ घेरल। बस्स एतबे। आ एतबो जबर्दस्तिये। बेसी घर सड़के पर। सौंसे टोले लगैत छलैक जेना बान्हक कातमे बोट पर बसल होइ। कपचैत-कपचैत छोट भेल खेतक आरि आ घुसकैत टाटसँ घेरायल किछु गैरमजरुआ आम जमीन। वासक ओ दू धूर जमीन मालिकेक देल। सर्वे कहाँ भेल रहैक?

आ कारी-कारी नमछर चिम्मर देहवला पुरुष आ कारी-कारी गुदगरि मुदा सक्कत माँटिक बनलि स्त्रीगण सभ। पुरुषक देहमे मात्र एकटा चारि आङुरक विष्ठी आ मौगीक देह पर दसहत्थी ननगिलाटक नूआ। दोसर कोनो वस्त्र नहि। बारहो मास उघार दलकैत देह आ छिट्टा सन ओझरायल माथक केश। हरदम माँटिमे लेढ़ाइत, धारक पानिमे चुभकैत धीयापुता सभ। यैह धीयापूता कखन बढ़ि क' जवान भ' जाइत छलैक आ कखन पुरुषक देह पर चारि आङुरक विष्ठी अबैत छलैक आ स्त्रीक देह पर दसहथ्थी ननगिलाट, क्यो नहि बुझैत छलैक। मुदा एकक बाद दोसर, पुश्त-पुश्तैन एहिना मलह-टोलीक कोनो घरसँ एकटा पुरुष बहराइत छलैक—कारी चिम्मड़ देह, डाँड़मे एकटा विष्ठी आ पीठ पर लटकल जालक डोरी छाती लग दहिना हाथमे आ वामा हाथमे नीचाँ लटकल माछक खोंगी। बहराइत छलैक एकटा स्त्री देह पर दसहथ्थी ननगिलाटक मैल बिन पाढ़िक साड़ी, माथ पर छिट्टा, वेश भरिगर आ दुलकी चालिक संग दुलकैत देह। आ बहराइत छलैक ढ़ौए-ढाकी धीयापूता नाङट-असर्ध, गर्दामे लेटायल-कारी लोआढ़।

आ, वैह धीयापूता सभ बिन पढ़ने-लिखने, बिन स्कूल गेने एक दिन बुझनुक आ ढेकनगर भ' जाइत छलैक। धूरामे लेढ़ाइत, पानिमे चुभकैत ओकर मोछक पम्ही देखाइत छलैक आ ओइ पम्हीसँ पहिने ओकर हाथ मे जाल, खोंगी आ नावक कग्गा आ करूआरि आबि जाइत छलैक।

मछहर सभमे भेटैत छलैक आधा माछ। डबरा-खत्ता, पोखरि-नदीमे जाल फेकि दू सेर, चारि सेर माछ मारैत छल। अन्हरोखे सुतरि गेलैक तँ सोलहन्नी, ने तँ अधिया। ओइ अधिया माछकेँ पेठियामे बेचि अन्न अनैत छल, पेट भरबा लेल।

आ जँ से नहि होइत छलैक, मछहर नहि भेलैक, बेगारमे पकड़ा गेल वा बैसारी रहलैक वा माछक समय नहि रहलैक त' मलहाक मौगी बौआइत छलैक आङने-आङन। कट' लेल धान लबैत छलैक आ चूड़ा पहुँचा अबैत छलैक। जे किछु बचलैक ताहीसँ पेट भरै छलैक। नहि त' वैह उपास आ उपास नहि तँ वैह गरैक— चेङनाक सन्ना, वैह डोका, वैह काकोंड़ आ कछुआ ....।

गुलमा छल मुदा, ओस्ताद। कोनो मछहर होउ, एकटा दू टा माछकेँ तैना ने पानियेमे मूड़ी मचोड़ि कतहुँ जालमे ओझरा दैत छलैक, जे कतबो ने ताकि लेअय, भेटब मस्किल! ओकर खोंगीकेँ कतबो क्यो उनटि क' झाड़ि लौक, दू चारि माछ सटले रहि जाइत छलैक, तेहन ब्योंत करैत छल गुलमा। मुदा, कमैबाक असल ब्योंत करैत छल गुलमा आमक मासमे! आन-आन गाम तीन-चारि मलाहक संग मिलि दू तीन टा पैघ-पैघ गाछीक आम खरीदि लैत छल। मेहनति बड़ होइत छलैक! राति-राति भरि ओगरवाही, मुदा तैयो किछु टाका बचाइये लैत छल।

मुदा, कतबो ओगरबाही कयलक गुलमा, आजादकेँ नहि बचा सकलै! ओकर बाप गुदरा औंठा छाप छलैक, गुलमा अपने औंठा छाप छल, सौंसे मलह-टोली औंठा छाप छलैक! मुदा आजादकेँ गुलमा स्कूल पठा देलकै। देहसे अंगा, पैंट आ गोरनार मुँह-कान! छौंड़ा बेछप लगैक टोलमे।

अपन नाम लिख' अबैत देरी स्कूलसँ मोन औना गेलैक आजादक! स्कूलक नाम पर घरसँ बहराइक आ गाछीमे गुल्ली-डण्डा खेलाइत रहैक! लोक सभ गुलमाकेँ कहलकै! ताबत बहुत देरी भ' गेल रहैक। ओइसँ आगू नहि पढ़ि सकलैक छौंड़ा! तैयो गुलमाकेँ सन्तोष रहैक जे ओकरा जकाँ औंठा छाप नहि छलैक।

आ, छापक नाम पर गुलमाकेँ भोटवला छाप मोन पड़ैत छलैक। तेहन ने निशान लगौने रहैक आङुरमे जे छुटबे नहि करैक बहुत दिन धरि! आ ओ पाँचटा टाका सेहो बहुत दिन डाँड़मे रहलैक, खूब मजा कयलक। मुखिया देने रहैक। ऊपरसँ, सरकार दिससँ बक्शीस आयल रहैक भोट खसैबा लेल। भरि टोलमे सभकेँ देने रहैक मुखिया आ सभ संगे-संग भोट खसा आयल छल! मुदा दोसर बेर बाटाबाटी तकिते रहि गेल गुलमा! मुखिया पाँच टाका ल' क' नहि अयलैक। ओकरा भेलैक जे ओ छूटि गेल आ सभकेँ पँचटकही बक्शीस भेटि गेलैक! ओ

टोलमे पुछारि कर' लागल ! परसू ओकरा विकल देखि कहलकै—"एना बेहाल भेने क्यो बजब' नहि औतौक आइ आ ने भेटतौक पँचटकिया ! बक्शीस वला टाका अहू साल आयल छलैक ! मुदा ऐ साल बाँटक काज नहि पड़लैक । गामक मुँहगर लोक आ इसकुलिया सभ सभकाज क' देलकै ! सभक गोट वैह सभ खसा देलकै—एक्के वेरमे एक बन्डिल ! आ टाकोक बण्डिल वैह सभ बाँटि लेतैक ।

गुलमाकेँ बड़ तामस भेलैक ! सभ लेल जे वक्शीसक टाका आयल छलैक तकरा किछुए गोटे आपसमे किएक बाँटि लेलकै ! ई त' बड़का बेइमानी भेलैक ! मुदा कहितैक ककरा ? इसकुलिया सभ जाने ल' लितैक आ मुखिया बाट चलब मस्किल क' दितैक !

असल मस्किल कयलकै आजादबा ! धीयापुतामे गुल्ली-डण्डा पर परिकल रहैक ! चेतन होइत देरी आन-आन चीज पर परकि गेलैक ! टोलेक छलैक सुनरी । भरि टोलमे गोरि छौंड़ी वैह टा छलैक ! आजादक आँखिमे गड़ि गेलैक ! छौंड़ियो छलैक बदमास ! सासुरसँ पड़ा-पड़ा अबैक । ओकर माय छलैक मुनरी ! बड़ दबाब देलकै ओकरा पर गुलमा मुदा कोनो फैदा नहि भेलैक । आजादबा माय-बेटी दूनूकेँ फँसौने छलैक ! मायक हाथमे दैक टाका आ छौड़ी हाथमे सिंगार-पटारक वस्तु ! अकच्छ भ' गुलमा सुनरीक सासुर गेल आ ओकर वरकेँ आनि टोलमे पंचैती बैसा देलकै ! सुनरीकेँ जाय पड़लैक ! मुदा गुलमाक अक्किले गुम्म क' देलकै आजादबा ! सुनरी गेलैक त' रतिया ! कारी छलैक मुदा छलैक नोखगर आ पनिगर । आज़ाद सुनरीक लेल उदास हैबाक बदला सभ ठाम कह' लगलैक—"जाने दो ससुरी को ! महीनामे एक सय डेढ़ सय रुपिया दिया आ दिन-रातिमे सात बेर-आठ बेर घर पैसा" आजाद अधिक काल एहने भाषा बजैत छलैक, 'खासक' एहन-एहन मौका पर !

गुलमा कप्पार ठोकि क' रहि गेल । बैटा आरो अवण्ड होइत चल गेलैक । मारि-पीटि क' ओकरासँ रुपैया छीनि लैक आ ताड़ी पीबि साँढ़ जकाँ बौआइत फिरय । रतिबाक बाद फुलिया·········फुलियाक बाद झुमकी ··· ·····।

आ, जहिया-जहिया गुलमाकेँ मारै आजाद, फुलेसरी बुढ़िया खूब मगन भ' नाचय—"हमरो आँखि जुड़ायल ! करेज ठण्ढ़ा भेल ! एही दिन लेल जीबैत रही !

ओइ दिन मुदा बुढ़िया आर्त्तनाद क' उठलैक ! कतहुसँ राति बितलापर

घुरल अबैत छल गुलमा । पयरमे किछु लटपटा गेलैक । जोरसँ झाड़लक पयर, तखने दाँत गड़ा देलकै । ओही पीपड़क ठुट्ठ-गाछक जड़ि लग निश्चिन्त पड़ल बुढ़िया लग जा गुलमा कहलकै—"आब चललियौ माय, काल आबि गेलौं !

बुढ़िया हड़बड़ा क' उठि बैसलैक "के, बौआ ? एना किएक बजै छैं, की भेलौ ?···· ······

गुलमा ओकर कोरामे पड़ि रहलैक—एकदम सुच्चा गहुमन छलौ माय । सत्ते कहै छियौ, कैक दिन अभरल छल एहीठाम ! आइ हबकि लेलक ! ओँघी लगैए माय, सूत' दे कोरामे·······।

—"नै रे बौआ । गहुमन नहि छलौ, धामिन हेतौ ! बड़ छैक ऐ बँसविट्टीमे । परसू कलरीक मायकेँ दूध पीबि गेल रहैक······

"नै माय····एकदम सुच्चा छलै गे ! बस्स, आब चलाचली । निरदोख पुतहुकेँ अकलंक लगौलेँ तोँ आ निरदोख परसौतीक कोखिमे लात मारलियैक हम ! दुनू गोटे खूब भोगलहुँ·······आब जाय दे·······।

आ बुढ़िया चिकरि उठलैक । ओहूसँ बेसी जोरसँ जतबा लातमुक्का खा क' गुलमाक घरसँ निकलैत काल चिकरल रहैक ! भरि टोल जुटलैक···मती सभ अयलैक मुदा ताधरि गुलमा मायक कोरामे सूति रहल छल ।

आ जखन ओकर चितामे पाछाँ मुहेँ पंचकठिया फेकि लोक विदा होब' लागल रहैक, नहि जानि किम्हरसँ मुर्दघट्टीमे आबि फुलेसरी बुढ़िया । अट्टहास कर' लगलैक—गेलैं किने अपने, बड़ निकालने छलौ घरसँ ····· ····· आब निकाल त' बुझियौ ····· ···· ।

आ बुढ़िया बड़ी काल धरि मुर्दघट्टीमे बौआइत अट्टहास करैत रहलैक । रातियो क' नहि घुरलैक ! किछु दिन गामेसँ निपत्ता भ' गेल रहैक । जहिया घुरलैक एकदम निछच्छ पागल भ' गेल रहैक । देहक नूआ फाटल, माथक केश छिड़िआयल आ लाल-आँखि । फेर ओही गाछ तर डेरा जमा देलकै । आ, अपन फाटल चेथरी भेल नूआकेँ आर फाड़ि-फाड़ि क', नाचि-नाचि क' गबैत अछि ठुट्ठ पीपरक गाछतर सभ दिन ।

आ मलाहक टोल ओहिना छैक ! साठि-सत्तरि टा घर ! घर पाछाँ औसत लोक बढ़ि गेल छैक ! सातो भ' सकैत छैक आ नवो ! माने चारि-पाँच सय

लोक । आ चारि-पाँच सय लोक लेल साठि सत्तरि टा घर ! घर नहि खोपड़ी । जे वड़ उँच से तीन हाथ, जे बड़ लम्बा-चौड़ा से आठ हाथ दस हाथ...... ...!

आइयो ओइ घर सभसँ एकटा पुरुष बहराइत छैक—कारी चिम्मर देह, डाँड़मे चारि आङुरक विष्ठी खोंसल, दहिना हाथमे पीठ पर फेकल जालक डोरी छाती लग आ बामा हाथमे नीचाँ लटकल माछक खोँगी । आइयो एकटा स्त्रीगण बहराइत छैक—देह पर दसहत्थी ननगिलाट आ माथपर पैघ भरिगर छिट्टा ! दुलकी चालिक संग दलकैत देह ! आइयो बहराइत छैक ढ़ौए-ढ़ाकी नाङट धीया-पुता सभ आ मलहटोलीक धूरामे लेटाइत, डबरा-पोखरिक कादोमे खेलाइत, वागमतीक पानिमे चुभकैत कहिया कोन देह पर चारि आङुरक विष्ठी अबैत छैक आ कौन देह पर दसहत्थी ननगिलाट, ककरो पते नहि चलैत छैक ।

आजादक सभटा काण्डक पता मुदा लोककेँ छैक ! बाप छलैक त' ठाट छलैक । ने कमयबा-खटयबासँ मतलब, ने पेटक चिन्ता ! बाप मरलैक त' आफत भेलैक । फुटानी छुटलैक, अन्न वेतरे बेलल्ल भ' गेल ! दौड़ल गेल सासुर आ अपन बहुकेँ ल' अनलक । पहिने दू-तीन बेर गुलमा अनने रहैक, मुदा आजाद मारि-पीटिक' बैला देने रहैक ! आब सुनलकै जे बड़ मेहनती मौगी छैक, कमाक' अपना संग ओकरो पेट भरि लेतैक त' दौड़ले गेल सासुर आ बहुकेँ ल' आयल ! एक बेर फेर निश्चिन्त भ' गेल ।

मुदा किछुए दिन ! बहसल मोन छलैक ! बहु कमाक' खुअबैत छलैक मुदा रूक्ख-सुक्ख । आजादक मोन बौआय लगलैक । पहिने चोरीमे परिकल ! पकड़ायल त' मारि-पीटि लोक छोड़ि देलकै ! फेर चोरी .... आ तखन डकैती ! चारू कात ओकर नाम आ नामक संग आतंक पसरि गेलैक ! लोक पहिनो डेराइत छलेक ओकरासँ टोलमे, आब इलाका डरे त्रस्त रह' लगलैक ! वारण्ट छलैक, पुलिस बेर-बेर घर पर छापा मारैत छलैक मुदा आजाद पकड़ाइत नहि छल । ओ निपत्ता रहैत छल टोल-गामसँ वर्षक-वर्ष मुदा ओकर आतंक इलाकामे बढ़िते जाइत छलैक— साले-साल ।

आ ओइ राति ओ साल भरि पर गाम आयब छल ! नुकाक' रातुक अन्हारमे—एकसर । ओकर गिरफ्तारी पर इनाम छलैक । ओकरा घरमे देखि ओकर बहु चौंकलैक ! ओकर चौंकब देखि बिगड़ैत आजाद बाजल—"ऐसे चौंकी काहे ! हमको देख के खुशी नहीं हुआ ?"

बहु कोनो उत्तर नहि देलकै । आजादक ध्यान बहुक फूलल पेट पर गेलैक आ सौंसे देहमे जेना आगि लागि गेलैक ! ओकरा घिसिया क' अंगनामे अनैत गुर्राक' बाजल—"तो ई बात है, कमाईमे बढ़ोत्तरी हुआ है ! बाज, किसका है ?" आ देलकै जोरसँ एकटा लात ओकर फूलल पेट पर ! ओकर बहु चीत्कारक संग अंगनामे ओंघरा गेलैक ! एक दिन ओकर बापो अपन स्त्रीक कोखिमे लात मारने छलैक । मुदा ओ कोखि खाली भ' गेल रहैक ! आइ ओकर लात ओकर बहुक फूलल पेटेटा पर नहि, ओकर भीतर जीबि रहल शिशुओ पर पड़ल छलैक ! मुदा चीत्कार बहरेलैक खाली ओकर बहुक मुँहसँ आ जावत दोसर लात देलकै ओइ पेटक शिशुक रक्षार्थ ओकर स्त्री एकदम चुक्कीमाली भ' दूनू हाथे दुनू ठेहुनकेँ छातीमे दबा बैसि गेलैक । तखन लात ओकर पीठ, पाँजर आ मुँह पर पड़ैत रहलैक आ ओ ओहिना चुक्की-माली भेलि एम्हरसँ ओम्हर ओंघराइत आर्त्तनाद करैत रहलि !

लोक जमा होब' लगलैक ! आजाद साकांच भेल । ओकर गिरफ्तारी पर इनाम छलैक । इनामक लोभमे क्यो पुलिस ने बजा लैक । ओ दौड़ैत स्टेशन दिस पड़ायल ! मुदा गाड़ीमे नहि चढ़ि सकल ।

ओही ट्रेनसँ पुलिस सभ उतरलैक । चारूकातसँ ट्रेनकेँ घेरि लेलकै ! ओकरे घेरबा लेल आयल छलैक खबरि पाबि ! आजाद बाध दिस पड़ायल अन्हारमे । ओम्हरो टौर्चक रोशनी आ पुलिस ! डाँड़सँ पिस्तौल निकालि फायर कयलक—अनधुन । जबाबमे तीन दिससँ गोली अयलैक आ ओकरा छेदैत चल गेलैक !

आ, जखन पुलिस ओकर लहासकेँ घिसिया क' ल' जा रहल छलैक ओकर आङनमे भीड़ लागल छलैक । दर्दसँ छटपटाइत ओकर स्त्री बीचे आङनमे एकटा नेनाकेँ जन्म द' देने छलैक आ आङनमे ओकरा घेरिक' भीड़ लागल छलैक !

आ जखन नीक जकाँ फड़ीछ भेलैक, ओहू दिन एकटा जुलूस मलहटोली बाटे बहरयलैक ! मुदा ओइ दिन आगू-आगू मही बाबू नहि छलथिन, छलथिन फिरंगी झा ! गुलमाक आङनमे भीड़ छलैक ओइ दिन, मुदा दरबज्जा सुन्न छलैक ! जुलूस आगू बढ़ि गेलैक । मुदा ठुठ्ठ पीपरक गाछतर बैसलि फुलेसरी बुढ़िया जुलूसक आगाँ ठाढ़ भ' गेलैक—"आइ की बात हइ बौआ ? कने हमरो कहू !"

"हट बुढ़िया, तों नहि बुझबहीक ! आइ बड़का महान दिन छैक ! आइ अत्याचारीक नाश आ एकताक जीत भेल छैक, जनतंत्रक जीत भेल छैक !

बुढ़िया किछु नहि बुझलकै ! बाटपरसँ नहि हँटलैक ! ओहिना बाट छेकने पूछलकै… कने बुझाक' कहू बौआ। के जितलै आ के हारलै ?" फिरंगी झा कहलथिन—इन्दिरा गाँधी हारि गेलीह आ जे० पी० जीति गेलाह।

फिरंगी झाक बात बीचेमे कटैत बुढ़िया बाजि उठलैक—"ई जे० पी० के छै बौआ ?" फिरंगी झा बिगड़िक बजलाह—चल हट बतही ! कहलियो ने, जे तों नहि बुझबहीक ! ओ लोकनायक छै, गान्धीजीक चेला—

आब बुढ़िया प्रसन्न होइत बाजलि—'त' से कहू ने ……गान्ही बाबा केँ चेला छै ! गान्ही बाबाके' त' सभ चीन्है छै ! आ ई इनिरा गान्ही त' गान्हिये बाबाक बेटी छैक …… ….।

फिरंगी झाक संग सभ जोरसँ भभाक' हँसलैक—"गय बतही ! छोड़ बाट ! ओ गाँधीजीक नहि-नेहरूजीक बेटी छैक !

बुढ़िया मुदा बाट परसँ नहि हँटलैक—"सैह भेलै किने ! गान्ही बाबाक नहि, लेहरूजीक बेटी…. —गान्ही बाबाक पोती ! सैह ने । ओ हारि गेलै मुदा ताहि सँ की हेतैक बौआ ?

अकच्छ होइत फिरंगी झा बजलाह—'हेतै तोहर कप्पार ! हट थागूसँ बतही ! गय, आब जनताक राज हेतैक, तानाशाहक नहि !

बुढ़िया भरिसक किच्छो नहि बुझलकै ! किछु काल जेना सोचैत ठढ़ि रहलैक आ फेर बजलैक—"ई 'जनता' के हय बौआ, हम नहि चीन्हे छिऐ ! मुदा हमरा त' अहाँ सभ चीन्है छी—गुलमाक माय, फुलेसरी बतही। हम त' तीस सालसँ एही गाछ तर छी —— … आइयो !

आ, फुलेसरी आइयो अपन चेथरी भेल नूआकेँ फाड़ि-फाड़िक' ओही मलाहक टोलक ओहीं ठुठ्ठ गाछ तर नाचि-नाचि क' गबैत छैक—हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता।

आ सौंसे धरतीमे दरारि फाटल छैक ! ●

सितम्बर १९७६

मलाहक टोल

पुरान चरित्रक नव कथा

माय लिखने छलैक—पटनामे बड़ उपद्रव छैक। हरदम कोंढ़ धड़कैत रहैत अछि।

समय ससरि गेल छैक। ने शहरमे कर्फ्यू छैक, ने धारा १४४। जनता राज समाप्त भेलैक। जनता (?) राज त' भैये नहि सयलैक कहियो। सभ किछु पूर्ववते रहलैक। खाली किछु लोक बदलि गेल छलैक राज-काजमे…… ——।

प्रकाशक डेरा बदलि गेल छलैक। डेरा बदलैत काल लोक सभ टोकने रहैक—नै लिय' ओ डेरा। मकान आ मोहल्ला त' ठीक ठाक अछि, मुदा मकान मालिक…… ——।

मकान मालिक छलथिन कैप्टन साहब ? ओना, पाँच भाइ छलाह मुदा पटनाये एकसरे रहबाक कारणेँ हुनके जिम्मा छलनि। मकानक उपरका तल्लामे अपने रहितो छलाह। नीचाँ रहबा लेल प्रकाश आबि गेल ! लोक सभ बड़ कहने रहै किदन सभ !

कहने कैप्टनो साहब छलथिन—लोक सभ बहुत रास गप्प कहत। मुदा आदमीकेँ चिन्हबा लेल ककरो परामर्शक नहि, अपन दृष्टिक काज होइत छैक ! जेना हम अहाँकेँ चीन्हि रहल छी, बिना कोनो जान-पहचानक अपन मकान द' रहल छी। मुदा, ई चानन ठोपवला लोक सभ, ई 'ज्ञान-भारती' टाइप लोक सभ। अजस्र घृणा अछि हमरा एकरा सभसँ। आइ सिम्पली हेट दीज पीपुल …

कैप्टन साहबक हाथमे ह्विस्कीक गिलास छलनि ! प्रकाश जखन ड्राइंग रूममे पहुँचल रहय, ओ शुरू क' चुकल छलाह ! टेबुल पर आधा बोतल खाली छलनि आ हाथमे भरल गिलास। समय ल' क' पहुँचल रहय। देखिते कहलथिन- आउ, बैसि जाउ। माइंड नहि करब। बड़ थाकि गेल रही, प्रतीक्षा नहि क' सकलहुँ, मीरा, एकटा गिलास ह्विस्की लेल दिय' त' !

कैप्टन साहबक पत्नी भीतर आबि प्रकाशकें नमस्कार क' गिलास टेबलपर राखि देलथिन। प्रकाश टोकि देलकनि—"नै, हमरा लेल नहि। हम नै लैत छी कहियो।'

पेग बनब' लेल उद्यत कैप्टन साहब चौंकि क' प्रकाशके' देखलथिन जेना ओकर कथनक सत्यताक जाँच क' रहल होथिन ! फेर सहज भावे' हँसैत कहलथिन—रह' दियनु मीरा ! ई ठीके कहैत छथि, हम चेहरा पढ़ि लेलियनि ! ई सत्ते परहेजी लोक छथि।" कैप्टन साहब जोरसँ हँसलथिन।

प्रकाशकें लगलैक जेना व्यंग्य क' रहल होथिन, मुदा ओ हँसि रहल छलथिन—एकदम निश्छल हँसी। कतहु कोनो सन्देहक गुंजाइश नहि छलैक। ओहो संग संग हँस' लागल आ गप्प कर' लागल।

आ, दू घण्टा हुनका संग बैसि, दू बोतल फैंटा पीबि आ बहुत रास भटबर' आ चटनी खा जखन ओ विदा होब' लागल छल, कैप्टन साहब कहने छलथिन—आइ सिम्पली हेट दीज पीपुल...... —

मोहल्ला वलाक लाख कहलोपर मुदा ओ कैप्टन साहेबसँ घृणा नहि क' सकल। जेना-जेना समय बितैत गेलैक, ओ हुनकर आर लग होइत गेल, स्नेह बढ़ले गेलैक। साँझ होइते कैप्टन साहेब निशामे बुत भ' जाइत छलाह। पहिली तारीखकें ओ दानापुरसँ एक-दूटा काठक बक्सामे बोतल सभ ल' अनैत छलाह आ सन्ध्या होइते अपन कोठली वा बरण्डा वा छतपर टेबुल सजा बैसि जाइत छलाह। किछुए पेगक बाद हुनका निशाँ लागि जाइत छलनि। पत्नीकें चिन्ता बढ़ि जाइत छलनि, धीया-पूता सभकें कोठली सभमे बन्द क' दैत छलथिन आ अपने एकसरे लगमे बैसि रहैत छलथिन। कखनो असीम दुलार, कखनो अकारण डाँट-फटकार। हाथ तक उठा दैत छलथिन। देहपर निशान पड़ि जाइत छलनि। तेहन मे कखनो काल नुका क' हुनकर पत्नीनीयाँ पड़ा अबैत छलथिन, प्रकाशक पत्नी लग। कैप्टन साहेब एकसर बड़बड़ाइत ऊपरसँ हाँक दैत छलथिन—चौधरी जी छी यौ।'

प्रकाश नीचाँ आङनमे आबि जाइत छल। जोरसँ कहैत छलनि—किछु चाही की कैप्टन साहब ?

कैप्टन साहब निशामे झुमैत कहैत छलथिन—यू आर ग्रेट चौधरी जी ! सभकें अहाँ एतबे पुछैत छियैक— किछु चाही ? अहाँकें अपना किछु नहि चाही ? हम अहाँकें नमस्कार करैत छी—हैट्स ऑफ टू यू !'

कैप्टन साहब गरदनि झुका अभिवादन कर' लगैत छलथिन त' हँसी रोकबा लेल प्रकाश ओत'सँ हटि जाइत छल। डेरायल सहमति, मारिक चोटसँ नोरायल, कैप्टन साहबक पत्नीक आँखिमे सेहो हँसी झलकि जाइत छलनि—"अहाँक बड़ इज्जति करैत छथि। देखू ने, निशोमे कोना सलाम क' रहल छथि ! यैह निशा त' काल छनि। आ नशो केहन ? दू घोंट कण्ठतर गेलनि की नहि, बमकब शुरू भ' जयतनि। बोतल सभक तीन चौथाइ फेकि खाली पानि मिला दैत छियैक मुदा तैयो कोनो फर्क नहि। पानियोसँ निशाँ लागि जाइत छनि जेना।

पानि मिलब'वला बात कहैत-कहैत कैप्टन साहबक पत्नी खिलखिला क' हँस' लगैत छलीह।

ओहि राति मुदा, हुनकर हँसी बिला गेल छलनि। चीत्कार क' उठल छलीह। बारह वर्षक बेटी अलगे किलोल मचौने रहनि। ओकरे लेल तँ अपनो मारि खयने छलीह, सेहो सुतली रातिमे।

चारू कातसँ अपन-अपन छत आ बरण्डा वा सामने सड़कपर लोक सभ जमा भ' गेल रहय—बन्द करू ई तमाशा कैप्टन साहब ! नीक लोकक मोहल्ला थिकैक ई। लोककें मोहल्लामे रहब, चैनसँ सूतब मोसकिल क' देने छियैक अहाँ।'

कैप्टन साहबक तामस पलटि गेलनि, पत्नी-बेटीक जान बाँचि गेलैक। ओ सब पड़ा क' दोसर कोठलीमे नुका गेलैक।

कैप्टन साहब बाहर अपन बरण्डामे आबि चिकर' लगलाह—हू द ब्लडी बास्टर्ड यू आर टू इन्टरफेयर इन माइ पर्सनल अफेयर्स। के तखनसँ चिचिआ रहल छलहुँ, सामने आउ।'

कैप्टन साहबक ललकार पर बेसी लोक सटकि गेल, मुदा किछु लोक हुनक डेराक आगू सड़कपर जमल रहल। एकटा नौजवान साहस क' आगू बढ़ल—है,-ए हम छी ! हम रोकि रहल छलौ अहाँकें। ई नीक लोकक मोहल्ला छैक। ई सभ काण्ड नहि चलत एत' ?'

—"के रोकत हमरा ? हू हैज दैट करेज ? हम अपन घरमे जे इच्छा हैत करब । दोसरके ओइसं मतलब ! आ जे हमर घरक मामिलामे टाङ अड़ाओत, ही विल रोपेन्ट···कहि दैत छी हम ।'

ओहो छौंड़ा मुदा साहसी छल । एकदम अड़ि गेलनि—हम रोकब, हमरा लोकनि रोकब । की क' लेब हमर अहाँ ।

कैप्टन साहब कोठली दिस दौड़लाह—की क' लेब ! अखने देखा दैत छी । आइ विल शूट यू । गोली मारि देब अहाँकेँ ।"

दौड़िक' कोठलीमे आबि टाङल बन्दूक उतारि लेलनि कैप्टन साहब । गोली ताक' लगलाह । तावत पत्नी भीतर आबिक' बन्दूक छिनबाक चेष्टा कर' लगलथिन । हुनका ठेलिक' खसा कैप्टन साहब गोली तकैत रहलाह । पत्नी आङन दिस बरण्डामे आबि जोर-जोरसँ प्रकाशकेँ नाम ध' बजब' लगलथिन । प्रकाशकेँ नहि रहल गेलैक । दौड़ल गेल ऊपर । तावत पेटीमे गोली भेटि गेल रहनि कैप्टन साहबकेँ । प्रकाश रोकलकनि, मुदा ओ ओकर बातपर बिन ध्यान देने गोली भर' लगलथिन बन्दूकमे । प्रकाश बन्दूक छीनि लेलकनि । छीना-झपटी कयलथिन, मुदा प्रकाश हुनकासँ बलगर छल, बन्दूक छीनि लेलकनि आ कहलकनि "नहि कैप्टन साहब ! एना करब उचित नहि ।'

कैप्टन साहब छीना-झपटी बन्द क' देलथिन, मुदा हुनकर चेहरापर घृणाक भाव उगि अयलनि—यू टू ब्रूट्स । चौधरी जी अहूँ ? अहूँक मुहेँ वैह उचित-अनुचितक पाठ । यू आर फेक टू डे चौधरी जी—एकदम नकली छी, आइ अहाँ । एण्ड आइ डोण्ट बौदर फोर द फेक पीपुल—दी हिपोक्रैट्स···

ओ 'फेक' छल—एकदम नकली । प्रकाशकेँ अपनो लागि रहल छलैक ।

ओकर अपन डेरा छलैक, पत्नी छलैक, धीयापूता छलैक, भाइ-बहिन छलैक । गामसँ मायो आबि गेल छलैक, मुदा जेना सभ किछु नकली होइ···।

कैप्टन साहबक डेरामे भरि दिन टाइपराइटर खटखटाइत छलनि । सालाना हिसाब-किताब होइत छलनि । बाप अपन जीवने कालमे सभ भाइक हिस्सा फराक क' देने छलथिन—सभक नाम फराक-फराक मकान, फराक-फराक पासबुक । खाली गाम आ मौजेक जमीन आ पटनोक मकान साझी छलनि ।

उपजकेँ बेचि मैनेजर हिसाब लबैत छलनि आ पाइ-पाइक हिसाब जोड़ि सभकेँ चेक जाइत छलनि—कलकत्ता, दिल्ली आ मद्रास । चारु भाइक हिस्सा चारि ठाम । अपन हिस्सा कैप्टन साहब अपने राखि लैत छलाह । मुदा ऐ चारि हिस्सासँ पहिने आधा-आधी हिस्सा लगैत छलनि । आध हिस्सा काका साहबक । काका साहब विदेशमे छलथिन । हुनक पासबुकमे फराकसँ टाका जमा होइत छलनि । हिसाब-किताब साफ' । हिसाबक टाइप कयल प्रति सभ पट्टीदार लग जाइत छलनि । ई सभटा कैप्टन साहब अपने कहने छलथिन प्रकाशकेँ आ कहने रहथिन—हमर बाप पिती लोकनिकेँ फोरसाइट छलनि, दूरदर्शी छलाह, सभ टा राफ-साफ क' गेला । भैयारीमे कोनो झगड़ा झंझट नहि । अपन शेयरसँ मतलब । ने तँ देयादक संग झाँउ-झाँउ करैत रहितहुँ सभ क्यो ?'

मुदा प्रकाशक परिवारमे सभकेँ संगे देखि, नौ भाइ-बहिनकेँ संग देखि निशोमे कैप्टन साहब बड़बड़ा उठैत छलथिन—हैट्स आफ टु यू चौधरी जी !

मुदा प्रकाशकेँ सभटा दोसर रंग लाग' लगलैक—एकदम नकली !

पत्नीक आकृति हरदम तनल रहैत छैक ।

बात बातपर चिचिआ उठैत छैक । अनेरो धीयापूताकेँ मारि बैसैत छैक आ कनैत धीयापूताक संग अपनो चीत्कार कर' लगैत छैक । प्रकाश रोकि दैत छैक—चुप्प रहू ! लोक सुनत त' की कहत ?

पत्नी आर चिचिआ उठैत छैक—लोक की कहत ? अहाँकेँ खाली लोकेक चिन्ता रहैत अछि ! हम लोक नहि छी अहाँक लेल ? मनुक्ख नहि छी ? हमर चिन्ता कहियो नहि होइत अछि अहाँकेँ ? मुदा ई जे छौ टा अछि······जकरा जन्म देलियैक अछि ओकर चिन्ता करियौक ! ने तँ सभकेँ गला दबा-दबा मारि दैत छियैक हमहीँ ।'

पत्नी बकने चल जाइत छैक । प्रकाशक रोकबाक चेष्टा व्यर्थ जाइत छैक । अपन कोठलीमे बैसलि माय सुनैत छैक आ ओकरो आकृतिपर भाव बदलि जाइत छैक । एक दिन ओ पत्र लिखने छलैक—पटनामे बड़ हल्ला छैक । हरदम कोँढ़ धड़कैत रहैत अछि ।' आइ ओ पटनेमे छैक, संग रहैत छैक डेरामे, मुदा लगैत छैक जेना बहुत दूर होइ ! दिनक दिन टोकबाक साहसे नहि होइत छैक । पत्नीयोकेँ टोकैत डर होइत छैक । आफिसक बादो बेसी काल डेरासँ

पड़ायल रहैत अछि। रातुक अन्हारमे दुनू गोटे विपरीत दिशामे मुँह कयने पडल रहैत अछि। प्रकाश तनाव सँ मुक्ति चाहैत अछि। ओ मुक्ति पत्नीक देहमे ताक' लगैत अछि। देह आइ अकड़ि क' काठ-कोड़ो भ' जाइत छैक। छिक्का-तीरीक चेष्टा करैत अछि त' पत्नी बेस जोरसँ बाजि उठैत छै — अइनेल बिआह करक कोन काज छल ! ई त' बजारोमे भेटि जाइत !

प्रकाश डराक' दूरि हटि जाइत अछि। बगलक कोठलीमे धीयापूता सभ छैक। बड़की बारह-तेरह वर्षक भेलैक। तेसर कोठलीमे चारु भाइ आ माय छैक। सभ सुतने हेतैक।

फेर लगैत छैक जे डेरायब बेकार छैक। कतेक दिनधरि नुकायल रहतैक ई बात ? ओकरा लगैत छैक जेना सत्ते बजारमे आबि गेल अछि ओ। सभकेँ दाम चाहियैक। सभ सम्बन्ध, सभ सिनेहक लेल दाम चाहियैक।

ओकरा किछु पुरान बात मोन पड़ैत छैक। ओ तेसर दिन गाम पहुँचल छल। उतरो छोट भाइक गरमे छलैक। अन्तिम समय नहि देखि सकल पिताकेँ ! मायक कोरामे मूड़ी नुका मायक संग कानल, छोट भाइक गरासँ उतरी लेलक आ लेलक सभक दायित्व, मोने-मोन पिताकेँ स्मरणक' !

दायित्व आब लगिचिआयल जकाँ छैक। दू टा बहिन पहिने सासुर गेल छलैक, तेसरो अपन सासुर गेलैक। चारिम बहिनक संग बेटियो मैट्रिकमे आबि गेलैक। एकटा भाइ एम० ए० क' कमाय लगलैक। दोसर एम० ए० मे आबि गेलैक आ छोटका दुनू बी० ए० मे। मुदा जेना सभ किछु गड़बड़ भ' गेलैक। लगैत छैक जेना ओ ककरो दायित्व नहि, ओकरे दायित्व सभ उठौने होइ, वैह सभसँ वेसी असक्त भ' गेल हो। पत्नी त' सभ दिन साफ-साफ कह' लगलैक – नहि छल उपाय, त' कियैक जनमौलहुँ खदर-बदर ? अनका भरोसे कतेक दिन चलत ?

ओहो सभ टा लोक-लेहाज बिसरि चिचिया उठैत अछि — ककरा भरोसे छी हम ? के दैत छैक हमर धीयापूताकेँ अन्न पानि ? अपन बलेँ जीबैत छी हम···।

पत्नी मुदा ओकर क्रोधक' चीत्कारसँ अविचलित रहैत छैक — से त' अहीं जानी। डेरामे रही दिन भरि तखन ने बुझबैक ? हम त' यैह सुनैत छी जे अहाँ कर्ज कयने छी एक लाख, खाली अपन बहु आ धीयापूताक लेल, फुटानी कर' लेल आ आब अनकर कमाइ पर पेट पोसैत छी। के कहैत अछि जे अहाँकेँ तीन

हजार मास दरमाहा भेटैत अछि ! से रहैत त' बहु धीया-पूता एना पो·ये नगबितहुँ ?'

प्रकाश डरा गेल — पत्नीक चीत्कारसँ नहि, ओइ राति देखल स्वप्नसँ। ओइ दिन पत्नीकेँ चिचिया क' कहने छलैक - एखन छी हम मुदा राति ओ स्वप्न देखलक जे ओ नहि अछि आ पत्नी धीया पूता बाटे-घाटे······ ······

नीन्न टूटि गेलैक। पसेनासँ देह भीजल छलैक — जाड़ो मासमे। पत्नी बिछौनक दोसर कात सिकुड़लि सूतलि छलैक आ ओकर दुनू कात दुनू छोटका निभेर सूतल छलैक। दोसर कोठलीमे बेटी सभ सूतल हेतैक। मुदा ओकर आँखिक निन्न हेरा गेलैक। राति भरि आँखि खूजल रखने ओ बेर-बेर दोहरथबाक चेष्टा कयलक मोने-मोन — अखन छी······ ···हम छी अखन··· ······अखन कोनो भय नहि।

एना नहि जानि कियैक होइत छैक ? एक दिन सभकेँ भयमुक्त रखबाक साहस राख'वाला एक दिन स्वयं भयभीत होब' लगैत अछि – कातर आ असहाय ! ओकरा पिता मोन पड़ैत छथिन। अपन नौ संतान संग, भागिन, भातिज, बहिन सभक उत्तरदायित्व उठौलाक बाद भयमुक्त आ प्रसन्न रहैत छलथिन। फेर नहि जानि कोना ओ निड़रता आ प्रसन्नता बिलीन भ' गेलनि। हरदम चिन्तित भय-भीत आ सशंकित रह' लगलाह। जेना भविष्यमे किछु देखि रहल होथि आ देखि-देखि डेरा जाइत होथि।

मात्र डेरायल रहलासँ भावी टरि नहि सकलनि। जहिया ओ नहि रहताह, सभसँ छोट सन्तान मात्र आठ वर्षक छलनि।

प्रकाश मुदा निडर छल। सभ किछु क' सकबाक साहस आ संकल्प छलैक। पिताक श्राद्धमे भरि गाम तीन दिन धरि कचरि क' खयलाक बाद कहलकै — कोनो खुशनामा त' नहि भेल छलनि। एक तरहेँ जवानियेमे त' मरल छलथिन बाप, साठियो कहाँ पुरलनि ? एतेक पैघ परिवार छनि, ओकरा देखितथि। ई फालतू आडम्बर कियैक ?

प्रकाशके ककरो कहबाक चिन्ता नहि छलैक। ओकरा अपनापर विश्वास छलैक। अपन बाट ओकरा जानल छलैक, अपन आदर्शपर ओकरा विश्वास छलैक।

आब लगैत छैक जेना ओकर विश्वास नकली छलैकक। ओकर आदर्श एकटा आडम्बर छलैक—मात्र अपनाके ठकबाक लेल। ओ सभ दिन सभटा काज शुरुहेसँ उनटा करैत आयल हो जेना।

घरेक लोक कहब शुरू क' देलकै—नै जानि कोना कर्ज-बर्ज भ' जाइत छनि! हमरा लोकनि त' नहि जनैत छियनि किछु। पेटो पोसबा लेल अन्न-पानि अपने जमीनसँ भ' जाइत अछि। पावनि-तिहार...... एकाध टा वस्त्र...... ताहीमे एतेक कर्ज-बर्ज।

पत्नीक आँखिमे हरदम नोर रहैत छनि "हमरासँ नीक त' दाइ—नौड़िन रहैत अछि। वर्षमे दू खण्ड नूआ, सेहो अहाँक देल नहि। देह झाँपब मोस्किल भ' जाइत अछि त' बापस माङि लैत छी। बिन मङने दस टा पाइ नहि भेटैत अछि।

बड़की बेटीक आँखिमे नोर—अइ बेर फगुआमे कपड़ा नहि। वर्षमे दूटा कपड़ा भेटैत अछि—एकटा फगुआ आ एकटा दुर्गापूजामे। अइ बेर सेहो नहि!

मायक आँखिमे नोर—आइ ओ रहितथि त' धीयापूता एना आन ठाम पेट पोसैत?" भाइ-बहिनक आँखिमे नोर—ककरो कृपापर त' जीवि नहि रहल छी! एतबा त' अखनो छोड़ि गेल छथि बाप दादा!" पत्नी आ बेटीक आँखिमे नोर...

ऐह सभ भयो एक दिन प्रकाशक डेरापर छल आ निशाँमे कैप्टन साहब बड़बड़ाइत छलथिन—यू आर ग्रेट चौधरी जी!

आइ अपनाकें सभसँ दीन आ पराजित पबैत अछि प्रकाश। घरमे दीनताक सूचक ओना एक दृष्टिमे लक्षित किछु नहि होइत छैक—नीक डेरा छैक, मोटर गाड़ी छैक, टेलीफोन छैक, नौकर चाकर छैक। ककरोसँ लाख-डेढ़ लाखक कर्जक गप्प करैत छैक त' अविश्वाससँ ओकर आँखि पसरि जाइत छैक—हँसी करैत छी अहाँ!

ओकरा मुदा आब हँसबा लेल बहाना ताक' पड़ैत छैक। दिनभरि आफिसमे सशंकित रहैत अछि जे कोनो तगेदा वला नहि आबि जाइ। सम्पूर्ण व्यक्तित्व सशंकित आ भयाक्रान्त भ' गेल छैक। डेरामे पयर दैत डर होइत रहैत छैक जे पहुँचिते कोनो सूचना ने भेटि जाइ—चाउर घटि गेल, मङा दियौक।

प्रकाश किछु बजबाक पूर्व पत्नीक प्रलाप शुरू भ' जाइत छैक—नहि जानि एहन लोककेँ बियाहक सौखे किएक होइत छैक? धीया-पूता किएक जनम-बैत अछि ओ, जकरा बुते ओकरा सभ लेल किछु कयले पार नहि लगैत होइ!'

कखनो लगैत छैक जेना पत्नी ठीक कहैत छैक। ओकरा वियाह नहि कर'क चाहैत छलैक। बियाहक पन्द्रह वर्षक अपरान्तो आइ पत्नीक देहपर, एकटा गहना नहि छैक। प्रकाश बुते कहियो कीनब पार नहि लगलैक। जे दू-चारि टा नैहरसँ आयल छलैक, सेहो बन्धक लगैत लगैत बन्धके वला लग रहि गेलैक। विवाहक पन्द्रह वर्षमे पन्द्रह टा साड़ियो कीनब प्रकाश बुते पार नहि लागल छैक।

तकर चिन्ता पत्नीकें नहि छैक। खाली धीया-पूताक मुँह देखि ओ कान' लगैत छैक—एकरा सभक की हेतैक? आब त' बड़की बियाह जोगर भेल जाइत अछि।"

मायोक आँखिमे वैह चिन्ता छैक—एकटा बियाहक जोगर बेटी, तीन तीनटा कालेजमे पढ़निहार बेटा... ...आइ ओ रहितथि!

पहिने पत्नी-मायक आँखिक एहि भयक प्रकाश अवहेलना क' दैत छलैक—चिन्ता कथीक? हम छी... ...छी एखन हम!

आब मायक आँखिक ओ भय......पत्नीक आँखिक ओ भय ओकर आँखिमे घोसिआय लागल छैक। एक दिन एहने भय अपन पिताक आँखिमे देखने रहैक। आइ लगैत छैक जेना पिताक आँखिक भय ओकर आँखिमे आबि गेल छैक... ...। ओ अयना लग ठाढ़ भ' बेर-बेर अपन आकृति देखैत अछि आ मोन पड़बाक चेष्टा करैत अछि जे पिताक ओइ सशंकित भयाक्रान्त आकृतिसँ ओकर आकृति कतेक मेल खाइत छैक।

ओना, ओकर आकृति माय सन छैक। बापक दुलारू छल, मुदा माइयो कम नहि बिगाड़ने छलैक। मासे-मास बापसँ चोरी क' सैकड़ाक सैकड़ा टाका दैत छलैक। मुदा आब पुछलापर ओ कहैत छैक—जेठ जनकें अपने परिवार पैघ छनि। बचिते नहि छनि, कहाँसँ किछु हेताह। ओ त' धन्नकटी छोट जनकें जे कमाइ छथि, ताहिमे हमरो दैत छथि, छोट भाइ-बहिनोकें देखैत छथि.....

ओहि दिन प्रकाश अवाक रहि गेल। माय डेरासँ छोड़ि चल गेलि छलीक। माय-भाइ-बहिन सभ निपत्ता। पत्नी एकसरि गुम्म-सुम्म बैसलि छलैक। कहलकै—मायकेँ छोड़' गेल छनि सभ। संझुका गाड़ीसँ गाम गेलीह।

प्रकाश दौड़ल स्टेशन गेल छल। माय गाड़ीमे बैसलि छलीक। बाकी सभ प्लेटफार्मपर छलैक। क्यो किछु नहि बजलैक। आब ककरो ओकरासँ किछु पुछबाक काज नहि रहलैक, ओ बूझि गेल। चुपचाप ठाढ़ रहल।

माय कहलकै—नहि रहि भेल! लगैत छल जेना ककरो छाती पर बैसल होइ। हरदम आँखिमे नोर, बोलीमे आगि। तीन दिन बोखारमे किलोल करैत रही दिन भरि। तोँ आफिस छलह, बाँकी सभ क्यो बाहर। तैयो ओहिना गुम्म। मुँही बज्जी नहि। एनामे नहि रहि भेल। हिनका लोकनिकेँ नहि उपाय छनि, पेट पोसहि पड़ितनि। हमरा त' गाम-घर अछि·······

गाड़ी खुजि गेलैक खिडकीसँ हाथ बढ़ा गोड़ लागि प्रकाश प्लेटफॉर्म पर सुन्न भेल ठाढ़ रहल। माय अपन गाम-घर जा रहल छैक" ···ओकर गाम-घर फराक छैक। प्रकाशक डेरा ओकर घर नहि बनि सकलैक। ओकर डेरापर ओकर भाइ-बहिन पेट पोसतैक—से माय कहने छलैक। प्रकाशकेँ सुनियोक नहि विश्वास नहि करबाक मोन भेलैक।

गामसँ चिट्ठी आयल छलैक—जा धरि उपाय नहि छनि, ता धरि सभ तोरे डेरापर पेट पोसथुन। एतेक कर्ज-बर्ज भेल छ' हमरेलोकनि (?) लेल, त' थोड़ेँ आरो कर'। कहुना सभकेँ पार लगा दहुन। बाप नहि छथिन हुनका लोकनिक····—

प्रकाशके ओही दिनसँ सभ नकली लाग' लागल छलैक। जहिया छोट भाइक गराँसँ उतरि लैने छल अपन गरामे, सोचने छल जे सभक भार ल' रहल अछि। बाप वाली ओकरे मुइल छथिन। बाँकी भाइ-बहिनक हेतु बाप जीवित छलैक···जीवित छैक।

मुदा माय लिखलकै—कहुना पार लगा दहन सभके"। ओकरा सभक बाप नहि छैक·····

ओ चिट्ठीकेँ फाड़िक' फेकि देलकै। मुदा, फाड़बासँ पूर्व पत्नी जिद कयने छलैक—कने हमहूँ देखू चिट्ठी····'

प्रकाश चिट्ठी ओकरा नहि देलकै। फाड़िक' फेकि देलकै। पत्नीक सन्देह पक्का भ' गेलैक—चिट्ठी ओकरे बारेमे छलैक। ओ अपन घरमे जा टिक ट्वेन्टी पीबि पड़ि रहलैक।

डाक्टर अयलैक। ट्यूब लगाक' रद्द करौलकै। धीया-पुता सहमल ठाढ़ रहलैक। अगल-बगलक डेरासँ लोक हुलक' बुलक' लगलैक। किछु लोक डेरा आबि पुछारी कर' लगलैक। प्रकाश गुम्म-सुम्म बैसल रहल।

डाक्टर चल गेलैक। प्राण बाँचि गेल छलैक। डरायल-सहमल धीया-पुता दोसर कोठलीमे सूति रहलैक। भाइ-बहिन अपन कोठलीमे प्रायः सूतल छलैक। प्रकाश अपन कोठलीमे दबाइक निशासँ बेहोश जकाँ पड़लि पत्नीक बगलमे बैसल छल। सम्पूर्ण डेरामे एक टा भयावह अन्हार आ चुप्पी पसरल छलैक।

प्रकाश उठिक' कोठलीसँ बाहर बरण्डापर आयल। ओत' धीया-पुताके पढ़बा लेल टेबुल-कुर्सी लागल छलैक। ओ बत्ती जरौलक आ एक बेर भीतर दिस देखलक। क्यो जागल नहि छलैक। ओ कागज-कलम ल' मायकेँ चिट्ठी लिख' लागल—

—तोँ एक दिन डेरासँ चल गेलेँ आ आइ तोहर चिट्ठी नहि पढ़' देलियनि त' कनिया जहर खा पड़लि छथि। प्राण बाँचि जयतनि। लगैत अछि जेना सभक मार्गमे हमहीँ बाधक भ' रहल छियैक। सोचने रही जे जखन सभ भाइ अपन पयर पर ठाढ़ भ' जयताह त' दायित्वसँ मुक्त हैब। तोरा लोकनि हमरा पहिने मुक्त कर' चाहैत छेँ। हमरा अयोग्यतापर दया क' समयसँ पहिने ई भार हमरासँ हँटब' चाहैत छेँ तोँ सभ।

भरिसक ई भार कहियो छलेने! हमहीँ सभ पर भार बनल छलियैक।

बाँट-बखराक बात हमरा कहियो बुझ'मे नहि आयल। तोँ कहबे", तोरा बुझबाक काजे कोन छ'? कमाइ छ', सभटा सामर्थ्य छ', तोरा बाँट-बखरासँ की फर्क पड़तह? सत्ते, कहैत छियौक माय, बाँट-बखरासँ हमरा कोनो फर्क नहि पड़त। जाहि बखरामे तोँ हमरा दिस नहि छेँ, ताहिमे आर हमर की क्षति हैत?···'

प्रकाश आर किछु लिख' जा रहल छल, मुदा तखने क्यो ठठाक' हँसलैक—हैट्स आफ टु यू चौधरी जी!'

चिट्ठीके टेबुलपर छोड़ि प्रकाश उठिक' आङनमे आयल। ऊपर अन्हार छलैक, मुदा निचला बरण्डाक रोशनीमे ऊपरका सभ किछु देखाइत छलैक। कतहु क्यो नहि छलैक। लगलैक जेना कैप्टन साहब कोनो दोगमे ठाढ़ छथिन। जोर सं पुछलकनि-कैप्टन साहब छी ?'

कोनो उत्तर नहि भेटलैक। ओकरा आश्चर्य भेलैक। ओ कैप्टन साहबक आबाज स्पष्ट सुनने छलनि। कहाँ चल गेलाथिन ?

ओ आङनसँ फेर बरण्डामे आयल। बैसिक' चिट्ठी केँ सम्पूर्ण कर' लागल......

फेर क्यो जोरसँ हँसलैक—हैट्स आफ टू यू.....'

ओ हँसी आ ओ स्वर बेर-बेर ओकर चारु कात गोंगिआय लगलैक, जेना चारुकात नाचि-नाचि, ओकर चिट्ठी पढ़ि उपहास क' रहल होइ। अवाक् भेल प्रकाश चारुकात निहारैत रहल जे ओ स्वर किम्हरसँ आबि रहल छलैक। मुदा, ओकरा कतहु क्यो नहि अभरलैक।

एक दिन एकटा चिट्ठी लेने कैप्टन साहब हँसैत आयल छलथिन—ए ग्रेट सरप्राइज चौधरी जी! महानतम आश्चर्य! आब अहाँ नहि कहि सकैत छी जे हमरा-लोकनिमे खाली हिसाबे-किताब लेल पत्राचार होइत अछि। हमरा लोकनि खाली पट्टीदारे नहि, भैयारियो अछि! पढ़ि लिय' चिट्ठी...'

प्रकाश चिट्ठी पढ़ने छल। कैप्टन साहेबक छोट भाइ लिखने छलथिन—आइ वर्ष दिन बाद एकाएक मोन पड़ल जे ७५ मे जे पटनामे भीषण बाढ़ि आयल रहैक, ताहिमे अहाँक इलाका सभसँ बेसी क्षतिग्रस्त छल। साल भरिसँ कोनो पत्र नहि भेटबाक कारणेँ आश्वस्त छी जे जान-मालक कोनो क्षति नहिएँ भेल हैत। तैयो एक बेर जिज्ञासा क' लेब उचित बुझाइत अछि.....'

पत्र समाप्त क' प्रकाश कैप्टन साहबक मुँह देखने छलनि। हुनक ठोरपर हँसी छलनि—हमरो सभमे भैयारी अछि! मान' पड़त चौधरीजी। आफ्टर आल वी आर ब्रदर्स...सहोदर छी हमरा लोकनि-..

आइ, रातिक एहि एकान्तमे चारु कातसँ गोंगिआइत ठहक्का सभक बीचमे ओकरा कैप्टन साहबक हँसी मोन पड़लैक। आ, ओकरा लाज भ' गेलैक। चिट्ठीकेँ

फाड़ि देलकै आ चिट्ठी फाड़िते ठहक्का बन्द भ' गेलैक। एकटा शान्ति पसरि गेलैक। बत्ती मिझा ओ अपन कोठलीमे आयल। आब चारुकात पसरल अन्हार भयावह नहि लगलैक। लगलैक जेना चारुकात पसरल सभ चीज फेर बदलि गेल छैक। बिछौनपर पत्नी दबाइक निशाँमे बेहोश पड़लि छलैक। दोसर-तेसर कोठलीमे धीया-पूता आ भाइ-बहिन सभ छैक। गाममे माय छैक, घर छैक... सभ किछु छैक...अपन छैक...असली छैक...।

किछु दिन बाद प्रकाशके गामसँ मायक चिट्ठी भेटलैक—२८ आ २९ अगस्तके फेर सभ' ग्रह एकत्रित भेल छैक जेना १९३४क भूकम्प बेर भेल रहैक। सभ क्यो पटनामे एक्के ठाम रहिह'। एम्हर-ओम्हर नहि जहिह' आ साकांछ भ' रहिह'...तोरे सभपर मोन अँटकल रहैत अछि...

सितम्बर, १९७९

भयाक्रांत

डाक्टर साहब अप्रतिभ भ' गेलाह ।

बहुत दिनपर भेटल छलाह ! बड़ आत्मीय आ दुलारू दोस्तक पित्ती ! देखि क' चीन्हि नहि सकल छलाह ! परिचय देला पर अवाक आ विस्मित रहि गेलाह !

अवाक आ विस्मित आरो लोक सभ होइत छथि । कतेक गोटे अविश्वास-पूर्वक चेहरा निहारैत आगू बढ़ि जाइत छथि । चीन्हियो क' रोकबाक साहस नहि करैत छथि जेना भय होनि जे कोनो अनचीन्हारकें आत्मीय बूझि टोकि बैसताह । जे क्यो टोकैत छथि से एकटा आश्चर्य आ भय सँ युक्त चेतौनी द' जाइत छथि—की क' रहल छी अहाँ ? हम त' चीन्हियो नहि सकलहुँ । एकरा रोकू ।

हम हुनकर विस्मयाहत चेतौनीकें हँसीमे उड़बैत कहैत छियनि—असम्भव ! एकरा रोकल नहि जा सकैत अछि । एकर त' दिन दुन्ना राति चौगुन्नाक हिसाब सँ तरक्की भ' रहल छैक ।

शुभचिन्तक-हितैषी अवाक मुँह ताक' लगैत छथि । हम गम्भीरता पूर्वक हुनका बुझैबाक स्वरमे कहैत छियनि—देखू । वर्त्तमान कालमे दुइए टा प्रमुख राष्ट्रीय समस्या अछि—बर्थ कन्ट्रोल आ गर्थ-कन्ट्रोल ! एहिमे पहिल समस्या अपेक्षाकृत कम गम्भीर अछि आ राष्ट्रीय स्तर पर एकरा लेल प्रयास भ' रहल अछि । मुदा दोसर समस्या अछि भयंकर। एकर नियंत्रणक कोनो उपाय नहि ।

हमर नकली गम्भीरता देखि हुनका हँसी लागि जाइत छनि मुदा तैयो ओ जाइत काल कहि जाइत छथि—एकरा हँसीमे नहि उड़बियौक, ई त' अपनाकें मारब भेल ।

आइ सँ पाँच वर्ष पूर्व डाक्टर सिन्हा सेहो कहने छलाह । बापक चिकित्सक छलाह, बच्चेसँ बापक आँगुर पकड़ि हुनकर क्लिनिकमे जाइत रही । तहिया हुनकर क्लिनिक खाली रहैत छलनि । रोगीक संग हमरा सन धीयो-पुताक संग गप्प क' लैत छलाह, नाम-गाम पूछि लैत छलाह । फेर ओ पैघ डाक्टर भ' गेलाह—एकदम व्यस्त । हमरा लोकनि सँ गप्प करबाक कोन कथा रोगियोसँ गप्प करबाक पलखति नहि रहलनि । ई सभ काज जुनियर डाक्टर सभ कर' लगलनि । दवाइक पुर्जी नवके डाक्टर लिख' लगलनि । अपने ओ एक मरीजकें तीस सेकेण्ड टाइम दैत छथिन । सभ के एके टा सवाल—की तकलीफ अछि । मुदा ओकर जवाब सुनबासँ पूर्व दस सेकेण्ड लेल रोगीक नाड़ीपर हाथ जाइत छनि आ तावत जुनियर डाक्टर रोगीक हाल लिखल पुर्जी सामने राखि दैत छनि । ओकरा पर पाँच सेकेण्ड लेल दृष्टि दौड़ा डाक्टर साहब दवाइक नाम बाज' लगैत छथि जकरा जूनियर डाक्टर गलत-सही उतारि लैत अछि आ डाक्टर साहब दोसर रोगी दिस मुड़ि जाइत छथि—

"की तकलीफ अछि ?"

ओइ दिन ओइ भीड़ो-भाड़मे मुदा डाक्टर साहब कें पलखति भेटि गेल रहनि । बाबूक हालत गम्भीर रहनि मुदा डाक्टर साहब हुनका लेल नहि, हमरा लेल चिन्तित भ' उठलाह—ह्वाट हेव यू डन ब्वाय ? इस उम्रमे इतना ओभरवेट ? विथ दिस फैमिली हिस्ट्री । डोण्ट किल योरसेल्फ ।

आ डाक्टर त्रिपाठी सेहो सैह कहलनि । बहुत रास चेतौनीक बाद बजलाह—"हम तोरा दवाइ देखाक' दैत छियौक । सभ ठीक भ' जयतौक । भोरमे एकटा अण्डा आ एक गिलास दूध, दस एग्यारह बजेमे बिना चीनीक कौफी, डेढ़ बजेमे एक टा रोटी आ उसनल हरियर तरकारी जतेक मोन होइ आ राति नौ बजेमे तहिना एकटा रोटी आ तरकारी ! साँझखन किछु फल फलहरी ।"

हमरा हालेमे देखल एक टा फिल्मक दृश्य मोन पड़ि गेल । खूब गम्भीरता पूर्वक पुछलियनि—अहाँक ई दबाइ भोजनक बाद खायब वा भोजनक पहिने डाक्टर साहब ?

डाक्टर साहब अप्रतिभ भ' गेलाह । मुदा भौजी त' हमरे अप्रतिभ क' देलनि ।

हमरासँ पाँच बरख जेठ छथि भौजी—खूब सुन्दर आ स्वस्थ । जहिआ हम पन्द्रह वर्षक रही, एक बेर विदागरी करब' हुनकर गाम गेल रहियनि । टाँगामे

हुनकर संग बिदाइक पीअर धोती पहिरि बैसि गेल रही । रास्तामे एकटा मुसलमान बटोही आह्लादसँ बाजल रहय—"खुदा ने खूब अच्छी जोड़ी बनायी है ।" भौजी लजा गेलि रहथि ।

सेह भौजी खूब गौर सँ हमर चेहरा देखैत बाजि उठलीह—'अहाँक चेहरा एहन झामर कोना भ' गेल ? केहन गोर आ कान्ति भरल आकृति रहय ?

हम अप्रतिभ भ' गेलहु । फेर कहुना सम्हरैत कहलियनि- फेर पीअर धोती पहिरि अहाँक संग टाँगा पर बैसब त' चेहरा चमक' लागत ।"

भौजी अहू वयसमे नवकनियाँ जकाँ लजा उठलीह ।

मुदा कान्ता त' जेना मर्माहत भ' गेल ! कोनो शब्दे नहि बहरेलैक मुहँसँ । नेनामे ओ हमरे टा कनियाँ बनैत छलि, कने चेतन भेला पर ताश पचीसीमे हमरे टा गोंधिया बनैत छलि आ पन्द्रहम वयसमे द्विरागमनक बाद सासुर जाइत काल हमरो कान्ह पर मूड़ी गाड़ि हिचुकि-हिचुकि क' कानलि छलि ओ बाल संगी ।

पच्चीस वर्षक अन्तराल पर ओइ बेर गाममे देखलियैक । एकदम बदलल । ने ओ रूप, ने ओ देहक कान्ति ! मुदा एतेक वर्षक बाद अपन बाल संगीकेँ देखि अपूर्व आनन्द भेल । झट आगाँ बढ़ि टोकलियैक—"कहिया अयलैं कान्ता ?"

ओ डरा क' पाछाँ हटि गेल । जेना कोनो भूत-प्रेत देखि लेने हो । आँखिमे पहिने आश्चर्य आ फेर एकटा घनीभूत पीड़ा पसरि गेलैक—तोँ पुलक ....
तोँही छैं............?

—"तोँही छैं' मे निहित विस्मय आ पीड़ा हमरा भीतर तक छेदि देलक । आगू किछु पूछब सम्भव नहि भेल । ओकर आँखि दिस देखबाक साहस फेर नहि भेल जाहिमे एकटा खण्डित स्वप्नक पीड़ा छटपटा क' घनीभूत भ' गेल छलैक । जाय लागल त' बकार फूटल—"अखन किछु दिन रहबे ने गाममे ?"

मुदा से प्रायः ओ नहि सुनलक । प्रायः सुनियो क' जवाब नहि देलक । चुपचाप चल जाइत रहलि । एक्को बेर पलटि क' पाछाँ नहि तकलक । हमर पैर सेहो ओतहि जमीनमे गड़ल रहल । अपन पच्चीस वर्षक विवाहित जीवनमे अनेक बेर नैहर आयलि छलि । प्रत्येक बेर हमर आँगनमे मायसँ अनुरोध क' जाइत छलैक आ प्रत्येक बेर सासुर जाइत काल माय लग हमरासँ भेँट नहि हैबाक कचोट

बखानि जाइत छलैक । मुदा पच्चीस वर्षपर भेंट भेल त' ठोर सिया गेलैक आ चेहरा भयाक्रांत भ' उठलैक जेना भूत प्रेत देखने हो ।

कोनो-कोनो चीज लोककेँ बड़ जल्दी आक्रान्त करैत छैक—जेना कोनो मोहक व्यक्तित्वक जादू । ओकर जादूसँ ओइ दिन 'भाभी' आक्रान्त भेल छलीह । पहिले बेर भेंट भेल छलनि । तेहन-तेहन गप्प सुनौलकनि आ तेहन अन्मुक्त ठहाका लगौलकनि मनोज जे भाभी मुग्ध भ' उठलीह । हमरे संग गेल छल मनोज । औपचारिक परिचयक बाद दस पन्द्रह मिनट ठहरल हैत आ ओही बीच चाय-पानक क्रममे बहुत रास गप्प सुना देलकनि । ओकर जाइतहि भाभी अपन पति वर्मासँ बजलीह—देखै छियै, अहींक वयसक त' छथि । मुदा चुस्ती आ चेहरा क' दीप्ति देखियौक । आ अहाँ लोकनि .... अही वयसमे एतेक टा पसरल पेट आ निस्तेज चेहरा.........।

ता' हमर चेहरा पर दृष्टि गेलनि । बात सम्हारैत 'बजलीह'—"अहाँक बात नहि कहैत छी भाइ साहब ! अहाँ त' एतेक भारी देह होइतो कतेक स्फूर्तिवान छी मुदा हिनका देखियनु.........। हरदम अलसायल.........एण्ड दिस बिग टमी ।

आ फेर अपन बातकेँ आर्थिक पक्षसँ जोड़ैत बजलीह—'असल बात छैक आर्थिक सुविधा । खाली नोकरी आ दरमाहावाला चेहरा पर ई दीप्ति आबिये नहि सकैत छैक । एहि लेल चाहियैक........—आ कि नहि भाइ साहब ?

अपन बातक चोटकेँ हल्लुक करबाक भाभीक प्रयासमे सहयोग दैत नाटकीय हम मुद्रामे कहलियनि—"असल चीज छैक भाभी, चिन्ता । एकरामे चितासँ अधैनकार बेसी छैक ।" आ फेर फारसी थियेटरक अन्दाजमे कहलियनि—

"चिता हम उसको कहते हैं जो मुर्दे को जलाती है
बड़ी है इसलिए चिन्ता कि जीते को जलाती है ।"

हमर मुद्रा देखि भाभी भभाक' हँसलीह । वर्माक मन्हुआयल आकृति पर सेहो एकर असरि भेलैक । मुदा भाभी अपन हँसी रोकि बजलीह—"ई बात झूठ भाइ साहब । अहाँकेँ त' कखनो चिन्तित नहि देखैत छी । हरदम प्रसन्न आ चिन्ता मुक्त । हिनकर बात दोसर छनि ।" हम ओहिना नाटकीय मुद्रामे कहलियनि—"इल्यूजन भाभी—बड़का भ्रम । ई त' भेल एकटा नकली चेहरा......दुनियाकेँ

देखाब' लेल••• ""अपनाकेँ बहटार' लेल•• " ऐ चेहराक पाछाँ नुकायल चेहराकेँ देखू भाभी•••...."।

हमर अभिनय पर भौजी नीक जकाँ हँसैत छथि..... अहाँ त' बढ़िया नाटक क' लैत छी भाइ साहब।

झूठ ! एकदम झूठ ! भाभी झूठ बाजलि रहथि ओइ दिन। कहाँ कोनो नाटक पार लगैत अछि हमरा सँ... कहिओ, कोनो दिन पार नहि लगैत अछि। सभ किछु ओहिना आकृति पर लिखा जाइत अछि। पत्नी अनेक बेर कहि चुकल छथि—'अनेरो झूठ बजैत छी अहाँ। अहाँक त' चेहरा कहि रहल अछि।

पकड़ैत छथि सभ सँ पहिने कका•••...बड़का कका ! सुतली रातिक निस्तब्धतामे आबि सिरमामे बैसि जाइत छथि—चिन्तित आ उद्विग्न। कनेक फुसफुसा क' कहैत छथि "एकटा विचित्र बात सुनलहुँ अछि बाउ। तहिया सँ मोन चिन्तित अछि। ओना विश्वास नहि भेल मुदा नीलकंठ कहलनि•••तेँ झूठो मोन' मे कोनादन लागल। एहि बूढ़ वयस मे झूठ बजताह ओ ?

हम उठि क' बैसैत कने उत्सुकता सँ पुछलियनि—एहन कोन बात छैक कका ?

कका आरो फुसफुसा क' बजलाह—"सुनलहुँ अछि जे तोरा बड़ बेसी कर्ज भ' गेल छ'। सुनिक' विश्वास नहि भेल। एतेक कमाइ छ', गाड़ी-घोड़ा रखैत छ', ताहि पर कतहुँ कर्ज ?

झूठ ! एकदम झूठ। भाभी झूठ बाजलि छलीह। नाटक हमरा बुते नहि पार लागत ? हम ककाक विश्वासक रक्षा लेल अपन सम्पन्नताक नाटक नहि क' सकैत छी। कहैत छियनि- 'कहने त' ठीके छलाह नीलकंठ कका !

ककाक आकृति पर पसरल आश्चर्य आ भयक भाव रातुक अन्हारोमे पढ़ल जा सकैत छल। बड़ीकाल कका स्तब्ध बैसल रहलाह आ फेर उठि क' आस्ते आस्ते अपना कोठली दिस जाइत जेना अपनहिसँ बाजि उठलाह—मुदा एतेक बेसी कर्ज ! इ सधत कोना ?

कोनाक जबाब हमरो लग नहि छल ! मुदा जे सत्य छलैक तकरा नुकयबाक नाटक कका सँ करब पार नहि लागल ! कका एक तरहेँ सन्यासी छथि ! काकी

आइ सँ पैंतालिस वर्ष पूर्व संसार छोड़लनि ! कका एकसर छथि—निर्लिप्त, एक तरहें संसारक चिन्ता सँ मुक्त। हुनको एकटा सूचना सँ चिन्ता भेलनि आ हुनकर चिन्ता केँ मिटा देब' लेल सम्पन्नताक नाटक करब पार नहि लागल।

माय केँ त' चुप्पो करब पार नहि लागल। ओ कका जकाँ लग बैसि अपनामे बुदबुदाइत नहि चल गेल, सामने बैसि जोर सँ कान' लागल। ओकरा कर्जक गप्प नहि बुझल छलै से बात नहि। मुदा गामक लोक ई बात कहैक से बर्दाश्त नहि छलैक। कनैत कनैत बाजलि—सभ त' इएह ने कहत जे हमरे लोकनि द्वारे एना कर्जमे धँसल छ' ! अनेरो सभक लग एकर खिस्सा पसारला सँ लाभ ?

झूठ ! एकदम झूठ ! भाभी खाली झूठे बाजलि छलीह। नाटक किन्नहु हमरा बुते पार नहि लागत। माय केँ चुप्प करबा लेल अपन सम्पन्नताक स्वांग करब संभव नहि भेल। हम ककरो, किछु कहने नहि छलियैक, मुदा जे स्थिति छल तकरा झाँपबाक नाटक हमरा निष्प्रोजन लगैत छल, आइयो लगैत अछि। आ भाभी कहने छलीह—अहाँ त' खूब नाटक क' लैत छी भाइ-साहब।

कार्यालयक कोनो-कोनो आत्मीय कहियो कहियो काल नितान्त अपनैती आ व्यवहारिक बुद्धि देखबैत कहि बैसैत छथि— अहाँ केँ बीन्न कोना होइत अछि, पुलक बाबू ? एतेक रास कर्ज माथ पर तखन, एतेक प्रसन्न आ चिन्तामुक्त। हमरा त' बेटीक विवाह मे अपन जमाक अतिरिक्त पाँच हजार कर्ज भ' गेल अछि, से दिन-राति माथ टनकैत रहैए। परिवार अहाँक पैघ अछि, मानलहुँ। मुदा खर्च त' अपन ओकातिएक मुताबिक करक चाही।

कहीं ओकातिक बात पर खिसिया ने जाइ, तेँ कनेकाल हमर मुँह देखि कहैत छथि—"ओना अहां सब तरहेँ समर्थ छी, अहां लेल एतेक कर्ज किछु नहि अछि ! मुदा तैयो अप्पन बूझि कहलहुँ, बूधियार लोक समय सँ पहिने चेति जाइत अछि।

बकलेल त' हमहुँ नहि छलहूँ कहियो। मुदा ई बुधियारी बला गप्प कहियो नहि बुझ' मे आयल ? आइयो नहि अबैत अछि। पत्नी दिन-राति कनैत छथि, अपन भाग्य केँ कोसैत छथि, हमर असमर्थताक विद्रूप करैत छथि, मुदा बुधियारी हमरा नहि सुझाइत अछि। हम किछु कहु' चाहैत छियनि त' चिकरि क' बाजि उठैत छथि—बस करू आब ! हमरा देवा लेल आर अछिये की अहां लग—मात्र

एकटा उपदेश, सत्रह वर्ष सँ ओकरे घोरि अ' पिआ रहल छी। हम त' बेहद पोंब सन्तोष क' लेलहुँ। मुदा ई अबोध नेना सब, ई विवाह जोगरि बेटी आ ई दूध पिबुआ बेटा। एकर भविष्य की हेतैक?

हम हुनका परबोध' लेल किछु कह' चाहैत छियनि मुदा ओ हमरा तकर मौका नहि दैत छथि। ओहिना उच्च-स्वरमे बकने चल जाइत छथि—"असलमे अहां सन लोकके वियाहे नहि कर' चाही। सभटा झंझटसँ चैन। आ अहां केँ अखनो कोन झंझट अछि। बिछौन पर पड़ैत देरी चैन सँ फोंफ काट' लगैत छी आ हम सब राति अन्हारमे जागलि, एकसरि भविष्यक आशंकासँ थरथराइत रहैत छी।

पत्नीक एहि आक्रमणसँ अपन आत्मामे उत्पन्न सिहरन केँ दबबैत हम किछु कह' चाहैत छियनि मुदा ओ ओहिना क्रोधावेश मे बड़बड़ैने जाइत छथि—"आब कोनो दोसर उपाय नहि। अहाँ पाथर छी। आब एकेटा उपाय रहि गेल अछि, एक दिन छबो नेन्ना केँ गरदनि दाबि अपनो फांसी लगा लेब। सभटा झंझट एक्केबेर चैन।"

पत्नीक अइ आक्रमणसँ हमर शरीरक शोणित जमि जाइत अछि। पत्नीक आंखिमे एकटा आहत हिंसक भाव छनि। ओइ सँ हमरो डर लगैत अछि। ओ कनैत पड़ि रहैत छथि। पड़ले रहैत छथि। प्रायः नीन्न भ' जाइत छनि।

हम चुप्प भेल बैसल रहैत छी। लगैत अछि जेना एहने क्षणमे पुरुषक मोन मे बुधियारी जन्म लैत छैक।

बुधियारीक जन्मक आशंकामे हम राति भरि जगले रहि जाइत छी।

आ प्रायः बहुत वर्ष पर पत्नी भरि राति निश्चिन्त सुतैत छथि।

अगस्त, १९८०

नवम दशकक कथा : प्रभासक

- एकालाप
- इन्द्रधनुष
- स्थानान्तरण
- बजन्ताक पोता
- विकलांग
- बाढ़ि
- रक्षक

एकालाप

ओ चिट्ठी डेरामे मनोरंजनक वस्तु बनि गेल छल।

ओना ओइ चिट्ठीमे एहन किछु नहि छलैक जकरा मनोरंजनक वस्तु मानल जाय! पोस्टकार्डमे लिखल चिट्ठी! खूब गजल-गजल घुमा-घुमा क' लिखल आखर! टेढ़-मेढ़ मुदा दूरसँ देखबामे बेस सुन्नर। असल मनोरंजन पोस्टकार्ड हाथमे लेलाक बाद शुरू होइत छैक! ऊपरसँ नीचाँ धरि एक्को आखर पढ़ि सकब सम्भव नहि। ककरो थाहे-पता नहि लगैत छैक जे ककर चिट्ठी थिकैक! होइत छैक जे क्यो मजाकसँ एहन पोस्टकार्ड खसा देने अछि। साँझखन आफिससँ डेरा अयला पर ओ पोस्टकार्ड हमरो हाथमे अबैत अछि! बड़की बेटी ओ चिट्ठी हाथमे दैत कहैत अछि—"अहाँक लेटर पप्पा, !" आ मुसकिया उठैत अछि। घर भरिक लोकक ठोरपर मुस्की! हमरा किछु आश्चर्य होइत अछि! पोस्टकार्ड पढ़बाक चेष्टा करैत छी! एक्को आखर पढ़ल नहि होइत अछि! पलटि क' पता देखैत छियैक—कोनो दोसर हाथक अंग्रेजीमे साफ साफ लिखल पता! चिट्ठी हमरे छल—एहिमे कोनो सन्देह नहि! मुदा ककर?

दोबारा-तेबारा लाख चेष्टा कयलो पर ने एक्को अक्षर पढ़ब सम्भव होइत अछि, ने कोनो अन्दाजे लगैत अछि जे ककर चिट्ठी छैक! हमर हालति देखि घर भरिक लोक ठिठिआय लगैत अछि! हमहूँ खिसिआयल सन हँसैत छी। मोनमे एकटा चिन्ता पसरि जाइत अछि - नहि जानि ककर चिट्ठी थिकैक?

चिट्ठी हमर हाथसँ छिना हाथे-हाथ बूल' लगैत अछि। सभ अपन-अपन अँटकरसँ किछु ऊटपटांग सन पढ़ैत अछि आ डेरामे ठहक्का परठ हक्का छूट' लगैत अछि! हम कपड़ा-लता बदलि जहिना ड्राइंग रूममे आबि बैसैत छी कि सामने टांगल 'दादा' (हमर पिता)क फोटो पर दृष्टि जाइत अछि आ सभटा अन्हार फाटि जाइत अछि!

एकटा पुर्जी हाथमे लेने दादा धड़फड़ायले आंगनमे अबैत छथि! माय भंसाघरमे बाजल अछि! दादा लग जा कहैत छथिन—"सुनै छी, ककरो आइये

सौराठ पठब' पड़त ! साबीक चिट्ठी आयल अछि ! पंडीजी आयल छथि सौराठसँ !"

माय कोनो उत्तर नहि दैत छनि । दादा ओइ ठामसँ हटि आंगनक बीचमे आबि जाइत छथि ! ओइ पुर्जीकेँ एक-दू बेर फेर उनटबैत छथि आ एकटा स्नेहपूर्ण खौंझाहटि हुनकर आकृति पर पसरि जाइत छनि—"की लिखैत छथि साबी से बिन अन्दाज कयने बूझबे मुस्किल !

एहने स्नेहपूर्ण वत्सल हँसी हम बहुत बादोमे दादाक आकृतिपर अभू दाइ (हमर छोट बहिन)क चिट्ठी अयला पर देखैत छलियनि—"अमू त' साबीक दोसराइत छथि । बिन अन्दाज कयने एक्को आखर बूझब मुस्किल !

सभटा अन्हार फाटि जाइत अछि ! हम लपकि क' ओ पोस्टकार्ड छीनि लैत छियैक ! साबी पीसीक चिट्ठी ! सभटा अक्षर स्पष्ट होम' लगैत अछि—

चि० हड़बड़केँ श्रीमतीक तरफसँ आशीर्वाद ! आगाँ समाचार जे……

छोट रही त' बड़ आश्चर्य होअय ! आँगनमे जखन साँझक झलकल अन्हार पसरि जाइ, घरे घर लालटेन डिबिया लेसा जाइ आ हम खेला धूपा क' अपन आंगन घुरि आबी त' कखनो माय वा कखनो बाबीकेँ देखियैक जे हमर कोनो भाइ वा बहिनकेँ कोरामे सुता दीप देखा रहल छैक ! कोरामे तेल कूड़ देल कखनो सूतल, कखनो आँखि मिलमिलबैत बच्चा आ बाबीक हाथमे ऊपर नीचाँ घुमैत जरैत दीप ! ओ दृश्य हमरा बड़ अद्भूत लागय ! बाबीक आँखिमे ममता आ पटपटाइत ठोर—माय मासु साबी पीसी, देखनिहारि··· आजी पीसी केँ हम साबी पीसी सुनि लैत छलियैक ।

हमरा अहू बातक आश्चर्य होअए जे बाबी सभ दिन साबिए पीसीक नाम कियैक लैत छनि ! फेर अपने मोनसँ उत्तर ताकि ली जे पीसी त' हमरा एक्केटा छथि, आर ककर नाम लेतैक बाबी ! मुदा कोनो साँझ खेलाइत-बौआइत साँझ भेलोपर यदि कोनो आने आंगनमे रहि जाइ त' ओतहु वैह दृश्य देखियैक । कहियो शरदक बाबी त' कहियो चुन्नीक बाबी ! हुनको हाथमे ओहिना घुमैत बारल दीप आ पटपटाइत ठोर—"माय मासु साबी पीसी, देखनाहरि सुननाहरि···……

तखन हमरा लागय जे साबी पीसीकेँ सभ बड़ मानैत छनि—अप्पन बाबी, शरदक बाबी, चुन्नीक बाबी ! सभ हुनके नाम लैत छनि । कतेक मानैत छनि सभ हुनका ।

बाबी कहैक, बापो बड़ मानैत छलथिन साबीकेँ ! सावित्री नाम देने छलथिन । बड़का जमींदार छलाह, आ ओहूसँ बड़का छलनि हुनकर रोब-दाब ! धीयो पुता सभ डेरायले रहैत छलनि, डरे लगो ने जाइत छलनि ! मुदा साबी छलीह छोटकी बेटी—बापक बड़ दुलारु ।

बाबीक बात पर बड़की बाबीकेँ लेसि दैनि—"देह मे आगि नै लगाबह हे सुभानी ! केहन मानैत छलथिन से त' सभ देखिते छनि ! अपन सातो सन्तानक लेल सभ दिन छिछिआइते रहैत छथि !

अपन जेठ बहिनकेँ बाबी कोनो उत्तर नहि दैत छलैक ! ओहुना कठोर बात कहब ओकर स्वभावे नहि छलैक आ बड़की बाबी त' अपने जेठ बहिन छलैक, सेहो बाल बिधवा ! सातमे वर्षमे जखन स्वामी संसार छोड़ि देलथिन, त' बड़की बाबीकेँ सासुरो छूटि गेलैक ! बाप रहथिन दरिद्र भलमानुस आ छोटकी बहिनकेँ रहैक बड़का जमींदारो ! बड़की बाबी छोट बहिनक संग ओकरे सासुर चल आयलि ! जिनगी बिता देलक !

ओकरा मोनमे आगि रहैक अपन पहाड़ सन एकसरूआ जिनगीक अर्जित एकमात्र पूजी ! जखन तखन ओ धधकि उठैत छलैक ! बाबी जखन साबी पीसीक बापक दुलारू हैबाक बात कहैक, बड़की बाबी एहिना धधकि उठैक ! बाबी बुझबैत कहैक—"एना नहि बाज' ठक्कनि ! बापक दुलारू अवस्से छलीह साबी ! ओहुना कोनो बाप, कोनो गरीबो बाप जानि बूझि क' अपन बेटीक गरदनि कटैत अछि ? हुनका जाति-पाँतिमे, उच्च कुल-शीलमे बेटा-बेटी विआहबाक बड़ सौख रहनि । कहुन जे नशा रहनि । सभ बेटीकेँ तहिना बिआहलनि । बड़की दुनू भागमन्त छलीह, सखा-सन्तति भेलनि आ स्वामीक अछैत संसारसँ गेलीह । साबीकेँ कोनो जन्मक चकलाहा छनि, भोगि रहलि छथि !"

बाबीक ई तर्क बड़की बाबी नहि मानैक ! कोनो आर कठोर बात कहैक मुदा ओ नहि सुनैक ! बाबी किछु बेशी ऊँच सुनै । किछु नहि, खूब बेसी ऊँच । बड़की बाबी अपन बात फेर दोहरबैक मुदा बाबी तैयो ने किछु सुनैक । बड़की बाबी लोहछिक' कहैक—"कप्पार तोरा कहिय', तोहर त' काने जरल छ'…… ……

आ ई दृश्य देखि आ दुनू बहिनक प्रेमालाप सुनि घर भरिक लोक खूब हँसैत छल !

ओइ दिन मुदा सभक आँखिमे नोर भरि गेल छलैक ! दादाक आँखिमे नोर, बड़का काकाक आँखिमे थरथराइत पानि । बड़की बाबी आ मायक आँखिमे दहो-बहो नोर ! खाली बाबी आशंकित-अपस्यांत, सभ लग दौड़ैत ! पहिने अपन बहिनके नेहोरा कयलक—"कने हमरा कह' ने हे ठवकनि ? एना सभ वयो कनैत किएक छ' ?"

बड़की बाबी कोनो जबाब नहि देलकै ! बाबी अपन छोटका बेटा लग गेलि —"तों कह' गट्टू ! की बात छैक ?"

दादा ओकरा टारैत कहैत छथिन—"कहबौ बादमे ! तों चैन सँ बैस ने !

बाबीके मुदा चैन नहि ! ओ बड़का बेटा लग गेलि—तोंही कह' ने लोचू ! की भेलैक अछि ?

बड़का काका किछु कहबाक चेष्टा करैत छथि ! ठोर थरथराइत छनि मुदा एक्को शब्द नहि बहराइत छनि ! ओ ओत'सँ बाहर दलानमे चल जाइत छथि ! कोनो आशंका बाबीक मोनके दलमलित कर' लगैत छैक ! ओ हमर माय लग जाइत अछि—"आब हम नहि मानव जसमन्ती दहुरिया ! एना सभक्यो मिलि क' हमर जान नहि लिय' ! कहूहमरा जे की भेल अछि……

माय आँखिक नोर पोछि कहैत छैक – "सौराठ सँ आदमी आयल छैक । मीसर……"

बाबी चीत्कार नहि करैत अछि ! अपन कोठलीक माटिपर पड़ि रहैत अछि ! ने आँखिमे नोर, ने ठोर पर कोनो शब्द ! भोरसँ साँझ होइत छैक, साँझसँ प्रात ! बाबी ओहिना पड़ले रहि जाइत अछि । बड़की बाबी बेर-बेर लग जा कहैत छै —"आब उठह, साहस करह सुभानी !"

बाबीक शरीरमे कोनो स्पन्दन नहि ! बड़की बाबी बेर-बेर देह डोला थाकि क' ओतहि बैसि अपने कान' लगैत अछि । दादा कतेक बेर लग जा कहि अबैत छथिन —"उठ माय ! एना कयलासँ गेनिहार घुरि औथुन ?" बाबी तैयो ओहिना निशब्द पड़लि रहैत अछि । बड़का काका बेर-बेर ओकर कोठली मे जाइत छथि मुदा बिन टोकने घुरि अबैत छथि !

तेसर दिन सौराठबला पीसा अबैत छथि – पंडीजी ! गामक हाइ स्कूलमे हेड पंडित छथि ! दादाक पितिऔत बहिनक वर आ पीसाक पितिऔत भाइ । बिल्ली पीसी सेहो ओही घरमे बिआहलि छथि ! सझिए आंगन छनि ! जमायक अयबाक बात सुनि बाबी झट उठि बैसैत अछि । धोती सँ नीक जकाँ देह-हाथ झाँपि लैत अछि, आँचर कने मुँहपर घीचि लैत अछि ! पंडीजी बड़ी काल धरि सभटा बात कहैत छथिन ! बाबी चुपचाप सुनैत अछि, देहो ने हिलैत छैक ! पंडीजी उठिक' बाहर जाइत छथि आ बाबीक आर्तनाद घर-आंगनमे पसरि जाइत अछि—"साबी हे साबी ! कोना आब पहाड़ सन जिनगी कटतह हे साबी ……

× × × × ×

जिनगी त' कटिए जाइत छैक—एना वा ओना । हँसी-खुशीक समयक पयरमे बिहाड़ि रहैत छैक आ दुखक दिनक पयरमे बान्हल जाँत ! जाँत नहि, पहाड़ । मुदा ओहो कटि जाइत छैक ! साबियो पीसीक दिन कट' लागल छलनि जेना सभक कटैत छैक !

सावित्री नाम देने छलथिन बाप मुदा यमसँ स्वामीक जिनगी घुराक' नहि आनि सकली ! सतीत्वमे, तपमे कोनो कमी नहि छलनि ! भरिसक बाबिएक बात ठीक छलैक ! कोनो जन्मक चुकलाहा छलनि । मनुक्ख लग एकर हिसाब-किताब ककरा भेटतैक ।

भोला मिसर (हमरपीसा) लग सेहो हिसाब-किताब नहि छलनि ! नहि बूझल छलनि जे एतेक जल्दी चल जयताह । भूमिहीन नहि छलाह ओ ! गरीबीमे गुजर कर' जोगर, दू व्यक्तिक साग-भातक ओरिआन छलनि अपना घरमे ! सासुरसँ जखन-तखन किछु ने किछु आबिए जाइत छलनि । कोनो चिन्ता फिकिर नहि छलनि ! फेर सात टा सन्तान भेलनि ! पहिल दूनु बेटी-मंजुल आ संजुल ! तखन जौंआ बेटा शीत आ वसन्त ! फेर एकटा बेटा हेमन्त । छोटकी बेटी सुफला आ छोटका बेटा ग्रहुरन ! बेस शिकस्त होम' लगलनि । धीया-पुता अधिक काल मातृकेमे रह' लगलनि !

अपने ओ बेश कारी छलाह आ कदकाठी सेहो छोट छीन ! मुदा प्रतिष्ठा खूब ! स्वाभिमानी आ दुखसह लोक ! चारिटा लोक दरबज्जापर अबिते छलनि, अपने बिन बजौने नहि जाइत छलाह कतहु ! सासुरो नहि ! ओना सासुरसँ अधिक काल बजाहटि अबिते रहैत छलनि !

हमरा पीसा खूब मोन छथि। मानितो खूब छलाह हमरा ! जतबा दिन सासुरमे रहथि, बड़का काकाक संग कहिओ धार आ कहिओ पोखरिमे वंशी अवस्स खेलाथि ! बड़का ककाके रहनि धिरनीवला वंशी आ पीसाके हथलग्गी ! सेर-दू सेरक रहुके छीपि क' उपर फेकि दैत छलथिन पीसा ! बड़का कका जकाँ आधो सेरक रहुके पानिमे खेलबैत नहि छलथिन ! माछ पकड़'मे आ दौड़िक' ओकरा अंगना पहुँचाब'मे हमरा बड़ मोन लगैत छल।

पीसियो अधिक काल नैहरेमे रहैत छलीह ! हमरा खूब मानैत छलीह ! ओना सभ छोट नेनाके ओ बड़ मानैत छलथिन, आइयो मानैत छथिन ! ककरो कोराक नेना होइ, साबी पीसीक कोरामे द' दिऔक आ निश्चिन्त भ' जाउ। तेल-कूड़ द' एना गरमा क' सुता देथिन जे भरि दिन लेल चिलकाक माय निश्चिन्त ! हमरा जाड़ मासमे अखनौ दम फूल'वला बीमारी तंग करैत अछि ! गलामे निरन्तर कुचकुची ! ओकासी करैत करैत आंजर-पाँजरमे दर्द, एकदम बहिरा ओकासी ! कोनो दबाइ, कोनो उपचार नहि सुनत ! दमा नहि, स्नोफीलिया नहि ! मात्र एलर्जी ! ठंडासँ एलर्जी ! एक बेर खूब पैघ भेलापर, नोकरी शुरू कयलाक बाद, अही ओकासीसँ छटपट करैत गाममे रही। साबी पीसी सेहो आयलि रहथि ! आंगनमे कोनो काज रहैक ! हमरा ओना कष्टसँ छटपटाइत देखलनि त' मायके दस हजार गंजन कयलथिन—"रहि गेलहुँ अहूँ बेतियाक बागड़े ! नेना एना ओकासीसँ जान द' रहल अछि आ अहाँ भड़ार-भंसामे बुधियारी देखा रहल छी !"

आ झट गाय घी, आ बाटीमे कड़ुतेल ल' एकटा मटकूरमे आगि पजारि ओहि पर गरम हैबा लेल हमर बिछौन लग राखि लगमे बैसि गेलीह ! जाड़ मास रहैक, तुराइ ओढ़ने रही ! तैयो ओकासी करैत करैत घामसँ तर-बतर रही ! ओही तुराइ तरमे हाथ पैसा-पैसा छातीसँ तरबा धरि तेहन मालिश आ ततेक काल धरि करैत रहलीह जे पते ने लागल जे कखन पपनी बन्द भेल आ कखन प्राप्त भेल ! पीसीक ममत्व भरल स्पर्शक उष्णतामे राति कटि गेल !

पीसीक ई ममता सभ ठाम एक रंग नहि रहैत छनि ! ककरो ककरो पर गलती वा बिना गलती कयनो ओ अतिशय कठोर भ' सकैत छथि ! हमर माय खूब काजुलि आ बीध-व्यवहार बूझ' सूझ'मे गाममे बेस नामी, दुखित-सुखितक

परिचर्यामे अद्वितीय आ धीयापुता लेल प्राण देब'वाली मुदा पीसीक आगाँ ओ अलं... आ बकलेल बनि जाइत अछि। आंगन क्यो कतबो नीक जकाँ नीपि दैक, पी... अवस्से डँटथिन मायके—'जेहने अलूरि अपने छी, तेहने राड़िनो रखने छी !' आ झट अपने हाथे तेना नीपि बहारि देथिन जे अंगना झकझका उठैक ! माय अपना मोन कुजरनी सभसँ नीक जकाँ मोल-मोलाइ क' बेचा द' क' तरकारी किनय, पीसी अवस्से डँटथिन—मुफ्तक भेटल अछि, खूब लुटबैत छी ! दोबर दैत, डेओढ़मे मानि गेलियैक !

साबी पीसीक बात पर मायके कहियो क्रोध नहि होइक। एक्केटा ननदि, सेहो समवयस्क। देयादनी के देखबे ने कयलक। ओकर विवाहसँ पूर्वे भूकम्पमे ढहैत मकानमे अपन जेठ बेटाक संग दबा गेलीह। विधुर भैंसुर आ हुनक बेटा-बेटी। विधवा सासु आ हुनकर जेठ बहिन, दूटा स्वर्गीया ननदिक धीयापुता आ एकटा ननदि छोटकी ! साबी पीसी ! साबी पीसीक बात पर कहियो तमसाइत नहि देखलियैक मायके !

साबी पीसी मुदा मायके कोनो गलती वा असावधानी पर खूब फज्जति करैत छलथिन आ अन्तमे कहैत छलथिन—"कप्पार देखू अपन ! केहन दरिद्रक बेटी आ कत' राज करैत छी ! आ हमरा देखू ! ककर बेटी आ कोना रहैत छी···

× × × × +

साबी पीसी कोना रहैत छलीह—हम देखने छलियनि !

हुनकर बापक जिनगीमे नहि ! बाबा हमर जन्मसँ पूर्वे मरल छलाह ! कतेक दुलारू छलीह साबी पीसी बापक, से बाबी कहैत छलि ! हम देखने नहि छलियनि !

देखने छलियनि साबी पीसीके ! सभ दिन एक्के रंग ! सधवा रहथि त' पाढ़िवाला साड़ी पहिरथि, रंगि क' ! विधवा भेलीह त' कोरा, धोती पहिर' लगली ! ऊपर कोनो वस्त्र ने तहिया पहिरैत देखलियनि, ने आब देखैत छियनि ! ओढ़नामे सभ दिन एकटा सूती सलगा ! सूतबो काल ओकरे ओढ़ि लेथि ! जाड़-गरमी-बरखा-सभमे। जाधरि बाबी जीबैत छलि, बाबी-बड़की बाबीक संग उत्तरबरिया फूसक कोठलीमे कतहु माटि पर वा पटिया बिछा सूति रहैत छलीह। हाथमे सदिखन एकटा बिअनि। नीन्नोमे अनवरत घुमैत—माय बेटी दुनूक हाथमे।

माय-बेटीमे बस यैह टा साम्य। आर सभ किछु विपरीत। रूपरंग-स्वभाव कथुमे मेल नहि। बाबी जतबे शान्त, पीसी ततबे तमसाहि, बाबी जतबे कारी, पीसी ओतबे गोरि। बाप पर गेल छलीह। स्वभावो हुनके सन छलनि। मुँह कान सेहो खूब निखरल। बादमे समय बितला पर आकृतिक झलकैत रंग आ निखरल मुँह-कान चाम घोकचला सँ रुच्छ आ आकर्षणहीन भ' गेल छलनि।

पीसी कोना रहैत छलीह-से हम हुनकर सासुरोमे जा क' देखि आयल रहियनि ! कोनो उपनयन रहनि आंगनमे ! माय नहि जा सकलि। हमरा पठा देलक ! हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही तहिया मुदा देह दशा सँ बेस चेतन सन लागी !

सझिया आंगन रहनि पीसीक। चारू कात चारूभाइक एक-एकटा फूसक घर। दू टा सहोदर आ दू टा पितयौत, एक्के आंगनमे। सभक घरमे दू टाक कोठली। टाटकेँ माटि सँ लेबल। चार पर खढ़। एकटा पर खरक बदला पुआर। तीनू कोनटामे तीनू गोटेक फूसेक छोटछीन भंसा घर। चारिम कोनटाबाटे दलान पर जयबाक रस्ता। ओही दुरुखा लग एकटा कटहरक आ एकटा लतामक गाछ। पीसीक घर दक्षिणवारी कात रहनि आ भंसा घर दछिनवारी-पछवारी कोनटा मे। दक्षिणवारी-पुवारी कोनटा बाटे दलानक रस्ता रहैक। सभसँ छोट भाइ रहथि पछवारी कात। हुनका भंसा घर नहि। अपन घरेक ओसारा पर भनसा होनि। हुनका दलानो ने रहनि। अपने घरक पछुआरमे जे ओसारा रहनि दू हाथ चौड़ा आ दस हाथ लम्बा। सैह दलान रहनि। बाकी तीनू भाइक दलान आंगनाक मुँहथरि सँ आगू, पोखरिक मोहार पर रहनि। सभ सँ पहिने पंडीजी, तखन पीसा आ तकर बाद सभसँ जेठभाइ। सभक सिमान पर करचीक टाट आ एकटा क' कटहरक गाछ। पीसीक दलानपर एकटा फूसेक घर दक्षिनवारी कात सँ, माल जाल हेतु। एकटा गाय आ एकटा बाछी। पूब मुँहे दलान आ आगूमे बेश पैघ पोखरि। दक्षिणवारी पछवारी कोन पर दुर्गास्थान। पीसीक सासुर हमरा नीक लागल छल।

ओहूसँ नीक लागल छल ओइ आंगनक लोकसभ। चारू आंगनमे चारिटा पीसी, एकटा भाउजि, आ बहुत रास भाइ-बहिन। सभक स्नेहपूर्ण आत्मीय व्यवहारमे अतिशय अपनत्व। हम ओइ बेर बहुत दिनधरि रहि गेल रही पीसीक सासुरमे। ततेक दिनधरि जे गामक बहुत रास स्त्रीगण सभ हमरो सासुरक इन्तजाममे लागि गेलि रहथि।

ओइ उपनयनक आंगन मे एकटा सुन्दर सन छौंड़ी सेहो आयलि छलि ! ओ जखन हमरा लगमे ठाढ़ होअय, कोनोने कोनो स्त्री बाजि उठथि—"खूब रुचै छनि जोड़ी ! विआह होइतनि त' बड़ नीक लगितनि !

पीसी ओना बहीर छथि मुदा इ बात झट सुनि लैत छलथिन आ ओइ स्त्रीगण पर ललकि उठैत छलथिन—"दुर जाउ ! अहुँक मतिहरण भ' गेल अछि ! छौंड़ी त' पैघे हेतैक बयसमे ! भोगार देह छैक तेँ एना लगैत अछि ! फेर ककर बेटा-पोता छैक से बिसरि गेल ! जहाँ तहाँ विआह हेतैक !"

पीसी अपन नैहरक गुमानमे किछुओ बाजि जाइत छलीह मुदा ओइ छौंड़ी पर कोनो असरि नै होइत छलैक। एकान्त मे भेटितहि मुँह दूसिलैत छलि—"इह ? सौख ने देखिअनु। हमरा संग विवाह हेतनि।"

पीसीक सासुर सँ घुरल रही त' दुइये टा चीज मोन रहि गेल छल—झकझक करैत ओ बड़काटा साझी आंगन जकर बीचमे मड़बा बनल छलैक आ पीयरकी गोराइवाली छौंड़ी, बड़की टा आंखि आ पिपनीवाली।

फेर बहुत रास समय बीति गेल छल, बहुत किछु मेटबैत-भसियबैत, बहुत किछु जोड़ैत ! पीसी, पीसीक आंगन आ ओ छौंड़ी सब बहुत पाछाँ छूटि गेल छल !

बीस बर्षक बाद फेर पीसीक सासुर गेल रही ! असलमे गेल रही सभागाछी ! पीसीक ओहिठाम नहि ठहरल रही ! सभे टोलमे दल्ली भाइक ओहिठाम ठहरल रही, हमर सभसँ पैघ पोसिऔत भाइ, बड़की पीसीक बेटा ! साबी पीसी सँ भेंट कर' मुसहरी टोल गेल रही !

आंगन जेना ओहिनाक ओहिना राखल छल—। सभ किछु यथावत। खाली बीच महक मड़बा निपत्ता ! पीसीक हिस्साक आंगन ओहिना झकझक करैत ! हमरा भेल जे अखने किम्हरोसँ ओ छौंड़ी बहरायत आ कहत—"इह ! सौखने देखू ! हमरासँ विआह करताह ! नेपाली बोको नहितनि !

हमर गोर रंग, मोट नाक आ मजबूत काठी द्वारे ओ नाम राखि लेने छलि—नेपाली बोको। हमहूँ मौका नहि छोड़ैत छलियैक। झट कहैत छलियैक—"ककर आफत आयल छैक जे बिढ़नीसँ विआह करत ! सेहो ललका नहि, पिअरका बिढ़नी ! एहन क' बीन्हि लेतैक जे भरि जिन्दगी छटपटायत। हम त' कान पकड़ैत छी।

ओ लजा जाइत छलि ! हमरा ओ नेपाली बोको कहि दैत छल त' हमरा तामस नहि होइत छल। हम कहैत छलियैक बिढ़नी त' ओ लजा जाइत छलि, नहि जानि कियैक ! जहिया पीसीक सासुरसँ विदा भेल रही, भोरेसँ गुमसुम छलि, जाइत काल हम टोकबो कयलियैक— "जाइ छी बिढ़नी ?' तैयो किछु नहि बाजलि ! आँखि मुँह फुलल सन रहैक।

आइ बीस वर्षक बाद पीसीक आँगनमे ओ कत' सँ आओत ? एतेक पैघ धरती पर कोनो गाममे अपन स्वामी, अपन परिवारक संग भगन हैत ! पीसीक आँगनमे पयर दितँहि जेना कोनो सुखायल घावक खैठी नोचा क' बल्ल द' बहरायल— "आउ नेपाली बोको !" हम अकचकाक' चारू कात ताक' लगैत छी ! ताबत भनसा घरवला कोनटासँ पीसी बहराइत छथि आ हुनका पाछाँ पाछाँ धीया पुताक झुण्ड ! गोर लगैत छिअनि त' पीसी सभके आदेश दैत छथि। —"गोर लगहुन, बड़का काका छथुन !

जेना जेना बेरा बेरी गोर लगैत अछि, पीसी परिचय देने जाइत छथि— ई शीतक बेटा विनय, ई बेटी ! ई दून् बेटी बसन्तक आ ई बेटा ! ई सुफलाक बेटा किसुनजी !" आ फेर कोरा महक छौंड़ी के देखबैत कहैत छथि— "आ ई हेमनूक बेटी !"

पीसी पहिनेसँ स्वस्थ बुझाइत छथि ! पछिला बेर गाममे देखने रहियनि त' मरणासन्न रहथि, पेटक दर्दसँ अपस्याँत। लहेरियासराय जा अपन संगी बिनोदसँ देखा आपरेशनक व्यवस्था करा देने रहियनि। आपरेशनक दिन हमरा पटनासँ लहेरियासराय अस्पताल पहुँचबामे देरी भेल छल ! ताबत आपरेशन भ' गेल रहनि मुदा पीसी बेहोश रहथि ! विनोद कहलक जे चिन्ताक प्रयोजन नहि, आपरेशन ठीके भेल छनि ! बड़का गोला छलनि पेटमे !

ओइसँ पैघ गोला माइक पेटमे हड़कम्प मचौने छलैक ! अवसर भेटितँहि कहलक—"देखह अपन पीसीक काज ! कष्ट कटैत छथुन, पेटमे गेरूआ बान्हिक' सूति रहैत छथुन, आ देखह ई गेरूआ ! एहिमे पाँच सय टाका नुकाक' रखने छथुन ! आपरेशन लेल ल' जाय लगलीह त' ई गेरूआ हमरा दैत कहलनि—"अइमे टाका अछि ! दवाइ-दारू लेल काज होअय त' अही मे सँ निकालि लेब !" मायक ठोर पर करूणा मिश्रित हँसी छलैक आ आँखिमे नोर !

दोसर दिन होश भेला पर माय हँसी कयलकनि— "दुर जाउ छोटकी दा..! अपने ओतेक धिसरी कटैत छलहुँ एतेक दिन धरि, दबाइतक नहि कयलहुँ कोनो ! आ गेरूआमे नुकाक' टाका रखने छलहुँ ! कोन दिन लेल आ ककरा लेल ?"

ओहनो स्थितिमे पीसी डाँटि देलथिन मायके— "अपना लेल आ अही दिन लेल ! ल' क' आयल छी तोड़ा, करब सबटा खर्च-बर्च ! बेटो सब हाथ डोलबिते आयल छथि। माय कोनो उत्तर नहि द' सकलनि ! हमरा दिस तकलक, हमहूँ अगल-बगल देख' लगलहुँ ! मोनमे एकटा लज्जित अपराध-भाव छल !

पीसी ओहिना बजैत रहलीह— ककरो एक पाइ नहि जनैत छी हम ! भाइ छलाह त' कहिओ ने बुझायल जे बाप नहि छथि। आब ओ नहि छथि त' लगिते नहि अछि जे हमरो क्यो नैहरमे अछि। आमो—आंठी पठायबने मोन रहैत अछि, त' टाका रसा की पठायब अहाँ लोकनि। अपन बेटो सभक किछु नहि जनैत छियनि हम ! ई सभटा कारी बाबूक कृपा, हमर धर्मक बेटा ! दुखिया मौसी लेल मासे मास टाका पठबैत छथि, धोती कपड़ा द' जाइत छथि सभ वर्ष !'

उत्तेजनामे पीसी आर किछु बजितथि मुदा हम रोकि देलियनि जे लगले आपरेशन भेल अछि, बेसी नहि बाजू। हुनकर बातक जबाब ककरो लग नहि छलैक ! सभ गुमसुम ठाढ़ छल हुनकर बिछौन लग।

साबी पीसी अखनो अबैत रहैत छथि अपन नैहर ! दादा जिबैत छलाह तहियो आ आबो अबैत छथि ! पहिने, दादाक जिनगीमे बजाहटि पर आ अपनो मोनसँ अबैत छलीह. आब बिन बजौने अबैत छथि। बजाहटि कोनो विवाह-दान, मुड़न, उपनयन भेले पर होइत छनि। दादाक जिनगीमे बसन्त हेमनू-बहुरन-सभ अही गामक स्कूलमे पढ़ि क' मैट्रिक कयलनि ! आइ० कम आ बी० कम बसन्त गामे सँ मधुबनी जा क' पढ़लनि ! शीत नहि पढ़ि सकलाह। हुनको स्त्री छनि, दू टा बच्चा छनि ! बसन्त नीक रिजल्टक बादो नीक नोकरी नहि पाबि सकलाह, नवानीक संस्कृत स्कूलमे शिक्षक छथि ! छओ मास पर दरमाहा भेटैत छनि ! हेमनू हजारीबाग खानमे काज करैत छथि आ बहुरन बेकार ! सभक स्त्री, धीया पुता सौराठे रहैत छनि। पीसीक जोरो देलापर कोनो बेटा मातृक जाय लेल तैयार नहि होइत छनि आब !

साबी पीसीकेँ मुदा नैहरक गुमान आइयो छनि ! हमरालोकनि अपनेमे अपस्याँत रहैत छी, पीसीक सुख-दुखसँ अज्ञात, निरपेक्ष ! काज तिहारमे पीसीकेँ बजा कर्त्तव्य मुक्त होइत छी ! मुदा पीसीक मोनमे उलहन-उपराग नहि छनि। अस्पतालक बिछौनपर बाजि गेलीह पीसी बहुत किछु, मुदा हुनका आइयो अपन नैहर आ ओतुक्का लोकसँ सिनेह छनि ! ओइ ठाम अपन मान अपमानक विचार नहि करैत छथि पीसी ! समाद गेलनि कि चल अबैत छथि ! आ पीसीक अबैत देरी सभ धीयापुता प्रसन्न भ' उठैत अछि ! पीसी सभकेँ खूब खिस्सा कहैत छथिन ! ओ सभ खिस्सा जे कहियो बाबी हमरा कहने छलि—प्रहलाद बाबाक खिस्सा, दुबरियाक खिस्सा आ मनियरबा दैत्यक खिस्सा। सभ नेन्नाकेँ पीसी बड़ नीक लगैत छथिन-एकदम अपने बाबी-नानी सन !

पीसीक आंगनमे हुनकर ओही दक्षिनवरिया घरक ओसारा पर राखल चौकीपर बैसल बैसल हमरा अनायास ई बात सभ मोन पड़ैत अछि ! पीसी लगमे बैसलि बिअनि होंकैत छथि, धीयापुता घेरने अछि !

तखने माथपर छिट्टा लेने बसन्त अबैत छथि अंगना आ हुनके पाछां बहुरन। बसन्त दिस तकैत पीसी अपने बड़बड़ाय लगैत छथि जेना हमरा सुना रहल हाथि—

—"जखन गाम औता एहिना खटताह बड़द जकां। कर्म देखियौन केहन लुहलुहार छनि ! एतेक पढ़ि लिखिक' वैह संस्कृत स्कूलमे मास्टरी करैत छथि आ बहिन ओत' पेट पोसैत छथि ! आ कनिया एकदम प्रचण्ड ! सभटा लुटबैत रहतनि ! सभक उधार खा लेतनि-तरकारी बाली, दूधवला, दोकानवाला-सभक उधार ! हम टोकबैक त' हमरे गरिऔत-मारत पीटत।

बसन्त स्थिति बेसम्हार होइत देखि असहाय भाव सँ माय दिस तकै छथि !

बहुरन डँटैत छथिन—"चुप्पे रहै ने माय !"

भरिसक पीसी नहि सुनैत छथिन ! हुनकर बाजब जारी रहैत छनि—
—"ओ त' छथिहे तेहने गामक मुदा ई जे छथि सोतिआइन, शीतक कनिया, सेहो कनियो उन्नैस नहि। आयलि रहथि त' केहन शान्त सुशील रहथि मुदा आब नहि ! मुदा कथीपर ! बर बेकार, टूटा पंघ धीया-पूता ! कत'सँ औतै अन्न-वस्त्र ! हम छियैक त' कहुना अपने गुदरियो पहिरि एकरा सभकेँ देह झांपि दैत छियैक ! मुदा हमही दुश्मन ! लोक सभ सिखा दैत छैक !"

एतबा कहि पीसी पुबरिया घर दिस ताक' लगैत छथि। बिल्ली पीसीक घर। ओत' बिल्ली पीसी बैसलि छथि ! हमरा आश्चर्य होइत अछि जे हमरा देखियो क' ओ इम्हर कियैक ने अबैत छथि ! कोनो घरसँ क्यो नहि आयल छथि जेना हम एकदम अनचीन्हार भ' गेल होइ। हमरा बिल्ली पीसीक ओसारा दिस तकैत देखि साबी पीसी बाज' लगैत छथि—"सुफलाक गर्दनि काटि देलथिन पंडीजी ! तेहन ठाम बिआहि देलथिन जे सभटा जमीन कोशीक काटमे चल गेलैक। बेटाकेँ एत' द' गेल ! कहुना पढ़बैत छियैक ! सुफलाक अपनो मोन खराब रहैत छैक, मुदा के रखतैक ? अबैत अछि त' सभटा हम अपने करैत छी, तैयो सभकेँ अखरैत छनि। किसुनजी सभक लेल खटैत छनि, ओकरो अन्नपानि अखरैत छनि सभकेँ ! सभ भिन्न भ' गेल छथि। होइ जाथु ! छनिहे की जे बँटताह ! एकटा हेमनू पठबैत छलाह सभकेँ ! भाइयो सभकेँ आ धीयो-पुताकेँ दैत छलाह ! कनियां छलथिन त' कारी, मुदा बड़ लूरिगरि ! शुरूमे रहबो कयलीह नीक जकाँ ! आब हुनको बरक कमाइक गुमान भेल छनि ! आब मनीआर्डर हमरा नाम नहि अबैत अछि—बहुक नाम अबैत छनि !"

पीसी एकदिसाहे बजने जा रहल छलीह ! अनकर बात ओ सुनबे ने करैत छथिन जल्दी ! हुनका चुप्प नहि होइत देखि बसन्त इशारा कयलथिन ! तैयो पीसी चुप नहि भेलथिन ! बहुरन जोरसँ डँटलथिन—"बन्द कर ई चर्चा आब।"

की कहलथिन बहुरन, से पीसी नहि बुझलथिन मुदा हुनका बजैत देखि ओम्हरे पलटि गेलथिन—"आ ई बहुरनकेँ देखू ! भाइ मैट्रिक करा देलथिन मुदा कोनो काजक नहि। गाम मे घेर घर सभ ट्यूशन मढ़बा लेतैक आ फेर पाइ लेल दौड़बैत रहतैक ! ताहिपर देह बिमरियाह भ' गेलैक ! तैयो कोदारि ल' खेत पहुँचि जायत। बड़का बोझ उठा लेत माथपर ! कनिया छैक, परिवार हेतैक… एकर कोनो जोगार करियौक——……"

हम कह' चाहैत छियनि जे ठीक छै, चेष्टा करबनि ! मुदा बोल नहि फुटैत अछि जेना बकझर लागि गेल हो ! ई हमरा बैसाक' कोन खिस्सा पसारि लेलनि पीसी ! कनिया लोकनिकी सोचैत हैतीह !

पीसी भरिसक हमर मोनक भाव बूझि जाइत छथि आ फेर कह' लगैत छथि—"कनियो बिचार छैक एकरा सभके ? बहुक संग इहो निर्लज्जा सभ बाज' लागत जे हम की जानं' गेलियौ तोहर बाप आ भाइके ! ककरो किछु ने जनैत छियौं ....

आब हमरा डर होम' लगैत अछि जे कोनो काण्ड भ' जयतैक अंगनामे ! पीसीके हाथक इशारासँ बुझबैत बिल्ली पीसीक ओसारापर जा गोड़ लगैत छियनि, त' ओ कहैत छथि—खूब शिकाइत कहने हेथुन साबी हमर ! हमही हुनकर सभ पुतहुके दूरि करैत छियनि ! हम हुनका लेल अलूरि आ अपरोजक छी ! ओ रहथु काजुलि आ होशियारि, मुदा हम त' अपन बेटा-पुतहुक मुँह ध' क' रहैत छी ! चैनसँ रहैत छी ! से ओ नहि करतीह। तखन कलह होइत छनि, त' दोष हमरा माथ दैत छथि।"

किछु काल ओत' बैसि क' हम फेर दक्षिणबरिया ओसारापर चल अबैत छी ! पीसी लग आबि बिअनि हौंक' लगैत छथि—"अभ्यास रहय एतेक गर्मीक तखन ने ! सभदिन त' पंखे तर रहलहुँ ! तोंहू आबह हौ विसुन जी ! पंखा हौंकि दहुन। अइ छोटकी बिअनिसँ की हैतनि ! अहाँ पड़ि रहू नीक जकाँ।

हम चुपचाप बिछौना पर पड़ि रहैत छी। पंखा आ बिअनिक दुतरफी हवा नीक लगैत अछि। आँखि मूनि लैत छी।

पीसी हमर कान लग बड़ करूण स्वरमे बाज' लगैत छथि—"हमर जिनगी त' कटि गेल बाउ ! कोनासे हमही जनैत छी ! मुदा सभ दिन इज्जतिसँ रहलहुँ। ककरो आङन नहि गेलहुँ कहिओ, ककरो लग हाथ नै पसारलहुँ ! बेटी तीनू ठाम लागि गेलि—नोकको बेजाय ! बेटा सभ पैघ भेल छथि, दू टा कमाइतो-खटाइत छथि मुदा जेना छिछियैनी पैसि गलि होअय ! कुजरनी कवारनीसँ वत्तर जिनगी भ' गेल अछि ! बात-बातमे गारि-मारि ! बीच अङनामे ओंघरा देत, कपार फोड़ि देत। सभकेँ होइत छैक जे हम की की ने रखने छी ! मुँह सीबि क' रहैत छी !

पीसीक मुँह सीबि क' रहबाक गप्प पर हमरा हँसी लागि जाइत अछि आ आँखि खुजि जाइत अछि ! बसन्त पीसीकेँ टोकैत छथिन—यैह रामायण पसारने रहबें, कि किछु खायो-पीब' लेल देबहुन !

पीसी धड़फड़ा क' उठैत छथि ! अपन कोठनीसँ फुलही थारी बाटी, पापड़, तिलौड़ी आ की की सभ निकालैत छथि आ सभ लेने भनसा घर चल जाइत छथि ! हम बूझि जाइत छी जे पीसी भंसा घरमे हमरा लेल सचार लगौतीह आ अपन चारू पुतहुके डँटतीह—अहाँ सभ की जाने गेलियैक ई सभ ! कहिओ आँखि देखने रही तखन ने।"

हम पड़ल-पड़ल पीसीक बारेमे सोच' लगलहुँ जे मनुखक स्वभाव केहन विचित्र होइत छैक। जकरा सभक लेल ओ भरि जिनगी अपस्यांत रहलीह आ छथि, तकरा एकटा नीक बोल कहब हुनका नहि पार लगैत छनि आ ओ सभ हुनके अपन दुश्मन बूझि रहल छनि। आइओ सभ बेटा लेल, ओकर स्त्री आ धीयापूता लेल एक एकटा पाइ, एक-एकटा अन्न जोगबैत छथि मुदा बदलामे मारि-गारि भेटैत छनि !

हमरा अपन नेनपनक बात मोन पड़ैत अछि जहिआ हमरा लगैत छल जे साबी पीसीकें सभ बड़ मानैत छनि ! आइ लगैत अछि जे क्यो ने मानैत छनि हुनका ! अइ संसारमे, अपन समस्त परिवारक बीच रहितो अपन चिन्ता आ अपन चेष्टामे नितान्त एकाकी छथि साबी पीसी ! हुनका क्यो ने मानलकनि कहियो ! भगवानो नहि।

× × × × ×

पीसीक चिट्ठी डेरामे मनोरंजनक वस्तु बनि जाइत अछि। पहिने हमरा नै बुझाइत अछि जे ककर चिठ्ठी थिकै। दादाक फोटो पर ध्यान जाइत अछि आ अन्हार फाटि जाइत अछि। हम ओ चिठ्ठी जे अखन धरि पहेली बनल छल, धड़, धड़ पढ़' लगैत छी—

'आगाँ समाचार जे आब अहाँ बहुरनपर ध्यान नहि देबनि त' ओ बताह भ' जयताह ! दुनू सांझ भांग पीबि बमकल रहैत छथि। ट्यूशनो छोड़ने छथि, से त' बस कयने छथि। जखन पाइए नहि देतनि त' पढ़ौलासँ कोन लाभ ?

वसन्त हेमनू अपनठाम घयने छथि ! खाली शीतक चिन्ता छल जे हमर बाद हिनका के देखतनि। ने पढ़ल-लिखल छथि ने कोनो आन लूरिए छनि ! खाली गाममे बैसल पतिया लिखैत छथि। कहियो काल पाँच टा सुपारी आ पाँच आना पाइ भेटि जाइत छनि, ताहिसँ कोना गुजर हेतनि ? स्त्री धीया-पुता छनि ! हुनके लेल सोचि क' बताहि भेल रहैत छी। ऊपरसँ गाममे पढ़ि-लिखि क'

डेरापर बैसल बहुरन लगैत अछि जेना माथ फाटि जायत। ओना अहाँ कहब जे हमरा कोन गर्ज अछि, सभ फराक भेल अछि हमरासँ, बहुरन सेहो! अन्न बाँटि लेत, एक्के मासमे खा लेत आ फेर धरना देत माइक दिस! जेना मायक बापक जमीदारी उठि क' आब अही गाममे आबि गेल होइ! तैयो उपास कोना रह' देबैक कहियो। जहिआ क्यो ने छल, सभ भाइ अबोध छल, तहिओ उपास नहि पड़' देलियैक कहियो!

आब हम थाकि गेल छी! अहींक आस अछि। पैघ हाकिम छी। शीत पड़ल-लिखल नहि छथि, हुनका भगवान देखथिन। अहाँ बहुरनक कोनो उपाय करियनु!"

हम पीसीक आस पूर नहि क' पबैत छियनि! आरो बहुतरास पत्र अबैत अछि। बहुरनोक चिठ्ठी आब' लगैत अछि, हमरा बुते उत्तरो देल पार नहि लगैत अछि! खिसिया क' बहुरन लिखैत छथि—"ई हमर अन्तिम चिठ्ठी अछि! आब फेर नहि कहियो कष्ट देब अहाँकें।"

बहुरन चिठ्ठी लिखब छोड़ि दैत छथि मुदा पीसीक चिठ्ठी अबैत रहैत अछि। हमरा बुते एक्को बेर जबाबो देब संभव नहि होइत अछि! व्यस्तता हरदम घेरने रहैत अछि। फेर एकटा दोसरे रंगक पत्र अबैत अछि—"चि० हड़बड़केँ श्रीमतीक तरफसँ आशीर्वाद! आगाँ समाचार जे यदि आब अहाँ ध्यान नहि देब त' हम अहींक डेरापर आबि क' बैसि रहब! एत' हमरा सभ सदिखन गेंद जकाँ गुड़कबैत रहैत अछि, कान-कपार फोड़ैत रहैत अछि! सभ त' शुरू कयनहि छल, आब बहुरन अगुआ भेल अछि। भांग पीबि बेमत्त भेल रहैत अछि। आब सहाज नहि होइत अछि! आबि क' हमर निसाफ करू वा हमरा संग ल' चलू!"

हमरा बुते दुनूमे किछुओ पार नहि लगैत अछि। ने पीसी अपन धमकीपर अमल करैत छथि। हमर डेरा पर नहि अबैत छथि! हमरा बूझल छल जे पीसी गाम छोड़ि कतहु ने जयतीह! हुनकर प्राण ओही घर आंगनमे बसै छनि।

दोसरे मास हुनकर फेर वैह पुरने ढंगक चिठ्ठी अबैत अछि—"जल्दीसँ जल्दी बहुरनक कोनो व्यवस्था करियनु।"

× × × ×

मनुक्खक सक्क कोन व्यवस्था छैक? सभटा व्यवस्था त' कयल रहैत छैक। दिन-क्षण पल! कनियो हेरफेर नहि होइत छैक! बड़का काका चल गेलाह—अकस्मात! हमरालोकनि सभ क्यो गाम पहुँचल रही!

साबी पीसी सेहो आयलि रहथि! आब पाँच भाइ-बहिनमे एकसरि बाँचलि छथि—हुनका देखि क' ई बात बड़ टीस दे ने छल! काजक हूलिमालि खतम भेला पर एक दिन वसन्तकें डँटलियनि—"तोरालोकनिकें अप्पन इज्जतिक कनिओ ध्यान नहि छ'! एना सभ क्यो मिलि क' पीसीकें मारैत छहुन, पटना धरि चिट्ठी लिखैत रहैत छथि!"

वसन्तक आकृति पर एकटा दयनीय भाव पसरि जाइत छनि—"बुद्धिये खराब भ' गेल छैक! हमरालोकनि मारबैक ओकरा?

वसन्तक बात गोविन्द काका बीचेमे लोकि लैत छथिन—"कोन नव बात करब अहाँ? अहाँ ओइठाम त' ई रिवाज एक खाढ़ी ऊपरेसँ आबि रहल अछि!

वसन्त लजायल सन हँसैत छथि—अपन मामक पितिऔतक बातक प्रतिवाद नहि करैत छथि! हमहू बेशी नहि कहैत छियनि!"

फेर बहुत रास समय बीति जाइत अछि। समयक ओइ बाढ़िमे पीसीक अस्तित्व सर्वथा विलीन नहि होइत अछि! कहियो काल पत्र अबैत अछि। हमर मोनमे एकटा अपराध-भाव जकड़ल जाइत अछि!

ई भाव गाम गेला पर आर गहींर धँसि जाइत अछि! अपन भतीजी दीपाक बिआहमे गाम जाइत छी। माय एकसरमे कहैत अछि—"कने सरपटकें कहुन! आर ककरो साहसे नहि होइत छैक। हम कहि क' हारि गेलियनि, नहि मानैत छथि! एक्के टा पीसी बाँचल छथुन! एहनो अवसपर आशीर्वाद लेल नहि बजबैत जेबहुन, त' अनुचित हेतह!

हम मायकें कोनो आश्वासन नहि दैत छियैक। सरपट भाइसँ कहबाक सेहो अवसर नहि भेटल! हम स्वयम् बिबाहसँ एक दिन पहिने कार्यवश पटना चल अयलहुँ। सभटा काज नीक जकाँ सम्पन्न भेलैक। एहिना चलैत छैक सभटा! ककरो लेल किछु नहि रुकैत छैक! जहिया दादा छलाह, लगैत छल जे बिना हुनके किछुओ ने चलत। आइ दस वर्षसँ ओ नहि छथि, बड़का काका सेहो नहि रहलाह। सभ किछु चलि रहल अछि। मनुक्खक सबसँ पैघ ताकति आ कम-जोरी। ओकरा सभटा स्मरण रहैत छैक आ किछुओ स्मरण नहि रहैत छैक।

साबी पीसीक नाम सेहो कटि गेलनि आब ! पावनि-तिहारमे हुनका बजेबाक कर्तव्यसँ सेहो मुक्त क' लेलहुँ हम सभ अपनाकेँ ।

सदाक लेल मुक्ति देबाक बाट स्वयम् पीसी देखा दैत छथि—"कहियो किछु मगँलहुँ नहि बाउ मुदा आब नहि सहल होइत अछि ! बूढ़ि भेलहुँ आ बूढ़क लेल जड़काला बड़काकाल । सेहो एहि बेरका जाड़ । हड्डी-हड्डीकेँ छेदैत रहैत अछि ! एकटा मोटगर कम्बल पठबा दिय' त' जाड़ खेपि जायब ! नै त' अही जाड़मे पीसी समाप्त……!"

दू बर्ष पूर्व एहने चिट्ठी बड़का काकाक आयल छल । पँघ पित्ती, आचार्य गुरु ! विद्वान, संयमी । जिनगीमे कहियो किछु नै मँगलनि ! गाम जाइत छलहुँ त' आशीर्वाद द' कहैत छलाह—"किताब-मैगजीन अनने छ' ने खूब ।" सभटा किताब आ पत्रिका उठा क' ल' जाइत छलाह आ फेर किछु काल बाद एकटा पोथी नेने अबैत छलाह 'लैह, ई पढ़' ! गोविन्दसँ माँगि क' अनने छी !

काकाक आदर आ स्नेहवश पढ़ल रहलो पर ओ पोथी हम राखि लैत छलहुँ । हुनकर एकबेर चिट्ठी आयल -"आइ हम सत्तहत्तरि बर्षक भ' गेलहुँ । हमरा दिससँ अहाँ लोकनि मधुर खा लेब ! हमर कोनो ठेकान नहि । ई जाड़ खेपब वा नहि ! बूढ़क लेल जाड़ काल ! अइ बेर पुरना तुराइसँ काज नहि चलत ! सुविधा होअय त' एकटा मोटगर कम्बल पठायब !"

कम्बल पठबा देलियनि ! बड़का काका जाड़ त' खेपि गेलाह मुदा बर्ष नहि ।

आ आइ पीसी सेहो कम्बल द' लिखने छथि ! इच्छा होइत अछि जे कम्बल पठबा दियनि । लगले डर होइत अछि जे बड़के काका जकाँ पीसी सेहो वर्ष नहि खेपि सकतीह ! दोसर मोन कहैत अछि जे नीके हेतनि ! आब साबी पीसीक एकालाप समाप्त क' देबाक चाही । बहुत दिन धरि ओ एक एकसरि चललीह, एक बाट पर ! ओ कहियो ने सुनलथिन ककरो मुदा सोचलथिन सभ दिन अनके लेल ! आइयो ओ अनके लेल सोचैत छथि, जिबैत छथि मुदा आब हुनकर क्यो ने सुनैत छनि ! ई एकालाप समाप्त करबाक हमरा अवसर भेटल अछि !

अवसर हम चूकि जाइत छी ! कम्बल पठायब पार नहि लगैत अछि ! आन-आन खर्च सामने आबि जाइत अछि ! सोचैत छी जे अगिला बर्ष पठबा देबनि, ई जाड़ कहुना खेपि जयतीह ! बर्षक बर्ष एकटा सूती सलगा पर खेपने छथि ।

पीसीक एकालाप समाप्त नहि भेल छनि । आब हुनका क्यो ने मानैत छनि, तैयो ओ जीबैत छथि ! आब अपना चिलकाकेँ साँझखन तेलकूड़ द' क्यो ने जरैत दीप देखा कहैत छैक—"माय मासु, साबी पीसी, देखनाहरि सुननाहरि…।

सुनै छी, ऐ बेर घीया-पूता सभ किछु बेसिये मारि मारलथिन आ पीसी रुसि क' दोसर अंगनामे छथि !

तैयो साबी पीसी जीबैत छथि ! फेर हुनकर एकटा पोस्टकार्ड आओत ! डेरा मे मनोरंजनक साधन बनत ! पीसीक लेल हमरालोकनि किछु सहानुभूतिपूर्ण चर्चा क' अपन सहृदयताक भ्रम पोसब आ फेर सभटा बिसरि अपन-अपन दुनियामे व्यस्त भ जायब !●

सितम्बर १९८३

मायक बात पर विश्वास नहि करबाक कोनो कारण नहि छल। तैयो बेर-बेर लागि रहल छल जेना किछुओ सत्य नहि होइ..........

अकस्मात् गाम आबि गेल रही। कोनो पूर्व निर्धारित कार्यक्रम नहि छल। जखने मुँह-हाथ धो क' चाह पीबि दलान पर आबि क' बैसलहुँ त माय कहलक—भने आबि गेलाह। गाममे बड़का उधबा उटल छैक। तोरालोकनि क्यो गाम पर नहि, बड़ डेरायल रही हम !'

मायक गप्प खतम हैबासँ पूर्वहि नहि जानि किम्हरसँ अनिल दलान पर आबि गेल—''डर कोन बातक काकी ? हमरा लोकनि त' छीहे गाममे। सभ तैयारी भ' गेल छैक। एहि बेर जहिना आओत, तहिना निपटि लेबा लेल तैयार छियैक हमरा लोकनि।''

हमरा सभटा गप्प विचित्र लागि रहल छल ! कोन तैयारीक गप्प करैत अछि अनिल ? मायकेँ कथीक डर छैक ? आइ दस वर्षसँ ऊपर भेलनि बाबूजीक मुइना, तहियेसँ लगभग सभ भाइ हमरा लोकनि बाहरे रहैत छी, पावनियें-तिहारे गाम अबैत छी। पहिने कोनोने कोनो बहिन अपन धीया-पुताक संग माय लग रहैत छलीह, आब सेहो नहि। माय एकदम्म एकसरि रहैत अछि, मुदा कहियो कोनो भयक गप्प नहि कयने छलि। आइ एकरा भ' की गेल छैक ? एना कियैक आतंकित अछि आइ ?

अनिल मुदा खूब उत्साहमे छल—'अहाँ कोनो फिकिर नहि करू भैया। सभ इन्तजाम छैक ? बम तक आबि गेल छैक।'

हम स्तम्भित रहि गेलहुँ ?

एहि गाममे लाठियो ककरो ककरो घरमे भेटैत छैक। एकटा साँप बहराइत छैक त' ओकरा मारबा लेल लाठी आ सहथ ताक' लोक अँगने-अँगने दौड़ैत अछि। एहि गाममे बम कतसँ अयलैक आ कियैक अयलैक ? माय सत्ते कहने छलि—गाम एकदम्म बदलल छह'.........विश्वसो ने हेतह जे वैह सभ लोक अछि।

एहि गामक लोककेँ हम खूब चिन्हैत छियैक। ओहो सभ हमरा चिन्हैत अछि। छओ मास-वर्ष दिन पर गाम अबैत छी, मुदा बुझाइत नहि अछि जे गाममे नहि रहैत छी।

जाही टोल बाटे बहराइत छी, क्यो आगाँसँ घेरि लैत अछि—'परनाम मालिक, हमरा नहि चिन्हली ?''

हमरा हँसी लागि जाइत अछि—''तोरा कोना चिन्हबौ रे ढुण्ढा ? कहियो जामुन तोड़ि क' खअबैत छैं आब जे चिन्हबौ ?''

हकरा गदगद होइत बाजत—''एह मालिक। अहाँके कुच्छो ने बिसरै हय। ओ जमुनी आब अहाँकेँ निम्मन लागत ?''

हमरा सभ नीक लगैत अछि। दुसधटोलीक हकरा आ खतबेटोलीक हजरो। धनुखटोलीक ठिठरा आ मुसहरटोलीक गेनमा सेहो ! मुसलमान टोलक अजीज जखने देखत, एक हाथ झुकि जायत—''आदाब हुजूर !'

—'अरे अज्जो मियां आप ? कैसे हैं ?' अजीज ओहिना झुकले कहत—''सभ अहाँके किरपा हय हजूर !

'मालिक-हजूर' एकरा सभकेँ ठोर पर बसल छैक ! पहलमान रघुनाथो देखत त' झुकि जायत—''गोर लगै छी मालिक ?'' आ झट चोल करत—''अहाँ त' दिन-दिन भिसिण्डे भेल जाइ छी मालिक ! कोन चक्कीक पीसल आंटा खाइ छियै !''

हमहूँ हँसि क' कहैत छियैक—'तोरे पछाड़बाक तैयारीमे छिओक ! अइबेर आबि जो अखाड़ामे फेर !'

रघुनाथ कने नाटकीय मुद्रासँ कहत—''जाउ जाउ, मालिक ! फोंक देह हय अहाँक ! अइ अखाड़ामे पोसल देहसँ अहाँ भिड़ब ?''

हम हँसी करबैक :—''आ जहिया अखाड़ामे चारू नाल चित्त क' देने रहियौक, तहिया ई पोसुआ देह कत' गेल रहौ ?'' रघुनाथ लजायल हँसी हँसत—'ओत' मालिक अनचोकामे पटकि देली—ओकर मोजर नहि होत।'

हम झट कहबै—'त' आबि जो, लड़ि लै अइ बेर···।'

आ माय कहैत अछि—गाम उनटल छह ! अनिल कहैत अछि—सभ तैयारी छैक भैया ! अहाँ कोनो चिन्ता नहि करू !

हमरा तकर चिन्ता नहि अछि ! खाली विश्वासे ने होइत अछि जे अहू गाममे एना भ' सकैत छैक ? पछिला बेर त' गेल रही खतबे टोली दिस ! बाटे पर बिशनपुरवाली बैसलि छलि। बूढ़ि झुरखुट। डाँड़मे एकटा मैल चिक्कट कपड़ा लपेटल आ कारी चाम सिकुड़ि-सिकुड़ि क' धारीदार बनल। आँखिमे इजोत कम। गाय-महीसकेँ गाछीमे छोड़ि बाट पर बैसलि छलि। लगमे जा कहलियैक—तों जीबिते छें गे नट्टिन बुढ़िया !"

बिशनपुरवाली अकचकायलि। फेरसँ अकानलक आ आह्लादसँ बाजलि—"अहाँ हती बौआ ! अइ गरीबनी बुढ़ियाकेँ अखनियो कोना चीन्हि गेली ?

हम ओकर आकृति पर पसरल हीनताकेँ हटयबा लेल हँसी कयलियैक—"तोरा कोना नै चिन्हिबौ गे नट्टिन बुढ़िया ! सभ साल कटनीमे हमरा ठकि लैत छलें ! अपने एकटा छोटकी आँटी बन्हैत छलें आ अपन जुअनकी पुतोहुकेँ आँटीक बदला बड़का बोझे बन्हबा दैत छलहिक !"

बिशनपुरबालीक आकृति पर चिर-परिचित दुष्ट हँसी पसरि गेल छलैक—"सत्त बात कहू मालिक ! बुढ़िया बन्हैत बड़की आँटी, त' दितियैक एक्को अहला बेसी ! आ जुअनकीकेँ कोना छोड़ि दै छलियै आधा आ बोनियोंमे कोना ओकरेबला बड़का बोझ छोड़ि दै छलियै ? इहो बुढ़िया दुनियाँ देखले हय मालिक······"

बिशनपुरबाली झूठ नहि बजैत छलि ! दुनियाँकेँ ओ नीक जकाँ देखने छलैक ! अपने त' ओहू दिनमे एहिना छलि ! मस्किलसँ दिन भरिमे दूटा बोझ कटैत छलि···सेहो बोझ नहि, पुल्ली ! मुदा पुतोहु रहैक लुत्ती ! जतबा कालमे आन एक पाहि कटैक, ओ दूटा पाहि काटि लैक ! भरिदिनमे छः टा सँ कम बोझ कहियो ने कटैक, सेहो छबो जबर्दस्त बोझ ! बोनिक बेरमे ओ अड़ि जाइ जे हम अपने बोझमे बोनि लेब ! काटब जबर्दस्त बोझ त' पुल्लीमे बोनि कियैक लेब ? सोलह बोझपर एकटा बोझ भेटैक ! पुतहुक संग बुढ़ियाक दुनू आ आठ टा अनकर बोझक भाँज लागि जाइ। आ आँटी चुकब' बेरमे ओ एकदम भीड़ि जाइ जिरतियाक संग—"एहन जुलुम नै करह हौ जिराती ! मालिक

देखैत छथुन !" आ हमरा मोलायम देखि जिरतियाक हाथ उपरेसँ किछु सीस घीचिक' रहि जाइ ! जाबत काल कटनी चलैक, बुढ़िया हमरा उकसबैत रहय—"लुत्ती हय हमर पुतोहु मालिक ! बान्हि दू अहाँक ढेकामे ?" हम कृत्रिम तामससँ कहियैक—'मारबौ गे बुढ़िया ! हमर ढेकामे आगि लगयबें !" बुढ़िया ओहिना दुष्टतासँ हँसय—"करेजामे त' आगि लागले हय मालिक ! बुता लू ! भेजि देबै आइ राति हवेलीमे···

हम खिसियाक' मार' दौड़ियै, त' बुढ़िया प्रसन्न भ' हँस' लागय। ओहू दिन अपन बात पर बुढ़िया प्रसन्न भ' हँस' लागलि ! हम कृत्रिम क्रोधसँ कहलियैक—"तों रहि गेलें ओहिना नट्टिन !" आ आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ ! पाछाँसँ ओकर स्नेह भरल स्वर आयल छल—"खूब जीबू मालिक ! भगमान भल करथि·····"

आ माय कहैत अछि—"आब एहि गाममे ककरो भल नहि हेतैक ! सौंसे आगि पसरल छैक !" अनिल कहैत अछि—"एहि बेर फैसला भ' क' रहतैक, बड़ बहसि गेल अछि ई सभ ? आ बहसत कोना नहि ! हमही अहाँ बहसबैत छियैक कि क्यो आन ? सभटा ओइ पारक महाकान्त झा आ भुट्टा झाक कृत्य अछि ! दुनू कम्युनिष्ट बनैत अछि ! एक गोटे आधा गजक एक गज नपैत अछि आ दोसर तीन पावकेँ सेरभरि, आ कहत जे कम्युनिस्ट छी ! घास छथि। साँझसँ एकरा सभक चौपालमे बैसत दुनू, घरेघर तिमन चिखत ! तिमन की चिखत, मौगी सभकेँ अँखियौत आ लेर चुऔत ! दुनू भारी चमचोर अछि भैया ! ओकरे फिराकमे रहैत अछि !"

हम आर अचम्भित भेल जा रहल रही ! एतनी टा अनिल, कोन-कोन गप्प कयने जा रहल छल ! चमचोरी आ धरपैसीक गप्प क' रहल छल। हमरा आँखिमे अविश्वास देखि क' ओ फेर बाजल—"अहाँकेँ विश्वास नै भ' रहल अछि भैया ! चारि दिन गाममे रहू त' सभ बूझि जयबैक ! सभ फसादक जड़ि वैह दुनू अछि ! ग्राम पंचायतमे सेहो घुसिआयल अछि ! मुखियाजी मुट्ठीमे छथिन ! सभटा रोड बनेबाक ठीका ल' लेत आ हमरा अहाँक जन-बोनिहारकेँ टाका-आठ आना बेसी द' क' बहकाओत ! हमरे अहाँक गाछीसँ माटि काटि क' सड़क-बान्ह बनाओत आ हमरे अहाँक जन-बोनिहारकेँ भड़काओत ! सरोज भैयाक काज जे

सभ राड़-राड़िन आ जन-बोनिहार छोड़ि देने छनि तीन माससँ, ओकरो पाछाँ अही दुनूक हाथ अछि····"

हमरा किछुओ अर्थ नहि लागल। तीन माससँ सरोजक काज कियैक बारि देने छलनि, हमरा नहि बूझल छल। अनिल कहलक—"अहाँकेँ आरो बहुत रास गप्प नै बूझल हैत। गाममे रहू त' अपने बूझि जयबै सभटा पेँच।"

हमरा पेँच सोझराब' नहि पड़ल। किछु काल बाद सरोज अपने अयलाह —"की कहू भैया। ई सभ त' सनकि गेल अछि। कनियेटा बात पर आफत क' देने अछि। परबोधना हरबाही कयने छल, साँझखन आफिससँ आयले रही कि ओकर बहु ! बोनि लेल आयल। मोन गरमायल छल, बिगड़ि देलियैक जे जो काल्हि अबिहेँ। बस्स, एतबे टा पर फसाद क' देलक। प्रात भेने पनिभरनीकेँ रोकि देलक। हरबाह नागा क' देलक। सभ पर बन्हेज कयने अछि। पंचैती कयलक अपनामे जे हमरा माफी माँग' पड़त ओकर बहुसँ···आरो बहुत रास माँग सभ तैयार कयने अछि। देखू त' सार सभक खचरपनी···"

बड़ीकाल अपन दुखनामा सुना अन्तमे जाइत-जाइत सरोज कहि गेलाह— "हमरा सभमे अपनामे मेले नहि अछि तैँ, न त' देखा दितियैक खचरहबा सभकेँ जे बन्हेज केहन होइत छैक? ककरो कोनो काज नहि कर' दितियैक। अपने भीख माँग' अबैत। मुदा हमही सभ माथा चढ़ौने छियैक·····"

सरोजक संग महेश सेहो आयल रहथि। सरोजक गेलाक बाद कहलनि— "सभटा बात ठीक नहि कहलनि भैया। बोनि लेल तीन दिनसँ घुरि जाइत छलनि! ओहू दिन दू बेर घुरि गेल रहनि! कमायल बोनि रहैक, से देबाक बदला गारि देलथिन विखिन्न-विखिन्न? धकियाक' आँगनसँ बाहर क' देलथिन। अपनो मुँह सक्कमे नहि छनि। झट अवाच्य कथा कहि दैत छथिन सभकेँ। ई तेसर बेर छनि। हिनका लेल ककरा-ककरासँ झगड़ा करत लोक? अपनो बहिकिरनी-हरबाह काज छोड़ि देत, त' की करब हमरालोकनि?"

अनिल हुनका जोरसँ डँटलकनि—"बस्स, अही द्वारे अहाँ सभक ई दशा होइत अछि। करबै किएक ने हम सभ? तेहन उपाय करबै जे सभ दशा भ' जयतैक। खाली अपनामे मेल आ बन्हेज आखू, सभटा नङटपनी घुसाड़ि देबैक "

महेश सिटपिटा क' चुप्प भ' गेलाह। माय उठिक' अंगना चल गेलि। अनिल विस्तारसँ सभटा खिस्सा कह' लागल।

\+ × +

राति अधिक नहि बितल रहैक मुदा अन्हार बेस पसरि क' बैसि गेल रहैक गाममे। नामी बाबूक दलानपर मुदा अन्हारक लेशो नहि रहैक। रत्ती-रत्ती झकझकायल। नव बनल पुरान-साहबी फैशनक बंगलीमे दू बल्बक संग-संग एकटा पेट्रोमेक्सक रोशनी सेहो पसरल छलैक। थहाथही लोक। किछु बैसल, किछु ठाढ़। नामी बाबू अपने नहि घुरल छलाह मधुबनी सँ। हुनकर गाड़ीक हॉर्नक प्रतीक्षामे सभ कान ठाढ़ कयने बैसल-ठाढ़ छल। सभक अपन-अपन दुखनामा छलैक। आशा छलैक जे कहीँ अइबेर हमरे भाग्य जागि जाय। ककरो दू-दू टा बेटा बेकार बैसल छलैक—कमसँ कम एको टाक कोनो जोगार बैसि जाइ···

नामी बाबूक लेल कोन मोस्किल। कने नजरि फेरबाक देरी छनि। किनको कोनो दोसरे आस छनि। हाथपर नमरी-दू नमरी राखि देताह, हुनका लेल कोन कीमति छैक दू-चारि नमरीक। गरीबक उपकार भ' जायत। सय-दू सय देलाक बाद बिसरि जाइत छथिन नामी बाबू। गाममे क्यो पाँचो टाका पंच देत त' तेसरे दिन तगेदा पठाओत···जान अकच्छ क' देत तगेदासँ।

जिनका सभक आशा नमरी-दू-नमरीसँ बेसीक छनि, ओ सभ दलानमे राखल कुर्सी सभपर बैसल छथि। बीचबला कुर्सी— रामजी सिंहासन जकाँ खाली छनि! नामी बाबू औताह त' सिंहासन ग्रहण करताह! पैघ भाइ···भरत जकाँ छोट भाइ नहि—·····बिन खड़ाम रखने भक्तिभावसँ ओहि सिंहासनक रक्षा आ सेवामे रहैत छथिन सदिखन! अखनो सिंहासनक बगलबला कुर्सीपर विराजमान छथिन—दहिना कात। आ बामा कात बैसल छथि काशी चौधरी! गामक पुरना जमींदार। नामी बाबू लोकनि हुनके घरक भगिनमान छथि। मुदा आब सम्बन्ध पलटि गेल छनि! नामी बाबूक ग्रामक फ्रंटक सेनापति बनल छथि काशी चौधरी! ओना कहबा लेल सरपच छथिन अपने जेठ भाइ मुदा गामक राजनीतिक असली कर्णधार छथिन काशी चौधरी! नामी बाबू हुनका प्रसन्न करबा लेल बीच-बीचमे कहि दैत छथिन—शेर बब्बर छथि काशी काका! बूढ़ भेला ताहिसँ की·····अखनो ककरो साहस छैक हिनकासँ भिड़बाक···!

काशी बाबू तखनो कुर्सीपर अकड़ल बैसल छलाह। सुट्टा खतवे ओहि बंगलीक लगमे आबि गेलनि आ गरजि क' कहलकनि—"हमर बोनि देब की नहि काशी बाबू ! नहि देब त' बेजाय बात हो जायत !"

सुट्टा ताड़ी पीने बुत्त छल। हाथमे मोटगर लाठी छलैक। संगमे रहैक चारि-पांचटा नौजवान खतबे-धानुक। बंगलीमे बैसल आ नीचामे ठाढ़ पचासो लोकमे ककरो साहस नहि भेलैक जे ओकरा रोकतैक !

सुट्टा चारूकात ठाढ़ लोकके सम्बोधित करैत बाजल—"देखू त' हिनकर चालि अहाँ सभ ! माटि कटली हम सभ। महीना बीति गेल ! बोनि लेल सभ दिन दौड़ा रहल छथि जेना हम सभ भीख मँगैत छियनि ! सुनि लू काशी बाबू, बोनि नै देब आइ त' दरबज्जापर सँ बड़द खोलि लेब ! ई नङटपनी छोड़ि दू... सभटा घुसाढ़ि देब ! कोनो बभनाक साहस हय जे बाजत किच्छो ! हइए... ठाढ़ छी हम आउ, के अबै छी..."

लाठी आगूमे गाड़ने सुट्टा ठाढ़ छलनि आ दलानमे थहाथही भरल लोक सकदम्म छलाह। ककरो बोल नहि फुटलनि। काशी चौधरी उठि क' ठाढ़ पर्यन्त नहि भ' सकलाह ! भरि इच्छा गारि पढ़ि, धमकी द' ओहिना लाठी बजारैत चल गेल सुट्टा......मस्त सांढ़ जकाँ झूमैत ! पाछू-पाछू ओकर दल छलैक।

ओकरा जाइते काशी चौधरी छड़पि क' ठाढ़ भेलाह। लोक सभ अखनो सकपकायल छल। नामी बाबूक भाइ बटेसर बाबू लेल धन सन ! एना निर्विकार बैसल, जेना हमरा कोन मतलब...कोनो हमरा गारि पढ़लक अछि ! हमरा दरबज्जा पर आबि क' पढ़लक त' की भेलैक ! हमरा खिलाफ थोड़े बाजत ! सभ साल सभ पाबनिमे धर-धरानिकें नोट बँटैत छथि नामी... ...

काशी चौधरी मुदा तामसे थर-थर कापि रहल छलाह। बिना किछु बजने दौड़ैत अपन टोल दिस बिदा भेलाह ! पोखरिक भीड़पर अबैत देरी हाक मारलनि ...दौड़ह हो अनिल...

आ चारूकातसँ लोक दौड़' लागल। काशी चौधरीक दलानभर भीड़ लागि गेल। अनिल सभकें जुटौलक। लाठी-भाला आबि गेलैक। मुदा राति क' ओइ भीड़कें खतबेटोली दिस बढ़बाक साहस नहि भेलैक। नामी बाबूक गाड़ीक हॉर्न

सेहो लोक सुनलक। ओहो काशी चौधरीक जिज्ञासामे नहि रहलथिन। भोरे सुट्टाक बाप काशी चौधरीक पयर पकड़ि लेलकनि—"हमहीं पयर पकड़ैत छी मालिक। निशामे छल। माफ क' दियौक। हमरा जतेक मारब से मारि लू..."

अनिल ओकरा ठेलिक' पाछाँ क' देलकै—"जो, भाग एहिठामसँ। नाटक नहि कर। तोरा माफी मंगने की हेतौक। सुट्टाकें पठा दहिक। ओकरा आइ लाठी घुसा मुँह बाटे बहार करबै तखने फैसला हेतौक। नेता बनैत छौक। धनुख-टोलीक मुनराक संग कमिटी बनौने छौक 'पिछड़ा वर्ग जागरण समिति।' बजा आइ सभकें, जे के बचबैत छैक।"

यदुआ बेर-बेर कल जोड़ैत रहलनि आ ई सभ धकियबैत रहलथिन, सार... बहीन... गरियाबैत रहलथिन। ओहीकालमे पोखरीक उतरबारी महार पर लाठी नेने सुट्टा निकलल—"घुरि आब' बाबू ! ककर नेहोरा-मिनतीमे लागल छ' ! कथी वास्ते ! कोन गलती कयली हम... मुफ्त बोनि मंगली... अपन कमायल बोनि ! से जे हमरा नहि देत तकरा एहिनती गारी देबै हम... बभना सभकें...। अपन कमा क' खाइ छी हम त' छोटका जाति, आ ई बैठल खयता त' बड़का जाति... अलहुआ"

छौंड़बा सभ मुनराकें छोड़ि सुट्टा दिस दौड़ल। पचासोक संख्या छलैक। सुट्टा एकसर छल। अपन टोल पड़ायल। खिसिआयल भीड़ निरपराध यदुआकें खूब पिटलक। अधमरू भेल ओहो अपन टोल दिस भाग' चाहय मुदा भीड़ घेरने छलैक।

ताही कालमे दछिनबारी टोलसँ काशी चौधरीक घरक सिमानलग आबि मुनरा गरजल—"छोड़ि दिऔ यदू काकाकें अहाँ सभ' नै त' बेजाय बात भ' जायत। खतबेटोली-दुसधटोली-मलहटोली सभ उनटि पड़त। सभक घरक चार नोचि लेत... लाश बीछि जायत..."

क्रोधान्ध भीड़ यदुआकें छोड़ि मुनरा दिस दौड़ल। मुनराक पीठपर क्यो नै छलैक। ओहो पड़ायल। भीड़ ओकर अँगनामे ढूकि गेलैक। ओ अपन कोठलीमे बन्द भ' गेल। उत्तेजित छौंड़ा सभ आंगनमे ठाढ़ि ओकर स्त्रियेकें गोलियाब' लगलैक। नूआ तिर्रो-तिर्री क' देलकै...। मुनरा घरमे नुकायल रहल।

मुदा ओ बहरायल घरसँ। सभ घरसँ बहरायल ओ सभ। टोले-टोल बहरायल ! हाथमे लाठी, भाला-गड़ास लेने बहरायल ! बड़कीटा जुलुम बना क' बहरायल। गामक सभ बाट, सभ दरबज्जा पर बाटे बहरायल। सभ बभनाकेँ गारि दैत बहरायल। क्यो घरसँ नहि बहरयलाह ! अपन-अपन कोठलीमे नुकायल रहलाह। अनचोकासँ जे पकड़ा गेलाह, तिनकर दुर्गति भेलनि। नेङरा विश्वनाथ मिसर अपन दलानपर बैसल छलाह, हुनका उठाक' बेंग जकाँ पटकि देलकनि ! पण्डित मुसहर झा पूजा कयने अबैत रहथि, हुनका फूलडालीक संग ओंधरा देलकनि माटिमे। सरोजक घरक सोझा बाटपर मूति देलकनि आ काशी चौधरीक दलान लग दस मिनट धरि नारा लगौलकनि।

फेर सभ मिलि एकटा मीटिंग कयलक। बहुतरास प्रस्तावसभ सर्वसम्मतिसँ पारित भेलैक—

(१) हमर सभक जनीजाति बोनि लाब' नै जायत ! पहिने बोनि भेटत तखन हरबाही-चरवाही करब !

(२) बोनि नगद लेब, सेहो तीनटाका रोज नै, छओ टाका रोज। अन्नमे खाली धान आ गहूम लेब, सेहो अढ़ाइ सेर पक्का। कच्चीसँ चारि सेर।

(३) सरोज जा धरि परबोधनक स्त्रीसँ माफी नहि मंगताह हुनकर कोनो काज क्यो नहि करतनि।

(४) काशीबाबू जाबत सुट्टाकेँ माटि कटबाक बोनि नै देथिन, हुनको कोनो काज क्यो नहि करतनि।

सभाक अध्यक्षता कयलनि—सतीनाथ झा।

× × × × ×

सभटा खिस्सा सुना अनिल हँसैत नाटकीय मुद्रामे कहलक—"आब बुझलियै भैया जे कत' पौ छै आ कत' छौ छै ! ओइपरक महाकान्त झा आ भुट्टा झा आ अपना पारक सतीनाथ झा···पहिल दुनू महान साम्यवादी आ अन्तिम लोकदलक उन्नायक ···आब वर्गविहीन समाज स्थापित भ' क' रहत !"

हमरा हँसी लागि गेल—"मुदा सतीबाबू त' पुरान कांग्रेसी छथि—स्वतंत्रता सेनानी ! पेंशन भेटैत छनि····

अनिल आरो जोरसँ हँसल—"असली स्वतन्त्रता सेनानी छथि···; एकबेर जहल भ' अयलाह त' बाट देखल भ' गेलनि ! स्वाधीनताक बादो दस बेर जहल भ' आयल छथि। चोरिसँ ल'क घरपैसी धरिमे ! पेंशन त' भेटैत छनि, धीयोपुता सभ कमाइत छनि मुदा बुढ़ारीमे एकटा आफत आबि गेलनि तैँ लोकदलमे शामिल भ' गेल छथि।'

हम उत्सुकतासँ पुछलियैक—"एहन कोन आफत आबि गेलनि एकाएक !"

अनिल गम्भीर होइत बाजल—"परुकाँ बुढ़ारीमे स्त्री मरि गेलथिन ! बिन मौगीक रहबाक अभ्यास नै छनि सती बाबूकेँ ! विधवोसँ विवाह करबा लेल तैयार छथि—पुरान समाज-सुधारक छथि ! मुदा ब्राह्मणी विधवो भेटबाक आस नहि छनि। तैँ आब लोकदलमे गेल छथि ! पहिने कमलपुरक खतबे सभ भरोस देने रहनि। मुदा बुढ़बाक संग सगाइ लेल कोनो खतबिनियाँ तैयार नहि भेलनि। आब अपने गाममे दुसधटोली पर आस लगौने छथि !"

हमरा अनिलक गम्भीरता पर हँसी लागि गेल ! बुझबामे भांगठ नहि रहल जे बातकेँ अतिरंजित क' रहल अछि। मुदा हँसी लगले थमि गेल। मोनमे बहुत रास बात उमड़' लागल। की थिकैक ई सभ ? दलितक जागरण ? जाति संघर्ष वा वर्ग संघर्ष ! कथीक तैयारी थिकैक ई। वोटक लेल जे जहर पसारैत अछि नेता सभ जातिक नामपर··· तकरे प्रतिफल थिक ई ? तखन अइमे महाकान्त झा, जट्टा झा आ सतीनाथ झा कोना छथि ? दोसर मोन कहैत अछि जे कहीं ई देशक इन्द्रधनुषी राजनीतिक एकटा छोट-छीन दृश्य मात्र त' नहि थिक ? कानून-व्यवस्था, शासन, सभटाक स्वरूप इन्द्रधनुषी भ' गेल अछि। वर्षासँ पूर्व आ वर्षा हैबा धरि कतहु पता नहि। वर्षा समाप्त आ इन्द्रधनुष उगि आयत। उपद्रव समाप्त, हत्या मारि-पीट समाप्त— पुलिस उगि आयत। चोरी-बेइमानी, लेनदेन, आपसी वितरण समाप्त, अधिकारी उगि आयत। पुल-बान्ह बनत आ टूटत, तखन जाँच-कमीशन उगि आयत। अदृश्य शक्तिक द्वारा उपद्रव पसारल जायत··· निरपराध लोक मरत-मारत आ तखन ओइ घटनास्थलक आकाश पर एकटा छोट-छीन नेता अवतरित हैताह जेना आइ महाकान्त झा, भुट्टा झा आ सतीनाथ झा अवतरित भेल छथि। एकर बाद एकटा पैघ, ओहूसँ पैघ नेता अवतरित हेताह··· इन्द्रधनुष पैघ···आरो पैघ हैत। सौंसे आकाशकेँ छापि लेत। तखन सभ समस्या सभ दुःख—कष्ट स्वतः तर पड़ि जायत··· समाप्त भ' जायत। सर्वोपरि भ' जायत

राजनीति आ नेता। नेताक समस्याक समाधान राष्ट्रक समस्याक समाधान बनि जायत।

ओही समस्याक समाधान लेल नामी बाबू सेहो गाम दिस झुकल छथि। टाका बहुत कमा लेलनि, आब नेता बनबाक छनि। ओनाहो पाछला सभ कवचरूपमे नेतागिरी धारण कइए लैत अछि। मुदा आब ओकरी सभके किछु दिक्कति भ' रहल छैक। नेताकें चाही पाइ आ लाठी। पहिने पाइसँ लाठी भेटि जाइत छलैक। आब स्थिति उनटा भ' गेल छैक। लाठीकेँ पाइ आ प्रतिष्ठा स्वतः भेटि जाइत छैक। आब ओकरा नेताक लठैत बनबाक काज नहि होइत छैक, ओ स्वयम् नेता बनि जाइत अछि लाठीक जोरसँ। लाठीक जोरसँ बहुमत सभ दिन प्रभावित होइत अयलैक अछि। नामी बाबू टाकासँ बहुमत प्रभावित कयने छथि··· किछु लाठियो छनि। मुदा धारक ओइ पारमे खाली लाठिए लाठी छैक। ओतेक लाठी खरीदब सम्भव नहि भेलनि, मुखिया पदक उम्मीदवार अपन भाइकेँ नहि बना स लाह। मुखिया फेर ओही पारक बनला, समझौता क' सरपंचीसँ सन्तोष कयलनि। हुनका दरबज्जा पर लाठी पटकि अयलनि सुट्टा। अपने नहि छलाह, भाइ बटेसर बाबू छलथिन··· ओ अनठा देलथिन— हमरा पर थोड़े लाठी बजारलक अछि। हम अनेरो कियैक अराड़ि मोल लिअ'। नामी बाबू घुरलाह, ओहो शान्ते रहलाह। भाइक बुधियारी नीक लगलनि। काशी काकाकें द' ल' क' मना लेबनि।

ई कथा हमरा अनिल नहि कहलक। ई त' हमर अन्तर्मनक दृष्टिमे सभटा स्पष्ट झलफला रहल छल। हमरा गुनधुनमे देखि अनिल बाजल— "अहाँ कोनो फिकिर नहि करू भैया। ओकर सभक जुलूस आ मीटिंगसँ डेरायल नहि छी हमरा लोकनि। अइ बेर हमहूँ सभ अड़िये गेल छियनि··· फैसला भैये जयतैक। बिना पैर पर नाक रगड़बयने नहि छोड़बैक···

अनिल बड़ विश्वासपूर्वक हमरा सभटा आयोजन आ तैयारीक विवरण देब' लागल।

\+ + ×

मीटिंग काशी चौधरीक दरबज्जा पर भेलैक। भरि गामक लोक आयल। खाली बटेसर बाबू आ हुनकर भैयारी नहि अयलथिन। नामी बाबू भोरे अपन मोटरसँ पटना बिदा भ' गेल छलाह। मीटिंग शुरू कर'सँ पहिने बटेसर बाबूकेँ समाद गेलनि। ओ समदियाकेँ घुरा देलथिन—चल, अबै छी। आधा घंटाक बाद दोसर समदिया गेलनि, ओकरो सँह कहलथिन— चल, अबै छी। काशी चौधरी तैयो मीटिंग शुरू नहि क' रहल छलाह। भीड़ उठ' लगलनि--"तखन हमही सभ जाइत छी। एक गोटे लेल एतेक काल के बैसत ?"

अनिल सभकेँ रोकलक मुदा काशी चौधरीक भातिज महिम गरज' लागल—"यौ कथी लेल नाटक करै जाइ छी अहाँ सभ। ओ किन्नहु ने औताह। हुनका दरबज्जापर, हुनका सामनेमे ककाकेँ गारि देलकनि, किछु बजलाह ? बटेसर भाइक त' जाय दिअ', नामी भाइ घुरिक' अयलाह, ओहो किछु बजलाह ? ओना बात बातमे बन्दूके बहार करै जाइत छथि, ओइ कालमे सभ चूड़ी पहिरि लेलनि। आब मीटिंग शुरू नहि करब त', हम सभ जाइत छी !"

मीटिंग शुरू भेल आ खतमो भेल मुदा बटेसर बाबू नहि अयलाह ! काशी चौधरी सभकेँ सभटा घटना सुना कहलथिन —"ई खाली हमरे संग नहि भेल अछि, सरोजेक संग नहि भेल छनि, अहाँ सबहक संग हैत। एकर सभक माथे उनटि गेल छैक। सुट्टा त' अछिए पाजी। ओही दिन मुसलमान टोलीक एकटा छौंड़ीक संग खेतेमे लट्टमपट्टी कर' लागल छल "दंगा करबा दैत ! हमही बचा देलियैक।" भीड़मे मन्नू चौधरी फुसफुसा उठलाह—"खेतमे छौड़ी संग लट्टमपट्टा करैत छल, त' ई कोना पहुँचि गेलथिन ? हिनकर त' एको टा खेत नै छनि ओइ टोलमे···

कन्तू चौधरी आस्तेसँ जबाव देलथिन—"हौ हिनके गोलक त' लोक छनि ई सुट्टा आ मुनरा ! सभटा छोटका लोकसँ सांठ-गांठ रहैत छनि हिनका ! सभपर हुलकौने रहैत छथिन ! अइ बेर अपने पर हुलकि गेलनि, त' जमीन-आसमान एक कयने छथि !

गुलगुल होइत देखि अनिल ठाढ़ भेल आ एकटा कागजपर लिखल प्रस्ताव सभ पढ़' लागल -

ई सभा सर्वसम्मतिसँ पास करैत अछि जे

१. जा धरि प्रबोधना आ ओकर स्त्री सरोज बाबूसँ आ सुट्टा आ मुनरा काशी बाबूसँ पैर पकड़ि क' माफी नहि मंगतनि, हमरा लोकनि ओकरा सभकेँ काज नहि देबैक, चाहे सभटा काज हमरा सभकेँ अपने कर' पड़य।

२. तीन टका जे ओनि दैत छियैक ताहिसँ फाजिल एक पाइ लेल क्यो तैयार नै हेबैक, माफी मांगि लेत तैयो···

३. एहि संघर्ष लेल बड़ टाका लागत ! लाठी जुटब'पड़त···बम आ बन्दूकक इन्तजाम कर' पड़त ! तैं सभ घरसँ तत्काल पच्चीस टा क' टाका चंदा लागत !

४. सती नाथ झाकें ने क्यो नोत देतनि ने हकार। हुनकर सम्पूर्ण सामाजिक वहिष्कार कयल जायत।

५. एहि संघर्षक संचालनक हेतु सात गोटेक एकटा समिति गठित होइत अछि, जकर अध्यक्ष काशी बाबू, आ कोषाध्यक्ष अनिल बाबू रहताह। अन्य सदस्य रहताह—बटेसर बाबू·····

महिम तुरत हल्ला मचौलक—"हुनकर नाम कोना रहतनि ! मीटिंगमे बजाहटिपर बजाहटि गेलापर नै अयलाह, से एकर संचालन करताह। चलै चलू यो····

ओकर आबाजपर मुदा क्यो नहि उठल। बटेसर बाबूक गप्प छलनि, नामी बाबूक भाइ ! खुल्लम खुल्ला हुनकर खिलाफमे के बाजैत ?

मीटिंग समाप्त भेलापर घुरिक' अपन आँगन जाइत मन्नू चौधरी कन्तू बाबूकें कहलथिन—"भ' गेलनि काशी भाइक ब्योँत ! चन्दा पूरा आवियै जयतनि। नामी बाबू संग छथिन्हे। काल्हिए मुनरा आ सुट्टाकें बजा मिलि जयताह···हुनके गोलक त' लोक छनि। आ गाम भरिक लोक बनब उल्लू। काशी भाइ त' खेत पथारसँ निश्चिन्ने छथि ! जमीन परती रहत अहाँक आ मौज करता ओ·····

\+ + +

अनिल मीटिंगक सभटा खिस्सा सुना चल गेल। बीचमे माय नहि जानि कखन आबि क' दलानमे बैसि गेलि से पतो ने लागल ! असलमे मन्नू चौधरी आ कन्तू चौधरीक टिप्पणीक गप्प वैह कहलक ! अनिल त' खाली मीटिंगक गप्प कहलक आ चल गेल।

ओकर गेलाक बाद माय कहलक—"आब तोँही देखह ! एहन गाममे कोना रहैत छी हम एकसरि आ तोरा लोकनि एकदम निश्चिन्त रहैत छ'····

सत्ते हमरालोकनि एकदम्म निश्चिन्त रहैत छी। माय आइ एतेक बात कहलक···गाम उनटि जयबाक गप्प कहलक, तैयो कोनो डर नहि भेल। गामक लोकसँ मायोकें कोनो डर नहि छैक·····हम जनैत छी। ओकरा सभ लेल स्नेह छैक मायक मोनमे···कोनो प्रपंच वा राजनीति नहि। ओकरा कथीक डर ?

तैयो हम जखन गाममे टहल' विदा होइत छी त' माय टोकैत अछि—"सम्हरि क' जैह', ओ पुरना गाम नहि रहल' आब !"

हम उत्सुकताक संग आगाँ बढ़ैत छी। सत्ते यदि गाम जागि गेल हो····सत्ते यदि एकरा सभमे आत्मसम्मान जागि गेल होइ····एकरा सभक ठोरपर साटल 'मालिक हजूर' नोचा' गेल होइ···त' केहन लागत ? एकटा सुखद परिवर्तनक संग साक्षात्कारक प्रत्याशामे हम आगू बढ़ैत गेलहुँ।

कतहु किछुओ ने अभरल। पहिने खतबे टोली दिस गेलहुँ। बाटपर ओहिना बैसलि छलि बिशनपुरबाली ! नहि, बिशनपुरबाली नहि। लग जा देखलियैक, ओकर जुअनकी पुतोहु छलैक ·· एकदम बूढ़ि ओहिना, डांड़मे थोड़े ननगिलाट लपेटल··· झोखड़ल-सिकुड़ल देह ! बहुत दिनपर देखने छलियैक, मुँह यदि अपरिवर्तित नहि रहितैक त' चिन्हबो नहि करितियैक। ओ चीन्हि लेने छलि। लग अबिते कहलक—"परनाम मालिक !"

हम हँसी कयलियैक—"आइ गाय चरब' जुअनकी कोना आबि गेलै···नट्टिन बुढ़िया कत' छौ ?

ओकर पपड़ी पड़ल ठोरपर बड़ दयनीय हँसी पसरि गेलैक—"कोन जुअनकी मालिक ?। हमरो आरकें जुआनी अबै हइ कहियो ! कोन बाटे अबै हइ आ केन्ने जाइ हइ अनका भले बुझा जाउ, अपना नै बुझाइ हइ ! आ जतबो दिन रहै हइ—कोन अप्पन होइ हइ ? बन्हकिए त' रहै हइ सभ दिन···

हमरा सिहरन भेल ! बिशनतुरबालीक पुतोहु इ कोन भाषा बाजि रहल अछि ! माय झूठ नै कहैत छलि। गाम सत्ते बदलल छैक··· बिशनपुरबालीक लुत्ती-पुतोहु आइ सत्ते लुत्ती बनलि छैक।

हमरा किछु सोचैत देखि ओ अपने कहलक—"बुढ़िया त' मरि गेल मालिक ! बूढ़ देह रहलै, भूख नै बरदास्त भेलै, भुक्खे मरि गेल ! रौदी हइ···

कहाँसँ खियैतियैक ! एक मास भीख माँगि क' खयलक आ एक दिन घरमे सूत रहि गेल····सात साँझक उपास रहलै···

हमरा अबाक आ हतप्रभ देखि ओ कहलक—"हमरा आर के जान लेल दुख नै करू मालिक ! बुढ़िया गेल आ हमहू सभ जायब। भुक्खे मरि जायब। सुट्टा शहरमे रहि क' रिक्शा चलबै हय आ मुनरा गामे-गामे घूमिक राजमिस्त्रीक काज करै हय···! ओकरा सभकेँ कोन चिन्ता हइ ! आगि लगा मौज करै हय। एन्ने हमरा सभक पेटने आगि धधकै हय, । धीयापुता अन्न बेतरे मरै हय·····! अहाँ सभ निर्दयी बनल छी····काज बन्न केने छी···माल-जाल सेहो भुक्खे मरै हय। गाछी-बिरछी, खेतक आरिमे गाय-महीस नै चरब' देब ! इहे बान्हपर, अइ रौदीमे चरै हय गाय-महीस ! मरबे करत ! जे ने करै ई सुट्टा आ मुनरा !"

हम सर्द भ' गेलहुँ···लुत्ती त' सर्द-हेमाल भेल अछि ! कत' छैक आगि ! ई त' खाली छाउरे-छाउर छैक। माय सत्त नहि कहलक। किछुओ ने बदलल छैक। गाम त' ओहिना छैक····

हमरा घुरैत देखि ओ फेर कहलक—"कोनो उपाय करियौक मालिक—!

हम ओकरा बिना कोनो आश्वासन देने मलहटोली दिस विदा भ' गेलहुँ। धार पार करैत जहिना पहुँचलहुँ, ओइ पुरना पोपरक गाछ लग कि एकटा बुढ़िया, एकटा पाँच वर्षक नेनाक आँगुर पकड़ने हमर चारूकात नाचि-नाचि क' गाब' लागलि—"हाली-हाली बरिसू, इन्नर देवता।"

बतही अछि। रौदी छइ—अकाशमे मेधक एक्कोटा टिक्कर पर्यन्त नहि छैक आ ई नाचि-नाचि क' गबैत अछि—"हाली हाली बरिसु इन्नर देवता !"

बाट घूमिक' हम आगू बढ़' लगलहुँ त' ओ फेर आगूसँ हमर बाट छेकि लेलक - हमरा नै चिन्हली मालिक ! हम छी बतही फुलेसरी ! गुलमाक माय आ अजदबाक दादी ! गुलमाकेँ हबकलकै साँप आ अजदबाकेँ पुलिस बन्दूकसँ सन्ना क' देलकै। मुदा बतही जिबै हय मालिक···नै चिन्हली।

हम गौरसँ देखलियैक ! बिशनपुरबालीसँ बेसी बूढ़ि-झुरकुट ! चमड़ी घोकचिक सिकुड़ि क' आकृतिकेँ अजीब स्वरूप देने। तिर्री-तिर्री भेल डांड़मे टपेलल लत्ता। डांड़सँ ऊपर कतहु किछु ने ! उज्जर सनसन केश मुँहपर झबरल आ ओइ तरसँ मिलमिलाइत ओकर चमकैत आँखि···

हमरा आगू बढ़ैत देखि फेर बाट छेकि लेलक बुढ़िया—"नै जाउ बौआ। राच्छस सभ रहै हय, खा लेत। हमर बेटा-पुतहुकेँ खयलक तैयो सन्तोष नै भेलै··· अइ बिन बापक नेन्नाक मायोकेँ खा गेलै। पुतोहुकेँ खयली हम अपने। एकरा सभकेँ बातमे आबि क' अकलंक देली····जनमौतीक कोखिमे लात मारलक गुलमा। बहु चलि गेलैक रूसि क'···द' गेलैक सोन सन बेटा। ओ बगदि गेलैक। चोरी-डकैतीमे पर्रकि गेलैक। पुलिस ओकरो सन्ना बना देलकै। जाइत-काइत ओहो अपन गढ़ आरि बहुक कोखिमे लात मारने गेल। ओकरो बहु सोनसन बेटा देलकै। ओइ लातसँ नै मरलै मौगी, साहसबाली छलि। एकसरे अपन नेन्नाकेँ पोसि क' पैघ कर' चाहैत छलि। समन्ध लेल कतेक लोक कहलकै मुदा नहि मानलकै मौगी। तकरा की कयलकै अइ टोलक लोक से जनबै मालिक। काजपर बन्हेज लगा देलकै। सांझक सांझ भूखलि रहलैक मौगी। एक दिर भोरे मूइल पड़लि छलैक आ छातीसँ सटल किलोल करैत रहै ई छौंड़ा···

हम घुर' लगलहुँ। मोनमे बहुत रास बात छटपटाय लागल। बुढ़िया पाछाँसँ जोरसँ बाजलि—,'भागू नै बौआ, कहले जाउ। ऐ छौंड़ाकेँ के देखतैक, फुलेसरी बतही त' पाकल आम हय, कहियो खसि पड़त। कहने जाउ बौआ·· अहीँ सभने कहने रही जे आब अत्याचारीक राज नहि, जनताक राज हइ····आब क्यो जुलुम नै करतैक··कहने रही ने बौआ···जबाब दू।

हम बिन कोनो जबाब देने पड़ाइत रहलहुँ। मलाहक टोल पूर्व-वत छल। छोट-छोट फूसक घर। जे बड़ पैघ से आठ हाथ लम्बा-चारि हाथ चौड़ा। ओहिना डांड़मे विष्ठी पहिरने पुरूख आ ननगिलाट लपेटने मौगी सभ। नंग-धड़ंग खेलाइत, धारमे चुभकैत धीयापुता सभ। माय झूठे कहने छलि। गाम ओहिना छलैक···मलहटोली ओहिना छलैक। एकदम अपरिवर्तित।

घुरतीकाल धनुखटोली बाटे घुरलहुँ। लागल जेना किछु बदलल-बदलल होइ। पहिने ठीकसँ नै बुझायल जे केहन परिवर्त्तन। फेर ध्यान देला पर स्पष्ट परिवर्त्तन बुझायल। टोलक पछबरिया छोर पर एकटा ऊँच मड़बा जकाँ। मड़-बाक धार जरल, जेना हालेमे जरल होइ। खाम्हसँ बान्हल एकटा आधा लटकल तख्ती—"पिछड़ा वर्ग जागरण मण्डप"। मड़बा पर बैसल बहुत रास लोक सभ।

हमरा उत्सुकता भेल। लग जा पैर ओहिना थकमका गेल। माय कहने छल, सम्हरि क' जैह' मुदा हमरा कोनो भय नहि भेल। हमरा ओना ठाढ़ देखि किछु गोटे ठाढ़ भेल—"परनाम मालिक।"

मोनमे किछु कच द' उठल । मालिक अखनो एकरा सभक ठोर पर साटलो छैक । हम सटहाकें पुछलियैक— "नव बनबौ जाइ गेलै हैं । मुदा एना चार जरल कियैक छौ… ? सटहा नम्र भावसँ कहलक—"समितिक मड़बा हइ मालिक । कोइ जरा देलकै परसू राति…

तखने एकटा छौंड़ा छड़पि क' मड़बा परसँ नीचा आयल—"जशैला से की होतैक । चार फेर ठाढ़ भ' जयतैक । ई हमरा सभक हकक लड़ाइ हय…

हमरा मोनमे किछु छड़पि उठल…माय ठीक कहने छलि । गाम सत्ते बदलल छैक…किछु भ' क' रहतैक । तखने मड़बापर ध्यान गेल । किछु परिचित चेहरा…सभ उत्सुकता बश इम्हरे तकैत । खाली एक गोटे पीठ अढ़ कयने… । ध्यानसँ देखितहि चीन्हि गेलियैक—सतीनाथ झा ।

मोन फेर छोट भ' गेल । आकाश अखनो इन्द्रधनुष सभसँ भरल छैक । सभकें नोचि क' फेक' पड़तैक । मोन भेल जे अखने जे छौंड़ा हकक लड़ाइक गप्प कयलक अछि, दौड़ि क' मड़बा पर जाय आ सतीनाथ झाकें लात मारि क' ओंघरा दिअय । फेर ओइ मड़बा पर बान्हल मुट्ठी तानि क' ठाढ़ भ' जाय आ आकाशमे लहरा क' कहय—ई हमरा सभक हक के लड़ाइ हय…जीत हमरे होत…… □

नवम्बर १९८३

स्थानान्तरण

नीक जकाँ ई बूझि गेलाक बादो जे एहि दिनकें आब बेसी दिनधरि टारल नहि जा सकैत अछि, हम बेर-बेर भगवानसँ ई प्रार्थना करैत छलहुँ जे कहुना ई दिन टरि जाय ! अपना एहि कामना आ एकर औचित्यकें प्रमाणित करबाक लेल हम पछिला अनेक वर्षसँ बहुतरास तर्क आ सुरक्षात्मक तथ्य तथा आँकड़ा एकत्रित क' लेने रही आ कोनो चर्चा अबितँहि अस्त्रक उपयोग अपना पक्षकें मजगूत करबाक लेल जी जानसँ करैत रही ।

तैयो चर्चा उठिते रहैत छल आ बेर-बेर हमर पक्षकें कमजोर प्रमाणित करबाक चेष्टा सेहो होइत रहैत छल । पछिला बेर त' उच्चतम अधिकारी सेहो कहि देलनि—'आब कोनो उपाय नहि अछि । बात संसद धरि पहुँचि गेल अछि । अहाके एत'सँ जाय पड़त । एकेठाम काज करैत सत्रह वर्ष भ' गेल अछि अहाकें ।

हम बीचे मे बात कटैत कहलियनि—एई सत्रह वर्ष तँ अहाँ लोकनि अपन आवश्यकतासँ रखलहुँ, कहैत रहलहुँ जे हम 'इनडिसपेन्सेबल' छी । आब दू वर्षसँ हमरा आवश्यकता अछि त' वर्षक गिनती शुरू भ' गेल अछि ।

उच्चतम अधिकारी हमर तर्कसँ अप्रभावित रहलाह—'त' हम की क' सकैत छी ? वर्ष ई गिनती हमरा लोकनि तँ नहि शुरू कयने छी । अहाँक अपन सहकर्मी, स्थानीय अधिकारी लोकनि एहि गिनतीक हिसाब रखने छथि, बातकें अखबारधरि पहुँचा देने छथि । बात आब हमरालोकनिक नियंत्रणसँ बाहर भ' गेल अछि ।

हमर मन में किछु कचकल । नीकजकाँ बुझियो क' जे आबा कोनो आस नहि छल, एकबेर अन्तिम प्रयास कयल—'मुदा ई कहाँधरि न्यायसंगत हैत सर ! कोशिश-पैरबी क' कोनो टुटपुजिया अखबारमे किछुयो छपालेत आ अहाँलोकनि ओही आधारपर अपना फैसला बदलि लेब । हमर एतेक वर्षक निष्कलंक एवं निष्ठापूर्ण सेवाकें नहि देखबैक । सत्रह वर्षधरि एक्केठाम रहि जायब अपराधभ' जायत' मात्र ककरो अखबारमे छपबा देलासँ ? अखबार मे छपबासँ पूर्व केन्द्रीय कार्यालय नहि जनैत छल जे एत' हम सत्रह वर्षसँ एके स्टेशन पर छी ?

उच्चातम अधिकारी तैयो कोनो आश्वासन नहि देलनि । हम अपन ब्रह्मास्त्र छोड़लहुँ—'अहाँ तँ हमर पारिवारिक स्थितिसँ अवगत छी सर ! कतेको वर्षसँ पैघ संयुक्त परिवारक दायित्व वहन करैत आयल छी, आर्थिक रूपसँ एकदम टूटि चुकल छी । आब अपनो छवो सन्तान पैघ भ' रहल अछि । एखन बदली भेलासँ ओकरा सभक पढ़ाइ-लिखाइ आ भविष्यपर कतेक घातक असरि हेतैक ? लोअर केजी सँ एम० बी० एस० सी० धरिक विद्यार्थी सभ अछि ।

हमर ब्रह्मास्त्रक कोनो असरि उच्चातम अधिकारी पर नहि पड़लनि । ओ मुसकिआइत बजलाह –हम सभटा बात जनैत छी मिस्टर झा आ इएह मुख्य कारण अछि अहाँक बदलीक निर्णयक । अहाँक एहि सभ समस्याक कारणे हमरा-लोकनि एतेक वर्ष एकठाम रखलहुँ मुदा जिनगीभरि हमरालोकनि कोना राखि सकैत छी एकेठाम अहाँके ? सेवा-निवृत भेलाक बादो अहाँक समस्या समाप्त होइ वाला नहि अछि ।

ओ चल गेलाह आ हम तामस आ निराशासँ थरथराइत ठाढ़ रहि गेलहुँ । पहिलबेर एहन थरथराहटि तहिया भेल छल, जहिया किछु मास पूर्व हम आफिसक लंच रूममे पहुँचल रही । हमर बहुत रास सहयोगी पहिनहिसँ ओत' बैसल छलाह आ एकटा अखबारक कतरन पढ़ि-पढ़ि किछु गप्प क' रहल छलाह ; हमरा देखतहि सिन्हा बाजल—'लिखलक तँ ठीके अछि । ई आफिस तँ पक्षपात आ भ्रष्टाचारक अड्डा बनिये गेल अछि । हमरालोकनि पछिला पन्द्रह वर्षमे पाँच-पाँच ठामसँ घुरि अयलहुँ आ किछु गोटे मीलक पाथर जकाँ ओहिना एहिठाम गड़ल छथि । जे लोकनि चमचागिरी करता से लड्डू खयताह आ हमरालोकनि सूप महंक भाटा जकाँ ओंघराइत रहब, ई कतक इंसाफ छैक—बाजू अहीं लोकनि.... ।

तावत ओकर दृष्टि हमरापर पड़लैक । ओ बात बदलि बाजल—हम अहाँक बात नहि क' रहल छी झाजी ! अहाँ त' अपन मेरिटपर एहिठाम टिकल छी, मुदा कतेक लोक छथि अहाँ जकाँ ! काजो नहि करताह आ खाली चमचागिरीक बलपर चासनी चटैत रहताह ।

हमरा नीक जकाँ किछु बुझबामे नहि आयल । प्रसाद एकटा अखबारक कतरन हमरा हाथमे दैत बाजल —"आइए छपल अछि ! देखि लिय' ।

हम ओ कतरन पढ' लगलहुँ । स्थानीय दैनिक पत्रक कतरन छलैक । एकटा स्थानीय संवाददाता एतुका कार्यालयक मुख्य अधिकारीपर पक्षपात, जातिवाद आ क्षेत्रीयताक आरोप लगौने छलथिन ! स्थानीय अधिकारी लोकनिक अधिकारक हनन एवं लगातार बदली द्वारा हुनका लोकनि पर कयल गेल अन्यायक सेहो चर्चा कयने छलथिन आ संगहि एकटा सूची देने छलथिन मुख्य अधिकारीक दुलरुआ आ संरक्षण-प्राप्त अधिकारी गणक जे हुनका जातिक वा हुनका प्रान्तक छलथिन । सूचीमे पहिल नाम हमर छल ।

हम तामसे थर-थरा उठलहुँ मुदा लंचरूममे बैसल सभ सहकर्मी मुसकिया रहल छलाह । उपरीं सहानुभूति देखबैत ठाकुरजी बजलाह—'आर बात त' ठीके लिखलक अछि झाजी । लिस्टो लगभग ठीके छैक । खाली अहाँक नाम कोना एहिमे आबि गेल । ने त' अहाँ हुनकर जातिक छियनि ने प्रान्तक'''' ।

मोन आर लोहछि गेल । ई नकली सहानुभूतिसँ जरलपर नोन छीटि रहल छल ठकुरबा । हम लगभग ओइ सभ नाम आ चेहराकेँ चीन्हि सकैत छलियैक जकर ई बदमाशी छलैक । हालेमे किछु स्थानीय अधिकारी सभक बदलीक आदेश बहरायल छलैक जकर विरोधमे बहुत आक्रोश छलैक एकटा वर्ग विशेषमे । वैह वर्ग एक तीरसँ दूटा चिड़ै मारने छल । मुख्य अधिकारीपर आरोप लगौने छलनि आ हमरो धकिया क' एहि-ठामसँ हटयबाक चेष्टा कयने छल । सत्रह वर्ष धरि हमर एक-ठाम रहि जायब ओकरा सभक आँखिक कुरकुराहटि बनल छलैक.... ।

हम ठाकुरक गप्पक कोनो जबाब नहि देने छलियैक, ओहिठामसँ उठि गेल रही । मुख्य अधिकारीसँ ओहि दिन किछु कार्यवश भेंट कयने छलियनि । ओहो मुसकियाक' बाजल रहथि—आजुक अखबार देखलियैक अछि मिस्टर झा ।

हम मूड़ी डोलाकेँ सहमति जतौलियनि । ओ ओहिना मुसकिआइत बजलाह —"एहि साल बदली लेल प्रस्तुत रहू । आइये अखबारक कटिंग केन्द्रीय कार्यालय पठा देने छियैक ।

हमरा आश्चर्य भेल । पुछलियनि—एहि समाचारक हमर बदलीसँ कोन सम्बन्ध छैक सर ? अहाँलोकनि हमरा सत्रह वर्ष धरि एकेठाम रखलहुँ, से हमर अपराध भ' गेल ?

मुख्य अधिकारी मुसकिआइत रहलाह—"बदली कोनो सजाय तँ नहि छैक मिस्टर झा ! मुदा बात त' सत्य छैक। अहाँ दू दू प्रोमोशन भेलाक बादो एक्केठाम रहल छियैक।

हम तमसाक' हुनकर कोठलीसँ बहरा गेल रही। बहरेबासँ पहिने मन भेल जे पुछियनि—अखबारमे जे अहाँक बारेमे छपल अछि सेहो सत्य अछि ? मुदा किछु नहि पुछलियनि। दू साल पहिलुका एकटा बात मन पड़ल ! प्रमोशन भेल छल, बदलीक आशंका छल ! यैह मुख्य अधिकारी दृढ़तासँ बजलाह—अहाँकेँ बदली नहि हैत ! अहाँकेँ हम छोड़ि नहि सकैत छी ! स्थानीय शाखामे बहुत रास जरूरी पछिला आदेश लागू नहि भ' सकल छैक ! अहाँकेँ सभटा लागू कर' पड़त...।

हम पछिला दू सालमे सभटा लागू करबा देलियैक ! प्रशंसा पत्रो भेटल। फेर सभठाम हमर-बदलीक गप्प होम' लागल आ सभक ठोरपर दबल-दबल मुसकी छलैक। हम मुख्य अधिकारीक कोठलीसँ लोहछल बहरयलहुँ आ सोझे अपन डेरा आबि गेलहुँ।

सुनितहि सौंसे घर मे प्रसन्नताक लहरि दौड़ि गेल ! हरदम उखड़ल-तनल रह' वाली पत्नी प्रसन्न भ' उठलीह आ बेटा-बेटी सभ खुशीसँ नाच' लागल। नव स्थानमे जयबाक संभावनासँ सभ कथो प्रसन्न भ' उठल। पहिले बेर लागल जे एकठाम रहैत-रहैत ओ सभ कतेक उबिया गेल छल।

हमर मन आर हताश भ' गेल। आसक कोनो किरण कतहुँसँ नहि अभरि रहल छल। हम एहि शहरक छूटि जयबाक संभावना मात्रसँ थरथरा रहल छलहुँ आ हमर तैयार कयल गेल सुरक्षा-दुर्ग एक-एक क' ढनमना रहल छल। कार्यालयमे हमर तर्ककेँ नकारल जा रहल छल आ जिनका लेल आ जिनका लोकनिक आधार-पर हम अपन तर्कक निर्माण कयने रही ओ सभ ओहि तर्कसँ असहमत लागि रहल छलाह।

भाइ बहिन सभसँ भेंट भेलापर किछु साहस बढ़ल। ओ सब किछु चिन्तित बुझायल बदलीक संभावनासँ मुदा लगले पता लागि गेल जे भयभीत आ चिन्तित ओहो सभ नहि छल। खूब सक्षम लागि रहल छल। हमर बदलीक संभावनासँ हमरे लेल चिन्तित छल ओ सभ।

एतेक दिन धरि हम सभक लेल चिन्तित रहैत आयल छलियैक। बेर बेर सोचैत आयल रही जे हमरा बिना एत' किछुओने चलतैक-ने हमर कार्यालय, ने हमर संयुक्त परिवार ! आब दुनू सक्षम लागि रहल छल ! कार्यालयकेँ हमर जयबासँ कोनो क्षतिक चिन्ता नहि छलैक आ हमर परिवार हमरे लेल चिन्तित छल। अपनाकेँ हरदम केन्द्रमे राखि सोचऽ बला हमर अहंकारकेँ एहिमे बड़ ठेस लगलैक। ओ बेर-बेर छटपटाय लागल।

मुख्य अधिकारी लग हम फेर एक बेर चेष्टा कयलहुँ—हमर शाखामे किछु काज अपूर्ण रहि गेल अछि। एक दू मास आर रहि जैतहुँ त' सभ काज प्लानक अनुसारे पूरा भ' जाइत।

मुख्य अधिकारी बीचेमे रोकि देलनि—प्रैक्टिकल बनू मिस्टर झा ! एतेक सेलफिस जुनि बनू। जिनगी भरि एक कार्यालयमे रहबाक बात ककरो ने सोचबाक चाहियैक। आयब-जायब तँ लगले रहैत छैक। काल्हि हमरे बदली भ' जायत, तँ कार्यालय बन्द भ' जयतैक ?

हमर चोटायल अहंकार फनफना उठल ! मन भेल जे कहियनि—"अहाँ सन-सन दसटा मुख्य अधिकारी चल गेलाह सर आ अहाँ सहित सभ यैह कहैत रहलाह जे अहाँक बिना एतुका काज नहि चलत। आ आइ अहाँक मूड बदलल अछि""खाली अखबारमे किछु छपि जयबाक कारणे।

हम किछु नहि कहलियनि। ओतसँ चल अयलहुँ। दोस्त लोकनिक संगहि हम अपन चोटायल अहंकारकेँ शान्त कर' चाहलहुँ। मयंक मलहम लगौलक—'त' आब तोहूँ चल जयबैं। एक-एक क' सभ चल गेल, कालेजक सभ संगी-साथी शहर कतेक सुन्न लागत....।

हम ओकर बातसँ उल्लसित भेल जाइत रही की ओ अपन काज आ आन-आन लोक मे व्यस्त भ' गेल। हम किछु काल आर बसैल रहलहुँ। हमरा मन पड़ल जे एके शहरमे रहितहुँ हमरा लोकनिक भेँट एक वर्ष पर भ' रहल छल। हम कखन उठिक' चल अयलहुँ, ओ प्रायः बुझबो नहि कयलक।

हम अपने कार्यालयक सहयोगी संगक बीच सहानुभूति बटोरबाक चेष्टा कयलहुँ। पाँच-सात सयलाक। पछिला सत्रह वर्षमे लगभग सभ कहिओने कहिओ

प्रत्यक्ष हमरा संगे काज कयने छल। बहुतोक बेर कुबेर काज पड़ल छलैक। सुनिक' उदास होइत कतेको गोटे बाजल— 'अहांक गेलासँ कार्यालयक बड़ क्षति हैतैक। खासक' हमरालोकनिक। अहांक रहलासँ एकटा बल रहैत छल बेर-कुबेर। दू-चारि बर्ष बाहर बिता फेर चेष्टा क' एत' अवस्स चल आयब....।

ओतहुसँ लोहछिकें भागि अयलहुँ हम। सभदिन भय आ आशंकासँ थरथराइत प्रार्थना करैत रहलहुँ जे ई दिन टरि जाय। एहि शहरकें छोड़ि नहि सकब हम, टूटि जायब, एकदम छिड़िया जायब।

आ आइ प्लेटफार्मपर ठाढ़ छी। भीड़ छैक आ भीड़मे बहुतरास चीन्हल-जानल चेहरा आ नाम अछि जे हमरा संग वा हमरा लेल एहि प्लेटफार्मपर नहि आयल अछि। अपरिचित चेहराक बीच मिझरायल अछि किछु आर चेहरा जकर नाम हम नहि जनैत छियैक मुदा लगैत अछि जेना चिन्हैत छियैक। बहुत कम, गनल गुथल लोक छथि जे हमरालग ठाढ़ छथि—किछु परिबारक लोक, स्कूल-कालेजक एकटा मित्र आ दफ्तर एकटा अधिकारी आ एकटा कर्मचारी। हिनका लोकनिक बीच ठाढ़ हम ओहि असंख्य अवसरक आ एहि प्लेटफार्म वा एयरपोर्ट वा बस स्टैण्डपर ठाढ़ अनेक चेहराकें मन पाढ़बाक चेष्टा क' रहल छी जनिका विदा कर' वा जिनका स्वागत कर' बेर-बेर एहि सभ स्थानपर अबैत रहल छी। ओहि महक कोनो चेहरा एत' नहि छल। ने दफ्तरक ने दोस्त-महिमक। ने सरसम्बधीक। मात्र एकटा भीड़ छल जाहिमे बहुत रास चीन्हल जानल चेहरा छल। किछु नजदीकी लोक छलाह जे घेरिक' ठाढ़ छलाह प्लेटफार्मपर।

एतेक बर्षसं एहि शहर आ एहि शहरक लोककें हम एतेक निकट अनुभव करैत रही जे शहर छोड़बाकाल हुनका लोकनिकें देखितहिं हम कानि उठब, टूटिकें छिड़िया जायब। मुदा ओहिमेसँ अधिकांश चेहरा एहि भीड़मे नहि छल आ हमर डर एकाएक काम होम' लागल अछि। ओहि चेहरा सभकें एत' नहि देखि किछु सहज होब लागल छी। जिनकालोकनिकें छूटि जयबाक डर आ आशंकासँ हम एतेक दिन धरि थरथराइत रही ओ सभ एत' छलाहे नहि। मन एकाएक हुलसित भ' रहल छल।

आइसँ 27 बर्ष पूर्व जखन स्टीमर पर चढ़ि गंगाक लहरिपर हेलैत हम एहि शहर दिस आबि रहल रही, मन एहिना उल्लसित छल। ई शहर एहि प्रान्तक ई राजधानी पछिला सत्ताइस बर्षमे हमर गाम बनि गेल छल आ अपन एहि गामकें छूटि जयबाक डरसँ हम बेर बेर ओहिना डेराइत रही। हरदम सोचैत रही जे एहि शहरसँ जाइत काल ओहिना कानब जेना मैट्रिक पास क' एहि शहर लेल विदा होइत काल कानल रही। मुदा तेहन किछु नहि भ' रहल छल आ हम ओहिना उल्लसित भेल जा रहल रही जेना स्टीमरपर एहि शहर दिस अयबाक काल भेल रही।

आ आशाक विपरीत पत्नी आ धीयापुता सभ जे एहि शहरकें छूटि जयबाक समाचार मात्रसँ प्रसन्न भ' उठल रहथि, एखन उदास लागि रहल छथि। हुनका-लोकनिक आँखिमे नोर छनि आ प्लेटफार्मपर ठाढ़ लोक सभसँ गप्प करैत करैत बेर-बेर ओ लोकनि कानि रहल छथि।

गाड़ी विदा होइत अछि आ छूटि रहल एहि शहर आ शहरक लोककें आ प्लेटफार्म पर क्रमशः विलीन होइत आकृति सभकें बेर-बेर हाथ हिलाक' हम प्रसन्नतापूर्वक विदा द' रहल छियैक।

अप्रैल १९८७

□

बजन्ताक पोता

बीच आँगनमे भीजल अखरा चौकी पर चितंग पड़ल रही। उमससँ सौंसे आँगन औनायल छल। धीया-पूता सभ सटल-सटल चौकी पर अंगनेसे बैसल गर्मीसँ लोहछल हल्ला-गुल्ला मचा रहल छल। श्रीमतीजी सेहो बच्चे सभक बीच यैसलि जल्दी-जल्दी हाथक पंखा घुमबैत अपस्यांत छलीह।

माय मुदा अहू गरमीमे भनसा घरमे छलि। पहिने शर्वत, फेर चाह आ कनिये कालक बाद जलखइ। आइए गाम आयल रही जमशेदपुरसँ-कलश स्थापनक छः दिन बाद। आ अहू मासमे एहन गरमी। भीजलो चौकी पर चैन नहि छल। दू बेर स्नान क' आयल रही, तैयो नहि।

जलखइ-चाहक व्यवस्थासँ निश्चिन्त होइते माय फेर आंगनमे आयलि। एहि बेर ओकर हाथमे एकटा बड़का पंखा छलैक। ताड़क बड़का पंखा जाहिमे अढ़ाइ हाथक पतरका बांसक डण्टा लागल छलैक। एहि पंखाके हम चीन्हैत छियैक। दादा (हमर पिता)क बनबाओल छलनि। जहिया कहियो गाम अबैत रही, बजन्ता बड़का पंखा ल' ठाढ़ भ' जाइत छल। तावरि हौंकते रहैत छल— जावरि हम मना नहि करैत छलियैक। जेना कोनो मशीन रहय। समान गतिसँ ओकर हाथमे ओ पंखा घण्टो डोलैत रहैत छलैक। दरबज्जा पर कोनो पाहुन आबथि, पंखा लेने बजन्ता स्वागत आ सेवामे हाजिर।

आइ ने दादा छथि ने बजन्ता। आइ मायक संगमे छलैक एकटा दस बारह वर्षक छौंड़ा। मड़बा पर राखल लालटेनक इजोतमे ओकर कारी आकृति त' खूब स्पष्ट नहि देखाइत छलैक मुदा ओकर सुन्दर आ साफ दाँत झकझक चमकि रहल छलैक। हाथमे बड़का पंखा लेने मुसकिआइत ठाढ़ छल ओ छौड़ा। देह खाली मुदा डांड़पर चरखानाक साफ सन पैजामा।

—चीन्है छहक? चुगलाक बेटा छैक। आब क्यो दसो वर्षक छौंड़ा नहि भेटैत अछि गाममे जे माल-जाल चराओत, बर्तन बासत माँजत। एकर माय आब नैहरसँ एतहि आबि गेल छैक। चुगला आब रिक्शा चलबैत अछि दरभंगामे। भोरे जाइत अछि आ राति क' घुरि अबैत अछि। कहुना अइ छौंड़ाके फुसला क' रखने छी एक माससँ। मुसहरबाक सभ बेटा आब रिक्शे चलबैत छैक। एतेकटा आँगनमे यैह एकटा छौंड़ाक संग रहैत छी हम आ तोरा लोकनिके गाम अयबाक इच्छे नहि रहैत छ'। सभ भाइक एक्के हाल—खाली सालमे एक बेर दुर्गापूजामे ग[illegible]। बाँकी एगारह मास कोना रहैत अछि माय, तकर कोनो चिन्ता रह' तखन ने।

माय अपन दुखनामा सुना फेर भनसाघर दिस चलि गेल। ओ छौंड़ा पंखा हौंक' लागल। हम आँखि मुनि पड़ि रहलहुँ। पड़ल-पड़ल बजन्ता मोन पड़ल। नहि जानि, के ओकर नाम बजन्ता राखि देने छलैक। छल ओ एकदम गुम्मा। कखनो काल एकाध टा शब्द रुकि-रुकि क' बजैत छल जेना ओहो दू चारि शब्द बजबामे कष्ट भ' रहल होइ—"पनपिआइ मलिकाइन"।

भोरे उठि, महींसके चौरमे चरा, रातुक सभटा ऐंठ-अपैत बर्तन-बासन पोखरिक घाटपर माँजि, कुल्हड़ि ल' जारनि चीरि मंसाधार लग राखि, चौरमे जहाँ तहाँ बौआय एक छिट्टा घास छीलि, सूर्य माथपर अथलाक बाद ओ भनसा-घरक कोनटा लग ठाढ़ होइत छल—"पनपिआइ मलिकाइन"।

माय ओकर गमछामे किछु मोटसन उसना चूड़ाक संग नून आ कहियो काल अचारो द' दैत छलैक 'जकरा ओ बथान पर, अपन मचान पर बैसि बड़ीकाल धरि चिबा-चिबा क' खाइत छल। अहू बीच कतेको बेर लल्ला मचैत छलैक आँगममे —'केम्हर गेल बजन्ता। सभ काज पड़ले छैक?'

चूड़ा आ नूनक पनपिआइ क' बजन्ता आल्मुनियमक बड़का बट्टा निकालैत छल आ कल पर जा ओइमे पानि भरि भरि क' दू तीन बेर भरि छाक पीबैत छल, माथ कपार सेहो धो लैत छल। ताबत आँगनमे गर्द मच' लगैत छलैक।

—'महमदपुर चलि जो बजन्ता। मिलसँ एक बोरा आंटा पिसा ला।'

—'लाधा चलि जो बजन्ता। ओत' दस बोरा धान जिरतियाक घरमे पड़ल छैक। बैलगाड़ीक इन्तजाम नहि भ' रहल छैक तोहीँ दिनमे दू खेप क' ल' आ। पाँच दिनमे सपरि जयतौक।

'गाछीमे पाँच सय बम्बइ आम तोड़ि क' राखल छौ। जल्दी जो बजन्ता। तीन खेपमे भ' कथतौक। बोरा लेने जैहें।

'स्टेशनपर चलि जो बजन्ता। रतुका गाड़ीसँ बेतियावला ओझा औथुन। ट्रेन डेढ़ बजे रातिमे छैक। एगारह बजे खा-पी क' स्टेशन चलि जैहें। दियासलाइ आ लालटेन अवस्स ल' लिहै। आब'कालमे लेसि लिहैं।

बजन्ता घिरनी जकाँ नचैत रहैत छल। कोनो काज लेल 'नहि' नहि बजैत छल ओ, सभ काज फुर्तीसँ करैत छल— तुरन्त। पसेनासँ तर-बतर, डेढ़ सय बम्बइ आम वा डेढ़ मन चाउर-धान वा आँटा ल' आँगनमे पहुँचैत देरी नव हुकुमनामा जारी भ' जाइत छलैक। ओ अपन मैल फाटल गमछासँ गरदनि पोछैत विदा भ' जाइत छल ओहू हुकुमक तामिल कर'। अकड़ल टेढ़ भेल गरदनिकेँ सोझ करबाक वा दू मिनट बैसि क' हकमैत कौंढ़केँ स्थिर करबाक मौका नहि भेटैत छलैक कहियो।

एकटा मौका मुदा ओकरा अवस्स भेटि जाइत छलैक— छोट-मोट चोरी करबाक मौका। चोरियो एहन जे सभ बेर पकड़ले जाइत छल।

मौजेपरसँ चाउरक बोरा ल' क' बजन्ता आँगन आबय। माय ओइ चाउरकेँ फेर तौलबैत छल। चाँउर डेढ़ सेर कम?

—'चाउर डेढ़ सेर कम कोना छौक बजन्ता?' बजन्ताक जबाब हाजिर। ओही कालमे ओ एतेक राश शब्द एक संग बजैत छल— "गीर पड़लैक मलिकाइन। बाटमे एक जौर बोराक मुँह खुजि गेलैक। चाउर माटीमे गीर पड़लैक। सभटा चाउर उठा लेलियैक मुदा किछु चाउर एकदम माटी-माटी हो गेलैक— छोड़ि देलियैक।

आमक बोरा ल' क' गाछीसँ अबैत छल। आमक गिनती होइत छलैक। दस आम कम।

—'आम त' दसटा कम छौक बजन्ता।' बजन्ताक जबाव हाजिर—'नदीमे गीर गेल मलिकाइन। बोराक मुँह खुजि गेलै आ आम पानीमे गीर के बहि गेल।

आर क्यो रहैत छलैक आँगनमे— काका, दादा वा बड़का भाइ, त' ओकर पसेनासँ तर बतर मुँह हाथ पर दू चारि चाट लागिये जाइत छलैक। खाली माय रहैत छलैक त' बचि जा:त छल। मुदा माइयो एकदम्म नहि छोड़ैत छलैक। ओकरा खोंचाड़ि क' पुछैत छलैक—सत्त-सत्त बाज बजन्ता। चाउर आ आम पसिनियाँकेँ द' अयलहिक ने।"

न-जाउ मलकाइन" बजन्ता लजा जाइत छल—"अहूँ त' मलकाइन चोल करैत छी।

—देख झुठ नहि नै बाज। पठबियौक खवासिनीकेँ पसिनियाँ लग।"

बजन्ता ओहिना लजाइत बजैत छल—"अहूँ त' मलकाइन। मोन बड़ थाकि गेल छल। दू चौठी ताड़ी—

माय ममतापूर्ण भर्त्सना करैत कहैत छलैक.....दुर जाउ। चोरियो करैत छी त' पसिनिये लेल: अपन बहु बाल बच्चाक लेल नहि।'

ओना चोरी ओ खाली पसिनिये लेल नहि करैत छल। सन्तू काकाक काज सेहो बजन्ते चलबैत छलनि। बथानक सटले रहैत छलाह, बजन्ताक बड़ आस छलनि। चारि खेप चाह पीबैत छलाह मुदा ने बथानपर गाय महींस छलनि, ने उठौना लैत छलाह। मौका भेटिते बजन्ता दुहि क' एकटा बड़का लोटामे द' अबैत छलनि। रुपयाक बदला चौअन्नी भेटैत छलैक सेहो बेर-सबेर आ बजन्ता दौड़ैत छल पसीखाना।

बजन्ताक इहो चोरी सभ बेर पकड़ल जाइत छलैक। दूध दूहि क' जहिना डाबा मायक सामने रखैत छल, ओ बूझि जाइत छलैक—"दूध आइ बड़ कम छौक बजन्ता? बजन्ता गोंगिआय लगैत छल—"संझियामे भैंस एक गो खराब घास खा गेलै। दूधे बिला गेलै।"

ओकर फेर दुर्गति होइड़ छलैक। डाँट-डपट आ कखनो काल दू चारि थापर। बजन्ता मारियो खा क' घिरनी जकाँ नचैत रहैत छल—कोनो काज बन्द नहि करैत छल। रौद अखन झुक' लगैत छलैक, दू बजेक बाद, अपन अलमुनियमक थारी लेने बजन्ता फेर भनसा घरक कोनटा लग ठाढ़ होइत छल—"कलउ मलिकाइन।"

कलउ माने दिनुका भोजन। भोजन माने मड़ुआक दू टा मोट-मोट रोटी। संगमे नून आ तेल। कहियो काल अचार आ रतुका बसिया तरकारी। कहियो काल चाउर वा घाटिक रोटि भेटि जाइ, त' बजन्ताक आँखि चमक' लगैक। जहिया भात भेटि जाइ, बजन्ता दौड़ क' अपन बड़का बट्टा सेहो ल' अबैत छल। थारीमे भात आ बट्टामे माँड। संगमे नोन। माँड-भात बड़ प्रेमसँ खाइत छल बजन्ता। ओना किछुओ भेटैत छलैक ओ कहियो किछु ने बजैत छल।

एक दिन ओ बाजल। पहिने माय लग ठाढ़ भेल—"हम पूब जेबै मलकाइन', अइ गाममे गुजर नहि होत अब।

माय चिन्तित भेल मुदा उपरसँ सहज बनल कहलकै—"त' जो। हम आर कतेक पेट भरबौ तोहर। कमाइ छें असगर आ खयनहार छौक छः टा। बहु छौ तेहन लुरिगर जे कतौ कोनो काज सरपबे नै करतैक। बेटाकें तों दुलारु बनौने छें—कतौ काज लगेबे ने करबहिक। तीनू बेटी कखनो काल किछु करैत छौक, ब्रस्स। हम जे दैत छियौक ताहिसँ बेसी नहि द' सकबौक।

जे दैत छियौक मतलब दस कट्ठा जमीन। ओइमे जे उपजि जाइ', नगद किछु नहि। खयनाइ आ जलखइ उपरसँ पावनि तिहारमे एकटा धोती आ गंजी, वर्षमे एक बेर बस्स।

माय लगसँ ससरि क' बजन्ता डेराइत दादा लग ठाढ़ भेल—'हम पूब जैबै मालिक। आब गुजर नै होइ-ए। कमेबै ओतै-टोलाक लोक सभ जाइ-हए। हमरो जाइ दू। 'दादा तामसे थरथर कांप' लगलाह' नमक हराम छें तों। सात पुश्तसँ अही घरसँ तोहर घर-परानिक गुजर होइत अपलौक अछि। आब तोहर गुजर नहि होइत छौक। पूबमे राखल छौक तोरा लेल तोरा। अजमा क' देखि ले मुदा घुरि क' हमरा लग नै अबिहें खखनिया कर' से कहि दैत छियौक।

बजन्ता चल गेल। ओकरा ने दादाक चेतौनी रोकि सकलैक ने मायक बुझौनाइ। ओ निर्णय क' चुकल छल। चल गेल सिल्लीगुड़ी। ओत'सँ कमाक' पाइ पठब' लगलैक। ओकर परिवारक गुजर होब' लगलैक। माय चरवाहीमे मुसहरबाक छोटका बेटाकें राखि लेलक। सभ बजन्ताकें बिसर' लगलैक।

हमरा मुदा अधिक काल बजन्ता मोन पड़ैत छल। हम दुनिया ओकरे कनहा पर बैसि क' देखने रही। दुर्गापूजामे जखन भरि गाम यात्रापर विदा होइत छल विजयादशमीक दिन, दादा हमरा बजन्ताक कनहापर बैसा दैत छलाह। महमदपुर-लाधा ओकरे कनहा पर बैस क' जाइत छलहुँ। पैघ भेलापर जखन बाहर पढ़'-लिख' लगलहुँ, गामसँ विदा हैबा काल हमर बक्सा आ मोटा ल' क' बजन्ते स्टेशन पर अबैत छल आ जहिया छुट्टीमे गाम अबैत छलहुँ, स्टेशन पर लालटेन लेने बजन्ते ठाढ़ रहैत छल।

बजन्ता पूब चल गेल—गाममे ओकर पेट नहि भरैत छलैक। ओकर मचानपर आब मुसहरबाक बेटा कोइला सुतैत छलैक आ पसिनियाँ आ सन्तू काकाकें आब ओकरे आस रहैत छलनि।

बजन्ताकें लोक बिसरि गेल रहितैक कि तखने एक दिन ओ घुरि आयल। बीचमे एक दू बेर ओ गाम आयल छल। आँगन आबि हवेलीमे अपन हाजिरी ओ द' गेल छल। लोक बेशी ध्यान नहि देलकै। एहि बेर सभक ध्यान गेलैक। ओ रोगी भ' क' घुरल छल—मरणासन्न। डाक्टर जवाब द' देने छलैक। दिन गनि रहल छल। फूलल बड़की टा पेट—पीयर चेहरा आ लटपटाइत डेग। देहमे एकको बून्द शोणित नहि। भूख मुदा खूब। अधिक काल आँगनमे आबि क' बैसि रहैत छलैक। माय किछु खाय लेल द' दैत छलैक। खाइत काल ओकर आँखिसँ दहो बहो नोर चुबैत रहैत छलैक। बजैत ओ किछुओ नहि छल।

आ एक दिन ओकर बाजब सभदिन लेल बन्द भ' गेलैक। बजन्ताक बाजब बन्दो भेलासँ संसारक कोनो काजमे कोनो फर्क नहि पड़लैक। ओकरा मोन पाड़बाक समय वा इच्छा ककरो नहि छलैक। भरिसक ओकर अपनो बेटा-बेटीमे नहि। युग बीति गेलैक।

एकटा बताहि-बूढ़ झुरखुट स्त्री हमर आँगनमे बैसलि कानि रहल छलि आ बजन्ताक नाम ल' रहल छलि। हम साकांक्ष भेलहुँ। हमर सभसँ छोट बहिन दादासँ पुछलकनि "ई के छैक दादा ?"

दादा बहुत रुग्ण छलाह। डाक्टर सभ जवाब देब' लागल छलनि। ओसारा पर चौकीपर पड़ल रहैत छलाह। लोकके चीन्हबोमे भ्रम होइत छलनि। मुदा ओइ बुढ़ियाकें चीन्हि गेलथिन।

—"ई माय छैक—बजन्ताक माय। अपन बेटा लेल कनैत अछि। हमरा त' मायो नहि अछि, हमरा लेल के कानत ?' दादा कालक क्रमशः लग अबैत डेगक धाप सुनि रहल छलाह। बजन्ताक बुढ़िया माय जे गाम-गाम घुरि क' भीख मँगैत छलि हुनका आन मायक स्मृति करा देने छलनि। हमर छोट बहिन अवाक हुनका लग बैसलि छलि। ओकरा किछुओ नहि बुझायल छलैक।

आब दादा नहि छथि। हमर सभ भाइ बहिन सयान भ' गेल अछि। बहिन सभ सासुर बसैत अछि आ सभ भैयारी पटना-जमशेदपुर रहैत छी। गाममे

माय एकसरि रहैत अछि। हमरा लोकनि पावनि-तिहारमे, सेहो खाली दुर्गापूजामे गाम अबैत छी।

बजन्ताक बेटा पहिने अरकसियाक काज करैत छल दरभंगामे, अपन ससुरक संग। बहुओ संगे रहैत छलैक। बजन्ताक परिवार बिलट' लागल छलैक। माय ओकर बड़की बेटीकेँ गायक चरवाहीमे राखि लेने रहैक। बजन्ताक बहु सेहो मजूरी कर' लगलैक। बड़की बेटी सासुर गेलैक त' माय दोसर बेटीकेँ रखलकैं। दोसरो सासुर गेलैक त' सभसँ छोटकी बेटीकेँ रखलकैं, ओहो सासुर चल गेलैक।

मुसहरबाक बेटा सभ दरभंगामे रिक्शा चलब' लगलैक। दू टा कानपुर चल गेलैक। मायकेँ चरवाहो भेटब मस्किल होब' लगलैक। चुगला सेहो आब गामे रह' लागल छल। भोरे जाइत छल, रातिक' घुरैत छल। दरभंगामे रिक्शा चलबैत छल। ओकर बेटा मुनराकेँ माय राखि लेने छलैक।

—अहाँ त' सूति रहली। पंखा डोलबैत-डोलबैत हमर बाँहि ऐठि गेल आ अहाँ चैनसँ फोंफ काटि रहल छी।

मुनरा देह डोलाक' हमरा जगा रहल छल। ओ हाथक पंखा राखि चकल छल आ हमर देह डोलबैत झुकल ठाढ़ छल।

हम कने सकपका गेलहुँ। पंखा ओकरा लेल सत्ते बड़ पैघ छलैक आ बड़ी कालसँ डोला रहल छल। ओकर बाँहि सत्ते ऐंठि गेल हेतैक: हमरा आश्चर्य भेल। ओ छौंड़ा अपन बात एकदम स्पष्ट बाजल छल—निडर आ निष्कम्प।

—"आब भ' गेलैक तोँ जो।" हमर एतबा कहैत देरी ओ पंखा उठा बिदा भ' गेल। हमर आश्चर्य कौतुहलमे बदल' लागल। मुनरा हमर अत्याचारक भले ओ अनजानमे भेल छल, विरोध ऐहन स्पष्ट शब्दमे क' गेल छल। राति खयला-पीलाक बादो सुतबामे बिलम्ब भेल। गर्मीसँ बड़ी काल छटपटाइत रहलहुँ आँखि लागल त' भोर तक सुतले रहि गेलहुँ। आरो देरी तक सूतल रहितहुँ यदि दरबज्जा पर किछु गुलगुल सुनि नीन्न ने उचटि जाइत।

दरबज्जा पर आबि क' देखलहुँ जे हमर श्रीमतीजी तामसे थरथराइत मुद्रामे ठाढ़ि छथि आ हमर छोटका बेटा लगातार कानि रहल अछि। माय हमरा देखितहि मुनरा पर हाथ चला देलकै—तोहर ई मजाल। नेन्ना पर हाथ उठले तोँ?

मुनरा एकदम तरंगि उठल—ई हमरा मारलनि से किच्छो ने आ हम कने हाथ लगा देलियनि तकर एतेक हल्ला। जे हमरा मारत तकरा हम मारबै। मारि खा क' चरवाही नँ करब हम। लू अपन छिट्टा-खुरपी, हम जाइ छी।

माय एकदम डरा गेल। ओकरा बड़ मस्किलसँ एकटा चरबाह भेटल छलैक। चाट त' ओ अपन पुतहु आ बेटाकेँ प्रसन्न करबाक लेल मारने छलैक। हमर श्रीमतीजी ओहिना तमसायलि ठाढ़ि छलीह।

हम अपना बेटाकेँ लग घीचि ओकरा चुप्प करैत मुनरासँ कहलियैक—तोँ जो, घास कर ग'। तोरा क्यो नहि मारतौक।

मायक आँखिक डर बिला गेलैक। श्रीमतीजी आँखिक तामस आर लहकि उठलनि। हमरा भर्त्सनापूर्वक दृष्टिये ताक' लगलीह। मुनरा छिट्टा आ खुरपी उठा बिदा भ' गेल।

पत्नीक भर्त्सनापूर्ण दृष्टि जखन असह्य होम' लागल त' हम आगू बाट दिस ताक' लगलहुँ। मनरा छिट्टाकेँ माथसँ लगा ओकरा पीठ पर लटकौने आदहिना हाथक खुरपीकेँ बेर-बेर हवामे नचबैत कोनो गीत गबैत जा रहल छल जेना ओइ खुरपीक धारसँ काटि काटि क' अपना लेल अपन बाट बनबैत जा रहल हो।

हमरा ओ बड़ नीक लागल।

जुलाई १९८७

विकलांग

ओकरासँ हमरा डर लाग' लागल अछि।

हरदम लगैत अछि जेना ओकर आँखिमे कोनो घघरा लपलपा' रहल छैक। ओना ओ हमरा आगाँ हरदम शान्त रहैत अछि, एक्को शब्द नहि बजैत अछि मुदा हमरा सदिखन ओकर आँखिमे लपलपाइत घघराक धाहीक अनुभव होइत अछि आ हम ओकरासँ डेरायल रहैत छी।

डेरायल रहबाक ओना कोनो कारण नहि अछि। ओ हमर आदर करैत अछि। हमर सभ बात मानि लैत अछि मुदा ओकर ओइ आज्ञाकारितामे एकटा विचित्र ढंगक अवज्ञाक भाव मिश्रित रहैत छैक। भरिसक तेहन किछु नहि रहैत छैक, हमरे भ्रम होइत अछि। सदिखन लगैत अछि जेना ओकर पैंघ-पैंघ आँखिमे हमर प्रत्येक धारणा, प्रत्येक सिद्धान्त आ प्रत्येक आज्ञा लेल एकटा स्थायी अवज्ञा आ उपेक्षाक भाव आबि गेल छैक। यद्यपि अपन आचरण वा उक्तिमे, कमसँ कम आमने-सामने ओ हरदम आज्ञाकारी बनल रहैत अछि।

अखनो ओकरा आँखिमे वैह भाव हेतैक—हम सोचैत छी आ मूड़ी उठा क' ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि। यद्यपि हमहीं ओकरा बजौने छियैक। ओ आबि क' चुपचाप हमर सोझाँमे ठाढ़ अछि आ हमर बकार नहि फूटि रहल अछि। ने आँखि उठा ओकरा दिस तकबाक साहसे भ' रहल अछि, ने जयबाक लेल डेगे उठि रहल अछि। आइ अन्तिम दिन छैक– हमरा बूझल अछि। वैह कहने छल। आइ यदि काज नहि हेतैक त' इहो अवसर समाप्त। ई अवसर समाप्त माने सभ किछु समाप्त। एकर बाद सरकारी नोकरीक लेल वयस नहि रहतैक।

ओ जखन हमरा कहने छल त' कने आश्चर्य भेल छल। ओकर वयस एतेक कोना भ' जयतैक। पछिले साल एम०ए० पास कयलक अछि आ एहि साल वयस समाप्त। एतेक छोटेसँ स्कूल जाइत रहल अछि ओ।

फेर अपन आश्चर्य पर अपने हँसी लागल। मैट्रिकक बाद दस वर्षमे एम० ए०, क कोर्स पूरा भेल छलैक। आइ० ए०, बी० ए०, आ एम०ए० तीनूमे दू-दू वर्षक बदला तीन-तीन वर्ष लागल छलैक। एहि लेल नहि जे ओ सभ क्लासमे एक-एक बेर अनुत्तीर्ण भेल छल। एहि लेल जे परीक्षा आ रिजल्ट लगा क' सभ क्लासमे तीन-तीन वर्ष लागल छलैक। आ बी० ए० (प्रतिष्ठा) आ एम०ए० क परिणाम दुरुस्त करबामे एक वर्ष आर लागि गेल छलैक, तैयो बात बुढ़िआयल नहि छलैक। आइ अन्तिम दिन छैक आ ओ हमरा सोझाँमे ठाढ़ अछि। डरे हमरा मूड़ी उठा ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि। ने ओकरा संग जयबाक लेल डेगे उठि रहल अछि।

एकटा आवेशमे हमरासँ बजा गेल छल—"तोरा बुते किछु नहि हेतह। खाली जा क' झगड़ा क' लेबह, हम अपने जायब। चलिह' हमरा संगे, सभटा काज करबा देबह।' ओ दाबल स्वरे मुदा जेना चुनौती दैत बाजल छल– 'दरखास्त जमा करबाक अन्तिम तिथि मुदा लग आबि गेल छैक।

आइ जयबा लेल तैयार बैसल छी बड़ी कालसँ। ओहो आबि क' सामनेम ठाढ़ अछि मुदा हम ओहिना बैसल छी आ आँखि उठाक' ओकरा दिस तकबाक साहसे नहि भ' रहल अछि। ओकरासँ हमरा डर लाग' लागल अछि।

ओना ओकरासँ डरयबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि। ओ हमर छोट भाइ अछि। पाँच भाइमे सभसँ छोट। नओ भाइ-बहिनमे मात्र एकटा बहीन ओकरासँ छोट अछि। हमरासँ बीस वर्ष छोट अछि ओ। पन्द्रह वर्ष पूर्व जखन दादा (हमर पिता) मरल रहथि, ओ मात्र बारह वर्षक छल। बापक दुलारू! हरदम दादा ओकरा अपना संग रखैत छलथिन। सभ जिद्द पूरा करैत छलथिन। दादाक मृत्युक खबरि जहिया पहुँचल छल, आलोक हमरा संगे छल। अबोध छल। मृत्युक अर्थ मुदा बूझ' लागल छल। खबरि भेटितहि तेना आर्तनाद कयने छल जे हमर आँखिक नोर सुखा गेल छल। ओकरा अपन बाँहिमे समेटैत कहने छलियैक—नहि कान। दादा खाली हमर मरल छथि। तोरा सभ लेल त' हम छियौ। तों नहि कान'। हम छियौ तोरा लेल।

आ आइ आलोक सामने ठाढ़ अछि आ हमरा मूड़ी उठाक' ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि। ओकर आँखिक घघरा लपलपाइत पुछि

बैसल 'कहाँ गेल अहाँक आश्वासन ? अहाँ सामर्थ्यवान छी मुदा की क' सकलहुँ हमरा लेल आइ धरि। हमरा देबा लेल अछि की अहाँ लग—मात्र एकटा नपुंसक आदर्श। भरि जिनगी वैह घोरि-घोरि क' अपनहुँ पीलहुँ आ हमरो सभकेँ पिआ रहल छी।' अपन नपुंसकता आ सामर्थ्यहीनता पर ततेक ग्लानि भ' रहल अछि, जे डेगे नहि उठि रहल अछि। बड़ जोशमे कहने छलियैक जे हम अपने चलब, सभ काज भ' जयतह। तहियासँ सात दिन घुरि आयल छी आ काज नहि भेल अछि। पहिल दिन कोनो थाहे पता नहि लागल। गेटे पर हम डेरा गेल रही। चारू कात संगीनधारी सिपाही जेना विश्वविद्यालयक कार्यालय नहि कोनो सैनिक शिविर वा सुरक्षित जगहमे आबि गेल होइ। कोन विभागसँ काज हैत सेह पता नहि लागल। अधिकांश कक्ष खाली। उप कुलपतिसँ भेट करबाक इच्छा भेल त' पता लागल जे ओ आइ काल्हि कम्मे काल कार्यालय अबैत छथि। कहियो काल जखन कार्यालय अबैत छथि, तँ पुलिसक सुरक्षाक काज पड़ैत छनि। कार्यालयमे पुलिसे मात्र स्थायी रूपसँ रहैत अछि। बाँकी सभ अधिकारी-कक्ष वा कार्यालयमे ककरो भेटब वा नहि भेटब अहाँक भाग्य आ संयोग पर निर्भर। तेसर दिन लाचार फेर अपन ओही परिचित अधिकारीक कक्षमे गेल रही जिनका लग तीन वर्ष पूर्व आलोकक एम० ए० क एडमिशन बेरमे जाय पड़ल छल।

ओइ बेर नीक जकाँ स्वागत कयने रहथि। यद्यपि हुनकर कोठलीमे पचाससँ अधिक विद्यार्थी एक्के बेर संगे उच्च स्वरमे गप्प क' रहल छलनि। किछु नेता-नुमा प्राध्यापको लोकनि सेहो हुनका कोठलीमे कुर्सी पर पलथी मारने बैसल छलाह। सभक गेलाक बाद हम अपन समस्या कहलियनि—"आलोकक एम० ए०मे एडमिशन नहि भ' रहल छैक। ओकरा औनर्स नहि भेटल छैक यद्यपि ओकर सभटा पेपर्स नीक भेल छलैक आ जे सभ कमजोर विद्यार्थी छल तकरा सभकेँ फस्टक्लास भेटि गेल छैक।" सुनिक' ओ हँस' लगलाह—'ई सभ त' होइते रहैत छैक, अइमे कोन आश्चर्य ?'

हमरा मुदा बड़ आश्चर्य भेल हुनकर ओहि वक्तव्य पर। कहलियनि—हमहूँ त' अही विश्वविद्यालयक विद्यार्थी छी, एहि ठामक लेल तँ ई सोचबो अनर्गल छल।' ओ ओहिना हँसैत रहलाह—'आब किछुओ अनर्गल नहि होइत छैक। आब खाली दुइए टा बात होइत छैक—सुतरब आ नहि सुतरब। जकरा सुतरैत

छै से बाजी मारि लेलक। भ' सकैत अछि जे अहाँक भाइक कापीक नम्बर कोनो दोसर विद्यार्थीमे लागि गेल होइ आ कोनो कमजोरहा विद्यार्थीक कापीक कबर अहाँक भाइक कापीमे लागि गेल हो।" हमर आश्चर्य बढ़िले गेल—"एना कोना भ' जाइ छैक ? कोनो नियंत्रण नहि छैक अइ सभ पर ?' ओ हमर अज्ञानता पर हँस' लगलाह—"नियन्त्रण कोना नहि छैक। जकर नियन्त्रण छैक तकरे माध्यमसँ काज होइत छैक। उपकुलपति रजिस्ट्रार सभ बेकार। अखने देखलियैक नहि, कतेक नेता लोकनि छलाह एत।' प्राध्यापक आ विद्यार्थी दुनू। हिनके लोकनिक हाथमे सभ किछु छनि। कखनो काल हिनके लोकनिक नाम पर आनो सुतारि लैत अछि।

हम हतप्रभ भेल जाइत रही। हमर स्थिति देखि ओ बजलाह—'आब ई आश्चर्य करब छोड़ू। अहाँ अपन भाइक एम० ए०मे एडमिशन चाहैत छी ने ?' हम उत्साहित होइत कहमियनि—'अपनेन बहुत कृपा…। ओ हँस' लगलाह—'कृपा हमर नहि, विकलांग वर्षक भ' सकैत अछि। जय विकलांग वर्ष।

हमरा कोनो अर्थे ने लागल। ओ स्पष्ट करैत कहलनि जे-जेफार्म जमा कयने छियैक तकरा किछु टाका-ताका चपरासी-क्लर्क आदिकेँ द' क' वापस ल' लिय' आ ओहिमे लिखि दियौक जे अहाँक भाइ विकलांग छथि।

हमर स्थिति दयनीय भेल जा रहल छल—'ई कोना सम्भव छैक। हुनकर हाथ पयर, नाक कान आँखि सभ दुरुस्त छनि। लोक देखतनि नहि ?'

ओ पूर्ववत हँसैत रहलाह—'क्यो किछु ने देखतनि। अहाँ हुनकर दुनू हाथ मोड़ल एकटा फोटो खिचा क' आवेदन पत्र पर साटि दियौक। बाँकी हम सम्हारि लेब। अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्षक एतबो त' फायदा होअय।'

हम हुनकर परामर्श स्वीकार नहि क' सकल छलियनि। चुपचाप बाहर आबि गेल रही। आलोक ठाढ़ छल। घुरैत काल सभटा बात सुनि ओकर आँखिमे फेर वह धधरा लपलपा उठलैक—'सभ चोर अछि सार सभ। भी-सी आ रजिस्ट्रार दुनू। एकरा सभ बुते किछु नहि हैत। आब हम अपने इन्तजाम क' लेब। एतेक दिन अहीं रोकैत रहलहुँ अछि, आब देखियौक ?'

हमरा फेर डर लागल। पुछलियैक 'तोरा बुते कोन इन्तजाम हेतह ?'

ओ तमकि क' बाजल—'सभ इन्तजाम भ' जायत । आइ कतिहु दूइए टा इन्तजाम होइत छैक—चक्कू आ रुपैया । चाहे त' पाकेट भरि दियौक, चाहे प्राणक धमकी दियौक, सभटा काज भ' जायत ।

हमरा आलोकक गप्पसँ बड़ कष्ट भेल । नवका पीढ़ी की सोचि रहल छल—से देखि मर्मान्तक पीड़ा भेल । ओकरा डाँटि क' कहलियैक—'किछु कर'क काज नहि छ' । फेरसँ जाँच' लेल सभ पेपरक हेतु पाइ जमा क' दहक ।

आलोक व्यंग्यसँ बाजल—'एकर मतलब फेर एक साल गेल । एडमिशनक तारीख खतम भ' रहल छैक ।

दोबारा रिजल्ट होइत-होइत ठीके एक वर्ष चल गेलैक, तखन ओकर रिजल्ट भेलैक । फस्ट क्लास भेटलैक । कहाँ आनसों नहि छलैक, कहाँ फर्स्ट क्लास । अइ विश्वविद्यालय पर, जे हमर अपन विश्वविद्यालय सेहो छल, हमर आस्था डोल' लागल ।

ओना आस्था रखबाक कोनो प्रयोजन नहि छल । आलोकक आइ० ए० परीक्षामे जे भेल छलक तकरा देखत हमरा सतर्क रह' चाहैत छल मुदा हम ओकरा एकटा संयोग मानि टारि देने छलियैक ।

आलोकके आइ० ए०मे प्रथम श्रेणी नहि भेटलैक । नम्बर अयलैक त' देखिक' आश्चर्य भेल । इतिहासक एक पेपरमे अनुपस्थित । एकके पेपरमे साठिसँ अधिक नम्बर रहबाक कारणे ओ पास क' गेल छल मुदा दोसर पेपरमे परीक्षा देलाक बादो ओकरा अनुपस्थित देखाओल गेल छलैक ।

बहुत बेर तहियो दौड़ल रही । हमरा परतारैत एकटा अधिकारी कहलनि—'आब छोड़ू एकर गीजा गीजी ! कॉपी हेरा गेल हेतैक त' अनुपस्थित लिखि देल गेल हेतैक । बी० ए०मे नाम लिखाइए गेल अछि, तखन आब एतेक चिन्ता कियैक ?"

हम गुम्म रहि गेल रही । आलोक सुनलक त' बमकल छल—'कॉपी हेरायल नहि हेतैक । ओइपर कोनो दोसर लड़काक कॉपीक कवर साटि देने हेतैक । यैह चालिए छक एकर सभक ।

हमरा ओहि दिन विश्वास नहि भेल छल । मुदा बी० ए०क परीक्षाक बाद जखन फेर एकर पुनरावृत्ति भेलैक आ अजिकारी स्वयम् ई बात कहलनि त'

मानि लेबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि छल । तैयो हमरा मोनमे अपन विश्व-विद्यालय लेल बड़ उच्च भाव छल, जे, एहन बात मानबासँ बेर-बेर हमरा रोकि रहल छल ।

ओना स्वयम् हमर अपन समयमे किछु चर्च होम' लागल छलैक । हमरा जखन एम० ए०मे पहिल स्थान नहि भेटल त' हम अपनाके सन्तोष देने रही जे हमर तैयारी नीक नहि छल आ हमर अक्षरो बड़ खराब होइत अछि । हमर एकटा मित्र कहलक —'प्रोफेसर सभक डेरापर जाइत छँ ?'

—"आइ धरि प्रयोजन नहि भेल अछि ।"

ओ हँस' लागल—'प्रयोजन त' छौक । प्रथम स्थान ओना भेटतौक ? व्यक्तिगत सम्पर्क आ प्रोफेसरक समथन अवश्य होइत छैक । डेरापर टहल-टिकोरा क' देल करहिक । परीक्षासँ पहिने प्रश्न पत्र भेटि जयतौक ।' हमरा क्रोध भेल छल । बिना मेरिटकेँ टॉप करबाक बात सोचब हमरा लेल असम्भव छल मुदा हमर ओ मित्र हमर धारणाक मजाक उड़बैत कहलक—'हमर भाइ साहबकेँ चीन्हैत छहुन ?'

हम सहमति मूड़ी डोला देलियैक । ओ बाजल—'हुनका बुढ़ारीमे डाक्टरेट चाहियनि । एकटा प्रोफेसरसँ कहिए गप्प करबा देने छियनि । तीन हजारमे तय भ' गेल छनि । प्रोफेसर हुनका लेल तीन हजारमे थीसिस लिखि देतनि आ डाक्ट-रेट सेहो दिआ देतनि । भाइसाहबकेँ बुढ़ौरीमे अपन नामक संग डाक्टर लिखबाक स'ख पूरा भ' जयतनि ।

ई त' बड़ पुरान बात भेलैक । ओहू दिनमे ओकरा मानबामे हमरा आपत्ति भेल छल । आब त' लोक बहुत रास गप्प करैत अछि । ओइ दिन विश्व-विद्यालयक अधिकारी स्वयम् कहलनि । आलोक त' बहुत किछु कहैत अछि । ओकरा हिसाबे आब एहि विश्वविद्यालयमे बिना परीक्षा देने प्रथम हैब, बिना थीसिस लिखने डी० फिल भेटब आम बात छक । एहि सबपर लोककेँ आब आश्चर्यो ने होइत छैक । पछिला साल आनर्सक परीक्षामे ओ कहैत छल जे सभ परीक्षार्थी अपन अपन कौपी ल' घरपर चल गेलैक आ सन्ध्याकाल विश्वविद्यालय कार्यालयमे खिड़की बाटे खसा देलकै । परीक्षा भ' गेलैक ।

आलोकक एम०ए०क परीक्षा भेलक-दू सालक बदला तीन सालमे। अह्‌ बेर ओकरा संग वैह भेलैक जे सभ परीक्षामे होइत आयल छलैक। प्रथम श्रेणी नहि भेटलैक। नम्बर लेलक त' एक विषयमे फेर अनुपस्थित लिखल छलैक। आलोक ओहि दिन तेहन उग्र रूप धारण कयलक कि हमरा डर भेल। घर भरिमे सभके आशंका छलैक जे कोनो कांड ने क' बैसय। ओकर वयस सेहो खतम भ' रहल छैक। कतहु कोनो प्रतियोगिता परीक्षामे नहि बैसि सकत। एहन रिजल्टपर प्राध्यापकी भेटब सेहो असम्भव छलैक, तेँ आइ० ए० एस क फार्म भ' लेल कहने छलियक।

ओकरा लग बी० ए०क ने सर्टिफिकेट छलैक ने मार्कशीट। औनर्स नहि भेटलापर पुन: जाँचक लेल जे आवेदन कयने छल, रिजल्ट भेलापर पुरना मार्कशीट सेहो देब' पड़लक। प्रथम श्रेणी भेटलैक मुदा परिवर्तित मार्कशीट अखन धरि नहि भेटल छलैक। सर्टिफिकेट सेहो नहि। आ हम बड़ विश्वासक संग कहने छलियैक जे हम अपने जायब, सभ काज भ' जयतैक।

तीन दिन निराश भेलाक बाद हम ओइ परिचित अधिकारी लग गेल रही। ओ हुनकर विभागक काज नहि रहनि मुदा ओ सम्बद्ध विभागमे फोन क' देलथिन। हम सम्बद्ध अधिकारीसँ भेट क' सभ समस्या कहलियनि त' ओ हँस' लगलाह— 'अइ लेल अपने कियैक चिन्तित छी। ई सभ त' होइते रहैत छक। अपने निश्चिन्त रहू, सर्टिफिकेट आ मार्क्सशीट परसू अवस्स भेँटि जायत।'

हम आश्वस्त होइत बाहर आयल रही मुदा हमर बात सुनि आलोक चिन्तित भ' उठल छल—'ओकरा बात पर नै जाउ। सार नम्बरी जातिवादी आ हरामी अछि। किन्हुँ ओना काज नहि करत। अहाँ जिनकासँ फोन करबा देलियैक तिनकासँ त' ओकरा जानी दुश्मनी छैक, काज गड़बड़ा गेल। दुनू दू जातिक आ दू गुटक अछि।'' हमरा मुदा पूर्ण विश्वास छल। तेसर दिन हम पहुँचल रही।

ओइ अधिकारीक कतहु पता नहि छलनि। कार्यालयसँ छुट्टी ल' हम दिन भरि हुनकर कोठलीक बाहर ठाढ़ रहि गेल रही। पता लागल ओ कोनो नेताक संग घूमि रहल छथि, कखन औताह तकर कोनो ठेक नहि। सन्ध्याकाल हम निराश घुमि आयल रही।

दोसर दिन हम फेर कार्यालयसँ छुट्टी ल' क' पहुँचल रही। बारह बजेके बाद ओ कार्यालय आयल छलाह। हम बिना बजाहटिक प्रतीक्षा कयने कोठलीमे

पैसि गेल रही। ओ कने रुच्छ होइत बाजल छलाह- 'अखने आयल छी, कतेक काज सभ अछि, अपने कने प्रतीक्षा करू।'

हम बैसैत कहलियनि— 'काज हमरो अछि आ हम दू दिनसँ काज छोड़ि अपनेक प्रतीक्षामे बैसल छी। आइ हम मार्क्सशीट आ सर्टिफिकेट लैयेक' जायब। कालिह ओकरा पठयबाक अन्तिम तिथि छैक।

ओ कने संकुचित हैबाक अभिनय करैत बजलाह 'कालिह जरूरी काज छल सचिवालयमे, दफ्तर दिस नहि अयलहुँ। आइ अपनेक काज अवस्स करबा क' राखब। अपने कालिह भोरे आउ।'

—''कालिह मुदा अन्तिम तिथि छैक।'

—''अपने निश्चिन्त रहू। भोरे हम दुनू चीज अपनेक हाथ मे द' देब।'

आ आइ नओ बजेसँ तैयार बैसल छी। हमरे बजाहटिपर आलोक आबि क' सामनेमे ठाढ़ अछि। ने ओकरा दिस देखबाक साहस भ' रहल अछि, ने डेगे आगू बढ़ि रहल अछि। आलोकसँ हमरा डर भ' रहल अछि।

आलोक हमरा टोकैत अछि--देरी भ' रहल अछि। जयबैक नहि? रजिस्ट्री सेहो कर' पड़त आइए।

हमरा तैयो ओकरा दिस तकबाक साहस नहि होइत अछि। चुपचाप उठि क' विदा होइत छी। भरि बाट मोटरमे गुमसुम बैसल रहैत छी, एक्को बेर आलोक दिस नहि देखैत छियैक। जेना-जेना विश्वविद्यालय कार्यालय लग अबैत जाइत अछि, हमर डर बढ़ले जाइत अछि। अजुका दिन निर्णयक अछि। हम आलोककेँ आश्वस्त कयने छलिलैक जे काज भ' जयतैक। यदि नहि भ' सकलैक आइयो त' कोना ओकरा दिस ताकि हैत हमरा? ओकर जिनगी हमरे हाथे नष्ट भ' जयतैक। हम जे नेनपनसँ ओकरा आदर्श आ उपदेश घोरि क' पिअबैत आयल छियैक, से काज देतैक ओकरा आइ?

हम डेग घिसिअबैत आशंकित ओइ अधिकारीक कक्ष लग पहुँचि परदा हटा भीतर हुलकी देलियैक। जकर आशंका छल, सैह भेल। कक्ष खाली छल। हम भीतर पैसि हताश एकटा कुर्सी पर बैसि रहलहुँ। आलोक बाहरे रहि गेल, कतेक काल बीतल से ज्ञात नहि भेल। बैसल-बैसल हमरा प्राय: झपकी आबि

गेल छल। तन्द्रामे लागल जेना क्यो टोकि रहल अछि— "अहाँ एना भीतर कोना आबि गेलहुँ ? कोन काज अछि ?'

हमर भीतर जेना एकाएक किछु लहकि उठल। कने ऊँच स्वरमे कहलियनि 'हमरा चीन्हैत नहि छी अपने ? नहि जानल अछि जे हम किएक बैसल छी ?'

—"बिन कहने हम कोना बूझब ?' ओ क्रोधसँ बजलाह।

हमरा भीतर जेना एक्के संग हजार चिनगी लहकि उठल। 'हम मुदा अहाँकें बूझि गेल छी। अहाँ झुट्ठा आ अयोग्य छी। चारि दिनसँ हमरा दौड़ा रहल छी। आइ ग्यारह बजे हमरा कागज देब' लेल बजौने रही आ आब हमरा चीन्हबामे संशय भ' रहल अछि।'

ओ सकपका गेलाह—'ओ कागज ? आइ तँ नहि भ' सकत।'

हम कण्ठ फाड़िक' चिचिया उठलहुँ—नै हैत ? कोना ने हैत ? आइ बिना ओ कागज लेने हम नहि जायब। नहि त' आइ—आइ कार्यालयमे आगि लगा देब हम। अहाँ सन-सन भ्रष्ट आ अयोग्य लोककेँ कुर्सीसँ घिसिया क' चौराहा पर ठाढ़ क' देब। अइ सड़ल-गलल व्यवस्थाकेँ लतिया क' औंघरा देब। हम आइ नै हटब एत'सँ बिना काज भेने।

उत्तेजनासँ हमर देह थरथर काँपि रहल छल। आँखिसँ धधरा आ मुँहसँ फेन बाहर भ' रहल छल। आलोक भीतर दौड़िक' आयल आ हमरा भरि पाँज पकड़ि कुर्सी पर बैसा देलक। चारु कातसँ आरो बहुत रास लोक कोठलीमे आबि गेलाह। ओ अधिकारी सकपकायल अपन कुर्सीमे गड़ल छलाह।

लोक सभक भीड़ बढ़ैत देखि ओ उठलाह आ भीतर कार्यालयमे जाइत बजलाह –'अपने अनेरो बिगड़ि गेलहुँ ! बैसू अपने, हम कागज लेने अबैत छी।

हमरा आब अपन स्थितिक ज्ञान भेल। आलोक अविश्वासपूर्वक हमरा दिस देखि रहल छल जेना हम कोनो अनचीन्हार व्यक्त होइ। बाँकी जमा लोक सभ हमरा प्रशंसात्मक दृष्टिए देखि रहल छलाह जेना हम कोनो बड़का भारी काज कयने होइ। हमरा अपन देहमे हजार-हजार चिनगीक लहकि अखनो लागि रहल छल आ हम ओहि धाहीसँ छटपटा रहल छलहुँ। ओकर विपरीत आलोकक आँखिमे जत' सदिखन एकटा चिनगी लहकैत रहैत छलैक एकटा विस्मय आ

आश्चर्यक भाव छलैक। ओ हमरा पकड़ने हमरा लग ठाढ़ छल जेना हम कोनो नेना होइ आ ओ हमर अभिभावक रहय। ओकरा आँखिमे हमरा लेल चिन्ता छलैक।

किछुए कालमे ओ अधिकारी कागज लेने बाहर अयलाह। आलोक ओकरा दस्तखत क' ल' लेलक। हम ओकरा संग उठि क' कोठलीसँ बाहर आबि गेलहुँ। ओइ अधिकारीकेँ औपचारिक धन्यवादो नहि देलियनि।

पोर्टिकोमे अपन मोटर दिस जाइत काल हमरा ई देखि क' आश्चर्य भेल जे हमर आ आलोकक आँखिक भावमे अदला बदली भ' गेल छल। हमरा आँखिमे ओकर आँखिवला चिनगी लपलपा रहल छल आ ओकर आँखिमे हमरा लेल चिन्ता आ भयक ओहने भाव आबि गेल छैक जे हमर आँखिमे सदिखन ओकरा लेल रहैत छल।

चारु कात ठाढ़ लोक हमरा तेना देखि रहल छलाह जेना हम कोनो बिजेता होइ मुदा हमरा लागि रहल छल जेना हम एकटा पैघ आ बहुत दिनसँ लड़ि रहल युद्धमे पराजित भ' गेल होइ।

आलोक हमरासँ जीति गेल छल मुदा ओकर आँखिमे बिजयक उल्लासक बदला एहन गहन चिन्ता किएक छलैक ? □

सितम्बर १९८७

बाढ़ि

ओ सभ तेना डेरायल छल जेना क्यो पछोड़ धयने होइ जे मोका भेटितहि नरेटी चाँपि देतैक। आशंकित आ आतंकित। रहि रहि क' चारुकात तकैत जेना सभदिस पसरल अन्हारकेँ चिरैत क्यो बहरेतैक आ ओकरा सभकेँ गीड़ि जयतैक।

अन्हार नीक जकाँ पसरि गेलाक बादे मानसक मैक्सी टैक्सी गामक सिमान लग ठाढ़ भेल छलैक। बिदा सबेरे भेल छल, लगैत छलैक जेना दू तीन बजेसँ पहिनहिं गाम पहुँचि जायत। बाट-घाटक ठेकान नहि छलैक, बाढ़ि नीक जकाँ घटलो नहि छलैक—सैह सुनने छल सभसँ। मुदा बाटमे एहन किछु नहि अभरलैक—खाली रोडक दुनू कात पानि रहैक जे सटकि रहल छलैक। बेनीवाद पहुँच' लागल तँ लगलैक जेना आब गाम पहुँचबामे बेसी समय नहि लगतैक। तकर बाद मुदा सभटा गणना गड़बड़ा गेलैक।

तैयो गामक सिमानपर साँझ झुकलापर पहुँचिये गेल। सभ साल जकाँ ओ सभ अहू बेर, ओही चौबटियापर सलहेसक मंदिर लग ठाढ़ छलक—ठीक ओही चौबटियापर जत' उत्तरे दछिने पिचरोड कमतौल-दरभंगा जाइत छैक आ पूबे-पछिममे कच्ची सड़क निकलैत छैक। पछबारी कातबला बाट हाइस्कूल होइत रेलबे लाइन धरि जाइत छैक जत' गामक सिमान खतम होइत छैक आ पुबारी कात बला मटिआह बाट हरिजन टोल होइत भुतही गाछीक कात दने ब्रह्म बाबाक स्थानसँ सटैत, धनुकटोली पार करैत, शिव मंदिर आ राधा कृष्णक मंदिरक उत्तरबारी कात दने बीच गाम धरि चल जाइत छैक।

अही चौबटियापर आब लोककेँ सबारी छोड़ि देब' पड़ैत छैक। बस वा मिनियो बसकेँ जयबाक बाट नहि छैक। अपन कार जीप वा टैक्सी रहय वा रिक्सा-टमटम होइ, त' कहुना गाम धरि चल जा सकैत छैक। पहिने एना नहि छलैक, बस वा मैक्सी-टैक्सी ओकर दरबज्जा धरि चल जाइत छलक। मुदा जहियासँ रातिक' चोराक' फनैत झा सड़कक सभटा माटि काटिक' अपन देबालक लेल गिलेबा बनबा लेलथिन तहियासँ झंझट भ' गेल छैक। तकर बादो माटि तांटि द' मैक्सी टैक्सी दरबज्जा धरि चल जाइत छलैक। मुदा जहियासँ फनैत झाक देखाउसमे बुधियार मिसर सेहो अपन बाड़ीक टाट घुसकाक' आधा बाट धरि ल' अनलथिन, ई बाट एकदम शिकस्त भ' गेल छैक आ फियेट आ एम्बेसेडर-केँ गाम धरि लाब'मे चारि टा मजूरकेँ वोदारि ल' क' आगू-आगू चल' पड़ैत छैक। पहिने ओ सभ माटि काटिक' बाट भरैत छैक, तखन सवारी आगू बढ़ैत छैक।

तैयो मानस सभ बेर मैक्सी टैक्सी लैये क' अबैत अछि गाम। सभ साल एक बेर दुर्गापूजामे। दोसर कोनो उपाइयो नहि छैक। परिवारक सभ लोककेँ मिलाक' तीस पैंतीससँ बेसिये भ' जाइत छैक, ओतबे संख्यामे मोटरी चोटरी। पछिला दू सालसँ मैक्सी टैक्सीबला हँसी कर' लागल छैक—आब मैक्सी टैक्सीसँ नहि हैत। पूरा बसे रिजर्व करा लिय'।

मानस बस रिजर्व नहि करबैत अछि, मुदा ओकर मैक्सी टैक्सी हरिजन टोलक लोकक लेल रिजर्व छैक। पहिनेसँ सभ पता लगौने रहैत छैक आ सलहेसक थान लग ठाढ़ रहैत छैक—बूढ़-स्त्रीगण, बच्चा सहित। हाथे हाथ सभटा मोटरी-चोटरी उठा लैत छैक। मजूरीक लोभमे नहि, वर्ष भरिक पावनिमे इनामक लोभ। मेला देख' लेल दू चारि टा रुपैया। आ से देबामे मानस कींहियो कंजूसी नहि करैत छैक।

अहू बेर सभ ओहिना ठाढ़ छलक। मोटा-पेटी-बक्सा सूटकेस सभ हाथो-हाथ उठा लेलकै। जकरा किछु नहि हाथ लगलैक से कोनो बच्चाकेँ कोरामे उठा लेलकै। जकरा बच्चो नहि हाथ लगलैक, से किछु चेतनो भेल नेनाकेँ टाङ्गि लेलकै। लालटेन आ टार्च माय चरवाहक हाथे पठवा देने रहैक। झटपट सभ विदा भ' गेल।

विदा आनोबेर एहिना होइ छल मुदा अइ बेर मानसकेँ लगलैक जेना सभकेँ हड़बड़ी होइ—पुरुष, जनीजाति सभकेँ। अन्हारोमे बेराबेरी ओकर सभक चेहरा देखैत मानसकेँ लगलैक जेना सभ डेरायल आ सशंकित होइ। आँगनमे पहुँचैत देरी, अपन अपन माथक मोटा ओसारा पर रखैत देरी सभ बिदा हैबा लेल उद्यत भ' गेलैक। सभसँ आगू डेग उठौलकै ननकू—'सभटा वस्तु जाँतिक

ित्रान क' लू मालिक। हमरा आर जाइ छी आब ! बड़ी देरी हो गेल, नै जानि की होत आइ राति।'

मानसकेँ जे आशंका गामक सिमाने पर भेल छलैक से आब मजगूत भ' गेलैक मुदा कोनो अर्थ नहि लगलैक ननकूक बातक। राति बेसी भ' गेलैक तँ एना डेरायल किएक छैक ई सभ। राति विराति खेत-खरिहान, गाछी-विरछी आ बाट-वाट बौआइते त' रहैत अछि ई सभ ? आइ कथीक डर पैसि गेल छैक ?

सभकेँ पाइ दैत मानस ननकूसँ पुछलकै—'एना डरायल किएक छेँ ननकू ? कोन बात छैक आखिर ...

कनेक भरोस भेटितहि ननकू लग चल अयलैक आ फुसफुसा क' बजलैक—"जाने तेहने हइ मालिक ! वारण्ट हयं हमरा आरक नामे। बैदा, कैलू, बौकू आ रीझनक संग हमरो नाम वारंट। हय। 'बितली-बितली रातिमे पुलिस घरपैसी करै हय डांड़मे रस्सा लगव' खातिर। अपन-अपन घर छोड़ि भरि-भरि राति गाछी-विरछी, बाध बोनमे नुकायल रहै छी " साँप कीड़ाक संग राति बितबै छी मालिक"...

मानस आर अवाक भेल जाइत रहय। ओकरा कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलैक। फेर पुछलकै—"वारण्ट किएक छौक तोरा सभक नाम ? कोनो चोरि कयने छहिक तोँ सभ ...

अइ बेर ननकूक बड़का भाइ बौका बाजल—"चोरियोसँ बढ़ि क' मालिक ! लूटि मारि कयने छियैक हमरा आर ! सरकारी गहूम लूटने छियैक। रिलीफ बाँट' लेल जे गहूम आयल छलैक से लुटने छियैक हमरा आर...."

मानसकेँ किछु मोन पड़लैक—"सत्ते लुटने छहिक रिलीफक गहूम तोँ सभ ! अखबारमे देखने रहियैक किछु दिन पहिने। अपने ब्लाकक समाचार रहैक मुदा गामक आ तोरा सभक नाम नै रहैक।

रीझन जे एतेक काल चुप्प ठाढ़ छल, एकाएक कने तीव्रतासँ बाजल—"अखबारो तँ अहीं आरकेँ हय मालिक। गरीब गुरबाक गप्प के छापत ? ओकरा जे मोन हेतैक छापि देत आ हमर आर दोषी करार "

ननकू ओकरा बीचेमे डँटलकै— बेसी लुब लुब नै कर रीझना ! मालिकके सभटा बात नीक जकाँ कहुन।

मानस सेहो आग्रह कयलकै— "कह ने हमरा सभटा असल बात ! की कयलहिक तोरा सभ ? किएक निकललौ वारण्ट....:

रीझना खूब संयत स्वरमे कह' लगलैक—"सभटा बात सत्ते कहब मालिक। हम गेल रही ओइ हँसेड़ीमे। मुदा ई ननकू नै गेल छल' कैला नहि गेल छल। बौका आ वैदा त' गामोमे नहि छल। तैयो एकरो सभक नाम वारण्ट हइ—हमरो नाम हय। हमहू की एकसरे गेल रही,—आगू-आगू गेल रहथि किसनपुरक बाभन सभ—अहू गामक बाबू भैया सभ रहथि। टोल देने जाइत रहथि त' हमरो आरके हाक देलनि - गहूम लुटाइत छैक, चलत चल सभ क्यो।" हमरो आर हुनका सभक जौरे विदा भ' गेली। हम रही ! संगमे दू चारि टा मर्दाना आ किछु जनी जाति सेहो गेल। सभ पंचायतमे रिलीफक गहूम बँटा गलैक मुदा अपना पंचायतमे डीलर-मुखिया नै जानि कोन जोगारमे लागल छल। लोक भुक्खे मरैत छल, मुँहमे दाना गला कतना रोज हो गेल रहै सभके। ने घरमे अन्न पानि, ने काज। बाहर जा क' रिक्शा ठेला चलायब, सेहो बाट बन्न। वस्तु जात निपत्ता। बिना दामके किच्छो मिले बला नहि आ दामो केहन। मटिया तेल आ नीमक दस टके किलो। दियासलाइ एक रुपैयामे आ चाउर गहूम आलू दस रुपये किलो। सेहो एगो दूगो दोकान गोलापर खूजल। मूड़ी पर मूड़ी बजरैत। हमरा आर कहाँ ओइ भीड़मे जयती। भूक्खल पेटे दिन कटैत रही। गहूम अयलैक तँ उम्मेद लगलैक मुदा पाँच दिन ओहिना बोरामे बन्ने रहलै मालिक। तखनी बाबू सभ हँसेड़ीमे गेला, जौरे हमरो आर गेली। जहिया बाढ़ि अयलै, माल जाल समेत भागिकेँ अहींक ड्योढ़ीमे गेली सभ क्यो। सभकेँ ओसारापर जगह देलनि बूढ़ी मलकाइन माल जालके पोरा सेहो। दू दिन खाइ लेल अन्न आ भानस लेल जरनो देली। तकरा बाद सभ अन्हार। क्यो ककरो पुछे बाला नहि। माल जाल मरलै, मनुक्ख मर' लगलै—तैयो हमरा आर पेट बन्हने पड़ल रही। तखनी बाबू भैया लूटि कयलनि—हमरो आर किच्छो पैली। जतना गमछामे अँटल, बान्हि लेली, जनी जातकेँ लूआ खोंइछमे जतना अंटलै उठा लेलकै। बाबू भैया सभ बोरा उठा उठाकेँ ल' गेला। बेसी तँ जिआने हो गेलै। लूझा लूझीमे बोरा सभक मुँह खुजि गेलै आ गहुम पानिमे गिर पड़लै। घटलो पर डाँड़ से ऊपर पानि रहैक।

एतबा कहैत कहैत रीझना हाँफ' लागल, किछु काल दम लेब' रुकल रहल। फेर कह' लगलैक - "अहीं निसाँफ करु मालिक। रिलीफक गहूमं ककरा लेल आलय रहलै ? हमरे आर वास्ते ने। मदनपुर आ अहाँ गामक बाबू भैया लेल त' नै आयल रहलै। ओ सभ त' ओहनो बाढ़िमे काँच पाकल खाइते छलाह। सँझियाके सँझिया त' हमरे आरके बितैत छल। हमरे आर लेल आयल गहूममे से दू चारि सेर उठा अनली---से हमरा आर चोर डाकू हो गेली आ जे सभ बोराक बोरा उठौलनि से सभ हो गेला साधु-महात्मा। आ काज केहन कयलनि ई साधु महात्मा सभ, सेहो सुनिए लू मालिक। बिहाने भेले जब हल्ला होलैक जे पुलिस दरोगा अबै छै, साधु-महात्मा सभकेँ हथकड़ी लगतनि, त' ई फेकन बाबू पानि हेलि क' दरभंगा गेला आ हमरा आउरक नाम लिखा अयला। पुलिस दरोगा घर पैसि गेल। हम सभ जनीजातिकेँ घरमे छोड़िक' किम्हरो पड़ा गेली। जेहो दू चारि सेर गहूम अनने रही, सभ पानीमे फेंकि देली। तहिया से पुलिस पछोड़ धयने हय। असली लुटिहारा सभ चेनसँ घरमे बैसल हय आ हमरा आउर राति बिराति बने बने बौआ रहल छी मालिक।

रीझनकेँ रोकैत बौका बजलैक—पकड़ल जायके डर नै हय मालिक। जहलमे खायके त' निलिये जायत। ओही लेल त' एतेक हक्कर पेलैत छी। मुदा बच्चा बुतरू आ जनी जातिके की होतै ? कोनो काजो ने मिलै हइ ओकरा आरके जे कमाइयो क' खा लेतै। ओना हमहुँ की करैत छियै। नुकायल फिरैत छी। साँझक साँझ उपास त' जारिये हय। सभक लेल बाढ़ि अयलक आ गेलैक। हमरा आर त' अखनो बाढ़ियेमे डूबल छी मालिक, एकदम अथाहमे....

बैदा निहोरा करैत बजलैक—हमरा आरकेँ अइ बाढ़ि से बचा लू मालिक। सभटा विरजू बाबूक हाथमे छनि, कोरट-कचहरीमे काज करैत छथि। मदनपुरक सभ बभनाक नाम रहै, अहू गामक दू चारि जनक नाम रहनि... सभक कटवा देलखिन सूरजू बाबू। खाली हमहीँ पाँच गोटे फँसल छी। पाँचोसं पाँच-पाँच सय मंगैत छथि....कहाँसँ लाउ अढ़ाइ हजार हमरा आर ? देहो बेचिके नै मिलत। पाँच टाका लेल देह तोड़ैत छी सभ दिन....अढ़ाइ हजारक मुँह त' खानदानोमे ने देखलक कहियो क्यो... घर-घराड़ी बेचियो देब तैयो ने होत मालिक.... हमरा आरकेँ बचा लू।

मानस कोनो स्पष्ट आश्वासन नहि देलकै। ओ सभ नेहोरा बिनती करैत चल गेलैक। जनी जाति सभ सेहो जाइत जाइत नेहोरा कयलकै—"एगो अहींकेँ आस हय मालिक। बचा लू हमरा आरके"

ओकरा सभकेँ जाइत देरी निरसू काका ससरि क' लग अयलथिन। बड़ी कालसँ आँगनमेठाढ़ ननकू-रीझनाक गप्प ओ सुनि रहल छलाह। ओकरा सभक जाइते ओ अपन भाषण शुरु कयलनि—"अहाँ एकरा सभक बातमे नहि आउ मानस। अहाँ त' गाममे रहिते ने छी। गामक हाल की जाने' गेलियैक ? एकर सभक माथ उनटल छैक। सरकार पिछड़ा वर्गक नामपर सभटा सुविधा एकरे सभकेँ दैत छैक। पिसाइत त' छी हमरा लोकनि। कहबा लेल त' सभसँ पैघ जाति मुदा हालत सभसँ बदतर। एहि बाढ़िमे तँ साँझक साँझ उपासे बितल। पचास सालमे एहन बाढ़ि नहि देखल। आँगनमे भरि डाँड़ पानि पैसल छल-सभ घरमे पानि। खाली अहींक घर बाँचल छल।

निरसू काकाकेँ गोड़ लगैत मानस कहलकनि— "हमरा लोकनि त' अपने डरे त्रस्त रही। कोनो खबरि नै भेटैत छल' माय गाममे एकसरि छलि।

—"सभटा भगवानक इच्छा।" कहैत निरसू काका चलि गेलथिन। मानस अपन दलानमे आबि क' बैसि गेल। कनेक कालक बाद आरो लोक सभ जुमलैक। किसुन काका सेहो अयलथिन। हुनकर खिस्सा सुनि मानस स्तब्ध रहि गेल। एहन वयस आ एतेक अदम्य साहस। किसुन काका कहलथिन— तोरा त' विश्वासो ने हेत' जें ई बूढ़, पचहत्तरि वर्षक ई बूढ़ छाती भरि पानिमे दिनक दस बजेसँ राति बारह बजे धरि ...चौदह घण्टा लगातार चलत रहल। सेहो खाली हाथ नहि। दुनू हाथमे दू टा झोरा ...कान्हसँ उपर उठौने भूख-पियाससँ बेहाल। तोँ सुनि क' हँसब': मुदा एको पाइ मिथ्या नहिँ कहैत छिय'। एक दिन पहिने तोहँर काकीसँ लड़ि क' लहेरियासराय चल गेल रही। एको पाइ द' क' नहि गेल छलियनि। भोरे सुनलियैक जे बाढ़िक पानि बढ़ि रहल छैक। पक्की सड़क डूबि गेलैक, ट्रेन बन्द, सवारी बन्द। मोनमे बड़ चिन्ता भ' गेल....बाट बन्द भ' गेलैक पाँचो दिन त' बेचारी गाममे भूखे मरि जयतीह। एकसरि गाममे छलीह। ऐइ बाढ़ि-विपत्तिमे के देखतनि ? भूखे मुइल पड़लि रहि जयतीह घरेमे। संगमे जे पाइ छल ताहिसँ चाउर-आँटा, नून-सलाइ, आलू कीनिक' दू टा झोरामे भरि लेलहुँ आ

विदा भ' गेलहुँ पयरे। दस बजे दिनमे बिदा भेल रही लहेरियासरायसँ। मव्वी मोड़ तक अबैत अबैत साँझ होब' लागल। समयक पतो न चलत छलक। झमझम पानि बरसैत। सूर्यक कतहुँ पता नहि। ओइ मोड़सँ बिदा भेलहुँ त' किछु गोटे अपन घरसँ चिचिया क' मना कयलक मुदा हम नै माललियक। दू गोटे आगू-आगू जा रहल छलाह। साहस बढ़ल, हमहूँ आगू बढ़लहुँ। आगू जाइत दुनू व्यक्ति कखन निपत्ता भेला, पतो ने लागल। प्राय: नौजवान छलाह— जल्दी-जल्दी आगू बढ़ि गेलाह। हम बूढ़ थाहि-थाहि क' आगू बढ़ैत रही। मूसलाधार वर्षा, छातीभरि पानि.....खूब तेज करेण्ट आ धुप्प अन्हार। लागल जेना ओइ अन्हारकेँ देखबाक लेल औँठामे आँखि निकलि गेल हो। औँठासँ पानिमे ढूबल पिच स्पर्श करैत आगू बढ़ैत गेलहुँ। कतहुँ मनुक्खक नामो निशान नहि। चारूकात पसरल पानि आ चतरल अन्हार। कात करोट घर सभ पानिमे डूबल। एकटा डूबल घरक मुहथरि पर चौंकी पर चौकी गेंटि क' एकटा स्त्री बैसलि छलि। किछु भरोस भेल। पानि मंगलियैक कण्ठ एकदम सुखा गेल छल। एकटा बाटीमे ओही बाढ़िक पानि देलक पिब' लेल। पिअल नहि गेल। आगू बढ़ैत गेलहुँ। एकटा डेग एम्हर ओम्हर होइत त' दहा क' कत' चल जयतहुँ पतो नहि लगैत। कहुना आँगन पहुँचलहुँ आ पहुँचितहि बेहोश भ गेलहुँ। आब त' कतेक दिन भेल मुदा अखनो अंग अंग दर्द करैत अछि आ स्मरण मात्रसँ देह सिहरि जाइत अछि।

किसुन काकाक गप्प सुनि क' मानस सिहरि गेल छल। मुदा ओ पूर्णत: स्वस्थ छलाह। ई आतंक-कथा आब हुनका लेल उपलब्धि-कथा भ' गेल छलनि--- ई स्पष्ट लगलैक मानसकेँ। एकरा दोहरबैत काल आब ओ सिहरैत नहि हैताह गौरवान्वित होइत हेताह।

मानसकेँ विचारमे पड़ल देखि किसुन काका हँसैत कह' लगलथिन "अइ बाढ़िमे खाली नोकसाने आ भयेक कथा नहि भेलैक। किछु कथा त' बेस मनोरंजक। तोँ सुनि क' हँसबह। पलटू बाबू एकटा मोट सन सिल गाछीमे छोड़ने छलाह। बाढ़िमे ओ दहाक' श्याम बाबूक आँगनमे आबि गेलनि। श्याम बाबू ओकरा चीरि क' बाढ़िमे पन्द्रह दिन अपन काज चलौलनि। बाढ़िक बाद पलटू बाबू अपन सिलक पता लगौलनि तावत आधा सिलक जारनि जरि चुकल छलनि। कहुना आधा जारनि घर अनलनि मुदा चिराइक पाइ पलटूये बाबूकेँ देब' पड़लनि श्यामः बाबूकेँ।

किसुन कका हँस' लगलाह मुदा पारस लोहछिक' बाजल—"बाढ़िक एहन एहन हृदय विदारक कथाकेँ छोड़ि क' अहाँकेँ जारनि आ सिलक कथा सुझैत अछि किसुन कका। हँसीक कोनो गप्प नहि छलैक अइ बाढ़िमे मानस भाइ। छलैक खाली तबाही आ बरबादी, दुख आ ट्रेजड़ी, बिमारी आ मृत्यु। बितलाहा एक मास आइयो एकटा दुस्वप्न जकाँ झकझोरि जाइत अछि। माल जाल आ मनुक्खक कतेक जान गलैक, तकर हिसाब राखब मस्किल। दुसध टोलीमे कम-सँ-कम पांच टा मुइल। क्यो भूखसँ, तँ क्यो बिमारीसँ। भीखूक बाप मरलैक आ बंकूक बेटा। एकटा खिस्सा तँ रोइयां भूलकाब' वला अछि। दू टा भाइ हेलि क' टूटल बान्ह पार कर' लागल। धारमे बहि गेल। बहैत-बहैत दू कोस धरि चल गेल। सांझ भ' गेलैक, पानिक कतहु अन्त नहि.... अथाहमे बहैत रहल दुनू। किछु कालक बाद आगू-आगू बहि रहल छल दुनू भाइ आ पाछू-पाछू एकटा गहूमन साँप। साँप बहैत-बहैत बड़का भाइक पीठपर आबि गलैक। किछु काल ओ दम सधने रहल। मुदा पीठपर साँप... देह सिहरैत रहैक। हाथ बढ़ाक' ओकरा अपन पीठ परसँ फेंक' चाहलक, हाथमे हबकि लेलकै। तैयो ओकरा पकड़ि क' जोरसँ आगू फेकलक। साँप जा क' आगू-आगू हेलैत छोटका भाइक पीठपर खसलैक आ ओकरो हबकि लेलकै। दुनू भाइ समाप्त। दुनूक लाश ओइ अन्तहीन पानिमे भसिआइत रहलैक।

किसुन कका पारसक बात सँ कुड़बुड़ाइत बजलाह —"आ एकरा देखबाक लेल ओही अथाह पानिमे तोँ उपस्थित छलाह—प्रत्यक्षदर्शी, आ कि नहि।

पारस बिगड़िक' उठिक' चल गेल। किसुन काका बजलाह—"उड़ती पसार'बला विपति-कालमे सेहो आनन्द लैत रहैत अछि मुदा हम ई कहबह मानस जे एहन बाढ़िने अपन पचहत्तरि वषक जिनगीमे देखलहुँ, ने अपन बाप दादासँ सुनलहुँ। गाममे आधासँ बेसी घर ढहल। १९३४क भूकम्पोमे एहन तबाही नहि भेल छलैक। बाढ़ि कहियाने उतरि गेलैक मुदा ओकर विभीषिका अखनो व्याप्त छैक। परसू सुकना मरि गेल। डबराक सड़ल पानिसँ छोट-छोट माछ छानि क' अनने छल। ओकरे झड़का क' दुनू बाप-बेटा खयलक। अपने गेल आ बेटाक हालति अब-तबमे छैक।

सबहक गेलाक बादो मानस अपन दलानमे बैसल रहल। बाढ़िक एहन बहुत कथा सुनने छल पटनासँ बिदा हैबासँ पहिनहुँ। बाढ़िक जखन हल्ला भेल रहैक ओ बम्बइ मे छल। रोज दूरदर्शनपर समाचार दैक जे पटनाकें खतरा छैक- गंगा, सोन आ पुनपुनमे पानि बढ़ि रहल छैक। बाढ़िक एतबा समाचार कहि उद्घोषक गुजरात आ उत्तरप्रदेशमे रौदीक समाचार कह' लगैक आ तकर बाद खेल समाचार। ओहि प्रशिक्षण-केन्द्रमे सभ प्रान्तसँ आयल प्रशिक्षु सभ विहारक बाढ़ि आ गुजरात, उत्तर प्रदेशक-रौदीकें बिसरि क्रिकेटक स्कोर सुन' लगैत छल।

मानसकें लगैत छैक जे बाढ़ि रौदी-हत्या-लूटि-बलात्कार आ नरसंहार आब कौतूहलक वस्तु बनल जा रहल छैक। सभ दिन अखबार आ टेलीविजन लोक अही उत्सुकताक संग खोलैत अछि जे आइ कत' एहन घटना भेल हेतैक आ जहिया एहन समाचार नहि भेटैत छैक''' निराश जकाँ भ' जाइत अछि— आइ एक्को टा उत्तजक समाचार नहि''' नरसंहारक कोनो घटना नहि। जहिया एहन घटनाक समाचार भेटैत छैक कोनो दहशत आ त्रासदीक अनुभव नहिए जकाँ करैत अछि बेसी लोक। एकटा क्षणिक उत्तेजना। आ फेर ओकरा बिसरि क्रिकेटक स्कोर वा पाँप म्यूजिक सुन' लगैत अछि। विहारक बाढ़ि, गुजरात आ उत्तर प्रदेशक रौदीक समाचार ओ एकदम तटस्थ भावसँ सुनैत अछि।

मानस मुदा तटस्थ नहि रहि पबैत अछि। ओकर चिन्ता बढ़ले जाइत छैक। अपने पन्द्रह दिन लेल बम्बइमे छल आ पटना पर खतरा छलैक जत' सौंसे परिवार छलैक। एको टा चिट्ठियोने भेटि रहल छलैक।

पटना घुरिक' आयल तँ जानमे जान अयलैक। पटना पर कोनो खतरा नहि छलैक मुदा सौंसे उत्तर बिहार बाढ़िमे ढूबल छलैक आ बाढ़ि पीड़ितक उद्धारक लेल पटनामे जोर शोरसँ प्रयास भ' रहल छलैक— बाटे घाटे, मोहल्ले-मोहल्ले। सभ चौराहापर बाढ़ि पीड़ितक सहायता-कोषक झण्डा गाड़ल छलैक। चन्दा असूल करय बला दल सभ चौराहापर बैसि क' ताश खेला रहल छल। बड़ उत्साह छलैक ओकरा सभमे। एकटा उत्साही दलसँ ओकरो भेट भेल छलैक। घुरबामे देरी भ' गेल छलैक, एकटा दोसर मोहल्ला गेल रहय। रातुक बारह बाजि गेल छलैक तैयो कोनो चिन्ता नहि छलैक। निश्चिन्त भेल अबैत रहय,

ठीक कोतबाली लग सड़क घेरल छलैक बाँस ल' क' आ किछु उत्साही लोक ठाढ़ छलाह— "बाढ़ि पीड़ितक लेल चन्दा दियौक, तखन रिक्सा आगू बढ़त।"

बजनिहार लड़खड़ा रहल छल। मुँह भभकि रहल छलैक। ओ कतबो कहलकै जे ओ द' चुकल छैक अपन कार्यालयमे आ मोहल्लोमे मुदा ओ सभ नहि मानलकै। मानस जेबीसँ पँचटकही निकालि कहलकै— यैह टा हमरा संगमे अछि —रिक्सावलाकें भाड़ा देबैक।"

ओ निशामे बुत्त युवक कूदि क' पँचटकही छीनि लेलकै— "भाढ़ा डेरापर द' देबैक। पँचटकही जमा क' दिऔक।" फेर तलाशी सेहो लेलकै जे झूठ तँ नहि बाजि रहल अछि। रिक्सा जखन कहुना आगू बढ़लैक तँ जोरसँ सुना क' गारि देलकै— सार, भिखमंगा। पँचटकही ल' क' मटरगश्ती करैत अछि— सार रण्डीवाज''''।

मानस चुपचाप डेरा चल आयल। ककरो किछु कहबो ने कयलकै। एहन घटना आब सभ ठाम होइत छैक, एकर चर्चा कोनो अर्थ नहि रखैत छैक। अहूँ कें साहस आ ताकति होअय तँ देखाउ अपन पराक्रम।

पटनासँ अबैतकाल ओइ टूटल पुल लग एहने पराक्रमी लोक सभसँ भेंट भेल छलैक। पुल लग डाइभरसन छलैक जाहिपर नीचाँ जा क' एकटा ट्रक उनटि गेल छलैक भोरे। सात घंटासँ जाम छलैक आ आगुओ सात घंटा तक लाइन साफ हैबाक कोनो आस नहि छलैक। मानस हताश होइत पटना घुरि जयबाक बात सोच' लागल छल।

तखने आसक एकटा छोर पकड़यलैक। बहुत रास प्राइवेट कार आ रिक्शा, मोटरसाइकिल सभ मेनरोड छोड़ि गाम बाटे एकटा दोसर सड़कपर जा रहल छलैक। ड्राइवर कहलकै जे ओकरो मैक्सी-टैक्सी ओहि बाटे निकालि सकैत छैक। सभ क्यो प्रसन्न होइत ओही बाटे विदा भेल।

बीच गाममे अबैत-अबैत एकटा भीड़ बाट छेकि लेलकै। ककरो हाथमे लाठी, ककरो हाथमे बाँसक छिपाठी। ओकर नेता आगू अयलैक— 'दूर्गापूजाक चंदा दिय' त' गाडी आगू बढ़य देब।" मानस एकटा दू टकही निकालि क' देलकै। ओ दू टकही ओकरा मुँहपर फेकैत एकटा छोड़ा बजलैक— 'भीख द' रहल छी? सय टाका निकालू।' मानसकें तामस उठलैक— 'कोनो जबरदस्ती

छक, नहि देब एक सय टाका। लेबाक हो तँ लिय' दू टाका।' ओ छौड़ा अकड़ि क' बजलैक— 'त' नहि दिय'। रहू राति भरि एतहि।'

पाछाँसँ ओकर चेला सभ गाड़ीपर बाँस-डंटा बजारय लगलैक। गाड़ीमे स्त्रीगण एवं धीया-पूता त्रस्त भ' गेलैक। पिंड छोड़ब' लेल एक सय टाका देलकै। ओ सभ ठिठिआइत हटि गेलै। ओ जान छोड़ा आगू बढ़ल। लगले दोसर आफत।

ओ सढ़क पुरना छलैक जाहिपर नवका रोड बनयसँ पहिने सवारी चलैत छलैक। एहि सड़कपर गामक बीच एकटा पूल छलैक जाहिपर एखनो हलुक सबारी निकलि सकैत छलैक। ओहि पुलक आगू लकड़ी, चौकी, आदि अड़ा क' बाट घेरने किछु छौंड़ा ठाढ़ छलैक— "गाड़ी आगू नहि जैत, पूल टूटि जेतै। हमरा सभक अयबाक-जयबाक यैह बाट अछि। अहाँ सभ गाड़ी घुमाक' मेनरोड पर ल' जाउ।

मानस कतबो बुझयबाक चेष्टा कयलकै, मानबे नहि कयलकै। किछु स्त्रीगण सभ सेहो जमा भ' गेलैक। हाथ नचा-नचा चिचिआ क' बाज' लगलैक। ओकरा मोन भेलै जे पटना घुरि चली।

तखने एकटा शुभ्रशाभ्र नेतानुमा लोक औत' उपस्थित भेलैक। मानस लग आबि कहलकै—"अपने चिन्ता नहि करु, सभकेँ एखने शान्त करैत छी।" ओ छौंड़ा सभक बीच पहुँचि गेलैक आ सभक चौकी लकड़ी उठा क' फेंकि देलकै। ककरो रोकबाक सहस नहि भेलैक। स्वयम ड्राइवरकेँ निर्देश दैत ओ गाड़ीकेँ पुल पार करा देलकैक। मानस ओकरा आगाँ नतमस्तक भेल जाइत रहय कि ओ कहलकै—ई चारि टा बोरा अछि, एकरा उपर चढ़ा दैत छी। हमरा संगे दू टा छौंड़ा सेहो अछि, हम सभ दरभंगा उतरि जायब। ओ साधिकार सामानक उपर अपन बोरा लदबा अपन दुनू लोकक संग तीन टा सीट दफानि बैसि गेलैक। मानसक तीनू छोट भाइकेँ ठाढ़े दरभंगा धरि आब' पड़लैक। भराठी कखन बाति गेलैक, ककरो ध्यानो नहि रहलैक। सभ सकदम्म बैसल रहल।

ओकर उतरलाक बाद सभक जानमे जान अयलैक। मानस ओकरा सादर नमस्कार कयलकै। ओ विपत्तिसँ निकालने छलैक ओइ भीड़मे। एहन-एहन परा-

कमी लोकक आइ बड़ आवश्यकता छैक, चाहे ओ पटनाक बेली रोड हो वा गामक चौराहा। देशक मामूली जनता हिनके लोकनिक बलें जीबैत अछि।

अही बातपर ओइ दिन एकटा भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री दुःखी होइत कहने रहथिन— "अहाँ लोकनिमे यैह एकटा बड़ पैघ बीमारी अछि। सभटा दोष अहाँ लोकनिकँ नेता, मन्त्री, एम० पी० आ एम० एल० ए० मे देखाइत अछि। अपन दोष अहाँ लोकनि देखबे नहि करैत छी? अहीं बाजू त', देशमे सभटा प्रान्तकेँ जोड़ि क' कतेक मन्त्री, विधायक आ सांसद छथि। एतबे किछु हजार लोक पूरा देशकेँ डूबा रहल छथि, आ बाँकी लोक, ई विशाल जनसंख्या। ई सत्तासी करोड़ लोक मात्र किछु हजार लोकक कारण गर्तमे जा रहल अछि। बाँकी सभ सदाचारी आ निष्ठावान। बइमान खाली नेता? जनता दूधक धोअल।

ओहू दिन बाढ़ि रहैक। पातपर पोलाब, माछ-मांस, दही मधुर सभ बहिं रहल छलैक। एकटा वरिष्ठ अधिकारीक पिताक वर्षी रहनि। बहुत क्षेत्रक लोक, नेता, अफसर, पत्रकार, लेखक, ओकील, जज आदि आमंत्रित रहथि। ओइ बाढ़िमे, बाढ़िक गप्प शुरू भ' गलैक। उत्तरी बिहारक जनताक तबाही आ सरकारी निष्क्रियताक गप्प होम' लगलैक।

विपक्ष आ विक्षुब्ध काँग्रेसक गप्प होब' लगलैक। बाढ़ि पीड़ित भूखल जनताक संग भ' रहल राजनीतिक गप्प होबय लगलैक। पातपर लागल पकवानक पथार पर लुधकल लोक सभ खाली पेट, भूख आ बिमारीसँ मरैत, बाढ़िमे घेरायल लोक सभक गप्प क' रहल छल— शासन आ नेताकेँ दोषी मानि रहल छल एहि स्थितिक हेतु। एकटा भूतपूर्व मुख्यमन्त्रीक समर्थक त' चिचिया क' बाजि उठलाह— "ई सभ जानि बूझि क' भ' रहल अछि। हमरा लोकानक क्षेत्र भूतपूर्व मुख्य-मन्त्रीक समर्थक अछि तेँ हमर उपेक्षा भ' रहल अछि। रेलबे लाइन टूटल अछि, रेल बन्द अछि, सड़क टूटल अछि, बस बन्द अछि। ककरो कोनो थाह नहि लागि रहल अछि आ प्रशासन सूतल अछि। खाली अपन काज होइ त' बड़ मोस्तैदी देखाओत।

ओ उत्साही विक्षुब्ध कांग्रेसी एकटा खिस्सा सुनौलथिन। एकटा वरिष्ठ अधिकारीक माय बाढ़िमे गाममे फँसल छलथिन। एकटा हेलीकाप्टर सँ पता लगबौलनि आ सूचना भेटलनि जे हुनकर गाम बाढ़ि मे निपत्ता छनि, एकोटा घरक

कोनो निशान नहि बाँचल छैक । चिन्तित अधिकारी स्वयम् हेलीकाप्टरसँ देखल ह आ अपन गाम आ घरकेँ चिन्हलनि आ आश्वस्त भ' किछु अन्नपानि रूसा आपस भेलाह ।

ई खिस्सा सुनि मानसकेँ अपन माय मोन पड़लैक । नहि जानि कोन हालतिमे हेतैक । आरो कतेक लोक हैत जकर माय, भाइ बहिन फँसल हेतैक । ओकरा लेल कोन हेलीकाप्टर जयतैक ? हजारो लाखो लोक गाममे रहैत अछि – ओकर कोना उद्धार हेतैक ?

"– उद्धार हेतैक" – भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री बाजय लगलाह– "विकल्प चाही, कांग्रेसक विकल्प । त्रिपाठीजी बुढ़ारीमे पत्रिकाक सम्पादन क' रहल छथि । हमरोसँ लेख मंगने छलाह । हम लिखि देलियनि— कांग्रेसक विकल्प मात्र कांग्रेस अछि । हमर त' ई अटूट विश्वास अछि । इतिहास देखि लिय'– पुरान कांग्रेसक विकल्प इन्दिराजी, इन्दिरा कांग्रेस, इन्दिराजीक विकल्प जे० पी० पुरान कांग्रेसी आ एखन फेर राजीव गाँधीक कांग्रेसक विकल्प ।..."

"वी० पी० सिंह"—"उत्साही विक्षुब्ध कांग्रेसी प्रसन्न होइत बजलाह– अपने त' खूब लेख देलियनि अछि, कहिया छपत ?" भूतपूर्व मन्त्री प्रसन्न होइत बजलाह—हम त' हरदम सही बात कहैत आयल छी । खाली अपन बेरमे गल्ती भ' गेल । पाँच वर्ष सांसद रही । सभ मास अपन क्षेत्र गेल रही । जनताक सेवा कयने रही । अगिला चुनावमे वैह क्षेत्र दूधक माछी जकाँ निकालि क' फेकि देलक । बड़ आश्चर्य भेल जे कत' चूकि गेलहुँ । एकटा पुरान सांसदसँ जे पाँचटा चुनाव लगातार जीतल छलाह, अपन प्रश्न कहलियनि । ओ झट उत्तर देलनि—"तोरासँ एक्केटा गल्ती भेलौक जे तोँ सभ मास अपन क्षेत्रमे गेलैं । हम पाँच वर्षमे मात्र एक बेर अपन क्षेत्र जाइत छी । जनताकेँ सभ बेर एकेटा शिकाइत रहैत छैक जे अहाँ खाली चुनाबे बेरमे अबैत छी । हम ल' द' क' ओकरा मना लैत छी । तोँ सभ मास अपन क्षेत्रमे गेलैं, जनताक शिकाइत एकसँ अनेक भ' गेलैक आ तोरा पछाड़ि देलको ।

एतबा कहि ओ भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री हँसय लगलाह—दुःख सँ वा आनन्दसँ से नहि जानि । मुदा मानस मोने मन हुनकासँ सहमत भेल जाइत रहय जे कोनो देशकेँ सरकार ओहने भेटैत छक जेहन ओकर जनताक चरित्र रहैत

छैक । जत' किछु हजार विधायक साँसद आ मन्त्री करोड़ जनताक जिनगी आ भविष्यक संग खेलबाड़ करय आ जनता देखैत रहय, ओत' आर भैये की सकैत छैक ?

ई बात मानस अपन बगलमे बैसल सज्जनकेँ कहलकनि त' ओ बिगड़ि उठलथिन—"अहूँ केहन गप्प करैत छी ? ई सभ मात्र हजारे अछि । रक्तबीजक सन्तान अछि ई सभ । एक नेताक संग हजार नेता फड़ैत छैक । मन्त्रीक चमचा नेता, विधायक—सांसदक चमचा नेता । चमचाकचमचा नेता, औफिसक कर्मचारी नेता, शिक्षक नेता, गामक-मुखिया-ठीकेदार नेता, गाम आ शहरक सभ गुण्डा बत्रमाश नेता । नेताआँ कोन स्थान अबंच अछि यौ ।

मानस गुम्म भ' गेल । फेर हुनके लोकनिक गप्प सुन' लागल । एकटा प्रधान मन्त्री समर्थक कांग्रसी ओहि भूतपूर्व कांग्रेसी मन्त्री पर बमकि रहल छलाह—अहूँ लोकनि लगले अपन ओकातिपर आबि जाइत छी । राजीवक विकल्प वी० पी० सिंह ? गाछक विकल्प अण्डी ! बेस कहलहुँ अहूँ । एकटा प्रान्त त' सम्हरबे ने कयलनि आ देश सम्हारताह । एहन अनटोटल गप्प करैत छी, अहूँ सभ जे देहमे आगि लागि जाइत अछि ।

आस्ते आस्ते मानसोकेँ देहमे आगि सुनगि रहल छलैक । की भेल जा रहल छैक अइ देशक लोकके' । सभ ठाम सभ गप्पक अन्तमे वैह जगन्नाथ मिश्र, वह विन्देश्वरी दुबे, वह राजीव गांधी, वैह रामा राव, हेगड़े, देवी लाल, चन्द्रशेखर बाजपेयी । गप्प बाढ़िक भ' रहल छलैक, बाढ़ि पीड़ित सहायताक भ' रहल छलैक आ सभकेँ ठेलि ठालि क' उपर आबि गेलैक कुर्सी-सत्ता-संघर्ष । यैह देशक चरित्र भेल जा रहल छैक । सभ चौराहा, सभ घर, सभ कार्यालय, सभ स्कूल कालेजमे चर्चाक विषय भ' गेल छैक राजनीति, साहित्य-संस्कृति मानवताक गप्प आब बेर कुबेर लेल ठेकना क' राख'क वस्तु भ' गेल छैक । कोनो मंच, कोनो सभामे भजा लेबाक हेतु, अपनाकेँ जमा लेबाक हेतु । रुचिक वस्तु छैक राजनीति ...हिंसा...भ्रष्टाचार... ड्राइंग रूम ककरो होउक नेता वा शिक्षकक अभिनेताक वा कानून वेत्ताक व्यापारी वा नोकरिहाराक, चर्चाक विषय एकेटा छक—राजनीति ।

भोज खतम होइत होइत बाढ़ि आ बाढ़ि पीड़ितक गप्प सभ बिसरि गेल छल आ सुस्वादु भोजनक प्रशंसामे लागि गेल छल जकर उच्छृष्टक पातपर पथार लागल छलैक। राजीव समर्थक वा राजीव विरोधी दुनूक एहि बातमे मतैक्य छलनि जे एहन भोजन बहुत दिनपर खयने छलाह। दुनू बाढ़ि आ बाढ़ि-पीड़ितक संग सरकारी निष्क्रियता आ सहायता सामग्रीक अभावक बात एकदम बिसरि गेल छलाह आ ढ़ेकार लैत अपन घर विदा भेल छलाह।

आइ गाममे एकसर बैसल मानसकेँ ओइ दिनुका गप्प सभ मोन पड़ि रहल छलैक। बाटमे कखन भराठी बितलैक आ कखन टूटल बान्ह पर कयलक, किछु ध्यान नहि रहलैक। लगलैक जेना बाढ़िक जे समाचार पढ़ने छल से झूठ छलैक, कतहु कोनो तबाही नहि छलैक। सम्पूर्ण इलाका पूर्ववत छलैक आ दुर्गापूजाक तैयारीमे, बाट-बटोहीकेँ घेरि क' सभक चन्दा असूल करबामे व्यस्त छलैक।

गाम अबैत अबैत मुदा लगलैक जेना बहुत किछु छलैक जे मास बितला पर आब देखार नहि छलैक। बहुत किछु आइयो छैक जे उपरसँ जगजियार नहि छैक। बाढ़िक बिभीषिका आइयो एम्हुरका लोककेँ घेरने छैक। एहि गाम आ इलाकाकेँ घेरने छैक। बैदा, कैला, बौकू आ रीझनकेँ घेरने छैक। ओ सभ आइयो डूबले अछि। ओकर उद्धार कोना हेतैक?

सोचैत सोचैत मानस बड़ी राति धरि बैसले रहि गेल। खा-पीक' सूतय गेल तयो ओकरे सभक बात आ डेरायल आकृति ओकरा उद्विग्न आ चिन्तित कयने रहयैक। अढ़ाइ हजार टाका कहाँसँ अनतैक ई पाँचो मिलि क'? भोरे सूरजूकेँ कहतनि जे बचा लहक एकरा सभकेँ। ओहिना विपत्तिक मारल अछि, उपरसँ तेहन डाँग नहि मारहक जे खतमे भ' जाय।

उठल त' मोन किछु भारी छलैक। भोर भेना किछु काल बीति गेल छलैक मुदा रौदमे कोनो धाही नहि छलैक। ओ टहलैत किछु दूर चल आयल।

दुर्गापुजाक तैयारी भ' रहल छलैक—आने साल जकाँ। भगवतीक मूर्ति बनि गेल छनि; आइए बेछनौती छैक, कालिह डिम्हा पड़तनि! स्टेज तैयार भ' रहल छैक! भसिरक आने साल जकाँ तीनू राति नाटक हेतैक। दोकान सभ

खूजि गेल छैक एक पतियानीमे मधुर-चाह-पान तेल-पुलेल आ खेलौना हमनचरक दोकान सभक आगू किछु गोटे खूब जोर-जोरसँ चिचिया रहल छलैक।

मानस उत्सुकतासँ आगू बढ़ल। किछु भीड़ लागल छलैक आ बहुत गोटे मिलि क' ककरो घेरि क' चिचिया रहल छलैक। मानस एकदम लग चलि गेल।

बगलमे एकटा मोटर साइकिल औंघरायल छलैक। मानसकेँ ओकरा चिन्हबामे कनियो समय नहि लगलैक। सुरजूक मोटर साइकिल छलैक!

किछु चिन्तित होइत मानस किछु गोटेकेँ ठेलैत आगू बढ़ल। सामने विचित्र दृश्य छलैक! सूरजूक गट्टा पकड़ने रीझना चिचिया रहल छल। ओकर पीठपर बौका, कैला तैनात छलैक आ घेरने छलैक हरिजन टोलीक बहुत रास स्त्रीगण-पुरुष! बीचमे सूरजू सकपंज भेल ठाढ़ छलाह—चेहराक रंग एकदम उड़ल, थरथर करैत। हुनका लगपासमे क्यो मदति कयनिहार नहि छलनि। सभ अनठा क' दोकान सभक दिस ठाढ़ तमासा देखि रहल छलनि आ रीझना गरजि रहल छल—"आइ हर्गिस ने जाय देब कोरट अहाँकेँ। पहिले कबूल करू जे हमरो आरके नाम कटबा देब—पाँचो गोटेक नाम, तखने जाय देब आइ। बाबू-भैया करैत जीह टूटि गेल! एक मास पाँचो गोड़ खेतमे बेगारी क' देब सेहो गछली मुदा अहाँ नहि मानली! अहाँकेँ चाही अढ़ाइ हजार। से आइ दैये देब अढ़इयो हजार! पाँचो अंगुरी काटिक', आ दुनू हाथ पयर तोड़िक' इहे लद्दीमे फेंकि देब! बैसनो जहल, ऐसनो जहल। मुदा अहूँके लुल्ह नांगर बनाके तैसन बैठा देब जे फेर कोनो गरीबकेँ सताबेके नाम नहि लेब अहाँ! बाजू, जबाब दू.."

सूरजू सकदम्म, कण्ठमे बकार नहि। रीझना गट्टा एँठने जा रहल छलनि आ ओहिना गरजि रहल छल—'बाढ़िमे बड़का गोहि आ मगरमक्छ सभ आयल रहय? बाढ़िसे बँचि गेली हमरा सभ मुदा ई मगरमच्छ त' गीड़ि लेत हमरा आरके...बड़की गो पेट हनि...हमरा आरकेँ भूखलो पेटसे बड़'' बखारी हनि बड़का, रुपया पैसा से भरैत हनि"।

सूरजू आब किकिआय लागल छलाह। रीझना बाँहिकेँ उनटा क' पीठपर चढ़ा देने छलनि। हुनकर कातर दृष्टि मानसपर पड़लनि। आसक रेखा हुनकर आकृति पर स्पष्ट उभरि अयलनि आ बकार फुटलनि—बचाउ मानस भाइ, "एकरा सभसँ हमरा बचाउ!"

मानसकेँ रतुका गप्प मोन पड़लैक। ई पाँचो हुनकासँ नेहोरा कयने रहनि जे हमरा सूरजू बाबूसँ बचाउ। आ भोरे सुरजू मदति लेल घिघिया रहल छथि। राति भरिमे ई पाँचो अपन बँचबाक बाट ताकि लेने अछि। आब कोनो बाढ़ि एकरा सभकेँ डुबा नहि सकतैक, कोनो मगरमच्छ एकरा सभकेँ गाँड़ि नै सकतैक। बाढ़िसँ बचबाक बाट ई सस अपने ताकि लेने अछि। एकरा ककरो मदति नहि चाहियैक।

मदति सूरजूकेँ चाहियनि। ओ घिघिया रहल छलाह मुदा मानस ओहि बाढ़िक बात सोचि रहल छल जकर भय आब समाप्त भ' गेल छलैक।

अक्टूबर १९८७

रक्षक

बूढ़ा बड़ी काल सँ प्लेटफार्म पर नुड़िया रहल छलाह।

नहि, ओ बूढ़ नहि छलाह। बेशी सँ बेशो पैंतालीसक वयस हेतनि मुदा ततेक दुब्बर छथि आ तेना झुकि क' चलि रहल छथि जे हुनका कतेको बेर वयोवृद्ध बूझि लेबाक भ्रम होइत छैक। यद्यपि केश कारी छनि आ दाँतो एक्कोटा टूटल नहि छनि! मुदा चेहरा पर व्याप्त असीम दुख आ क्षोभ। ओइ दुख आ क्षोभक कालिया सँ झम्पित गोर आकृति पर एकटा छटपटाहटि एकटा विकलता छनि। प्लेटफार्म पर कतहु एक्को ठाम स्थिर नहि होइत छथि। सदिखन चलिते रहैत छथि आ बेर-बेर घूरि क' प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालय लग नुड़िआइत छथि।

नुड़िआइत छथि आ क्रमशः हुनकर आकृति पर एकटा हताश भाव पसर' लगैत छनि। लगैत छैक जेना ककरो प्रतीक्षा रहल होनि आ से प्रतीक्षा निराशामे परिणत भेल जा रहल होनि।

फाटल मैल धोती आ मैले सन ढीलढाल कुर्त्ता पहिरने नुड़िआइत बूढ़ा ककरो लेल आकर्षणक केन्द्र नहि छथि। लगभग सभ दिससँ उपेक्षित मुदा अपन चेष्टामे स्वयं अपस्यांत, गुनधुनमे पड़ल। नहि जानि ककर प्रतीक्षा छनि?

कान्ह पर एकटा झोरा लटकल छनि, खूब हल्लुक सन। आर दोसर कोनो समान नहि। दाढ़ी बेश बढ़ल छनि आ बेशी पाकलो नहि छनि! माथक केश त' कारी छनिहे मुदा तैयो पहिल दृष्टिसे एहन लगैत छैक जेना एकटा खूब बूढ लोक मैल धोती कुर्त्ता पहिरने कान्हसँ झोरा लटकौने, डाँड़ लगसँ झुकल प्लेटफार्म पर चारूकात बौआ रहल होथि आ बेर-बेर प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालय लग पहुँचि डेग थकमका जाइत होनि! वेटिंग रूमक दरबज्जा ठेलि ठेलि क' हुलकी द' फेर ओहिना चारूकात उद्विग्न बौआय लगैत छथि जेना ककरो ताकि रहल होथि।

गाड़ी धड़धड़ाइत प्लेटफार्म पर आबि ठाढ़ भ' गेलैक आ यात्रीगणमे धक्कमधुक्की शुरू भ' गेलैक। ओही धक्कमधुक्कीमे कहुना बढ़ैत बूढ़ा प्रथमश्रेणीक डिब्बा लग पहुँचि गेलाह। पहिने निराश जकाँ भेलाह। फेर प्रसन्नतासँ आँखि चमकि उठलनि।

एकटा बड़का काफिलाक संग एकटा नेतानुमा लोक धोती कुर्त्ता टोपी पहिरने आ गरदनिक माला झकझबैत डिब्बा दिस बढ़लाह आ संग चलैत लोक आ सशस्त्र सैनिक बाँकी यात्रीकेँ धकियाब' लगलैक—"हटि जाउ, मंत्रीजीकेँ चढ़' दिअनु। संगमे आइ० जी साहब सेहो छथिन।

ओहि धक्कामे बूढ़ा फेर दू लग्गा दूर फेका गेलाह मुदा हताश नहि भेलाह। मन्त्रीजी आ आइ० जी साहब भीतर घुसि गेल छलाह। संग आयल बाँकी लोक सेहो डिब्बामे चढ़ि ओकर गेट जाम कयने छलाह आ हुलकि-हुलकि क' मंत्रीजीक दर्शन पाबि रहल छलाह आ हुनका अपन मुखारबिन्द सेहो देखा रहल छलथिन। जिनका उपर नहि चढ़ि भेलनि से प्लेटफार्म पर ओहि डिब्बा लग ठाढ छलाह आ आन मोस्तैदी देखयबाक मौकाक तलाशमे छलाह! बूढ़ा घुसकैत ओहि दरबज्जा लग पहुँचलाह आ आनन्दित होइत डेग उपर उठौलनि कि तखने क्यो जोरसँ डँटलकनि—"एम्हर कत' घुसिआयल अबैत छी बूढ़ा? ई फर्स्ट क्लासक डिब्बा थिकै।

बूढ़ा सहमि गेला मुदा चेष्टा जारी रखलनि। बिगड़िक' एक गोटे जोरसँ धक्का देलकनि! फेंका क' चारूनाल चित खसलाह प्लेटफार्म पर। माथ झनझना उठलनि। डाँड़ पीठमे सेहो खूब चोट लगलनि। तावत गाड़ी ससर' लागल छलैक! बूढ़ा अपन सभटा संचित शक्ति समेटि उठलाह आ एकबेर फेर डिब्बा दिस दौड़लाह। लोक जाबत पकड़नि आ धक्का दैनि ओ हैण्डिल पकड़ि पौदान पर लटकि गेलाह।

तैयो आफत पिण्ड नहि छोड़लकनि। गेट पर ठाढ़ सशस्त्र पुलिस सभ नीचा खसा देबा लेल उद्यत भ' गेलनि। बूढ़ा आर जोरसँ हैण्डिल पकड़ि लेलनि। उपर चढ़बा लेल प्रयास कर' लगलाह मुदा सफल नहि भेलाह। एकटा पुलिस केँ दया आबि गेलैक—"आब दहुन बूढ़ा केँ। गाड़ीक स्पीड तेज भ' गेल छैक, आब खसताह त' प्राणे जयतनि।" दोसर पुलिस हाथ पकड़ि हुनका भीतर झीकि

लेलकनि। बूढ़ा ओँघराइत ओघराइत बँचलाह। नाक थौआ होइत-होइत बँचलनि!

बूढ़ा तखनो नुड़िआइये रहल छलाह। गाड़ी अपन उच्चतम गतिसँ जा रहल छल। डिब्बाक लोक अपन-अपन स्थान ध' लेने छल।

छ टा केबिन छलैक! एकटामे मन्त्री महोदय आ आइ० जी० साहब छलाह। दोसरमे मंत्री जीक सम्पूर्ण सुरक्षा दल—छ'टा सशस्त्र सिपाही। तेसरमे पी० ए० आ चम्मच लोकनि आ बाँकी तीन टामे यात्री। सम्पूर्ण पैसेजमे मात्र तीन गोटे छल—मंत्री साहबक केबिनक बाहर पहरामे तैनात दूटा सशस्त्र पुलिस आ पैसेजमे नुड़िआइत ओ बूढ़ा। एकबेर सुरक्षा सिपाही नरेटी दाबि लेलकनि—"की बात छैक? एना की एम्हर ओम्हर क' रहल छी!

बूढ़ा निधिआय लगलाह। ओ सिपाही हुनकर झोराक तलाशी लेलकनि। भोड़ल माड़ल एकटा कागजक बण्डल छलनि झोरामे। एकटा प्लास्टिकक गिलास, एकटा मैल गमछा आ एक खण्ड धोती। सिपाही सभटा बाहर छिड़िया झोरा मुँह पर फेकि देलकनि! बूढ़ा सभटा सामान उठा फेर झोरामे रखलनि आ ओहिना नुड़िआय लगलाह। सिपाही फेर डँटलकनि—चुपचाप कोनामे जा क' बैसू! एम्हर ओम्हर की क' रहल छी तखनसँ!" ओकर डाँट सुनि केबिनमे बैसल आर सिपाही सभ बाहर तकलक आ सहमल बूढ़ाकेँ एकसर पैसेजमे ठाढ़ देखि एक गोटे कहलकनि "आउ बूढ़ा बाबा, भीतरे आबि जाउ।

भीतर केबिनमे तीन गोटे निचला सीट पर आ तीन गोटे उपरका सीट पर बैसल छल। जगह नहिये जकाँ छलैक मुदा जे सिपाही बजौने छलनि से कनेक घुसकि क' कहलकनि—"बैसू, बूढ़ा बाबा।

बूढ़ा तैयो ठाढ़े रहलाह जेना बैसबामे डर भ' रहल होनि, जेना बैसबाने आपत्ति होनि। हुनकर आँखिमे ओइ पुलिसक सहृदय व्यवहारक बादो ओकरा लेल एकटा उपेक्षा आ घृणाक भाव छलनि। फेर टोकलापर ओ तेना सिकुड़िक' ओकर बगलमे बैसि गेलाह जेना स्पर्श सँ बाँचि रहल होथि, जेना स्पर्श होइते अपवित्र भ' जयताह। खाली घृणे टा नहि, घृणा आ डरक मिलजुलल भाव। जेना लगमे बैसितँहि नरेटी दबा देतनि ओ।

ओ सिपाही मुदा खूब सहृदय छल। तम्बाकू बनौलक त' बूढ़ा दिस सेहो बढ़ा देलकनि। बूढ़ा हाथ नहि बढ़ौलथिन त' हुनकर मुठी खोलि तरहत्थी पर तम्बाकू राखि देलकनि। तैयो हुनकर तरहत्थी पर ओ मलल तम्बाकू ओहिना पड़ल रहलनि बड़ी काल! सिपाहीक ध्यान फेर ओम्हर गेलैक—''खाउ ने बूढ़ा बाबा! खूब सनियल तम्बाकू अछि।'' बूढ़ा अनिच्छापूर्वक डेराइत ओ तम्बाकू ठोर तर रखलनि आ पीठ माथ पाछू सटा, ओठंगि गेलाह आ आँखि बन्न क' लेलनि।

सिपाही सभ अपनामे गप्प क' रहल छल! बूढ़ाक आँखि बन्द छलनि मुदा सभटा बात कानमे जा रहल छलनि।

—''घुरैत काल राति भ' जयतैक! काल्हि भोरे वापस आबि सकब!

एकटा सिपाही बाजल।

—''स्टेशने पर छुट्टी ल' लिहैं! डेरा पर जाय लगबैं त' काल्हि भोरो वापस नहि भ' सकबैं।

—''पी० ए० साहब तँ पटना पहुँच' स' पहिने लिखबाक लिहैं।'' दोसर बुझौलकै।

—''बख्शीश लेल सेहो लिखबा लिहैं—सभ लेल एक-एक सय! मंत्रीजीक इसकोर्ट मे गेल छलैं।' तेसर कहलकै।

—लिखौलासँ की हेतौ? पछिलो सभ बेर जे लिखौलैं, से भेटलौ आइ धरि! ई मंत्री सभ त' एहिना लिखि दै छइ।'' पहिला लोहछि क' बाजल।

—कनिये दिनुका राजपाट रहै छै! सभ सख पूरा क' लैत अछि। इसकोर्ट चाही, इनाम बख्शीश देबाक चाही। एही मंत्रीजी के देखने। तीन महीना भयला भेलैक आ अखने हटबाक गप्प भ' रहल छैक।''—चारिम उपरका सीटसँ बजलैक।

—गप्प की भ' रहल छैक? हटबैं करतैक अही मास। ई आखरी लाट साहबी छैक।' ऊपरेसँ कोनो दोसर सिपाही बजलैक।

—बाँचिओ जा सकैत छैक भाइ। ई जे काण्ड भेलैक अछि ताही सँ उम्मेद भ' गेल छैक। एकरे जातिक सभ मारल गेल छैक। एकरे फैदा उठौतौ। कोना दौड़ले गेल छलौ। चुनव जितलाक बाद एको बेर गेल छलौ आइधरि? हमहूँ त' ओही क्षेत्र के छी? मुदा अप्पन गद्दी डोललैक त' कोना दौगले गेल छलौ...... लाश सभक पुछारि में गेल छलौ......

—''लाश! बूढ़ा चेंहा क' उठलाह—''कहाँ छैक लाश? कोम्हर छै......

बूढ़ा तेना छटपटा क' उठल छलाह जे सभ सिपाही चौंकि गेल। एकटा सिपाही हुनकर छटपटाइत देह कें पकड़लक—की भेल बूढ़ा बाबा? एना डरा कियैक गेलहुँ? एत' कत' सँ लाश औतेक? लाश त' बिछल छलइ ओइ गाममे जत'सँ हमरा लोकनि घुरल अबैत छी। स्टेशनसँ बीस कोस दूर छलै। जाय के कोनो रस्ता नै! चारू कात पानि। राति क' सभ बन्दूक ल' क' आयल छलैक नाव पर। घरसँ निकालि निकालि क मारलैक सभकेँ। बूढ़ जवान स्त्रिगण बच्चा...........सभकेँ भूनि देलकै।

—''नै'' बूढ़ा फेर जोरसँ चिचिया उठलाह जेना प्राण कण्ठ में आबि गेल होनि। सौसे देह छटपटाय लगलनि। ओ सिपाही ओहिना पाँज में समेटने छलनि।

दोसर सिपाही बाजल—'अहाँ सुनिक' एना छटपटा रहल छी बूढ़ा बाबा। हम सभ देखि क' आबि रहल छी। आब त' सभ दिन एहिना देखैत रहैत छी—आइ एत' त' काल्हि ओत'। आइ एक जाति के, त' काल्हि दोसर जाति कें......

एकटा आन सिपाही बुझनुक जकाँ बाजल—मर'वला कें त' एके जाति होइ छैक आर मारहोबलाक सेहो एके जाति होइत छैक। मारल जाइत अछि सभटा निरपराध आ आ मारैत छैक सभटा अन्यायी, हिंसक, मतिभ्रष्ट।

दोसर टोकलकै—कखनो-कखनो दुनू एक्के रंगक रहैत छैक मुदा बेशी काल मारल जाइत छैक निरपराध। ई गुण्डवा सभ अपना मे लड़ै-मरै जाय, कोनो निरपराधकें कियैक मारैत छैक? आइये देखलहिक......एकटा सोलह वर्षक छौंड़ा छलैक—केहन सुन्नर। बी० ए०क परीक्षा द' क' आयल छलैक...''

—''नै'' बूढ़ा फेर चीत्कार कयलनि। एकटा सिपाही ओहिना हुनकर शरीर कें समेटने छलनि अपन बाहि मे। हुनका उठा क' सोझ क' बैसबैत कहललनि—उठू बूढ़ा बाबा, सोझ भ' क' बैसू। एना चिकरि कियैक रहल छी? इ सभ त' होइते रहैत छैक।

दोसरका पुलिस ओहिना अपन ज्ञान बघारि रहल छल—एहिना होइत रहैत छैक आ होइत रहतैक। ई नेतवा सभ बन्न होब' देतैक ई सभ? यैह मन्त्रीजी आयल छलौ आइ, एकरे जातिक लोक मरल छै। देखि लिहैं, मासो नहि

पुरतैक। जे सभ मारने छैक—ओकरो जातिक निरपराध दस-बीस मारल जयतैक। हिसाब बरोबरि। जे मरल से मरल······नेताजीक गद्दी सलामत।

जे बूढ़ा कें सम्हारने छलनि से बाजल—"आ बदनाम हमरा लोकनि। खराब पुलिस। बेइमान आ भ्रष्ट। दू रुपया—चारि रुपया लेल। दू जे लाख-करोड़ खाइत छथि—से साधू महात्मा। हरान भ' चोर डाकू कें पकड़ू आ फेर कोनो नेताजी ओकरा छोड़ा देथिन, माला पहिरौथिन। ओकर घर पर अतिथि बनथिन, अगिला चुनावक टिकटक इन्तजाम करथिन। चोर-डाकू गुण्डा-बदमाश सभ मस्त साँढ़ जकाँ बौआयत। नेता सभक बंगला मे मौज करत आ ओकरा सभ कें पकड़बा लेल झुट्ठे हमरा लोकनि हरान हैब।

ताबत ओकर ध्यान अपन बाँहि मे सिकुड़ल बूढ़ा पर गेलैक। लगलैक जेना बूढ़ा बेहोश भ' गेल होथि। फेर भेलैक जेना सूति रहल होथि। ओ हुनका फेर नीक जकाँ पाछू दिस बर्थ पर बैसा देलकनि।

बूढ़ाक आँखि बन्द छलनि। गाड़ी अप्पन द्रुत गतिसँ भागि रहल छल।

बूढ़ाक आँखि बन्द छलनि मुदा ओ जागल छलाह। जागल छलाह आ जेना कोनो भयानक सपना देखि रहल छलाह—जागल आँखिक सपना।

बहुत रास सपना छलनि सुवीर बाबूक आँखि मे।

पहिल सपना रहनि देश आ संसारक श्रेष्ठ गायक बनबाक। भगवानक देल मधुर स्वर छलनि आ विख्यात गुरुक प्रारम्भिक शिक्षा। राज-घरानाक वातावरण मे, राजसी ठाठक बीच। गरीबी मे जन्म आ बादशाही मे बीतल नेनपन आ किशोरावस्था।

ओ सपना चकनाचूर भ' गेलनि। राजमहल छोड़ि कालेजक पढ़ाइ आ तकर बाद नोकरीक तलाश मे ततेक बौअयलाह जे अपनो पता नहि चललनि जे देशक श्रेष्ठ गायक बनबाक सपना कत' पाछाँ छूटि गेलि। बाकी कसर तहिया पूरा भ' गेलनि जहिया मुँहसँ खून खसलनि आ डाक्टर जाँच क' टी० बी०क घोषणा क' देलकनि। आब स्कूल कालेज मे अखिल भारतीय स्तर पर जीतल कप आ शील्ड सभ ओइ स्वप्नक मखौल उड़बैत बदरंग भेल कोनो अलमारी आ बक्सा मे फेकल पड़ल रहैत छनि।

दोसर सपना रहनि क्रिकेटक बढ़ियाँ खेलाड़ी बनबाक। संगीतक रेयाज छोड़ि क' मैदान मे प्रैक्टिस लेल पड़ा जाथि। कतेको बेर गुरुजी डँटबो करथिन मुदा ओ पड़ाइये जाइत रहथिन। गुरुजी छोड़ि देलथिन बाद मे। ओ स्वयम् क्रिकेटक प्रेमी छलाह।

इहो सपना मुदा बीचे मे दम तोड़ि देलकनि। तेना खसलाह एक बेर जे ठेहुन हमेशा लेल कमजी भ' गेलनि। कमेन्टरी सुनि-सुनि क' ओइ मुइल सपना कें जिअबैत रहैत छथि।

तेसर सपना रहनि नीक निशानेबाज बनबाक। जाधरि राजमहल मे रहथि; खूब नीक निशाना रहनि। गुरुजी अपनो शिकारक खूब शौकीन रहथिन। हुनके राइफल साफ करैत-करैत ओहो निशाना लगब' लगलाह। मुदा राजमहल छोड़ि जहिये अपन खोण्ड़ी मे अयलाह, राइफल कें छूअब स्वप्न भ' गेलनि।

फेर अपना पतो ने लगलनि जे जाहि आँखि मे खाली अपन स्वप्न भरल रहैत छलनि, कहिया धीयापुता सभक सपना जगह बना लेलकनि।

प्रमोदसँ हुनका कोनो बेशी उम्मेद नहि रहनि। ओ रूप रंग, पढ़बा-लिखबा, सभ मे साधारण रहनि। बी० ए० पास करैत देरी ओकरा अपने संग आफिस मे नोकरी लाबा देलथिन। विवाहो-दान करबा देलथिन। ओकरा लेल ओइसँ बेशीक कहियो उम्मेद नहि रहनि।

दोसरका बेटासँ मुदा बड़का-बड़का आस रहनि, पैघ-पैघ सपना रहनि। जहिया नीक नम्बरसँ पास क' रमण कालेज मे आबि गेलनि, बी० ए० मे आबि गेलनि, टूटि क' थौआ भेल सपना फेरसँ पनपिक' जवान भ' गेल रहनि। डाक्टरक मनाही रहलाक बादो ओ जखन लम्बा-लम्बा आलाप लेब' लागल छलाह। पत्नी एक बेर दाबल स्वरे मनो कयलथिन त' ओ हँसि क' उड़ा देलथिन—"आब चिन्ता नै करू। हम नहियो रहब त' अहाँ कें देखनिहार सभ ठाढ़ भ' रहल छथि।

अत्यधिक प्रसन्न रह' लागल छलाह सुवीर बाबू। जागलो आँखि मे सपना रहैत छलनि। बेटा कें आइ० ए० एस० बनयबाक सपना। सुखायल आकृति पर फेरसँ मासु आ चमक धुरि आयल छलनि। कपड़ा-लत्ता फेर तेहने सीटल पहिर' लागल छलाह जेना अपन किशोरावस्था मे राजमहल मे रहैत काल पहिरैत छलाह। लोक सभ जखन-तखन टोक' लागल छलनि—की बात छैक सुवीर बाबू? बड़ प्रसन्न रहैत छी आइ-काल्हि।

सुबीर बाबू मुस्किया क' रहि जाइत छलाह। कोनो जवाब नहि दैत छलथिन। आँखियो दोसर दिस घुमा लैत छलाह जेना डर भ' रहल होनि जे आँखिमे उधिआइत सपना कें क्यो देखि ने लिअय, ककरो नजरि ने लागि जाय।

नजरि मुदा लागिये गेलनि। ककर से नहि जानि। हुनका देखबाक फुरसतिये नहि रहनि। अपन धुन मे मगन छलाह। सदिखन सपने मे डूबल रहैत छलाह, आन दिस तकबाक फुरसतिये नहि छलनि।

चौंकला ओइ दिन जहिया पत्नी कहलथिन—"रमण अखन धरि नहि घुरल अछि। काल्हि रातिये सँ घर नहि आयल अछि।

सुबीर बाबू आफिससँ घुरले छलाह। पत्नीकें जोरसँ डँटलथिन—'काल्हि रातिसँ घर नै अयलाह आ हमरा अखन कहैत छी। भोरे कियैक नै कहलहुँ ?"

पत्नीक भयभीत चिन्तित आकृति आर दयनीय भ' उठलनि—"भेल जे कोनो दोस्त-महिम लग रहि गेल हैत। भोरे चल आओत। मुदा भोरसँ साँझ भेलैक, कोनो पता नहि। डरे कोंढ़ काँपि रहल अछि।"

सुबीर बाबू चिन्तित भ' उठलाह। पत्नी फेर कहलथिन—"सभ ठाम पता लगबौलियैक मुदा क्यो किछु ने कहैत अछि। सभसँ बड़का दोस्त छैक राम, ओहो किछु ने कहि रहल अछि। लगैत अछि जेना किछु नुका रहल होअय।"

सुबीर बाबू बिना किछु बजने घरसँ बहरयलाह आ रामक घर पहुँचलाह। हुनका लगलनि जेना राम हुनका देखैत देरी चौंकल होअय। कहलकनि—"काल्हि साँझमे हमरा लग आयल छल। फेर मण्टू......लड्डू आ गोपाल ओकरा बजवा लेलकै। तकर बाद हमरा किछु ने बूझल अछि। काकियो के हम ई बात कहि देने रहियनि।"

सुबीर बाबूक चिन्ता आब आर बढ़ि गेलनि। मण्टू, लड्डू आ गोपाल मोहल्लेक छौंड़ा छलैक मुदा रमण ओकरा सभसँ दूरे रहैत छल। भारी बदमाश छलैक तीनू।

राम डराइत कहलकनि—"परीक्षामे चोरी करैत छलैक मण्टू। चिट पकड़ाय लगलैक त' रमण दिस फेंकि देलकै। अपन बचाव लेल रमण सत्त बात कहि देलकै जे चिट रमण अनने छलैक। परीक्षासँ निकालि देलकै ओकरा। तहियेसँ मण्टू रमण पर लागल छैक। धमकियो देने छलैक।

सुबीर बाबू आर चौंकलाह। अपनो ओही ठाम छथि मुदा कोनो खबरि

नहि। आशंकासँ पैर थरथराय लगलनि, ओतहि बैसि गेलाह। राम जल आनि क' देलकनि। पानि पीलासँ सुखायल कण्ठ मे कहुना प्राण अयलनि। निष्प्राण स्वर मे रामकें कहलथिन - हमरा नै बूझल छल किछुओ। रमणो किछु नहि कहलक।

राम आरो विस्तारसँ कहलकनि—"रमण प्रिन्सिपल लग गेल रहैक मुदा ओ कोनो ध्यान नहि देलथिन। ई तीनू त' हुनके पोसुआ छनि, हुनके जातिक छनि। परसू कालेज मे रमण के दू थापर मारने रहैक आ जान लेबाक धमकी देने रहैक।

राम आरो किछु बजितैक, ताबत ओकर माय घरसँ बहरेलैक—"अनेरो तखनसँ बकर-बकर कयने छै। तोँ की जाने गेलहिक ई सभ बात। तोरा कोन मतलब छौक ?

राम चुप्प भ' गेल। सुबीर बाबू कातर दृष्टिये रामक माय दिस ताक' लगलाह। किछु क्षण बाद बकार फुटलनि—"रमण काल्हिसँ घर नै आयल अछि। रामकें मना नै करियौक। हमरा लोकनि बड़ चिन्ता मे छी।

रामक माय कोनो जवाब नै देलथिन आ भीतर जाइत कहलथिन—"जल्दी आ राम, जरूरी काज अछि।

सुवार बाबू नेहोरा कयलथिन—"हमरा कहै राम, कत' अड्डा छैक तीनूक। घर मे त' नहिये भेटत। तोरा बूझल हेतौक। डेरो जुनि, सभटा कह हमरा।

राम डेराइत डेराइत बाजल—ओम्हर धारक कात मे एकटा कोठली छैक। ओहि मे अड्डा छैक तीनूक। शहरक आरो बदमाश सभ अबैत छैक।"

—"कने चलिक' देखा दे हमरा ओ कोठली।'' सुबीर बाबू नेहोरा कयलथिन।

राम मुदा तैयार नहि भेलनि। हुनका एकसरे जाय पड़लनि। कोठली लग जाइते बहुत गोटेक बजबाक स्वर सुनाइ पड़लनि। ओ दरबज्जा ठेलि भीतर पैसि गेलाह। भीतर शराबक बोतल खूजल छलैक आ सभ पीबि क' मस्त छल। एना भीतर ढुकैत देखि मण्टू उठि क' ठाढ़ भेलैक।

—"एना भीतर कियैक अयलौं ? कोनो सभ्यता नहि अछि अहाँके।

सुवीर बाबू गिड़गिड़ाय लगलाह—"एना अयबा लेल क्षमा कर हमरा मुदा कहू जे रमण कत' अछि ? तोहीं सभ बजौने रहिक काल्हि साँझ·······

गोपाल जोरसँ गरजल– "के कहलक अहाँकेँ ? ओ चोट्टा राम ? ओकरा देखि लेबैक काल्हि । मुदा पहिने अहाँ निकलू एत' सँ। हमरा सभ नै जनैत छी अहाँक रमण केँ !

सुवीर बाबू ओकर पयर ध' लेलथिन — 'नहोरा करै छियौ बाउ । कहि दे जे कत' अछि । बड़ चिन्तामे छी हम सभ ।

गोपाल जोर सँ ठोकर मारलकनि—"नाटक नै करू । हम सभ की जानै गेलौं जे अहाँक रमण कत' अछि । निकलू एत' सँ । सभ टा मूड खराब भ' गेल । फेर दू गिलास चढ़ब' पड़त । जाइ छी अहाँ, की लतिया क' वाहर' कर पड़त ।

अपमानित, क्षुब्ध सुबीर बाबू ओत' सँ बहरा गेलाह । भारी डेगे डेरा अयलाह । पत्नी, पुतहु, बेटी आ प्रमोद सभ चिन्ता सँ अपस्याँत बाट तकैत रहनि । हुनकर उदास आ हारल आकृति देखि सभक मौन आर बैसि गेलैक !

सुवीर वाबू मुदा बैसल नै रहलाह । सभ ठाम गेलाह । पुलिस स्टेशन, डी०एस० पी०, एस०पी०, डी० एम०, प्रिन्सिपल, प्रोफेसर्स सभक कत' दौड़लाह । तीनूक नामो लिखा देलथिन मुदा क्यो कोनो आश्वासन नहि देलकनि, नै तीनू केँ पकड़बे कयलकैं । कतेको गोटे चुपचाप घरमे आबि मना कयलकनि– ओकर तीनूक नाम नहि दियौक । आफत मे पड़ि जायब । बड़का बड़काक संरक्षण प्राप्त छैक ओकरा । ओकर भाइ मुख्यमन्त्रीक खास आदमी छनि । अनेरो बिढ़नी केँ कियैक खोचाड़ैत छी ।"

सुवीर बाबू नहि मानलथिन । सभ ठाम दौड़िते रहलाह । थाना मे नित्य तगेदा कयलथिन डी० एस० पी०, एस० पी० केँ नित्य फोन कयलथिन, धरना द' अपने भेटो कयलथिन । जिलाधीश लग लिखि क' देलथिन मुदा रमणक कोनो पता नहि लगलनि । घर मे कन्नारोहटि मचल छलनि । भानस भात सभ बन्द । पत्नी पेटकान देने छलथिन । बाकी सभ डरे त्रस्त छल । खाली एकसर सुवीर बाबू सभ ठाम बौआ रहल छलाह । सातम दिन क्यो समाचार देने छलैक !

पत्नी सुनिते बेहोश भ' गेल छलथिन । घर मे कन्नारोहटि फेर मचि गेल छलनि । बड़का बेटा प्रमोद बेजान ओम्हरे दौड़ल छल । सुवीर बाबू कनैत बेटी

पुतहु केँ डँटलनि—एना कियैक कनैत छी ? झुट्ठे हल्ला मचौलक अछि क्यो । हम अपने देखने अबैत छी ।

बेहोश पत्नी केँ ओहिना छोड़ि ओ दौड़ले बाहर आयल छलाह । मुदा बाहर अबितँहि पयर लोथ भ' गेल छलनि । डेग आगू ससरिये ने रहल छलनि । लोथ पयरकेँ घिसियबैत कहुना धारक कात मे पहुँचलाह ।

भीड़ ठसम-ठस्स छलैक । सभ केँ ठेलैत कहुना भीतर पैसलाह । एकटा सढ़ल नोचल लाश बालू पर पड़ल छलैक जकरा लग प्रमोद कनैत बैसल छल । बालू मे गाड़ल लाश केँ गीदड़-कुकुर उखाड़ि केँ नोचि नाचि देने छलैक आ चील कौआ चोंच मारि क' क्षतविक्षत क' देने छलैक । मात्र देह परक कपड़ा चिन्हलथिन सुवीर बाबू आ ओहि सड़ल गलल लाश पर धड़ाम सँ खसि पड़लाह ।

होश भेलनि त' चचरी तैयार छलैक । भीड़ निपत्ता भ' गेल छलैक । प्रमोदक संग मात्र चारि टा लोक । आर ककरो पता नहि ।

सुवीर बाबू बहुत चेष्टाक बाद कहुना ठाढ़ भेलाह । आँखिक नोर सुखा गेल छलनि । ओइ मे एकटा विचित्र सन भाव आबि गेल छलनि—निराशा, संकल्प आ प्रतिहिंसाक मिलल जुलल भाव । अर्थीक एकटा अगिला बांस पकड़ि उठबैत कहलथिन—चल' ।

लोक सभ मना कयलकनि । बेटो कहलकनि—अहाँ छोड़ि दियौक बाबू ।

सुवीर वाबू जेना किछु ने सुनलथिन । बांस पकड़ने ठाढ़ रहलाह । आगूक दोसर बांस प्रमोद पकड़ि लेलकनि । दू गोटे पांछू सँ उठौलनि । सभ विदा भेल— राम नाम सत्य है ।

सुवीर बाब एकदम चुप्प छलाह । डेग हुनकर उनटा दिस विदा भेलनि । बेटा टोकलकनि—ओम्हर कत' जाइत छी ।

सुवीर बाबू कोनो जबाब नहि देलथिन । डेग बढ़ैत रहलनि । किछु अनुमान करैत बेटा कहलकनि—ओकरा सभ लग जा क' की हैत ? सात दिन सँ त' दौड़ि रहल छी, की कयलक ओ सभ ? जान बचा सकलैक रमणक । वैह सभ त' असली कसाइ अछि ।

सुबीर बाबू आगू बढ़िते गेलाह । मात्र छः गोटे रहथि । बाटमे क्यो संग नहि भेलनि। बाट चलैत लोक एक बेर ताकि अपन बाट चलैत रहल । एहि सँ बेसी लेल ककरो फुरसति नहि छलैक ।

पुलिस स्टेशन पाछाँ छूटि गेलैक त' प्रमोद कें चिन्ता भेलैक— किम्हर जाइ छी बाबू ?

सुवीर बाबू कोनो जबाब नहि देलथिन। एस०पी० क बंगलाक अहातामे सिपाहीक रोकितो रोकितो ओ पैसि गेलाह आ रुद्ध कण्ठसँ चीत्कार कयलनि।

लाश बरण्डा पर राखि सुवीर बाबू बड़ी काल धरि चिचिआइत रहलाह। तखन एस० पी० साहब बाहर अयलथिन। ओ सुवीर बाबूकें चीन्हैत छलथिन। पाँच दिन पहिने ओ अपन शिकायति लिखा गेल रहथिन—सभक नाम सेहो लिखा गेल रहथिन।

हुनकर आकृति पर संवेदनाक भाव उगलनि, भरिसक अन्त:करणमे कोनो लज्जाक भाव सेहो। क्यो देखलकनि नहि। ऊपरी तौर पर ओ स्पष्टतासँ बजलाह—"लाश एत' कियैक अनलहु ?" पोस्टमार्टम लेल लाश ल' जयबाक आदेश दैत सुवीर बाबूक कान्ह पर हाथ रखैत कहलथिन—"अपने विश्वास राखू। अपनेक संग इन्साफ हैत।

सुवीर बाबू शून्य आँखिये एस० पी० साहबक चेहरा देखैत रहि गेलाह। सामनेमे बेटाक लाश पड़ल छलनि, जीवनक अन्तिम सपनाक लाश आ एस० पी० साहब इन्साफ करबाक बात क' रहल छलथिन।

प्रमोद एक गोटे कें संग करैत कहलकै—बाबू कें डेरापर ल' जाहुन नरेन। एहि सबमे आब समय लगतैक।

सुवीर बाबू चिचिया उठलाह—नहि, अखन डेरा नहि जायब हम। पहिने बात हमर सुनू—अपन कान्ह पर बेटाक लाश ल' क' हम एना घुरि जाय लेल नहि आयल छी।" हुनकर बयान लिखबा देलथिन एस० पी० साहब। किछुओ नहि नुकौलथिन ओ। परीक्षाक घटनासँ रामक घरक घटना धरि सभ सुना देलथिन।

घुरि क' जखन डेरामे अयलाह, कन्नारोहटि शान्त भ' गेल छलनि। पत्नी ओहिना बेहोश पड़लि छलथिन। सुवीर बाबूकें नहि ज्ञात छलनि जे डाक्टर आबि सूई द' गेल छलनि आ दवाइक असरिसँ राति भरि ओहिना पड़ल रहती ओ—संज्ञाहीन।

हुनकर बेहोश शरीर लग बैसि गेलाह ओ। मुदा किछुए काल बाद भहरिक' हुनके देह पर खसि कान' लगलाह, कनिते रहि गेलाह राति भरि !

भोरे सबकें खबरि भेटि गेलैक।

रातिये पुलिस मण्टू लड्डू गोपाल तीनू कें पकड़िक' ल' गेलैक। पुलिसक जीपमे एस० पी० साहब स्वयम् आयल छलथिन।

तकर बाद लोको सभ आब' लगलनि। लाशक संग जाय लेल मात्र चारि गोटे रहनि, बाप बेटाकें छोड़ि क'। भोरसँ सैकड़ोक भीड़ लागि गेलनि। पड़ोसी-सम्बन्धी सहकर्मी आ पत्रकार क्यो पाछाँ नहि रहलाह। सुवीर बाबू ककरो किछु ने कहलथिन। प्रमोद सभ कें सभटा कहैत रहलैक, भोरसँ राति बितला धरि।

तीनूक गिरफ्तारीक समाचार जखन प्रमोद हुनका कहलकनि हुनकर आँखिमे एकटा चमक आयल रहनि। प्रमोद नहि देखलकनि मुदा बड़ी काल तक हुनकर आँखि ओहिना चमकैत रहलनि जेना कोनो तरुआरिक धार चमकैत छैक।

लोक सभक भय किछु कमल रहैक। बहुत रास बात कहि गेल रहनि। राम आरो बात कहने रहनि। रमणक नहि घुरला पर ओ राति खन ओइ कोठली दिस गेल छल। रमणकें दू गोटे पकड़ने रहैक आ मण्टू आ गोपाल एकटा विजलीक तार ओकर गरदनिमे कसि रहल छलैक। ओ डरे पड़ा गेल छल। पोस्टमार्टम रिपोर्टक मोताबिक गला दाबिक' मारल गेल छलैक आ वादमे बालू मे गाड़ि देने छलैक।

किछुए दिनक बाद मुदा प्रमोद संग घर भरिक लोको आर भयभीत भ' गेल रहनि। आतंकसँ सर्द। बीसे दिनुका वाद तीनू जमानति पर छूटि गेल रहैक आ तकर तेसरे दिन प्रमोद एकटा पुर्जी हाथमे देने रहनि। बरण्डा पर क्यो फकि गेल रहनि।

—दोसरो बेटाक वैह गति हैत। तैयार रहू।

सुवीर बाबू पुर्जी लेने एस० पी० साहब लग दौड़ल गेलाह। पुलिसवा सभ उठाक' फेक' लागल रहनि मुदा एस० पी० साहबकें प्राय: दया आबि गेलनि। भीतर बजबा लेलथिन।

पुर्जी हुनकर सामने राखि सुवीर बाबू कहलथिन—कोना छोड़ि देलियैक अपने लोकनि तीनू हत्याराकें। आब हमर सौंसे परिवारकें समाप्त करत। लोकक जान मालक एहिना रक्षा करैत छियैक अपने लोकनि ?" एस० पी० साहब नीक लोक छलाह। बुझबैत कहलथिन—"अपने शान्त होउ। हमरा लोकनि नोकरी करैत

छी। ककरो आदेश मान' पड़ैत अछि। देशक असली रक्षक वैह लोकनि छथि। ककरो जीबा मरबाक फैसला हुनके लोकनिक हाथ छनि। नै मानबनि त' हमरो आफत। अपने हमर बात मानू, जे भेल से भेल। जे बाँचल छथि तिनका बचबियनु।

सुवीर बाबू अवाक रहि गेलाह—"ई अपने कहि रहल छी! तखन अइ शहरक लोक ककरा लग जायत? के बचौतैक ओकरा अइ गुण्डवा सभसँ......

एस० पी० साहब बुझौलथिन—क्यो नै बचा सकैत छैक। हम पकड़िकेँ भीतर करबैक, ऊपरसँ आदेश औत, छूटि जायत। मोकदमा हेतैक, डरे क्यो गवाही नहि देत। ओ आर अकड़िक' बाहर औत। दू चारि टा आर खून करत। अपने कोन झंझटमे पड़ल छी। गेल बेटा त' वापस नहि औत। हुनका लेल बचलाहाक जिनगी खतरामे नहि दियौक। हम अपनेक नीक लेल कहैत छी।"

सुवीर बाबूकेँ किछुओ नीक नहि लागल छलनि। एस० पी० साहब डरपोक आ सिद्धान्तहीन लागल छलथिन। ओ हुनकर कोठलीसँ उठिक' चल आयल छलाह!

डेरा पर सभक चेहरा तेहन रहैक जेना फेर क्यो मारल गेल हो। आतंकित सुवीर बाबूकेँ किछु पुछबासँ पहिने प्रमोद एकटा दोसर पुर्जा देलकनि— एस० पी० लग गेल रही। बेटी पुतहु दुनूकेँ तीन दिनक भीतर डेरासँ दिन-देखार उठा लेब! बजा लिय', जेकरा बजैबाक हो।

सुवीर बाबू फेर बाहर दौड़' लगलाह! पत्नी पयरसँ लपटि गेलथिन—नै जाउ कतहु, चुपचाप घरमे बैसू।

बेटा कान' लगलनि—घर भरिक नाश क' देत ओ सभ, जाय दियौक बाबू। रमण त' गेल।

बेटी पुतहु कनैत कातमे ठाढ़ि छलनि जेना सते क्यो जबरदस्ती उठब' लेल आबि गेल होइ।

सुवीर बाबू हताश बैसि गेलाह। ओइ दिन कतहु नहि गेलाह। दिन भरि लगैत रहलनि जे किम्हरोसँ एकटा बम खसतनि घरमे आ सपरिवार सुड्डाह भ' जयताह। बिन खयने पीने पड़ल रहलाह। बड़ी राति क' नीन्न भेलनि। नीन्नमे रमणकेँ देखलथिन—मुँह पर पट्टी बान्हल छलैक आ दुनु हाथ सेहो पाछाँ मोड़ि

क' बान्हल छलैक। एकटा तार गरदनिमे कसल छलैक जकरा दू कातसँ मण्टू आ गोपाल झीकि रहल छलैक। जीभ बाहर लटकि गेल छैक मुदा तैयो सुवीर बाबूकेँ लगलनि जे ओ किछु कहि रहल छनि हुनका सँ......

ओ चेंहाक' उठि बैसलाह। घामे पसेने तर छलाह। कोठलीमे अन्हार रहनि। डेरामे मृत्युक निस्तब्धता रहनि। लगलनि जेना सत्ते,सभ मारल जयताह। रमण गेलनि, सभ क्यो जयताह! क्यो रक्षक नहि छनि। ककरा लग जयताह। सभ दिस अन्हारे अन्हार छनि।

भोरे फेर एक बेर प्रयास कयने छलाह। एस० पी० साहेबक डेरा पर गेल रहथि। नहि छलथिन। पटना चल गेल छलाह। निराश सुबीर बाबू डी० एस० पी०क डेरा पर गेलाह। सिपाही ढुकहे नै देलकनि। सामने बरण्डा पर दू चारि टा नेतानुमा लोक सभक संग डी० एस० पी० साहब बैसल छलाह। सुबीर बाबू जोर जोर सँ चिचिआय लगलाह। सिपाही बेर बेर धक्का देब' लगलनि, ठेहुन कपार शोणिते शोणिताम भ' गेलनि मुदा ओ उठि उठि क' चिचिआइत रहलाह। डी० एस० पी० साहब खौंझायल अपने लपकल गेट धरि अयलाह आ गारि दैत कहलथिन—"की हल्ला क' रहल छी—जे कहबाक अछि थाना मे लिखा दियौक।" डी० एस० पी० साहब चल गेलथिन आ धमकीक पुर्जी लेने ओ अनिच्छापूर्वक थाना दिस बढ़लाह। ओकर सभक रबैया ओ देखने रहथिन। जखन रमण नै भेटैत रहनि, दिनमे तीन बेर दौड़ैत छलाह, हुनकर रिपोर्ट धरि नहि लिखैत छलनि। गारि द' भगा दैत छलनि। ओत' जयबाक कोनो इच्छा नहि रहनि। असहाय भ' ओम्हरे जाय पड़लनि। प्रभारी हुनका देखते फेर मुँह बिचका लेलकनि। ओ धमकीक दुनू पुर्जी देलथिन। ओ फाड़ि क' फेंकि देलकनि— अइ सँ की हैत? की पता के लिखने अछि? भ' सकैत अछि अहाँ अपने लिखि लेने होइ तीनू केँ फसब' लेल।

सुवीर बाबू तामसे थरथरा उठलाह। धमकीक सबूत मेटा देने रहनि। मण्टू लड्डू आ गोपालक संग शहरक सभ गुण्डा छैक। शहरक पुलिसो छैक—सेहो आब ओ बूझि गेल छलाह। मुदा तैयो आस नै छोड़ने छलाह।

बिगड़ि क' कहलथिन—हमर कागज कियैक फाड़लहुँ अहाँ?

प्रभारी आर तरंगि उठलनि—'हमरा आँखि देखबैत छी? ठहरि जाउ, सभ बुधियारी घुसारि दैत छी। हनुमान सिंह, लगाउ अइ सार के दस बेंत आ

क' दियौक भीतर दफा लगा क'। राति भरि हवालातमे रहत त' अपने होश आबि जयतैक।

सेवक हनुमान आज्ञापालन करैत दनादन बेंत चलब' लगलनि। सौंसे देह दालि उखड़ि गेलनि। हुनकर चीत्कार पर प्रभारी सहित आरो सभ हँसैत रहलनि। सेवक हनुमान हुनका छड़पिटबैत धकियबैत हवालातक कोठलीमे पटकि बाहर सँ ताला लगा चल गेलनि। भरि राति अन्हार कोठलीमे पड़ल दर्दमे कुहरैत रहलाह। मुदा ध्यान डेरे दिस रहलनि। नहि जानि की कयने हैत?

भोरे लतिया क' बाहर क देलकनि। लंगड़ाइत लंगड़ाइत डेरा पहुँचलाह। सभ सन्देसामे रहनि। सभकेँ सुरक्षित देखि हुनका सभ कष्ट क्लेश बिसरि गेलाह।

भोरे पुर्जाक बदला मण्टू अपने ठाढ़ रहनि डेराक सामने सड़क पर। सौंसे मोहल्लाकेँ सुनाक कहलकनि—गेल रही ने थाना, बुझलियैक मजा। असली मजा आब बुझबै। ऐह राति अइ डेराकेँ बम सँ उड़ा प्रमोद केँ ओइ जरैत आगि मे फेकि "बेटी पुतोहु के ल' जायब"" बजा लिय' जकरा बजयबाक हो।

अपन अपन डेरा सँ सभ सुनलकै मण्टूक धमकी! मुदा लगले सभ अपन दरबज्जा बन्द क' लेलकै जेना किछु भेले ने होइ! कतेको गोटे चोरा क' डेरामे आबि कतेको बेर कहि गेल रहनि—"ओकरा सँ दुश्मनी नहि करू! जे बांचल अछि सेहो जायत!"

एस० पी० साहब सेहो येह कहने रहथिन! सब लोक सैह कहने छनि! तीनटा बीस वर्षक छौंड़ाक डरे समस्त शहर आ समस्त प्रशासन भयभीत छैक! एस० पी० साहब भयभीत छथिन! कहैत छथिन—असली मार' जिआब'वला उपरमे बैसल छथि, सब हुनके आदेश सँ होइत छैक!

सुवीर बाबू केँ अर्थ नहि लगैत छनि जे ऊपरवला केँ एकटा अबोधक जानक कोन काज छैक! रमणक प्राण सँ ओकर कोन हित सिद्धि भेल हेतैक! ओ सभ कियैक बचा रहल छैक एकटा खूनी केँ"

हुनकर बात पर पड़ोसी कमला बाबू ओइ दिन हँस' लागल रहथिन—"—अपने कोन दुनियामे रहैत छी सुवीर बाबू! गुण्डा-खूनीक बिना राजनीति-प्रशासन आ पुलिसक काज चलतैक? असली ताकति त' वैह सभ छैक। हमरा

अहाँक जिनगी त' साग मेथी छैक ओकरा सभ लेल। मोन हेतैक खा लेत, मोन हेतैक थांगि देत। ओकरे सभक कृपा सँ जीबैत अछि सभ क्यो आइ।

सुवीर बाबू मुदा कोना जीताह! कोना बचतनि हुनकर परिवार? रक्षक सभ रुष्ट छनि"ककरा लग जयताह?

पत्नी कहलथिन—गाम चलू सभ क्यो! नै चाही ई नोकरी-चाकरी! साग पात खा क' गुजर क' लेब गामे मे।

प्रमोद कहलकनि—ठीके कहैत अछि माय। हमहूँ छुट्टी ल' लैत छी"" दू मासक""! दू- मास बाद देखल जयतैक?

—"आ दु मास वाद! दू मास मे ई शहर आ देश बदलि जयतैक? समाज आ पुलिस बदलि जयतैक! फेर सँ जीब' त' एतहि आब' पड़त! तखन? आ तोहर त' नव नौकरी छह, दू मासक छुट्टी कोना भेटतह।" सुवीर बाबू रोकलथिन।

प्रमोद मुदा अड़ल छल—"देखल जयतैक! लोभ विदाउटप' सैह ने! नै हैत त' नौकरी छूटत सैह ने! एत' नहि रहब हमरा लोकनि! गाम चलू।"

प्रमोदक बात सँ बेशी बेटा-बेटीक मोन डरा देने रहनि! हुनक आँखि मे एहन भयभीत आ निरीह भाव रहैक जेना अखने क्यो औतैक आ सभक सामने नोचि-नोचि क' खा जयतैक! हुनकर आँखिक सोझेँ मे।

बूढ़ा जोर सँ चीत्कार क' उठलाह। बगल बैसलमे सिपाही फेर हुनकर थरथराइत देह केँ पकड़ि क' सोझ कयलकनि—"बहुत डरा रहल छी बूढ़ा बाबा? कोनो खराप सपना देखलहुँ?

सपना! बूढ़ा चारूकात तकलनि! ओ गाड़ीक डिब्बा मे छलाह आ गाड़ी अपन वेग मे भागल जा रहल छल! सपना! सत्ते ओ सपना देखने छलाह। एकटा डेरौन सपना! सत्त कतउ कतेक डेराओन होइ! फेर लगले सोचलनि, सत्त त' सभ दिन सपना सँ बेसी डेराओन होइते छैक।

अपन देह पर सिपाहीक हाथक स्पर्श दिस ध्यान गेलनि त' फेर डेरा गेलाह! लगलनि जे वैह हाथ हुनकर नरेटी चाँपि देतनि! ओकर हाथ ओ कने जोर सँ हटा देलथिन! ओ सहृदय सिपाही किछु चौंकल! ओकरा बूढ़ाक व्यवहार शुरू सँ अजीब लागि रहल छलैक! पुछलकनि—"कत' जायब बूढ़ा बाबा?

बूढ़ा जबाबक बदला ओकरे सँ प्रश्न कयलथिन—कत' आबि गेलहुँ !

ओ सिपाही कने आर चकित होइत कहलकनि—पटना आबि जायत आधा घण्टा मे।

आधा घण्टा मे ? बूढ़ा चौंकलाह ! एतेक जल्दी समय बीति गेलैक !

समय त' बहुत बीति गेल छलैक ! ओही दिन परिवार कें गाम पठा देने छलथिन ! सभ कनैत रहि गेलनि मुदा अपने नहि गेलाह ! तीन वर्ष भ' गेलनि। ककरो सँ भेंट नहि छनि, एको बेर गाम नहि गेल छथि ! घरक लोक फेर घूमि क' एहि शहरमे आब' लेल तैयार नहि भेलनि ! प्रमोद नौकरी छोड़ि देलकनि। गाममे जे द्द चारि कट्ठा खेत पथार छनि, ओही मे लागल रहैत छनि ! किछु टाका पठा दैत छथिन।

गाम मुदा नहि जाइत छथि जेना कोनो सनक सवार छनि। सदिखन लगैत छनि जेना रमणक आत्मा न्याय माँगि रहल छनि ! पिताक रूप मे ओइ आत्माक शान्तिक लेल किछु करब जरूरी छनि ! सभठाम ठोकर खाइत बौआ रहल छथि मुदा आस नहि छोड़ने छथि !

केस कोर्ट मे चलि गेल छनि मुदा एकदम कमजोर बना क'। एकोटा गवाही नहि ! राम एकदम नकारि गेलैक.... ! कहलकै जे ओ किछु नहि जनैत अछि ! प्रिन्सिपल साहब कहलथिन जे मण्टू त' रस्टीकेट भेले नहि छल, ओ त' प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेल अछि ! रस्टिकेट त' रमण भेल छल, चोरियो करैत वैह पकड़ल गेल छल।

सुवीर बाबू ठाम-ठाम ओकर खाइत ठोघराइत रहलाह ! एस०पी० साहबक बदलीक भ' गेल छलनि आ नव एस० पी० हुनकर बातो सुन' लेल तैयार नहि छलनि ! पटना जा मंत्री मुख्यमंत्री, सभक दरबज्जा पर घरना द' आयल छलाह ! क्यो भेटो नहि कयलकनि। खाली चिट्ठी सभ लिखैत रहलाह अछि सभ दिन, गवर्नर मंत्री मुख्यमंत्री, डी० आई० जी०, आइ० जी० सभकें ! कतहु सँ कोनो जबाब नहि आयल छनि !

झोरा मे लिखल चिट्ठीक प्रतिलिपि सभ आ मोकदमाक कागज रहैत छने आ एकटा गमछा आ गिलास ! एहिना बौआइत बौआइत तीनिये वर्षमे बूढ़ भ' गेल छथि, डांड़ झुकि गेल छनि आ मोन शोणिते शोणितान भ' गेल छनि !

काल्हिये पता लागल रहनि जे मंत्री आ आइ० जी० साहब आयल छथि शहरमे ! बड़ चेष्टा कयलनि मुदा सफल नहि भेलाह ! पता लगलनि जे आयल छलाह प्लेनमे घुरताह ट्रेन सँ। प्लेटफार्म ओगरि लेलनि ! मारि धक्का खाइत कहुना ट्रेनमे, चढ़ि गेलाह। पटना पहुँच' मे मात्र आध घण्टा देरी छैक आ पटना पहुँचि गेला पर फेर भेटो ने कर' देतनि !

सुवीर बाबू व्यग्र भ' उठलाह ! उठि क' ठाढ भ' गेलाह। सिपाही सभ देखलकनि मुदा ध्यान नहि देलकनि। ओ बाहर पैसेजमे आबि गेलाह। पहरा दैत एकटा सिपाही कोनो केबिन मे चल गेल छल प्रायः। दोसर ओही ठाम ठाढ़ ओंघा रहल छल। भरिसक ठाढ़े-ठाढ़ सूति रहल छल। राइफल ओंठगा क' राखल छलैक, ओकर पयर लग मे। एस०पी० साहेबक बात फेर मोन पड़लनिऊपर—सँ आदेश आयल छल। मंत्री, आइजी साहबक आदेश छल......

सुवीर बाबूक आँखि चमक' लगलनि। झुकल डांड़ जेना तनि गेलनि। लपकि क' राइफल उठौलनि आ केबिन मे घुसि गेलाह। राइफल दू बेर गरजल।

सुवीर बाबू हुलसि उठलाह। निशाना एकदम ठीक छलनि। नेनपनक ट्रेनिंग बेकार नहि गेल छलनि। ओ राइफलकें घुमाक' दोसर दिससँ बैट जकाँ पकड़ि लेलनि आ जोरसँ घुमौलनि...छक्का। एक बेर फेर घुमौलनि—छक्का। दूनू लाश उड़िक' नीचा आबि क' एक दोसर पर गेंटा गेल रहनि। क्रिकेट मे नेनपन मे खूब छक्क मारैत छलाह सुवीर बाबू। हुनकर टूटल सपना सभ एक-एक क' जोड़ा रहल छलनि। तार मे कसल रमणक आकृति बेर-बेर हुनकर आँखिक आगाँ नाचि रहल छलनि आ लागि रहल छलनि जेना अपन बापक पराक्रमकें देखि ओकरो आकृति पर हँसी पसरि गेल होइ।

सुरक्षा सैनिक जखस केबिन मे पैसल दूनू गेटल लाश पर सुवीर बाबू निश्चिन्तमँ बैसल छलाह आ आँखि मे आनन्दक अतिरेक छलकि रहल छलनि। कान्ह पर राइफल तेना राखल रहनि जेना तानपूरा होनि आ लगैत छलैक जेना कोनो क्षण ओ आलाप लेब' लगताह।

सम्पूर्ण सुरक्षा-दल सम्मोहित हतबुद्धि ठाढ़ छल। ट्रेनक गति मद्धिम भ' रहल छलैक। भरिसक स्टेशन लग आबि गेल छलैक। ●

सितम्बर, १९८८



प्रभास मैथिली कथा साहित्यक समवेत युवा ऊर्जा एवं स्फूर्ति सँ भरल एहन कथाकार छथि जे कथा केँ व्यापक आधार, विराट परिवेश, बहुआयामी दृष्टि तथा विशिष्ट दृष्टि-भंगी प्रदान कयलनि अछि। अत्यन्त संवेदनशील हृदय, चिन्तनशील मस्तिष्क, सत्योन्मेषी दृष्टि तथा चोटगर-नोकगर व्यंग्यक वक्र-भंगीमा हिनक विशेषता छनि। शहर मे रहितो ई मोन-प्राणसँ गाम मे रहैत छथि। बाल्यकालक संस्मरण आ अतीतक बहुत रास मार्मिक अनुभूति हिनका मे तेना ने रसि-बसि गेल छनि जे कदाचित् नागर संस्कृतिक छलनामय वातावरण हिनका हठात् मिथिलाक अपन माटिपानि ओ गामघर मे आनि दैत छनि। कथाकार प्रभास मे यथार्थ ओ आदर्शक मणिकांचन संयोग भेटैत अछि। गामसँ नगर, नगर सँ राष्ट्र ओ राष्ट्र सँ अन्तर्राष्ट्रीयताक विराट क्षितिज हिनक समुर्वर मनोमस्तिष्ककेँ झिकझोरैत रहलनि अछि। अतएव बद्धमूल सामंती संस्कारकेँ तोड़ि-फोड़ि ई बेर-बेर अपन रचना मे यथार्थ जनवादी जमीन सेहो तकैत छथि। पूर्व मे मैथिली कथा जाहि संकीर्णताक कठघरा मे मूनल-बान्हल छल, तकरा ई व्यापकता ओ विविधताक उन्मुक्त भाव-भूमि पर उतारि देलनि। हिनक रचना-शिल्प मे मिथिला-क्षेत्रक सोना-माटिक सम्पूर्ण सुगंधि भेटैत अछि। संगहि हिनक कथा नाना रूपात्मक जगत ओ जिनगीक बहुरंगी कथा कहैत अछि। हिनका मे एक अपूर्व चित्रमयता, सजीवता, मनोवैज्ञानिकता, वाह्यान्तः संघर्षक उठापटक देखिते बनैत अछि। ई अतीतक ओ कथा कहैत छथि जे वर्तमानक रेखाचित्र गढ़ैत भविष्यक सपना सजवैत अछि। कदाचित् आजुक विभीषिका ओ विसंगति अथवा वर्ग-संघर्ष हिनका ततेक उद्वेलित कयलकनि अछि जाहिसँ क्रान्तिक कोनो दीपशिखा प्रज्वलित कयल जा सकय।